-टीक

| | | | |
|---|---|---|---|
| ...ा ... ... ... | ६) | ...व-तरंग | ।≡) |
| बृहत्पाकावली ... ... ... | ॥) | गद-तिमिर-भास्कर ... ... | |
| ...वन ( संस्क... ...का ) ... | ।-)॥ | चिकित्सोपदेशिर ... ... | १) |
| ...ा ... ... ... | ४॥) | दिल्लगन-चिकित्... ... ... | ।-) |
| ...निदान... ... ... | ॥) | निघण्टु ...ाकर ... ... | |
| ...ा. ( छप रही है ) | | निघण्टु ( मदनपाल ) | ॥ |
| ... (त... खंड) (छप रहा है) | | राम-विने... ... ... | |
| ...राज्य रत्नावली .. (छप रही है) | | वैद्य-प्रिया ... ... | |
| | | अमरविनोद | ≡) |

## शारीरिक विज्ञान-संबंधी पुस्तकें

| | |
|---|---|
| मानव-शरीर रहस्य ( प्रथम भाग ) ... ... | २॥) |
| मानव शरीर-रहस्य ( द्वितीय भाग ) ... ... | ३॥) |

सूचना—अन्यान्य पुस्तकों के लिये कार्ड डालकर बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाकर देखिए।

पुस्तकें और सूचीपत्र मिलने का पता:—

मैनेजर, न... ... (बुक...

...नगं

# इलाजुलगुरबा भाषा

अर्थात्

# दीन-जन-चिकित्सा

अनुवादक—

स्वर्गीय काश्मीरी पंडित प्यारेलाल रुग्गू

लखनऊ

केसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

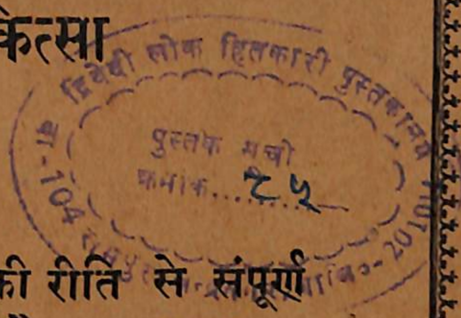
दसवीं बार

सन् १९३० ई०

# इलाजुल्गुरबा भाषा

अर्थात्

# दीन-जन-चिकित्सा




जिसमें

यूनानी हिकमत और वैद्यों की रीति से संपूर्ण रोगों के निदान विचार और यत्न सुगम और सरल रीति से वर्णित हैं।

अनुवादक--

स्वर्गीय काश्मीरी पंडित प्यारेलाल रुग्गू

---

दसवीं बार


लखनऊ

केसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९३० ई०

# भूमिका।

उस सच्चिदानन्द ईश्वर का धन्यवाद है, जिसने मनुष्यों के कल्याणार्थ रोगों को दूर करने के लिये अपनी अपूर्व रचना से वैद्यक विद्या को प्रकट किया। इस विद्याकी उत्पत्ति इसभाँति है कि जब देवता और दैत्यों ने समुद्र-मंथन किया, तो धन्वन्तरिजी महाराज दो घड़ोंको हाथ में लेकर समुद्र से उत्पन्न हुए, जो चौदह रत्नों में से एक रत्न गिने जाते हैं। इनका माहात्म्य इस विद्या में बहुत है, इनके अतिरिक्त इस सिद्ध और अपूर्व विद्या के जाननेवाले बहुत से सामर्थ्यवान् वैद्य प्राचीनकाल से अब तक उत्पन्न होते आए हैं, उनका वर्णन कहाँतक किया जावे।

यूनानियों के ऐतिहासिक प्राचीन ग्रंथों में लिखाहै कि 'तिब' में मुख्य अफ़लातून हुये हैं अर्थात् उन्हीं से इस विद्या का प्रचार हुआ। इसके उपरान्त बहुत से बुद्धिमान् हकीम हुए, जिनका आजतक डंका बज रहा है।

इन दोनों विद्याओं के देखने से भलीभाँति सूचित होता है कि इनमें एक ही प्रकार, वही निदान, वही औषध, पर कुछ थोड़ा अंतर है, वह मतांतर वा देशांतर का कारण है, और दोनों विद्यायें मनुष्यों के लिये, जो लिखने के प्रमाण पर चलते जावें जीवन-मूल हैं।

यह परमोत्तम पुस्तक 'इलाजुलगुरबा भाषा' जिसका नाम अनुवादक ने 'चिकित्सा-कलिका' रक्खा है, फ़ारसी-भाषा में थी, जिसको हकीम असग़रअली साहब ने, मौलवी मुहम्मद यूसुफ़अली साहब की प्रेरणा से उर्दू में अनुवादित किया और वह अनुवाद यंत्रालय के व्यय से हुआ। इसमें मुख्य करके नीचे लिखी हुई बातें और ग्रंथों से विशेष महत्त्व की हैं।

जो इलाज सैकड़ों रुपयों के ख़र्च करने से होता है, वह इस पुस्तक के द्वारा थोड़े ही में होजाता है अर्थात् और ग्रंथों की औषधों में, सैकड़ों रुपये के ख़र्च करने से वह लाभ न हो, और

इसमें कौड़ियों के ख़र्च से फ़ायदा दिखाई दे, इसीलिये यह ग़रीब और अमीर सबके लिये गुण-दायक है और बीमारियों की पहिंचान और उनके निदान तो इस तरह लिखे गए हैं, जो थोड़ा भी लिखा-पढ़ा हो, समझ सकता है और दूसरे की दवा कर सकता है, इस एक ही पुस्तक से मनुष्य अभ्यास द्वारा वैद्य हो सकता है।

इसप्रकार 'उर्दू' में इस पुस्तक की बड़ी चर्चा हुई, तो वैद्यों, या यों कहना चाहिये सब लोगों की इच्छा हुई कि यदि यह विचित्र और सिद्ध पुस्तक नागरी अक्षरों में अनुवाद करके छापी जावे, तो सबके लिये लाभकारी और उपकारी हो, अतएव 'अवध-समाचार' के सम्पादक तथा नवलकिशोर-प्रेसके प्रोप्राइटर मुंशी नवलकिशोरजी सी०आई०ई०ने आज्ञादी कि इस पुस्तक का नागरी भाषा में अनुवाद हो, तो इस आधीन ने इसका प्रत्यक्षर प्रथम ठेठ भाषा में वैद्यक की रीति से अनुवाद कर दिया। श्रेष्ठ जन जहाँ भूल पावें, क्षमा करके सुधार लें।

तथा पुस्तक के अन्त में सब प्रकार की तौलों का विस्तार भी लिख दिया गया है जिससे कि पाठकों को किसी प्रकार का भ्रम न पड़े।

अंत में ईश्वर से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे उपकारी, सदाचारी, धर्म-व्रत-धारी, गुण, ग्राहक, गुणि-जन-सुख-दायक, श्रीमन्मुंशी नवलकिशोर साहबकी आयु, आरोग्य, प्रताप और धनकी वृद्धि करें और चारोंओर यश छाया रहे, और यह पुस्तक पढ़ने-पढ़ानेवालों और रोगियों को कल्याण-दायक तथा गुण-दायक हो, और हाथों हाथ बिककर, फिर छापने का अवसर मिले।

यह ग्रंथ अनुवादित यंत्रालय के व्यय से हुआ है इसलिये कोई इसके छापने का विचार न करे।

काश्मीरी पं० प्यारेलाल शर्मा रुग्गू

# इलाजुल्गुरबा भाषा का सूचीपत्र।


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| प्रकृति के विषय में ... | १ |
| सते जरूरिये ( छः आवश्यक वस्तुओं का वर्णन ) ... | ४ |
| नहाने का उपाय ... ... | ११ |
| नाड़ी के विषय में ... ... | १२ |
| क़ारूरे का वर्णन ... ... | १३ |
| पित्त के मुंजिज अर्थात् पकाने की औषध ... ... | १६ |
| फ़स्द का वर्णन ... ... | १७ |
| छौर, पछने, सिंधियों और जोंकों के विषय में ... | १८ |
| दोषों की अधिकता का वर्णन | १६ |
| शरीर को रोगों से रक्षा करने का विषय ... ... | २० |
| शिरके रोग का वर्णन ... | २१ |
| शिरोरोग का यत्न ... ... | २२ |
| इतरीफल मुलय्यन... ... | २२ |
| पाशोया ..., ... ... | २२ |
| लाभ ... ... ... | २३ |
| हरीरा ... ... ... | २३ |
| महुवे के फूलों का तेल ... | २४ |
| नास ... ... ... | २४ |
| हद्द का शर्बत ... ... | २६ |
| सूँघने की दवा ... ... | २७ |
| लाभ : ... ... | २७ |
| लेप ... ... ... | २७ |
| पीसकर फूँकने की औषधि ... | ३० |
| इस्पन्द का तेल ... ... | ३२ |
| शतावर का तेल ... ... | ३२ |
| टपकाने की औषधि ... | ३२ |
| सरसाम की विधियों और औषधियों का वर्णन ... ... | ३२ |
| कद्दू का तेल ... ... | ३३ |
| नीलोफर का तेल ... ... | ३३ |
| मिरगी का वर्णन ... ... | ३४ |
| मिरगी की औषधियां ... | ३४ |
| गुललाला का शरबत ... | ३६ |
| नाक में फूंकने की औषधि ... | ३७ |
| सकते की औषधि का वर्णन | ३८ |
| नाक में टपकाने की औषधि... | ३८ |
| निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने के रोग के विषय में ... | ३६ |
| मालकांगनी के तेल के निकालने की विधि ... ... | ४० |
| द्वार व सदर बीमारियों का वर्णन ... ... ... | ४० |
| सुबात अर्थात् अधिक सोने की दवाओं के विषय में ... | ४१ |
| सहर अर्थात् निद्रा न आने की औषधियों का वर्णन ... | ४१ |
| लकवह और फ़ालिज अर्थात् अर्दितरोग के विषय में ... | ४३ |
| माउल असल के बनाने की रीति | ४३ |
| अयारजफैक़रा की तरकीब पिछले हकीमों की तरकीब पर | ४४ |
| गोली वैद्यक की रीति पर ... | ४४ |
| लकवे की और गोलियाँ ... | ४५ |
| फ़ालिज के लिये वैद्यों की आजमाई हुई औषधि... ... | ४६ |
| मलने की औषधि ... ... | ४६ |
| वायु और कफके दूर करने का तेल | ४८ |
| फ़ालिज के लिये बावची का तेल | ४८ |
| लहसुन की माजून... ... | ४६ |
| बावची की माजून... ... | ४६ |
| नाक में टपकाने की औषधि... | ५० |
| मालख़ोलिया अर्थात् विक्षिप्त | |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| होने का यत्न ... ... | ५० |
| अमलबेद की सिकंजबीन ... | ५१ |
| नाक में टपकाने की औषधि... | ५१ |
| औषधि नाक में टपकाने की... | ५२ |
| शरीर के फड़काने का यत्न... | ५३ |
| अंगों के कांपने का यत्न ... | ५३ |
| आँख की ललाई दूर करने की औषधियां .. ... | ५६ |
| आंखों की पैत्तिक पीड़ा को दूर करने की औषधि ... ... | ५७ |
| नेत्रपीड़ा को तत्काल दूर करने की औषधि ... ... | ५७ |
| रतौंधी का यत्न ... ... | ५६ |
| दिनौंधी का यत्न ... ... | ६१ |
| पलकों के मोटा हो जाने का वर्णन | ६१ |
| सलाक का गुणकारक यत्न ... | ६१ |
| काजल पारने की रीति ... | ६३ |
| मोतियाबिन्दु का यत्न ... | ६३ |
| पानी उतरने के बन्द करने का यत्न | ६४ |
| बच की माजून ... | ६४ |
| मोतियाबिन्दुनाशक सौंफ का सुरमा ... ... ... | ६४ |
| सेवती का सुरमा ... ... | ६४ |
| आँख और पलकों की खुजली का यत्न ... ... ... | ६५ |
| मनुष्य के शिर के बालों का सुरमा ... ... ... | ६६ |
| नेत्र की ज्योति का यत्न ... | ६६ |
| मुंडी के शरबत का नुसखा ... | ६७ |
| सौंफ का चूर्ण ... ... | ६७ |
| ज्योतिकारक सुरमा ... | ६८ |
| सबलबाय और आँख की सफ़ेदी इत्यादि का वर्णन ... | ६६ |
| बारहसिंगे के सींग की गोलियां | ७१ |
| जाले को दूर करने और मोतियाबिन्दु को खोदेने का सुरमा ... ... ... | ७१ |
| टपकाने की दवा ... ... | ७३ |
| मुंडी की माजून ... ... | ७४ |
| ढलका अर्थात् आँख से प्रतिसमय आंसू बहने का यत्न... | ७४ |
| करंजे का यत्न ... ... | ७५ |
| अरब का यत्न ... ... | ७५ |
| गुर्च का तेल ... ... | ७६ |
| घांजनी का यत्न ... ... | ७६ |
| शईरह वह लंबाशोथ जो पलक पर जौके आकार का होता है | ७६ |
| प्रबाल का यत्न ... ... | ७७ |
| कर्णरोग का यत्न ... ... | ७७ |
| मूली का तेल ... ... | ७७ |
| ऊंचा सुनने का यत्न ... | ८० |
| इन्द्रायन का तेल ... ... | ८० |
| कान के घाव का यत्न ... | ८१ |
| कान बहने और उसके मैल के निकालने का यत्न... ... | ८२ |
| कान के शोथ का यत्न ... | ८३ |
| कान के कीड़ों का यत्न ... | ८३ |
| औषधि ... ... ... | ८३ |
| कान की खुजली का यत्न ... | ८४ |
| कान में पानी रहजाने का यत्न | ८४ |
| नाक के रोगों का यत्न ... | ८४ |
| जुकाम और नजले का यत्न ... | ८६ |
| ख़शख़ाश का ख़मीरा ... | ८७ |
| नाक की बदबू का यत्न ... | ८६ |
| बहुत छींकों के आने का यत्न | ६० |
| पीनस का यत्न ... ... | ६० |
| मुँह के रोगों का यत्न ... | ६० |
| दांतों के रोगों का यत्न ... | ६० |
| दांतों की पीड़ा का यत्न ... | ६१ |
| दांतों के खट्टे होने का यत्न ... | ६८ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| दांतों में छिद्र होने का यत्न ... | ९८ |
| लड़कों के दांत सुगमता से निकलने की औषधियां ... | ९८ |
| जिह्वा के रोगों की औषधियां... | ९९ |
| जिह्वा के दाह का यत्न ... | ९९ |
| जिह्वा के दानों का यत्न ... | ९९ |
| ओंठों के फट जाने का यत्न ... | १०२ |
| कंठ के रोगों का यत्न (खुनाक) | १०२ |
| शहतूत का वर्णन ... ... | १०३ |
| गरगरा अर्थात् कुल्ली ... | १०३ |
| आवाज़ के पड़जाने का यत्न... | १०५ |
| कंठमाला की औषधियों का यत्न | १०६ |
| कंठ में जोंक के लिपट रहने का यत्न ... ... ... | १०८ |
| हृदयरोगों का यत्न ... ... | १०८ |
| तम्बाकू का शरबत... ... | ११४ |
| सिल के रोग का यत्न ... | ११६ |
| लड़कों की पसली के रोग का यत्न | ११७ |
| घुड़चढ़ी की गोली ... ... | ११८ |
| दूसरा घुड़चढ़ी का नुस्खा ... | ११९ |
| पहलू की पीड़ा का यत्न ... | ११९ |
| खांसी के रोग का यत्न ... | १२० |
| अमलतास की गुलक़न्द ... | १२३ |
| अमलतास की चटनी ... | १२४ |
| दालिम की चटनी ... | १२४ |
| ख़शख़ाश की चटनी ... | १२४ |
| गोंद की चटनी ... ... | १२४ |
| पुस्तकनिर्मापक की बनाई हुई चटनी ... ... ... | १२५ |
| काढ़ा निर्मायक का वर्णित ... | १२५ |
| रुधिर थूकने का यत्न ... | १२६ |
| क़रबा की टिकिया ... | १२६ |
| गुलनार की टिकिया ... | १२६ |
| आश्चर्यदायक औषधि | १२७ |
| हुबुल्लास का शरबत ... | १२७ |
| मानसी रोगों का यत्न ... | १२८ |
| चन्दन का ख़मीरा ... .. | १२८ |
| गावज़बां का शरबत ... | १२८ |
| रेशम का शरबत ... ... | १२८ |
| रुई के फूलों का शरबत ... | १२८ |
| रगतरे का शरबत ... ... | १२९ |
| अनन्नास का शरबत ... | १२९ |
| ताम्बूल का शरबत ... | १२९ |
| जहरमोहरा ... ... | १३० |
| चांदनी के फूलों का गुलक़न्द... | १३० |
| सेवती का गुलक़न्द ... | १३० |
| गुड़हल का गुलक़न्द ... | १३० |
| हरसहार का गुलक़न्द ... | १३० |
| माजून मन को बलदायक ... | १३१ |
| खस का अरक़ ... ... | १३२ |
| धनिये का अरक़ ... ... | १३२ |
| अब्बासी का ख़मीरा ... | १३२ |
| मूर्च्छा का यत्न ... ... | १३३ |
| कुचों के रोग का यत्न लेप ... | १३३ |
| मेदे अर्थात् पक्काशय का यत्न | १३५ |
| सोंठ की जवारिश .. ... | १३५ |
| मीठे और खट्टे ऊदका पाक... | १३५ |
| कुन्दर का पाक ... ... | १३५ |
| सादे आमले का पाक ... | १३६ |
| सादी अजवायन का पाक ... | १३६ |
| सादी कुलींजन का पाक ... | १३६ |
| कलौंजी का पाक ... ... | १३६ |
| मस्तगी का पाक ... ... | १३७ |
| वज का पाक ... ... | १३७ |
| पुदीने की माजून ... ... | १३७ |
| अनीसून का पाक ... ... | १३७ |
| लोहे के मैल का पाक ... | १३७ |
| बड़ा इतरी फल ... ... | १३८ |
| नोन की गोली ... ... | १३८ |
| सनाय की गोली ... ... | १३८ |

| विषय | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| सुहागे की गोलियां... | ... | १३९ |
| नोन की गोली ... | ... | १४० |
| लाल हरताल का रस | ... | १४२ |
| बेद अंजीर का तेल | ... | १४३ |
| सोये का तेल ... | ... | १४३ |
| नकछिकनी का तेल | ... | १४३ |
| शुण्ठ्यादि चूर्ण | ... | १४३ |
| अनारदाने का चूर्ण | ... | १४४ |
| भोजन के पाचन का चूर्ण | ... | १४४ |
| पान का अरक़ ... | ... | १४४ |
| बालछड़ का शरबत | ... | १४५ |
| नाजबो का शरबत .. | ... | १४५ |
| विसूचिका अर्थात् हैज़े का यत्न | | १४६ |
| हिचकी का यत्न ... | ... | १४७ |
| कुन्दर की टिकिया... | ... | १४८ |
| प्यास की अधिकता का यत्न ... | | १४९ |
| पक्वाशय में दूध और रुधिर के जमने का यत्न और लक्षण... | | १४९ |
| स्वभाव जो कोइला और मिट्टी खाने की इच्छा करने का यत्न | | १५० |
| जी के मतलाने और उबकाई आने का यत्न ... | ... | १५० |
| कालीमिरच की गोली | ... | १५३ |
| कलेजे के रोगों का यत्न इस्तस्का अर्थात् जलंधर ... | ... | १५- |
| यरकां अर्थात् कमलवायु का यत्न ... ... | ... | १५८ |
| नाक में टपकाने की औषधि | | १५९ |
| तिल्ली अर्थात् तिल्लीकी सख्ती का यत्न ... ... | ... | १६१ |
| अक़तैमून की सिकंजबीन | ... | १६१ |
| तुरबुद की गोली ... | ... | १६२ |
| सँभालू की टिकिया | ... | १६२ |
| समगोंदर की गोली... | ... | १६२ |
| एलवे की गोली ... | ... | १६३ |
| फ़राश के पत्तों का शरबत ... | | १६६ |
| आंतों के रोग और अतीसार का यत्न ... ... | ... | १६६ |
| नरंकचूर की जवारिश | ... | १६६ |
| बेरों का चूर्ण ... | ... | १७३ |
| जहीर का यत्न ... | ... | १७६ |
| पेट के कीड़ों का यत्न | ... | १८६ |
| कांच के निकल आने की औषधि .. ... | ... | १८८ |
| बवासीर का यत्न ... | ... | १८९ |
| कालीज़ीरी का चूर्ण | ... | १९३ |
| अखरोट का चूर्ण ... | ... | १९३ |
| हुलहुल का चूर्ण ... | ... | १९३ |
| करंजुवे का चूर्ण ... | ... | १९४ |
| गुले सद्वर्ग का अरक़ | ... | १९९ |
| गुरदे और फुकनी के रोगों का यत्न ... ... | ... | १९९ |
| अंगूर के पत्तों का शरबत | ... | २०० |
| हजरूल यहूद की फंकी | ... | २०० |
| गुलदावदी की फंकी | ... | २०० |
| सूज़ाक का यत्न ... | ... | २०३ |
| काकुंज की कुरस अर्थात् टिकिया... ... | ... | २०६ |
| मूत्र के अधिक आने का यत्न | | २०८ |
| मूत्र बन्द हो जाने का यत्न ... | | २१० |
| मूत्र के रुधिर के आने का यत्न | | २११ |
| नपुंसकता का यत्न... | ... | २१२ |
| लहसुन का तेल ... | ... | २२४ |
| चमेली की पत्तियों का तेल ... | | २२५ |
| उन रोगों का यत्न जो मुख्य ... स्त्रियों के होते हैं-स्त्री के बांझ न होने का यत्न ... | ... | २४० |
| गर्भवती के यत्न का वर्णन ... | | २४१ |
| वह औषधि जो गर्भ गिरने न दें ... ... | ... | २४२ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| कठिनता से प्रसूति होने का यत्न ... ... ... | २४३ |
| उन ओषधियों का वर्णन कि स्त्री को बांझ करें ... ... | २४५ |
| भग के संकीर्ण करने का यत्न | २५० |
| सुहाग सोंठि ... ... | २५१ |
| स्त्री के ऋतु के रुधिर के अधिक बहने का यत्न ... ... | २५१ |
| सुपारी पाक ... ... | २५३ |
| शूलरोग का यत्न ... ... | २५६ |
| शरीर के प्रकट रोगों का वर्णन और आतशक का यत्न ... | २६५ |
| इन्द्रायण का शरबत ... | २६६ |
| कोढ़ का यत्न ... ... | २७४ |
| शीशम का शरबत ... ... | २७७ |
| शिर के गंज का यत्न ... | २७७ |
| गधे की लीद का तेल ... | २७८ |
| आंब के अचार का तेल ... | २७६ |
| बकायन के फल का तेल ... | २७६ |
| फ़राश का तेल ... ... | २७६ |
| बरस व बहक अबैस अर्थात् सफ़ेद दाग़ का यत्न ... | २७६ |
| घूंस का तेल ... ... | २८१ |
| नारू का यत्न ... ... | २८४ |
| रक्त पित्त का यत्न उसको सुर्ख बादामी बोलते हैं .. | २८६ |
| दाद का इलाज ... ... | २८७ |
| तर और ख़ुश्क खुजली का यत्न ... ... ... | २८६ |
| बग़ल की दुर्गंधि का यत्न ... | २६६ |
| उंगलियों के फूलने और उनकी खुजली का यत्न ... ... | २६४ |
| हर प्रकार के व्रणों के मरहमों का वर्णन ... ... | २६८ |
| उन दानों का यत्न जो बरसात में पैदा होते हैं ... ... | ३०२ |
| नासूर का यत्न ... ... | ३०४ |
| उन ओषधियों का वर्णन जो रुधिर को बन्द करती हैं ... | ३०६ |
| आग से जलने का यत्न ... | ३०६ |
| लेप करने की दवाइयां ... | ३०७ |
| बहुत मोटाई का इलाज ... | ३१० |
| शरीर के अधिक क्षीण होने का यत्न ... ... ... | ३१० |
| मुहासों का यत्न ... ... | ३११ |
| मुख का रंग बराबर हो जाने का यत्न ... ... ... | ३११ |
| काले दाग़ का यत्न ... ... | ३१३ |
| छीप की दवायें ... ... | ३१४ |
| मस्से और तिल की दवायें ... | ३१५ |
| बद का यत्न ... ... | ३१५ |
| शोथ का यत्न ... ... | ३१७ |
| छोटे दानों को जिन्हें फुन्सियां बोलते हैं उनका यत्न ... | ३२१ |
| हाथ पांव के फ० जाने का यत्न ... ... ... | ३२२ |
| जूं के अधिक होने का यत्न ... | ३२३ |
| सिरका जिसे हिंदी में बफा बोलते हैं उसका यत्न ... | ३२३ |
| ना.ख़ूनों की दवायें ... ... | ३२३ |
| चेचक का यत्न ... ... | ३२४ |
| बालों की दवायें ... ... | ३२६ |
| वह ओषधियां जो बाल निकलने न दें ... ... ... | ३२८ |
| लू लगने का यत्न ... ... | ३२६ |
| ज्वर का यत्न ... ... | ३३० |
| खस का खमीर ... ... | ३३४ |
| आनन्दभैरव की गोली ... | ३३७ |
| बोहरान का वर्णन ..., | ३४२ |
| बोहरान जय्यद के बारहों दिन | |

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| दोहों में... ... ... | ३४३ | दीवाने कुत्ते का यत्न ... | ३५१ |
| विष का यत्न ... ... | ३४३ | तौलों के नाम और उनका हाल ... ... ... | ३५३ |
| भिड़ के विष की गुणदायक... दवायें ... ... ... | ३५० | | |


इति सूचीपत्रम् ॥




# इलाजुल्गुरबा भाषा।

प्रकृति के विषय में।

वह बातें जो प्रकृति से सम्बन्ध रखती हैं वह सात हैं। उनमें से एक तत्त्व है। वह चार हैं अग्नि गर्म और खुश्क है; वायु गर्म व तर है; पानी ठंढा व तर है; खाक सर्द व खुश्क है। दूसरे के नवप्रकार हैं—चार विषम गर्म, सर्द, तर, खुश्क और चार संयुक्त गर्म खुश्क; गर्म तर; सर्द व खुश्क, सर्द व तर नवां मोतदिल अर्थात् मध्यम, वह दो प्रकारका है मोतदिल हक़ीक़ी और ग़ैरहक़ीक़ी मोतदिल हक़ीक़ी का कोई शरीर नहीं तीसरे दोष और वह चार हैं। एक रक्त है; जो गर्म व तर है। उत्तमोत्तम रुधिर लालरंग का मीठा व बिना दुर्गन्धि का होता है। जो इन गुणोंसे बदलजावे वह ठीक नहीं। दूसरा पित्त जो गर्म व खुश्क है। उत्तमोत्तम पित्त लालज़र्दी लिये तेज़ मज़ा है और ग़ैरतबई चार हैं:—मर्रासफ़रा, सफ़राय मुही, सफ़राय करासी, और सफ़राय ज़ंगारी। मर्रासफ़रा वह कि बाजे हिस्से पित्तके जलकर बाक़ी हिस्सों में मिलजायँ और रंग उसका गँदने के सदृश होता है। उसकी उत्पत्ति पक्वाशय में हैं। सफ़राय

जंगारी वह है जो बिकुल जलजाय और रंगत उसकी जंगार कीसी होती है। वह विषके तुल्य है। उसकी उत्पत्ति कलेजे से होती है। तीसरा, कफ जो ठण्ढा व तर है। उत्तमोत्तम कफ वह है, जो रुधिर होजावे और कफ ग़ैरतबई स्वाद के कारण होगा या क़वाम की राह से पतला है उसको माई कहते हैं व गाढ़ा उसको जस्सी और गच के सदृश वा अन्य अन्य क़वाम कि बाज़े भाग उसके पतले हों और बाज़े गाढ़े, उसको मखाती बोलते हैं। चौथा दोष सौदा वह सर्द और ख़ुश्क है। निर्मल सौदा रुधिर का तलछट है। उसका काला रंग खटाई लिये और सौदाय ग़ैरतबई (अर्थात् न्यूनाधिक्य) हर दोष के जल जाने से उत्पन्न होता है। यहाँ तक कि जो सौदा जलजावे और हर दोष का जलना उसके क़वाम के गाढ़े होने को कहते हैं। और दोष का न्यूनाधिक्य उस दोष के न्यूनाधिक्य के जल जाने से है। लाभ दोषों की उत्पत्ति द्वितीयबेर के पाचन से होती है। पाचनशक्ति चार हैं:—प्रथम पाचनशक्ति पक्वाशय में उसके रसको कैमूस कहते हैं। उसका फोग विष्ठा है। दूसरी पाचनशक्ति कलेजे में इसप्रकार से कि भोजन का रस महीन रगों से जो हृदय और पक्वाशय में है हृदय में आकर पचता है, उसके रसको कैमूस कहते हैं। उसका फोग मूत्र है। तीसरा हज़म अरूक़ अर्थात् रगें हैं। चौथा पचने का रस जोड़ों में है। इन दोनों पाचनशक्ति का फोग पसीना और मैल होकर बालों के छिद्रों के द्वारा और कुछ नाक कान आदि से दूर होता है। चौथे जोड़ हैं, उनके दो प्रकार हैं, अलग अलग और मिले हुए। अलग जोड़ों से हड्डियाँ, यह शरीर की मूल हैं। यह सब दोसौ अड़तालीस हैं। दूसरे कुर्री तीसरे पट्ठे वह दो प्रकार के हैं—एक ब्रह्माण्ड से उगे हैं, उनके सात जोड़ हैं, जोड़ों की प्रेरणा उन्हीं से है। दूसरे हराममग़ज़ से उगे हैं। वह इकतीस और एक फ़र्द है सिवाय गर्दन के सम्पूर्ण

जोड़ों की प्रेरणा उनसे सम्बन्ध रखती है। चौथे अज़ला अर्थात् अदला वे कुल पांचसौ उन्नीस हैं। पांचवें ताँत इन दोनों का लाभ कि जोड़ों को हिलाते हैं। छठे रुबात वह भी महीन पट्टे हैं। वह जोड़ों को बाँधते हैं; सातवें शराईन अर्थात् हिलानेवाली रगें जो मन से उगी हैं और वह सब रगें सिवाय शिरियान वरीदी के दो तह हैं। उनमें यह गुण है कि जीव को सम्पूर्ण शरीर में पहुँचाती हैं और दह अर्थात् स्थिररगें कलेजे की पीठ से उगी हैं और सब ओर वह शिरियानवरीदी के सिवाय दो तह हैं वह सम्पूर्ण शरीर में रुधिर पहुँचाती हैं। नवें झिल्ली कि वह जोड़ों की रक्षा करती है। यह सब जोड़ वीर्य से उत्पन्न होते हैं। दशवाँ मांस वह गाढ़े रुधिर से उत्पन्न होता है और चरबी रुधिर के पतले पानी से उत्पन्न है और सफ़ेद मांस जिससे मनुष्य मोटा होता है मेद और मज्जा से संयुक्त है। ग्यारहवें त्वचा और बाल और नाख़ून बाज़े हकीमों ने इनको जोड़ गिना है और बाज़ोंने मल और आज़ायरईस जिनसे मनुष्य का जीवन है तीन हैं:— मन, ब्रह्माण्ड, कलेजा और जिनके कारण मनुष्यत्व रहे चार हैं। ऊपर वर्णन किये हुए तीन जोड़ों में चौथी लिंगेन्द्रिय है। पाँचवें प्राकृतिक विषयों में प्राण हैं वे प्राण एक उत्तम धुवें के सदृश हैं कि दोषों की उत्तमता से उत्पन्न होते हैं। प्राण तीन प्रकार के हैं:—रूह हैवानी जो मन में है; रूह नफ़सानी जिसका स्थान ब्रह्माण्ड है; और रूह तबई जिसका स्थान हृदय है। छठे मानसी विषयमें बलहै और वह तीन प्रकार का है:—एक कुव्वत हैवानी, जो मन में है; दूसरे कुव्वत नफ़सानी, जो ब्रह्माण्डमें है; तीसरे कुव्वत तबई जो हृदय में है। कुव्वत नफ़-सानी भी दो प्रकार की है मदरका अर्थात् मालूम करनेवाली और हिलानेवाली। प्रगट में पांच हैं, सुनना १ देखना २ स्पर्श करना ३ चखना ४ सूँघना ५ और अप्रगट भी पांच हैं ख़याल, वहम, बिचार, स्मरण और क्रोध।

### अवस्था बिचार।

अवस्था चार हैंः—एक बढ़नेवाली, जो तीस बर्ष पर्यन्त है; दूसरी जवानी, जो पैंतीस बर्ष पर्यन्त है और बाज़े चालीस बर्ष तक बताते हैं। इस अवस्था में विशेष करके पित्त की प्रबलता रहती है। तीसरी अवस्था अधेड़ जो साठ बर्ष पर्यन्त है। इस अवस्था में शीत का अधिकार रहता है। चौथी अवस्था बुढ़ापा यह साठ बर्ष से आयु के पूर्ण होने पर्यन्त है। इस आयु में शीत तरी के साथ प्रकृति पर बेग करता है और स्त्री नपुंसक की प्रकृति मर्द सर्द के मुवाफ़िक़ होती है।

### सते जरूरिये ( छः आवश्यक वस्तुओं का वर्णन। )

प्राणों के लिए ये ज़रूरी चीज़ें हैं उनमें से एक वायु है। उत्तमोत्तम वायु वह है जिसमें बुख़ार और धुवां मिला न हो। वायु हर ऋतु में बदलती रहती है। ऋतु चार हैं—सैफ़, ख़रीफ़, सता, और रबीअ़ हकीमों के बिचार से ख़रीफ़ और रबीअ़ का समय डेढ़ डेढ़ महीने का होता है और सैफ़ अर्थात् गर्मी और शीत अर्थात् सर्दी के साढ़े चार २ महीने होते हैं। रबीअ़ में वायुका गुण गर्मतर, गर्मी में गर्म ख़ुश्क, ख़रीफ़ में सर्द ख़ुश्क और जाड़े में सर्दतर होता है। हिंदुस्तान में तीन ऋतु होती हैं, गर्मी, बरसात और जाड़ा। इन तीनों ऋतुओं का समय चार चार महीने का है। गर्मी फागुन से शुरूअ़ होती है और चैत, बैशाख, ज्येष्ठपर्यन्त रहती है। यदि गर्मी का प्रारम्भ फाल्गुन से है; परन्तु रात्रि से प्रभातपर्यन्त सर्दी रहती है और दिनको दोपहर के वक्त़ गर्मी होती है। इस महीने में सर्दी और गर्मी से बचना चाहिये; ताकि शरीर पीड़ा आदि से रक्षित रहे। गर्मी में थोड़ा भोजन करना चाहिये। इस ऋतु में, गर्मी के कारण, ठण्ढाजल बहुत पिया जाता है, जिससे पाचनशक्ति निर्बल हो जाती है। इस ऋतुमें ठंढी चीज़ों का सेवन और ठण्ढे मकानों में रहना चाहिये।

बरसात का प्रारम्भ आषाढ़ से और श्रावण, भादों तथा कुवार तक रहता है । बरसात की दशा गर्मी और सर्दी इन दो ऋतुओं से भिन्न होती है । जब जल बरसता है तो पवन शीतल और जब नहीं बरसता तो गर्म होजाती है । यह ऋतु जल वायु के विरुद्ध होने और सर्दी गर्मी के कारण मनुष्य-शरीर के लिये अच्छी नहीं है ।

जाड़े का प्रारम्भ कार्त्तिक से और अगहन, पूस तथा माघ तक रहता है । शीत ऋतु में पाचनशक्ति बलवती होती है । भीतर गर्मी रहती है । इस ऋतु में अधिक भोजन करने से कुछ हर्ज नहीं होता और परिश्रम करना गुणकारी है । पाचनशक्ति के लिये यह ऋतु सम्पूर्ण ऋतुओं से उत्तम है । गर्मी के प्रारम्भ होते ही बहुधा रोग उत्पन्न होते हैं । और जबतक वायु ऋतु के अनुकूल न होजावे शान्त नहीं होते ।

दूसरा सता जरूरिया खाना पीना है ।

जिस भोजनसे पतला रुधिर उत्पन्नहो, उस भोजन को लतीफ़ ( श्रेष्ठ ) कहते हैं और जिस भोजन से गाढ़ा रुधिर पैदा हो उसको कसीफ़ ( नेष्ट ) कहते हैं । जिस भोजन से उत्तम रुधिर उत्पन्न हो, वह भोजन महमूदउल्कैमूस है, और जिससे नष्ट पैदा हो वह रसउल्कैमूस । जिससे बहुत रुधिर प्राप्त हो वह कसीरुल्ग़िज़ा कहलाता है । नहीं तो क़लीलुल्ग़िज़ा जानना चाहिये । आरोग्यता के रक्षक को उचित है कि दो दिन में तीन बार भोजन करने का अभ्यास डाले । यानी एक दिन सुबह और शाम दो वक़्त, और दूसरे दिन दोपहर में दिन को भोजन करे और सच्ची भूख विना न खावे । भोजन अच्छी तरह चबावे ताकि जल्दी पचजावे और जब दो तीन ग्रास की क्षुधा शेष रहे छोड़ दे ताकि पचने के समय अफरा और बोझ पक्वाशय में न हो । आरोग्यता में उपाधि करने के वास्ते भोजन की आधिक्यता से अधिक कोई ख़राब नहीं; इसी कारण हकीम लिखते

हैं कि बहुत से शरीर के रोग पेट भरे रहने से उत्पन्न होते हैं। जबतक भोजन पच न जावे तबतक जोड़ों का हिलाना जैसे मैथुन, परिश्रम और दौड़ना बुरा है । यदि चिकना भोजन अधिक खाया हो तो उसकी दुरुस्ती नमकीन चीज़ से करे और जो खट्टी चीज़ खाई हो तो उसकी दुरुस्ती मीठी चीज़ से करे । जो गाढ़ी और उत्तम वस्तु जमा हो तो पहिले उत्तम चीज़ खावे और सच्ची भूख में अवश्य भोजन करे । न खाने से दुष्ट मल पक्काशय में गिरते हैं । मनुष्य के वास्ते उत्तमोत्तम भोजन गेहूंकी रोटी और हलवान का मांस है । यह भोजन नहीं किन्तु यह भोजन और औषध दोनों का काम देता है ।

अन्न का विषय ।

मनुष्य के लिये उत्तम अन्न गेहूं है क्योंकि पाचनशक्ति अधिक रखता है और गर्मी तथा सर्दी में सम है । इसके उपरांत खाने के लिये चावल भी उत्तम हैं । जितने सुगन्धवाले, महीन, पकाने पर लम्बे हों और साबित रहें वही उत्तम होते हैं। चावल गर्मी और सर्दी में समान, परन्तु दूसरे दरजे में खुश्क हैं । बाज़े हिन्दुओं के विचारसे ठंढा है और मुख्य करके गर्म स्वभाव में गर्मी और ठंढे स्वभाव में सर्दी पैदा करता है । लाल और गुंदे चावल पाचनशक्ति में कम हैं और क़ब्ज़ अधिक करते हैं । गेहूं की भूसी में पकानेसे चावल की दुरुस्ती हो जाती है । इनके उपरांत मूंग है, यह ठंढा और कुछ खुश्क है । शीघ्र पचता है और अफरा नहीं करता इसीलिये बहुत से वैद्य इसको रोगों में खाने को देते हैं । इसके उपरान्त चना, यह गर्म है; छिलका उसका तर है । उसमें पाचनशक्ति अधिक और बलदायक है, परन्तु उदर में बायु पैदा करता है । उसके उपरान्त जौ ठंढा, खुश्क, हलका, अफरा का करनेवाला और क़ाबिज़ है । पुराने जौ जिसको एकवर्ष बीता हो अच्छे होते हैं मसूर और अरहर इन सबमें मसूर कुछ खुश्क, ठंढा और उसका छिलका अरहर से गर्म

है। अरहर गर्म, खुश्क और कई वैद्यों के बिचार से मसूर के समान है और अफ़रा मसूर से अधिक रखता है। यह दोनों बुरे दोष पैदा करते हैं और उड़द सर्द और तर है, साथही देरमें पचता है। उसके दुरुस्त करनेंवाली सोंठ और हींग है। अरहर और मसूर से पाचनशक्ति अधिक रखता है। यदि क़ब्ज़ न करे और पच जावे तो अपनी लस से दूध और बीर्य पैदा करता है। बाजरा ठंढा, खुश्क, क़ाबिज़ और पाचनशक्ति कम रखता है और खून को पैदा करता है। इसी कारण मुख में दाने पैदा करता है और खुश्की और प्यास अधिक लगाता है। इसी कारण हिन्दू लोग इसको गर्म कहते हैं। दुरुस्त करनेवाला इसका दूध है। जुवार सफ़ेद और गुन्दी अफरा कम करती है और खाने में अच्छी है परन्तु बद्धकोष्ठकारक है। मोठ को हिन्दू गर्म और खुश्क जानते हैं, अफरा करती है। बुरे दोषों को उत्पन्न करने ाली और देर में पचती है। मटर अफरा करनेवाला, उपद्रवी, दोष का पैदा करनेवाला और अतीसार का कारण है। देहातियों का अन्न काकुन, मेडुवा, सावां और कोदों हैं। मेडुवा और काकुन सावां और कोदों स उत्तम हैं। यह तीनों ठण्ढे खुश्क बद्धकोष्ठकरनेवाले और हल्के हैं। इनका दुरुस्त करनेवाला घी है।

ख़मीरी रोटी जो खट्टी न हो तो सादी रोटी से उत्तम है और जल्दी पचती है, परन्तु सादी रोटी से अफरा अधिक करती है और सादी राटी ख़मीरी से देर में पचती है। मैदे की रोटी बहुत भारी होती है और वह रोटी जिसमें भूसी अधिक हो हल्की होती है। उससे सुद्दा नहीं पड़ता है। गर्म रोटी खाना कोष्ठकी तरी को खुश्क करता है। ठण्ढी रोटी कोष्ठ को तर करती है और जो रोटी कि सर्दी और गर्मी में समान है उसका खाना उत्तम है। सूखी रोटी खुश्की करनेवाली और देर में पचती है। बाजरे और जुवार की रोटी ठण्ढी खुश्क और क़ब्ज़ करनेवाली और कोष्ठकी हानिकर है जो की रोटी बाजरे से शीघ्र पचती है; परंतु

ठण्ढी खुश्क और अफरा करती है। जानना चाहिये कि उत्तम भोजन मनुष्य के लिये मांस है। पैग़म्बरसाहब के वचन के अनुकूल लोक परलोक का सुन्दर भोजन मांस है। परदार जानवरों का मांस चौपायों के मांस से हलकाहै। परदार जानवरों में मुरग़ा, तीतर, बटेर, हंस, लवा, चिड़िया, सब्ज़क का मांस उत्तम है। चौपायों में बकरी, भेड़, मेढ़ा, हरिण विशेष करके इनके बच्चों का मांस उत्तम है। परंतु हरिण के मांस में गरमी अधिक है। ऊँट ऐसे बड़े जानवरों का मांस मोटा है क्योंकि जितना पशु बड़ा और मोटे शरीर का हो मांस उसका मोटा होता है। मांस में तरकारी डालकर, रोटी से खाना वह भोजन ही मानों औषधि है और सादा क़लिया और क़बाब उत्तम सालन है। क़लिये से उत्तम मांस पैदा होताहै परन्तु क़बाब से अच्छा नहीं। पुलाव उत्तम भोजन है और दूध चावल से मनी अर्थात् वीर्य पैदा होता है।

### जल का वर्णन।

नदी का जल उत्तम है। उसके उपरान्त कुएँका पानी सच्ची प्यास लगने पर पीना चाहिये, चाहे भोजन करते हुए लगे या उसके पीछे। भोजन करने के उपरांत दो तीन घड़ी के पीछे पानी पीना अच्छा है। भोजन करने के पीछे तत्काल पानी पीना उत्तम नहीं; परन्तु जिस मनुष्य की गरम प्रकृति हो और कोष्ठ में गरमी रखता हो उसे उचित है कि भोजन में थोड़ा पानी पिये, एकही बार बहुत न पीले। भूख के समय पानी कम पिये। चूसने की रीति से पिये या पानी के बदले शरबत या थोड़ा भोजन खाकर पिये ताकि हानि कम हो। निहार मुँह पानी पीना निषेध है क्योंकि यह बुढ़ापे और रोगों का कारण है। इसीप्रकार रात्रि को जागतेही पानी पीने से नज़ला पैदा होता है। परिश्रम करने, मैथुन करने, नहाने और तर मेवों के सेवन ( जैसे तरबूज़ और खरबूज़े आदि ) के

उपरान्त पानी पीना बहुतही अवगुण करता है। हर समय बहुत पीना हानिकर है। बे क़लईदार तांबे के बर्तन में और शीशे के बांसन में पानी पीना मना है। जो सफ़र आदि में तरह तरह के पानी पीने का अवसर पड़े तो उसके अवगुण के दूर करने के लिये कच्चा प्याज़ खाना चाहिये। जो भंग पीने का अभ्यास रखता है। उसे भी पानी नहीं लगता।

तीसरा सता ज़रूरिया सोना जागना है। चित सोना मना है। यह विपरीत स्वप्नों और दिमाग़ अर्थात् भेजे को हानिकारक है। जो अभ्यास भी हो तो छोड़ दे। पट इसतरह से सोना कि शिर को तकिये पर ऐसा रक्खे कि मुँह और दोनों आंखें दहिनी या बांईं तरफ़ झुकें, गुण करता है और भोजन पचता है। बांईं और दहिनी करवँट सोना हानि नहीं करता। निहार सोना नज़ला पैदा करता है। भूख में सोना शरीर को क्षीण करता है। धूप में सोना मना है। चांदनी में गुण-दायक है। बहुत सोना सरदी और तरी का चिह्न है। अधिक जागना गरमी और खुश्की की निशानी है। सोने और जागने में समभाव रखना उत्तम है अर्थात् न बहुत जागे न बहुत सोवे, क्योंकि बहुत जागना क्षीणता और तबाही का कारण है और बहुत सोना मांदगी और इन्द्रियों के आलस्य का कारण है।

चौथा सता ज़रूरिया लाभकारी बेगों का रोंकना और उपद्रवकारक मल से शरीर को ख़ाली करना है, मनुष्य को दो बार दिशा जाना चाहिये यह शरीर की आरोग्यता का कारण है। बद्धकोष्ठकी दशा में उचित है कि उत्तमोत्तम शोरवों, पालक के साग और फ़िसलानेवाली चीज़ों का सेवन करे और क़ब्ज़ करनेवाले द्रव्यों से परहेज़ करे। क़ब्ज़ से भूख जाती रहती है। जो दो समय दिशा जावे और मल नरम हो तो क़ब्ज़ करने-वाले द्रव्यों का सेवन करे। हरतरह से अपना लाभ बिचार ले।

पाँचवाँ सता ज़रूरिया उसमें एक क्रोध और दूसरे खुशी

है । इन दोनों से जीवको बाहरकी ओर प्रेरणा होती है । गरमी और सरदी का गुण शरीर में मालूम होता है । प्रगट में शरीर गरम और अन्दर ठण्ढा होजाता है । तीसरे भय चौथे चिन्ता और उन दोनों से जीव को अन्दर की ओर प्रेरणा होती है । प्रगट में-शरीर ठण्ढा और अन्दर गरम होजाता है । पांचवें लज्जा इसमें पहिले जीव भीतर प्रेरणा करता है फिर बाहर की ओर को किसी समय प्रगट में गरम होता है और किसी समय अन्दर, इसवास्ते लज्जावान् का मुख कभी लाल हो जाता है ।

छठा सता ज़रूरिया स्थिर और अस्थिरता है । सामान्य शरीर का हिलना चलना शरीर को गरम करता और मल को निकालता है । अधिक चलना शरीर को ठण्ढा करता है । उससे पित्त पचता है और अधिक स्थिरता से भोजन नहीं पचता और चलने में यह बड़ाभारी गुण है जो भोजन को कोष्ठ से पकाशय में पहुँचाता है । वह परिश्रम जिससे सब शरीर के अंग फुर्त हों बदन की क्रीमिया है । अंग की सूरत दुरुस्त करता है, रोगोंको दूर करनेवाला, गरिष्ठता को पचानेवाला, स्वभावका बलदायक, शरीर को आरोग्यता देनेवाला है, मुख्य एक अंगका श्रम उसी अंगका बलदायकहै परन्तु समभावसे हो अधिक नहीं। मलना और दबाना भी एक प्रकारका श्रम है जो मलको दूर करे परन्तु बहुत मलने और दबाने से शरीर क्षीण होजाता है । समभावसे मलने और दबाने से पुष्टता होती है मैथुन का उपाय वह भी शरीर में आवश्यक है मैथुन समभाव से आवश्यकता के अनुकूल बलवान् को बलवान् करता है और उसकी यह रीति है कि अति आवश्यकता पर जब लिंग खड़ाहो तो मैथुनकरे इस शर्तपर कि यहबात सहजस्वभाव और सुन्दर स्त्री के विचारने और उसका स्वरूप देखने बिना केवल वीर्य की अधिकता और इच्छा से हो क्योंकि बुद्धिमानों ने लिखा है कि वीर्य का बिन्दु जीव का जल है जो उससे मनुष्य उत्पन्न होता है उस बहु मूल्य मोती को कुसमय

और व्यर्थ अलग न करना चाहिये । अधिक मैथुन की हानि लिखी नहीं जासकती है जो पुरुष युवावस्था में अधिक वीर्य से बहुतही मैथुन करते हैं उसकी अधिकता से जल्द बूढ़े होकर दुःख झेलते हैं और बहुत बुरा है—मैथुन वह है जो बिना इच्छा औररंजसे हो। कम उमर, बुढ़िया, ऋतु के समयवाली स्त्री से, कुरूपा, रोगिनी स्त्री से भोग करना अरुचिकारक है और अति हानि करता है। उत्तम यह है कि इस कार्य में लगा न रहें, बराबर भोग न करे, दो बेर मैथुन में तीन दिनका अन्तर अवश्य चाहिये । वैद्य एक बेरके भोग के उपरान्त तीन दिनकी मोहलत उचित जानते हैं।

नहाने का उपाय ।

ग़रीबों को हम्माम मयस्सर नहीं, इसलिये कुछ लाभ और हानि नहाने की लिखी जाती है । ठंढे पानी में नहाने से गुनगुने पानी से नहाना उत्तम है और हवा में ठंढे पानी से नहाना विशेष करके ठंढे स्वभाववाले को अवगुण करता है और कफ़ के स्वभाववाले को अधिक नहाना मना है और विशेष करके ठण्ढे पानी से नहाना नज़लेवाले और अतीसार के रोगी और लड़कों और बुड्ढों को हानिकर है और जब कोष्ठ में भोजन भरा हो और मैथुन के उपरान्त शीघ्र नहाना हानि करता है और बहुत दिनोंतक न नहाना शरीर को शीघ्रही भद्दा करता है और शरीर की कान्ति और सफ़ाई खो देता है। भोजन पचने के उपरान्त नहाना उत्तम है और जाड़ों की ऋतु में गरमी से कम नहाना चाहिये और मैथुन के उपरान्त नहाना और शरीर को मलवाना भी हानिकरहै और नहाना चाहे गरम पानी से हो या ठंढे पानी से हो पट्ठों को क्षीण करता है इसलिये गरम पानी से त्वचा और रगें ढीली होजाती हैं और ठण्ढे पानी से रगों में शीतमयी सरदी बढ़जाती है इसीकारण बहुतसे हिन्दुओं को जो सदा नहाते हैं चाहे युवावस्था में स्वभाव में गरमी होने से हानि कम मालूम होती है परन्तु जब युवावस्था से बढ़जाते हैं रगों

और गुरदे में निर्बलता के चिह्न प्रगट होते हैं और उनका वीर्य क्षीण पड़ जाता है और बाज़े हिन्दू कई बेर नहाते हैं दिशा के पीछे भी नहाते हैं यह नहाना उनके शरीर को बहुत दुःखदायक है।

नाड़ी के विषय में।

नाड़ी का मालूम करना हकीमों के लिये बहुतही कठिन है फिर विद्यार्थी क्या जानसकेंगे सो हम भी थोड़ा सा वर्णन करते हैं नाड़ी हिलानेवाले रगों का हिलना है जो सोखी हुई पवन से प्राण को समभाव प्राप्त हो नाड़ी उस समय देखना चाहिये कि रोगी क्रोध और प्रसन्नता और परिश्रम और मांदगी और आदत के छोड़ने से ख़ाली हो और नाड़ी पर हाथ रखना कम से कम उस नाड़ी के बारह बेर हिलनेतक देखना चाहिये परन्तु नाड़ी चार उंगल से लम्बाई में अधिक हो और उंगलियों को उसके हिलने का ज़ोर मालूम हो और शीघ्र चलती हो और छूने में गरम मालूम हो गरमी है, और जो चार उंगल से लम्बाई उसकी कम हो और उंगलियों पर ज़ोर न मालूम हो सरदी है और जो उंगलियों की चौंड़ाई से उसका हिलना अधिक हो वह अरीज़ है और मतली करनेवाली वह नाड़ी है जो शिरियान के भीतर दबाने से उंगलियों में नरमी मालूम हो। इस रीतिसे उसमें उसका संयुक्त होना प्रमाण है। जो नाड़ी एकही रीतिपर हो उत्तम है। जो सम न हो बुरी है और जो नाड़ी हरिण की भांति उछले तो भोजन के कच्चेपनेकी है या लहर के मानिन्दहो वह मौजी है या चींटी की भांति हो वह निमली है या कांपनी के मानिन्द हो वह मुरतअश है या तागा बटनेकी तरह हो वह मुल्तवी है या आरी के सदृश है वह मन्शारी है यह सब नाड़ी के प्रकार बिगड़े हुये और कमज़ोर हैं और पुरुषों की नाड़ी स्त्रियों से बलवान् होती है और लड़कों की नाड़ी नरम और कुछ जल्दी चलती है और जवानों की नाड़ी लम्बाई और चौड़ाई में अधिक होती है और बूढ़ों की नाड़ी सुस्त चलती है।

कारूरे का वर्णन।

क़ारूरा शीशी को बोलते हैं जोकि रोगी का मूत्र कई कारणों से शीशी में डालकर देखते हैं इसलिये मूत्र क़ारूरे के नाम से प्रसिद्ध होगया—जानना चाहिये कि मूत्रपरीक्षा में यह बातें चाहिये कि सुबहको मूत्र किया हो और सोने के उपरांत पानी न पियाहो। ऐसी वस्तु न खाई हो जिससे मूत्र रँगदार हो जाता है, जागने, क्रोध करने, मैथुन और मद्यसे भी मूत्र का रंग बदल जाता है। जो देरतक क़ारूरा रक्खारहे तो उसके देखने का कुछ निश्चय नहीं—जो मूत्रका रंग पीला हो तो पित्त और लाला हो तो रुधिर और सफ़ेद हो तो कफ़ और कालारंग सौदा अर्थात् दग्धित दोष और सब्ज़ रंग हो तो सरदी जानना—और जो मूत्र मांस के धोवन कासा हो कलेजे की नाताक़ती बताता है और जो दूध कासा रंग हो तो अंगों का खिलाना बतलाताहै—निज़िज अर्थात् मलके पकने का निशान पेशाबमें यह है कि पहिले पतला या गाढ़ा हो, फिर उसका समान क़वाम होजावे, ज्वर में सदा मूत्र का गाढ़ा रहना बुराई की निशानी है मूत्र का पतलापन सरदी बताता है, उसकी मुटाई दोष की अधिकता बताती है, मूत्र में बिल्कुल दुर्गन्ध न होना मिज़ाज में सरदी बताता है, दुर्गन्धि से दोष का सड़जाना मालूम होता है, मूत्र का बराबर करना हरबिषय में उत्तम है, मूत्र में कफ़की अधिकता और देरतक रहना अधिक बात के चिह्न हैं। जो मूत्र में सत्तू या छीछड़ों या तारों या बालू या चरबी के सदृश कोई वस्तु पाई जावे इसको रसूबतबई बोलते हैं चरबी जोड़के खिलने को बतलाती है और पीब अन्दर के फोड़े के फूटजाने को और मूत्र की थैली के पत्थर या गुरदे को बताती है। स्त्रियों का मूत्र पुरुषोंसे सफ़ेद और गहरा होता है और गर्भवाली स्त्रियोंका मूत्र साफ़ होताहै परन्तु उसमें कुछ धुनकी हुई रुई के सदृश मालूम होता है और गर्भ की आदि में मूत्र पतला होता है और अन्त में कुछ सियाही लिये

होता है—और तरीके स्वभाव से लड़कों और बुड्ढों का मूत्र गाढ़ा होजाता है—लाभ—वैद्यक की रीति से मूत्र देखने की रीति यह है कि मूत्र प्यालेमें करके उसपर एकबूँद तिलके तेलकी टपकावे जो बूँद मूत्रपर फैलजावे तो रुधिर और पित्त का उपद्रव है, जो तेल उसीप्रकार शेष रहे बुराई की निशानी है, जो बूँद मूत्र के नीचे चलीजावे मृत्यु के लक्षण हैं, जो बूँद में छिद्र होजावे वह भी काल के चिह्न हैं, जो बूँद मूत्र में चौड़ी होजावे आरोग्यता है, जो बूँद टुकड़े टुकड़े हो जावे रोग बढ़जावे, जो मूत्र में बूँद पूर्वकी ओर भुके आरोग्यता है, मुँह पश्चिम की ओर भुके रोग बढ़जावे, जो दक्षिण और उत्तर को भुके बुराई की निशानी है, पीला और साफ़ पेशाब पित्त को बतलावे और जो पीला सुरखी से हो मिलीहुई बीमारी का निशान है परन्तु पित्त की अधिकता बतावे, जो मूत्र बहुत हो और उसमें कुछ सफ़ेदी हो अजीर्णता के लक्षण हैं, मांस के धोवन की तरह का मूत्र पार्श्वशूल को बतलाता है, जो कुन्दर के तेल के सदृश उसमें दाने दिखाई दें वह मूत्र शोथ और शरीर की नागवारी और जलन्धर को बताता है, जो मूत्र मिश्री के रंग का सा हो वह कासश्वास को बताता है, जिस मूत्र का रंग केसरि की सदृश हो तो उसे दग्धित पित्त और रुधिर का जानो और आग के रंगका मूत्र सरसाम अर्थात् भेजे के वरम को बताताहै, जो मूत्र पीला और साफ़ हो कलेजे की पीड़ा को बतावे और मूत्र ज़रदी मायल और कुछ स्याही लिये हो कलेजे की गरमी के लक्षण हैं सामान्यमल वह है जिसके टुकड़े बराबर हों और पतलापन और गहरेपन में बराबर और गुड़गुड़ाहट और शब्द से ख़ाली हो अर्थात् मल निकलने पर उदर में बात का शब्द न हो और निकलने के समय भी शब्द न हो और विष्ठा के रंगका हाल मूत्र के रंग के हाल के सदृश है, जो विष्ठा भोजन से अधिक और पतली और लसदारहो दोषकी अधिकता या अजीर्णता या अंगका गलना बताता है, यह

ज्वर में बुरा है और बिष्ठा की अधिक दुर्गन्धि दोष की दुर्गन्धि को प्रगट करती है–मुसिल–मुंजिज़ का सेवन मुसिल के पहिले उचित है मुंजिज़ अर्थात् दोषका पकाना उसे कहते हैं जो पेशाब का क़वाम सम होजावे। मुसिल उसको कहते हैं जो मलको रगों और जोड़ों से निकाललावे। तलीन वह है जो मल कोष्ठ आंतों और उसके इधर उधर हो उसको निकाले पहिले मुंजिज़ देना चाहिये और तलीन नहीं और दो मुसिलों का सेवन एक दिन में न चाहिये। मुसिल पीने के समय नाक बन्द करले जिसमें मुसिल की दुर्गन्धि से ग्लानि न हो और क़ै न हो जावै और दोनों बाज़ू ज़ोर से बांधे और सुगन्ध सूँघना और इलायची और पोदीना लौंग के साथ चबाना क़ै नहीं होने देता। जबतक मुसिल अमल न करे कुछ न खाना चाहिये, मुसिल में सोना मना है, मुसिल बहुत मीठा न करें, आबदस्त का पानी समान हो न गरम न ठण्ढा जब मुसिल बलवान् दे और वह गुण न करे और उन्माद और मूर्च्छा प्रगट हो शीघ्रही बमन करे और बुरा मुसिल बहुत हानि रखता है जिस तरह कि फ़स्द बुरी और रोगी जो बलवान् हो मुसिल तल ऊपर दे और जो निर्बल हो एक दो दिनके अन्तरसे दे क्योंकि दस्तोंकी अधिकतासे रोगी बदहाल न होजावे, मुसिल के दिन सरदी से बच जाना उचित है, खुश्क स्वभाववाले, लड़के, बूढ़े को बलवान् मुसिल न देना चाहिये। मुसिल पर गोलियां या चूर्ण या माजून या सौंफ़का अरक़ गुनगुना या गरम पानी दस्तों की मदद के लिये उत्तम है, मुसिल के काढ़े पर ठण्ढा अरक़ सौंफ़ का पीना चाहिये। मुसिल से छुट्टी पाने के पीछे गरम मिज़ाज को ईसबग़ोल और ठण्ढे मिज़ाजको नाजबो के बीज या मज़लके के बीज पिलाना उचित है, कोई दवा मुसिल की ऐसी नहीं कि सिवा एक दोष के बाक़ी दोषों को न निकाले और जो औषधि कि पित्त या कफ़ या दग्धित दोष के लिये बतलाई गई है उसका यह कारण है कि

औषधि और दोषों से अधिक उस दोष को निकालती है जानना चाहिये कि बाज़े आरोग्य पुरुष आपही आरोग्यता के लिये प्रतिबर्ष मुसिल लेने का अभ्यास डालते हैं, बाज़े छःमहीने के पीछे आदत रखते हैं यह आदतें अच्छी नहीं हां रोगकी शान्ति के लिये आवश्यकता पर मुसिल ले जो ऐसी आदत हो, चाहिये कि धीरे धीरे उसको छोड़े क्योंकि आदत दूसरी प्रकृति है।

पित्त के मुंजिज़ अर्थात् पकाने की औषधि ।

कासनी की जड़, नीलोफ़र, परसियावशान, ख़तमी की जड़, खुब्बाज़ी के बीज़, बनफ़्शा, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, शाहतरा, गुलख़ैरू मुंजिज़ देने के उपरान्त पित्त तीन दिन में पकता है परन्तु इस शर्तपर कि ख़ाली पित्त हो और जो ख़ाली पित्त न हो तो पांच दिन में पकता है कफ़ के मुंजिज़ की औषधि सौंफ़की जड़, बड़े मुनक्के, मकोय, परसियावशान अर्थात् काली झांपवारतिकोप, गावज़बां, बादरञ्जबोया, बशफ़ायज, मुलहठी की जड़, अजखर किरफ़श के बीज अर्थात् अजमोद, कबरा की जड़, अनीसोनशकाई, अस्तख़द्दूस कफ़ नौ दिन में पकता है और बहुत गाढ़ा कफ़ दो तीन दिन अधिक में और पतला कफ़ पांच दिन में. सौदा अर्थात् दग्धदोष की औषधि बादरञ्जबोया, गावज़बां, लसौड़ा, कासनी की जड़, सौंफ़, शहतरा, उन्नाब, अस्तख़द्दूस, परसियावशान, मुलहठी, बशफ़ाइज, सौदा पन्द्रह दिनमें पकता है और कभी पन्द्रह दिन से कम या अधिक में भी पकता है पित्त के मुसिल की औषधि पीले हड़की छाल, इमली, आलूबुख़ारा, अफ़्नतीन, सकमूनिया, गुलाब के फूल, बिना भूननेके सेवन न करे। भूननेकी रीति बड़ी पुस्तकों में लिखी है-कफ़ की मुसिल की औषधि-इन्द्रायण का फल, माहीज़हर, ज़ंगारीकूनहुब्बुल, नीलतुर, अमलतास, सौदा के मुसिल की औषधि-काबिलीहड़, कालीहड़, अफतैमूंहजर, लाजवर्द, गेरू, गारीकून, सनाइमक्की-रुधिर की स्थिरता का

मुसिल-कासनी की जड़, खीरे, ककड़ी के बीज, उन्नाब, अंजबार, केवड़े की जड़, तरबूज़ का पानी, बनफ़शा, इमली, खट्टा शहतूत, बुज़ुरकतूना, शाहतरा, ख़ाखशी प्रकट और अन्दर के बहुत से रोगों को गुण करे और बहुत स्वभावों को गुण करता है यहांतक कि गर्भवती स्त्री और बूढ़ों और बालकों को भी देते हैं ज्वर और शोथ को गुण करता है, सब माद्दों के मुवाफ़िक़ है आवश्यकता के अनुकूल अमलतास ले और गुलाब या गरमपानी या सौंफ़ के अरक़ या कासनी के अरक़ या मकोय के अरक़ में मले जो थोड़ा बादाम का तेल मिलावे उत्तम है नहीं तो घी डालकर गुलक़न्द या शीरखिश्त या तुरंजबीन से मीठा करे, जो बनफ़शे के फूल, मुनक्के, उन्नाब, गावज़बां और उसके सदृश आवश्यकता के अनुकूल कुछ गुलक़न्द समेत अमलतास में मिलावे तो उत्तम है, दूध पीतेहुए लड़के के लिये बादाम का तेल मिलाने की आवश्यकता नहीं है, कुलञ्ज में मुंजिज़ देने की आवश्यकता नहीं।

फ़स्द का वर्णन।

फ़स्द से हरदोष निकलता है परन्तु रुधिर सब दोषों से अधिक निकलता है और बारह वर्ष से कम में फ़स्द लेना मना है फिर आयु के अन्त पर्यंत बल होने पर आवश्यकता हो तो उचित है परन्तु बाज़ों ने साठवर्ष के उपरांत फ़स्दकी मनाही की है, फ़स्द के पीछे लेटना चाहिये परंतु तत्काल सोना मना है, उस दिन फ़स्द के पीछे भोजन थोड़ा और उत्तम खाना चाहिये। जिसदिन फ़स्द ले बुरा भोजन न दे, फ़स्द के पीछे हरीरा और ठंढाई मना है परन्तु गरम स्वभाववाले को ठंढाई पिलाना मना नहीं है, ठंढे मिज़ाजवाले को गरम द्रव्य देना चाहिये कि बल हो परन्तु आवश्यकता के बिना कुछ न देना चाहिये फ़स्द में रुधिर कम निकालने से माद्दा हरकत में आ जाता है, ज्वर आजाता है उस समय आवश्यकता पर फ़स्द लेना उचित है जिस

मनुष्य को फ़स्द के उपरांत मूर्च्छा आवे उत्तम उपाय यह है कि मुरग़ का पर गले में डालकर बमन करावे और सरेरू और जबलअरज़ा एक रग है जो ऊपर को गई है शिर और गरदन को साफ़ करती है, फ़स्द हफ़्त अन्दाम सम्पूर्ण शरीर को साफ़ करती है, इब्री वह रग है जो बग़ल से आई है बदन की कोठी और नीचे के अङ्ग को गुण करती है, बासलीक को रक्षापूर्वक खोलना चाहिये कि उसके नीचे शिरयान है और असलीम कि बासलीक की एक शाख़ है कलेजे की बीमारी के लिये दाहनी ओर से खोलें और तिल्ली और मानसी रोगों के लिये बाईं ओर से परन्तु उससे विशेष रुधिर न निकाले–और माथे के रगकी फ़स्द शिरपीड़ा, नेत्ररोगों को गुण करे। चाररोगों की फ़स्द जो दोनों नीचे होठों के हैं, वह होठों के अन्दर की ओर खोली जाती है मुख के व्रणों को गुण करती है, जिह्वा के नीचेकी रग ख़ुनाक को गुण करे। साफ़नके रगकी फ़स्द जो पिंजली में है और माविज़की फ़स्द जो घुटनों के नीचे है स्त्रियों के ऋतु के रुधिर के जारी करने को, बवासीर के रोग, नाकरस, दवाली को गुण करे जो फ़स्द कि उत्पातकारक रुधिर के निकालने के वास्ते खोलते हैं जब रुधिर की बुरी रंगत बदलजावे और रुधिर अच्छा आने लगे बन्द करदे अगर फ़स्द खोले और रुधिर बन्द न हो मकड़ी का जाला या गौ का चमड़ा कच्चा उसपर रखकर बांधदे और जो शोथ के लक्षण प्रकट हों ठण्ढा लेप जैसे–रक्तचन्दन और रसौत उसपर करे।

क्षौर पछने और सिंघियों और जोंकों के विषय में।

जो लड़कों के लिये मानों फ़स्द है क्षौर दो बर्ष से कम की आयुमें उचित नहीं है, साठ बर्ष के उपरान्त निषेध है, क्षौर के दो प्रकार हैं एक केवल सिंघी पछने के बिना दूसरा प्रकार पछने देकर यह मुख्य जोड़ और त्वचाकी तरफ़ों के साफ़ करने के लिये श्रेष्ठ है मांस के मध्य में क्षौर कराना उत्तम है, पिण्डलियों का और फ़स्द बासलीक और साफ़न के बदले है त्वचा के रोगों में

जोंकों का सेवन उत्तम है परन्तु मल के अनुसार लगावे अधिक और कम न लगावे बाज़ी जोंकें बिषैली हैं वह बड़ी होती हैं और उनपर काली और सब्ज़लकीरें होती हैं जोंकों के छूट जाने के उपरान्त रुधिर बहे तो राख महीन छानकर उसपर बांधे।

दोषों की अधिकता का वर्णन।

रुधिर की अधिकता—रुधिर की अधिकता से मुंह मीठा, उसका रंग लाल रहे, मूत्र भी लाल हो, शिर और बदन भारी रहे, शरीर में दाने निकलें, दांत और मसूढ़ों से बहुत रुधिर निकले।

पित्तदोष की अधिकता—मुंह आंख जिह्वा और मूत्र का रंग पीला रहे मुंह कड़ुआ और नाक में खुश्की और खरखराहट हो बहुत जगे और प्यास और जलन की अधिकता हो।

कफ़की अधिकता—मुंह जिह्वा आंख और मूत्रका रंग श्वेत और शरीर ढीला हो, नाकमें सरदी, प्यास कम, निद्रा बहुत हो, मुख का स्वाद बुरा हो।

सौदा अर्थात् दग्धितदोषकी अधिकता—इसके होनेसे काला पड़जाता है, मूत्र का रंग भी काला होता है, जलन, बदन की खुश्की, क्षीणता होती है मुंह खट्टा रहता है, अंग भारी रहता है, आलस्य की अधिकता, भूख कम होजाती है, मूत्र गहरा रहता है, जानना चाहिये कि श्वेतरंग से शरीर की पुष्टता कफ़ के होने का प्रमाण है, पीलापन क्षीणता के साथ पित्त सिद्ध होता है, सुरख़ीरंग पुष्टता के साथ रक्ताधिक्य जानो, कालारंग क्षीणता के साथ सौदावी है, क्षीणता बदन की खुश्की बतलाता है, मोटा होना कफ़का चिह्न है, बालों का पेचदार होना और उनकी अधिकता गरमी बतलाता है, बालों का सीधा होना, उनकी कमी शीत बतलाता है, हर दशा में शीघ्रही प्रभाव का स्वीकार करलेना उस दशा के अधिकताका प्रमाण है, स्मरणाधिक्य बुद्धिमानी और जल्दी जल्दी बातें करना गरमी के चिह्न हैं। स्मरण का कम होना, लज्जा और प्रतिष्ठा की अधिकता

शीतलस्वभाव को सिद्ध करता है, मलमें पक्का रंगका होना गरमी है उसके बिपरीत शीत है मलकी अधिकता तरी है और उसकी कमी खुश्की है।

शरीर को रोगों से रक्षा करने का विषय।

बर्तमान आरोग्यता की रक्षा करना गई हुई आरोग्यता के फेरने से सुगम है। आरोग्यता की रक्षा करनेवाले को उचित है, कि हानिकारक वस्तुओं से, जो आगे लिखी जावेंगी, पथ्य करे और अपनी आयुरारोग्य का मित्र रहे। किसी का लोभ न करे। जो छोड़ने के योग्य वस्तु है, उसमें कुछ भी बुद्धि न लड़ावे और उसकी कुछ भी इच्छा न करे। बिशेषकर रोग और निर्बलता में जिन वस्तुओं का सेवन अवश्य हो उनमें कोताही न करे, किसी चीज़ की आदत न डाले; क्योंकि आदत भी प्रकृति से मिल-जाती है। सामान्य श्रम भी आरोग्यता का रक्षक, मलका पाचक और क्षुधा का कर्त्ता है। उसे करना चाहिये। थोड़ीसी बीमारी में पौष्टिक ओषधियों का सेवन न करे किन्तु आरोग्यदायक भोजन करे। जहाँ ओषधिरूप भोजन से काम निकले ओषधि न खावे। जबतक एक ओषधि से काम निकले दो न खावे। इसी तरह जो दो दवाएँ पूरी हों तो तीन दवा न खावे। और सुगम दवा से उपाय करना आरम्भ करे। उपाय तीन प्रकार के होते हैं एक उद्योग और भोजन से, दूसरा दवा से, तीसरा हाथ के कामों से जैसे चीरना फाड़ना आदि। सते ज़रूरिये में भोजन भी संयुक्त है। काम में लाने का नाम उपाय है। कभी भोजन करना मना किया जाता है; जैसे बोहरान में। कभी बलकारक भोजन की आज्ञा दी जाती है जो कुछ बल बाकी रखना स्वीकार हो और पुष्ट भोजन वा उसका अनुमान राह से होता है वा भोजन के भारीपने से उसके अनुमान की कमी उस समय चाहिये कि भोजन न पचासके और भारीपन की कमी उसी समय की जावेगी कि भूख बहुत हो और रगों में अधिक दोष हों। यद्यपि

भोजन बलकारक है परन्तु शत्रु भी है क्योंकि रोग को सहायता देता है और रोग शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है। सो रोग में भोजन का सेवन उतनाही करना चाहिये जिससे इलाज होसके और बचजावे-इलाज करने की तीन रीतियाँ हैं एक ओषधि का ताल मालूम करना, दूसरे दवा के हाल अर्थात् गरमी, सरदी, खुश्की, तरी का जांचना-तीसरे रोग का समय मालूम करना कि चारों समयों में से कौन समय है।

सम्पूर्ण वैद्य इस बात की आज्ञा देते हैं कि पीलीहड़ की छाल को एक वर्ष तक नीचे लिखी हुई रीति के अनुसार खानेसे संपूर्ण रोग नाश हो जाते हैं और आरोग्यता प्राप्त होती है। चैत्र और बैशाख में तीनमाशे शहद के साथ, ज्येष्ठ और आषाढ़ में मुनक्के के साथ, श्रावण और भाद्रपद में यथारुचि लाहौरी लवण के साथ, कुवार और कार्त्तिक में बराबर की मिश्री के साथ, तीनमाशे के अनुमान खावे ईश्वर चाहे तो सब रोगों और बद्ध-कोष्ठ से रक्षा रहेगी।

शिरके रोग का वर्णन।

जो शिरमें एक ओर पीड़ा हो उसको शक़ीक़ा बोलते हैं जो उसका कारण चारों दोषों से कोई दोष या बायु हो उसको माद्दी कहते हैं। जो उसका कारण इनमें से कोई बस्तु न हो उसको साजिज कहते हैं, जो धूप, अग्नि, बायु की गरमी या गरम दवा के खाने से हो वह हार साजिज है, ठण्ढी हवा या ठण्ढे पानी के सेवन या ठण्ढी जगह में ठहरने या शीतल ओषधि के खाने से उत्पन्न हो वह बारद साजिज है गरमी के चिह्न-त्वचा में जलन, गरमी और भारीपन का न होना और ठण्ढी चीज़ों से आराम और गरम से हानि है सरदी के चिह्न-आलस्य और त्वचा में सरदी और जलन का न पाया जाना और ठण्ढी चीज़ों से हानि और गरम से लाभ पाया जाना, मूल यह है कि किसी कारण में गरमी और सरदी के पहिंचानने में कठिनता नहीं होती, हरदोष

की अधिकता के चिह्न पीछे कह चुके हैं वायु के चिह्न एक ही जगह से दूसरी जगह पीड़ा का जाना और कान में किसी प्रकार का शब्द होना ।

शिरोरोग का यत्न ।

जो रुधिर की आधिक्यता हो तो सरेरू की फ़स्द खोले, जो कफ या पित्त या दग्धदोष या वायु का ज़ोर हो तो मुंजिज़ अर्थात् मल के पकाने के उपरान्त ग्रंथों के अनुसार मुसिलों से मलको निकाले । साजिज में प्रकृति को बदल डाले अर्थात् जो गरमी हो तो ठण्ढा करे, जो सरदी हो तो गर्म करे—अब यहां थोड़े से नुस्ख़े शिर की पीड़ा और शक़ीक़े के लिखे जाते हैं । इतरीफल, कशनीज़ जो शिर पीड़ा, शिरके घूमने, नेत्रके रोगोंको दूर करती हैं । पीलीहड़ की छाल, काबिलीहड़, कालीहड़, धनियां छिला हुआ यह सब एक एक तोला कूट छानकर घी में भूनकर तीन भाग शहद के कवाम में माजून बनावे और दो तोले खावे ।

इतरीफल मुलय्यन ।

जो स्वभाव को नरम करता है, हानिकारक दोषों को पकाशय और दिमाग़ से निकालता है, कान के शब्द, भिनभिनाहट और नेत्रों की सियाही को दूर करता है, काबिलीहड़ की छाल, पीलीहड़ की छाल, आंवले की छाल, बहेड़ा और कालीहड़, यह सब तीन तीन दाम गुलाब के फूल, सना, तुरबुद की छाल एक एक दाम, सोंठ आधाटंक कूटछानकर बादाम के तेल में भूनकर तीन हिस्से शहद या मिश्री मिलावे रुचि के अनुसार शरबत ले ।

पाशोया ।

माद्दी या साजिज शिरोरोगोंको आराम करता है खारीनोन दो दाम, गेहूँकी भूसी दो मुट्ठी, बेरकी पत्ती, ख़तमीकी पत्ती, मकोयके पत्ते हरएक आध आध पाव ख़तमी के बीज चार दाम पानी में काढ़ें जब आधा पानी शेष रहे तो कुछ गरम से पांव धोवे जो सब दवायें न मिलें तो जितनी ही मिल जावें आराम देंगी जो

कोई दवा न मिले केवल गरम पानी गेहूँ की भूसी और खारी नोन ही लाभ देता है, पांवोंका दबाना और तलवे सुहराना ठण्ढी और गरम शिर पीड़ा को अच्छा करता है।

अन्य—पांवशोया पांवों का धोना और तलवों में झांवें करना शिरपीड़ा के लिये श्रेष्ठ है, सेना के पुत्र शेख अबूअली ने क़ानून में लिखा है कि मैं बहुधा शिरपीड़ावाले के हाथ पांवों पर गरम पानी का तरेड़ा देता रहा जहांतक कि मालूम हुआ कुछ चीज़ शिरसे हाथ पांवों की ओर उतरती है इससे शिरकी पीड़ा दूर हो गई और अबूमाहर ने लिखा है कि ठण्ढे पानी से नहाना गरम शिरपीड़ा को उत्तम है।

लाभ।

सर्वप्रकारकी शिरपीड़ा में आराम से रहना, खाने पीने में कमी करना श्रेष्ठ है, इसरोग में बहुत हिलना झुलना न चाहिये, मलकारक और बद्धकोष्ठ और हानिकर भोजन से पथ्य करना उचितहै।

बफ़ारह—भी शिरपीड़ा को दूर करता है एक तगार में पानी भरकर अपने आगे रक्खे और अपने को अच्छी तरह चादर से छिपाले, एक एक मिट्टी का ढेला गरम करके उसमें डाले, शिर झुकाकर उसकी भाफ़ का बफ़ारह ले शिरपीड़ा दूर हो जावेगी।

अन्य—बफ़ारह जो गरम और ठण्ढी शिरपीड़ा को उत्तम है काकजंघा एक वृक्ष है उसको मिस्सी बोलते हैं, टुकड़े टुकड़े करके जोश देकर बफ़ारह ले उसके उपरान्त चन्दन दो भाग रेंड़ी एक भाग पीसकर लेप करे।

हरीरा।

ब्रह्मांडका अति बलकारक भूनेहुये चनों का छिलका दूर करके नौ टंक महीन पीसकर बारह टंक बादाम के तेल में भूने फिर निशास्ता नौ टंक, सफ़ेद ख़शख़ाश के बीज़ नौ टंक, मिश्री चार टंक मिलाकर गाय के दूध में हरीरा पकावे फिर नौ टंक घी में बघारकर गर्म गर्म खावे।

अन्य औषध—जो गर्म शिरपीड़ाके लिये अतिश्रेष्ठ है—धनियां, काहू दोनों एक एक टंक पानी में पीसकर रस छानकर थोड़ी सी शक्कर से मीठा करके एक तोला ईसबग़ोल छिड़क के खावे या नीलोफ़र का शर्बत दो तोले मिश्री के बदले डाले ।

अन्य—विशेष करके उस पीड़ाको दूर करती है जो नजले से हो—सीप सिरके में घिसकर कान की दोनों लवों में लगाते रहें ।

अन्य—विशेष लाभ देती है—मँजीठ को शिर पर बांधे ।

अन्य—जिस को बहुत दिनों से शिरोराग हो उसके लिये उत्तम है कि धतूर के दो चार बीज रोज़ निगले ।

महुये के फूलों का तेल ।

जो सर्दी और गर्मी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है । सोंठ, बाय-बिड़ङ्ग, छिली हुई मुलहठी कुचलकर, भँगरा, महुये के फूल यह सब बराबर ले तिलका तेल चारभाग—महुये के पुष्पों का ज़ीरा निकाल डाले और सब ओषधियों को पहिले इतने पानी में कि तेल से दुगुना हो औटाके जब पानी तेलके बराबर रहजावे साफ़ करके तेल में मिलाकर जोश दे जब तेलमात्र रहजावे और पानी जल जावे छानकर रक्खे छः बूँद नाक में टपकावे बहुत प्रकारकी शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है ।

नास ।

जो शिरपीड़ा और सरसाम पैत्तिक को दूर करता है—कपूर, चन्दन गुलाब में पीसकर नाक में टपकावे ।

अन्य नास—कद्दू, काहू, धनियां हरा, कासनी हरी, मकोय की पत्तियां सबको या एक एक या दो दो को यथाविधि निचोड़ साफ़ करके कई बूँद नाक में टपकावे ।

अन्य नास—शिरपीड़ा और सर्वप्रकार के शीतकी बीमारियों को उत्तम है—कालीमिर्च, पीपल, लवंग इन सब या दो एकको समय के अनुसार सौंफ़ के अर्क़ में पीसकर नाक में टपकावे ।

अन्य नास—जो सर्दी और कफ की शिरपीड़ा को दूर करे, जूफ़े की पत्तियों का पानी साफ़ करके नाक में टपकावे।

अन्य—सर्दी की शिरपीड़ा को दूर करे—कटहल के मूलको उबालकर उसकी कुछ बूँद नाक में टपकावे।

अन्य—सर्दी की शिरपीड़ा को गुण करे—बायबिड़ङ्ग, सोंठ, गुड़ बराबर गर्म पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास—जो ब्रह्माण्ड को तरी से साफ़ करे—चमेली के पुष्प तीन, गुलरोग़न में मलकर नाक में टपकावे।

अन्य—शक़ीक़ा की पीड़ाको श्रेष्ठ है—गुलदुपहरिया एक प्रकार का प्रसिद्ध पुष्प है दोपहरके समय खिलता है उस फूल की पखुड़ियां मलकर उसका जल नाक में टपकावे।

अन्य—नाजबो के पत्तों के जलकी कई बूँदें जो बाईं ओर पीड़ा हो तो दहने नथने में जो दहने नथने में पीड़ा हो तो बायें नथने में टपकावे।

अन्य—कालीमिर्च १ मक्खी की बिष्टा उसके बराबर उस स्त्रीके दूधसे टपकावे जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो, थोड़ा थोड़ा आंखों में भी लगावे।

अन्य—शक़ीक़ा को गुणदायक—ढाई खासन के फूल, फिटकरी, आधी कालीमिर्च के साथ पानी में पीसकर जो दर्द दहने तरफ़ हो तो बायें नथने में जो बायें तरफ़ हो तो दहने नथने में टपकावे।

तथा—शक़ीक़ाको गुणदायक—रीठे की छालको पानी में खूब मले जब कफ निकले गर्म करके ढाईबूँद दोनोंनथने में टपकावे।

तथा—शक़ीक़े के लिये—सिरस के बीज थोड़े पानी में पीसकर कपड़े में पोटली बांध कर जिस तरफ़ शिरमें पीड़ा हो अढ़ाई बूँद उस तरफ़ के नथने में टपकावे।

तथा—शक़ीक़ाको दूर करे—नौसादर, कालादाना, हरएक दो रत्ती पानी में पीसकर गौ के घीमें मिलाकर नाक में टपकावे।

तथा—शक़ीक़ा को प्याज़ थोड़े महुवे के बीज चार कालीमिर्चों के साथ पानी में पीसकर जो बायें तरफ पीड़ा हो तो दहने नथने में और दहनी ओर हो तो बायें नथने में टपकावे—और केवल कालीमिर्च के साथही गाय का घी नाक में टपकाना शक़ीक़े को श्रेष्ठ है।

तथा—जो शक़ीक़े की पीड़ा को उत्तमोत्तम यत्न है—समन्दर फल की मींगी को जलमें पीसकर जो पीड़ा बाईं ओर हो तो दहने नथने में टपकावे अथवा दहने तरफ़ हो तो बायें कान में टपकावे—और जो उसकी तीक्ष्णता का भय हो तो स्त्री के दुग्ध में पीसकर सेवन करे।

अन्य—उस शक़ीक़े की पीड़ा के लिये श्रेष्ठ है जो बारी से आता हो—बन्दाल पानी में भिगोकर जल छानकर दो बूँद नाक में टपकावे मस्तक के मलको बहाकर दूर करेगा।

चूर्ण—जिसको फंकी भी बोलते हैं—बनफ़्शा दो माशे, अस्तखूदूस एक माशा, धनियां दो माशे, बालछड़ एक माशा, मुण्डी एक माशा, गुलाब के फूल दो माशे, बादाम की गिरी दो माशे, मिश्री सब दवाओं के बराबर पीस छानकर एकतोला रोज़ खावे

### हड़का शर्बत।

पैत्तिक शिरोरोग के लिये श्रेष्ठ है और स्वभाव को नर्म करता है दश पीले हड़ों की छाल जवकुट करके चीनीकी प्याली में पानी में भिगोकर ३ दिन धूपमें रक्खे चौथे दिन मलकर छाने और फिर पीली ग्यारह हड़ों की छाल को उसी रीति से उसी पानी में धूप में रोज़ रखकर चौथे दिन मलकर छानके एक सौ पचास मिस्क़ाल सफ़ेद शक्कर में क़वाम करे और जो शक्कर के बदले सफ़ेद तुरंजबीन हो तो श्रेष्ठ है।

शिरोरोग दूर करे—बनफ़्शा, नीलोफ़र, गुलाब के फूल यह हरएक चार चार मिस्क़ाल अस्तखूदूस दो मिस्क़ाल आलूबुख़ारे दशदाने पानी में भिगोकर लेले और छानकर तिगुनी शक्कर में

क़वाम करे दो तीन तोले खावे जो आलूबुख़ारे न हों तो उसके बदले इमली मिलावे।

सूँघने की दवा।

जो गर्मी के शिरोरोग को श्रेष्ठ है–कपूर या चन्दन सूँघे और ककड़ी और खीरेका सूँघना भी पैत्तिक शिरोरोगको दूर करताहै।

अन्य–सर्दी के शक़ीक़ा और शीतकी शिरपीड़ाको गुण करे नौसादर और हल्दी को मिलाकर सूँघे।

लाभ।

सम्पूर्ण भांति के गर्म अतरों के सूँघने से भेजे में बल होता है और इसी प्रकारसे ठंढी सुगन्धोंका सूँघना भेजेको लाभ देता है।

लेप।

शिरपीड़ा और शक़ीक़े को श्रेष्ठ है–सोंठ, चन्दन, रएड की जड़की छाल कूट छानकर पानी से धोकर साठी के चावल के साथ महीन पीसकर गहरा गहरा लेप करे।

अन्य–गरमी की शिरकी पीड़ा को गुणकारक–ईसबग़ोल का लुआब ख़तमी के फूलों में मिलाकर पतला पतला लेप करे और पीना भी इसका उत्तम है।

अन्य–शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है जो गरमी से हो–चुका और दूब दोनों को बराबर पानी से पीसकर शिर पर लेप करे।

तथा–ककड़ी के टुकड़े और कद्दू के ताज़े छिलके शिरपर रखने भी अच्छे हैं।

तथा–गरमीके शिरोरोगके लिये अतिश्रेष्ठहैं-ख़तमीके पत्ते या बीज, धनियां, गेरू जलमें पीसकर शिर और माथे में लेप करे।

अन्य–मेहँदी के फूल जल में पीसकर मले यह गरमी के शिरदर्द को श्रेष्ठ है।

अन्य–गरमी के शिरोरोग को दूर करे–काहू के बीज पानी में पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य—गरमी की शिरपीड़ा को गुणदायक—तिल के वृक्षकी पत्तियाँ सिरके या पानी में पीसकर मले।

अन्य—खुरफ़े के पत्ते-सिरके या पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—चन्दन घिसकर लगावे।

अन्य—काई मले।

अन्य—धनियां पीसकर अण्डे की सफ़ेदी में मिलाकर मले।

अन्य—जौ का आटा पानी में घोलकर लगावे।

अन्य—लसोड़ा का लुआब गरमी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

अन्य—साल की लकड़ी जिसको साज भी बोलते हैं पानी में घिसकर लगाना गरमी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

अन्य—अफ़ीम गुलरोग़न में कजली करके शिरपर मले।

अन्य—कासनी के बीज गुलाब में या पानी में पीसकर मले।

अन्य—मेहँदी की पत्ती लगाना शिरपीड़ा और मस्तकपीड़ा को गुण करती है।

अन्य—बकायन के पत्तों को पीसकर लगाना गरमी के शिरदर्द को दूर करता है।

अन्य—शीतलचीनी गुलाब में पीसकर मले।

अन्य—कबाबह गुलाब में पीसकर मले।

अन्य—अनार की जड़ पानी में घिसकर गहरा लेप करे।

अन्य—सोंठ, रेंड़ी के तेल में घिसकर गरम करके लगाना सरदी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

अन्य—सरदी और साज़िज और कफ़ की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—सहँजन के पत्ते पानी में पीसकर गरम करके लेप करे।

अन्य—सरदी और कफ़की शिरपीड़ा को गुणकारक—पीपल पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—कलौंजी, कालीज़ीरी पानी में पीसकर मले।

अन्य—रेंड़ी, सोंठ, अजवायन पानी में पीसकर गरम करके लेप करे।

अन्य—सरदी की शिरपीड़ा को गुणकारक—नरकचूर पानी में पीसकर तलवे में मेहँदी की तरह लगावे।

अन्य—शिरपीड़ा को गुणदायक—निबौली की मींगी पीसकर माथे पर मले।

अन्य—गरमी और सरदी के शिरोरोग को सफ़ेद चंदन, तज बराबर घिसकर कुछ गरम करके लगावे।

अन्य—सरदी और गरमी की शिरपीड़ा को गुणकरे—तरबूज़ के सफ़ेद बीज, मुचुकुन्द के फूल दोनों या एक इनमें से पानीमें पीसकर गहरा लेप करे।

अन्य—शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है चाहे वह ख़ुश्की से हो या गरमी से—बकरी का मक्खन शिर में मले।

अन्य—जो नज़ले से शिरपीड़ा हो उसके लिये उत्तम है—दो लौंग, अफ़ीम चाररत्ती पानी में पीसकर कुछ गरम करके लगावे।

अन्य—शक़ीक़ा को गुणकारक—हड़के बीज गरम पानी में पीसकर मले।

तथा—शक़ीक़ा को लाभदायक है—मुरग़ी की बिष्ठा काली-मिरच दोनों पीसकर जो पीड़ा बाईं ओर हो दहनी ओर जो दहनी तरफ़ हो तो बाईं ओर शिर में मले।

अन्य—पुराने शक़ीक़े को दूर करे—जंगली कबूतर की बीट राई के साथ पीसकर लेप करे।

अन्य—जमालगोटा जल में पीसकर जिस ओर पीड़ा न हो मले जब जलन हो कुछ गरम पानी से धो डाले यह बीमारी दूर होगी लाभ इस रोग का यत्न शीघ्रही करना उचित है नहीं तो यह पीड़ा अति कठिनता से दूर होती है जब पुराना होजावे निःसंदेह शीत से होगा गरम औषधियों के सेवन के बिना कदाचित् दूर न होगा।

अन्य—लेप जो शिरपीड़ा को आराम करे—एक बादाम की गिरी सरसों के तेल में पीसकर शिर पर मले पीड़ा दूर हो।

अन्य—रेंड़ी एलुवा बराबर पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे पीड़ा दूर हो ।

अन्य उपाय—ठण्ढी शक़ीक़ा और शिरपीड़ा दूर करे—बाबूने के पुष्प मेथी के लुआब में मिलाकर कपड़े में बांधकर गरम करके रक्खे और टकोर करे ।

पीसकर फूँकने की औषधि ।

ठण्ढी शिरपीड़ा के लिये महीन पीपल पीसकर नाकमें फूँके ।

औषधि—ठण्ढे शक़ीक़ा के लिये अकरकरहा दांतों में दबावें।

टिकिया—तिकोनी शक़ीक़ा की पीड़ा शिरोरोग को दूर करे—धनियां, आमला, काहू के बीज, सोंठ यह सब दो भाग, अफ़ीम, ख़ुरासानी अजवायन, कतीरा हरएक २ भाग पीसकर तिखूँटी टिकियां बना रक्खे समय पर पानी में रगड़कर कुछ गरम करके मले।

अन्य—कान में टपकाने की पतली दवा शक़ीक़ा की पीड़ा को गुणदायक—गाजरकी पत्तियों को ऊपर नीचे घी लगाकर तवे पर गरम करके उसका अरक़ निचोड़कर कान में टपकावे यह यत्न मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है दो तीन बूँदें नाकमें भी टपकावे बहुत छींकें आवेंगी और आधासीसी की पीड़ा दूर होजावेगी।

टकोर—गरम शिरपीड़ा के लिये नींबू के दो टुकड़े करके गरम तवे पर रक्खें पहिले एक टुकड़े से माथे को सेंकें जब वह ठण्ढा होजाय उसको तवेपर रखकर दूसरे से सेंकें इसीप्रकार एक घड़ी पर्यंत सेंकते रहें ।

सुरमा—जो आधासीसी को लाभदायक है साबुन लाहौरी थोड़े पानी में पीसकर दोनों नेत्रों में या केवल उस नेत्र में जो पीड़ा की ओर हो सुरमेकी भांति लगावें गुलक़न्द बनफ़्सा शिरपीड़ा, खाँसी और हृदय के रोगों को श्रेष्ठ है—बनफ़्शा के फूल एकभाग मिश्री दो भाग परस्पर खूब मिलाकर रक्खे और एक तोला भर खावे।

चटनी—भेजे की बलकारक—मेंहदी के बीज तीन माशे पीसकर शहद में मिलाकर चाटे।

काढ़ा—जो पैत्तिक और शीतक शिरोरोग को अति उत्तमहै—बांसकी जड़ पांच टङ्क जवकुटकर पानी में काढ़ा करके छान के आधादाम मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य—ठण्ढी और कफ़की शिरपीड़ा को गुणदायक है—जवकुट की हुई सौंफ़ दो टंक और अधकुचली सौंफ़की जड़ चार टंक, अस्तख़द्दूस तीनटंक, आध सेर जल में काढ़ा करे जब तिहाई जल शेष रहे साफ़ करके दो तोले शहतरा बनफ़्शे के शरवत में डालकर पिये।

अन्य—काढ़ा शिरपीड़ा के लिये पीली हड़का बक्कल, सोंठ, धनियां, आमला, बहेड़े की छाल, बायबिड़ंग बराबर एक टंक कूट आधसेर जल में औटावे जब जल चतुर्थभाग शेष रहे छान कर पिये बाज़े लोग सोंठ के बदले चिरायता मिलाते हैं।

तरेड़ा—शीत की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—बाबूना, सोया, सौंफ़ औटाकर शिरपर तरेड़ा दे औषधि गरम शिरपीड़ा को गुणदायक दो तोले इमली जल में भिगोकर उसके साफ़ पानी को लेकर थोड़ी शक्कर मिलावे और पिये।

तरेड़ा—गरमी की शिरपीड़ा को गुणकारक—छिले जौ, कद्दू के टुकड़े, काहू के बीज, ईसबग़ोल, बनफ़्शा, ख़तमी के बीज, नीलोफ़र जल में औटाकर शिरपर तरेड़ा दे और तरेड़े का सेवन मुंजिज़ के सेवन के उपरांत उत्तम है।

अन्य—शिरपीड़ा और आधासीसी के लिये सफ़ेद कनेर की पत्तियां छाया में सुखाकर महीन पीस रक्खे जिसओर पीड़ा हो उसी नथनेमें दो चावल के बराबर फूंके छींकें लावेगा और नाक में से बहुत जल निकलेगा और पीड़ा दूर होजावेगी बहुधा ऐसा हुआ है कि पाख़ाने और गन्दी जगहों की दुर्गंधि और चमड़ेकी सड़ाद से पैत्तिक शिरपीड़ा पैदा होती है उसके दूर करने का यत्न कुछ गरम पानी से नहाना और सिरका सूंघना और कभी ब्रह्मांड में कीड़े पड़जाने से शिर में पीड़ा होती है उसके लक्षण कीड़ों

अन्य-रेंड़ी एलुवा बराबर पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे पीड़ा दूर हो।

अन्य उपाय-ठण्ढी शक़ीक़ा और शिरपीड़ा दूर करे-बाबूने के पुष्प मेथी के लुआब में मिलाकर कपड़े में बांधकर गरम करके रक्खे और टकोर करे।

पीसकर फूँकने की औषधि।

ठण्ढी शिरपीड़ा के लिये महीन पीपल पीसकर नाकमें फूँके।

औषधि-ठण्ढे शक़ीक़ा के लिये अकरकरहा दांतों में दबावें।

टिकिया-तिकोनी शक़ीक़ा की पीड़ा शिरोरोग को दूर करे-धनियां, आमला, काहू के बीज, सोंठ यह सब दो भाग, अफ़ीम, खुरासानी अजवायन, कतीरा हरएक २ भाग पीसकर तिखूँटी टिकियां बना रक्खे समयपर पानी में रगड़कर कुछ गरम करके मले।

अन्य-कान में टपकाने की पतली दवा शक़ीक़ा की पीड़ा को गुणदायक-गाजरकी पत्तियों को ऊपर नीचे घी लगाकर तवे पर गरम करके उसका अरक़ निचोड़कर कान में टपकावे यह यत्न मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है दो तीन बूँदें नाक में भी टपकावे बहुत छींकें आवेंगी और आधासीसी की पीड़ा दूर होजावेगी।

टकोर-गरम शिरपीड़ा के लिये नींबू के दो टुकड़े करके गरम तवे पर रक्खें पहिले एक टुकड़े से माथे को सेंकें जब वह ठण्ढा होजावे उसको तवेपर रखकर दूसरे से सेंकें इसीप्रकार एक घड़ी पर्यंत सेंकते रहें।

सुरमा-जो आधासीसी को लाभदायक है साबुन लाहौरी थोड़े पानी में पीसकर दोनों नेत्रों में या केवल उस नेत्र में जो पीड़ा की ओर है सुरमेकी भांति लगावें गुलक़न्द बनफ़्सा शिरपीड़ा, खाँसी और हृदय के रोगों को श्रेष्ठ है-बनफ़्शा के फूल एकभाग मिश्री दो भाग परस्पर खूब मिलाकर रक्खे और एक तोला भर खावे।

चटनी-भेजे की बलकारक-मेहँदी के बीज तीन माशे पीसकर शहद में मिलाकर चाटे।

काढ़ा-जो पैत्तिक और शीतक शिरोरोग को अति उत्तमहै-बांसकी जड़ पांच टङ्क जवकुटकर पानी में काढ़ा करके छान के आधादाम मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य-ठण्ढी और कफ़की शिरपीड़ा को गुणदायक है-जवकुट की हुई सौंफ़ दो टंक और अधकुचली सौंफ़की जड़ चार टंक, अस्तख़द्दूस तीनटंक, आध सेर जल में काढ़ा करे जब तिहाई जल शेष रहे साफ़ करके दो तोले शहतरा बनफ़्शे के शरबत में डालकर पिये।

अन्य-काढ़ा शिरपीड़ा के लिये पीली हड़का बक्कल, सोंठ, धनियां, आमला, बहेड़े की छाल, बायबिड़ंग बराबर एक टंक कूट आधसेर जल में औटावे जब जल चतुर्थभाग शेष रहे छान कर पिये बाज़े लोग सोंठ के बदले चिरायता मिलाते हैं।

तरेड़ा-शीत की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है-बाबूना, सोया, सौंफ़ औटाकर शिरपर तरेड़ा दे औषधि गरम शिरपीड़ा को गुणदायक दो तोले इमली जल में भिगोकर उसके साफ़ पानी को लेकर थोड़ी शक्कर मिलावे और पिये।

तरेड़ा-गरमी की शिरपीड़ा को गुणकारक-छिले जौ, कद्दू के टुकड़े, काहू के बीज, ईसबग़ोल, बनफ़्शा, ख़तमी के बीज, नीलोफ़र जल में औटाकर शिरपर तरेड़ा दे और तरेड़े का सेवन मुंजिज़ के सेवन के उपरांत उत्तम है।

अन्य-शिरपीड़ा और आधासीसी के लिये सफ़ेद कनेर की पत्तियां छाया में सुखाकर महीन पीस रक्खे जिसओर पीड़ा हो उसी नथनेमें दो चावल के बराबर फूँके छींकें लावेगा और नाक में से बहुत जल निकलेगा और पीड़ा दूर होजावेगी बहुधा ऐसा हुआ है कि पाख़ाने और गन्दी जगहों की दुर्गंधि और चमड़ेकी सड़ाद से पत्तिक शिरपीड़ा पैदा होती है उसके दूर करने का यत्न कुछ गरम पानी से नहाना और सिरका सूंघना और कभी ब्रह्मांड में कीड़े पड़जाने से शिर में पीड़ा होती है उसके लक्षण कीड़ों

का भी निकालना और दुर्गंधि आना उसका यत्न मलीम एक लकड़ी प्रसिद्ध है उसे महीन पीसकर नाक में फूँकें।

इसपन्द का तेल।

शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है चार टंक इस्पन्द तेल में जलावे जब खूब जलजावे उसी तेल में पीस डाले वह तेल हरदिन माथे पर मल करके तीक्ष्ण अग्नि से सेंके फिर गरम जलसे धो डाले।

शतावर का तेल।

जिसको हिन्दू बहुधा सेवन करते हैं शक़ीक़े की पीड़ा को दूर करता है–शतावर की ताजी जड़ कूटकर उसका अरक़ निचोड़ लें उसके बराबर तिल का तेल औटावें जब पानी जलजावे और तेल रहजावे शिरपर मलें।

टपकाने की औषधि।

शफ़तालू की पत्तियों के रस में एलुवा मिलाकर दो तीन बूँदें नाक में टपकावे ब्रह्माण्ड के सब कीड़े मर जावेंगे।

अन्य–नींबके पत्तों का जल मीठे तेल में मिलाकर कान में टपकावे कभी सर्प के काटने और उसका विष दूर होने के उपरांत शिरकी पीड़ा बाक़ी रहजाती है उसका यह यत्न है कि बिनौलेकी मींगी का शीरा एक तोलेभर पानी में निकालकर बहुधा शिर पर लेप करे और वह शिरपीड़ा जोकि चिंता की अधिकता से उत्पन्न हो उसका यत्न–कोई वस्तु खालेना और अंजीर के बृक्ष की छाल की भस्म शिरके में या केवल जलमें घोलकर शिर में मलना है।

सरसाम की विधियों और औषधियों का वर्णन।

सरसाम ब्रह्माण्ड के शोथ का नाम है–मुख्य भेजे में हो या भेजे के परदों या दोनों में और उसके कई प्रकार हैं।

सरसामके लक्षण–ज्वर बराबर रहे और कभी न उतरे प्रलाप और पीड़ा और शिर भारी रहे जो सरसाम पित्तकी अधिकतासे हो उसको करानीतसख़ालिस बोलते हैं, कफ़ के सरसाम को लैसरगस कहना चाहिये, हर एक दोष से उस दोष का पहिंचानना

सम्भावित है पैत्तिक और रक्त के सरसाम में ज्वर वेग से होता है। और कफ़ और दग्धदोषके सरसाममें कम होता है और पैत्तिक में कठोर चित्त और कफ़के सरसाम में आलस्य और रक्त में तेज़ी और दग्धदोषमें बहुधा विक्षिप्तता होती है। दग्धदोष का सरसाम कम होता है इस रोग में फ़स्द जल्दी खुलवानी उचित है विशेष करके रक्त के और पित्त के सरसाम में कभी गरम तप में बिना भेजे की सूजन के बाफ़ भेजे की ओर जाती है उससे बक और शिरपीड़ा होती है इस दशा को सरसाम ग़ैरहक़ीक़ी बोलते हैं उससमय फ़स्द सरेरू और पिण्डलियों में पछने देकर सिंगी खींचना और रुधिर के सरसाम में बिना पछने के सिंगियां खींचना और दूसरे प्रकारों में पाशोया करना उचित है और ठंढाई पिलाना और स्त्री के दुग्ध को नाक में टपकाना और शिर पर दुहना उचित है जो स्त्री का दुग्ध न मिले बकरी का दूधही शिरपर डाले और कद्दू का तेल मलना उत्तम है।

कद्दू का तेल।

कद्दू का जल निचोड़कर छानके बराबर के मीठे तेल में जोश दे जब पानी जलजावे तेल का सेवन करे।

लख़लख़ा—उसको कहते हैं कि गीली चीज़ें किसी शीशी में रखकर सूंघे जो गरम सरसाम को दूर करेगी—ताज़े धनियें का पानी खीरे ककड़ी के बीजों का जल थोड़े शिरके में मिलाकर शीशी में रखकर सूँघे।

अन्य—चन्दन हरी कासनी के रस और तरबूज़ के जल में रगड़कर थोड़ासा कपूर भी मिलाकर शीशी में रखकर सूँघे।

नीलोफ़र का तेल।

जो सरदी की शिरपीड़ा और सरसाम को दूर करे नीलोफ़र के फूल लेकर गुलरोग़न की तरह उसका तेल बना ले।

अन्य—ऊदकी शरबत जो ब्रह्माण्ड को अति बलदायक है—अर्थात् अगर पांच टंक, लौंग, बालछड़, दारचीनी हरएक डेढ़

डेढ़ टंक मिश्री पावभर यह सब दवा जवकुट करके वस्त्र में बांधकर गुलाब में भिगोकर जोश दे जब चौथाई शेष रहे छान कर मिश्री मिलायें शरबत का क़वाम करें फिर ढाई रत्ती भर कस्तूरी और अम्बर मिलावें ।

अन्य—गरम सरसाम को दूर करे—चन्दन और कपूर घिस-कर काहू के पत्तों के पानी में मिलाकर नाक में टपकावें ।

पाशोया—जो सरसाम को दूर करे—ख़रू के फल, नीलोफ़र के फूल, छिला हुआ कद्दू, हरएक आध आध पाव, जौकी भूसी तीन मुट्ठी जल में जोश देकर कुछ गरमजल से पाशोया करे और चन्दन रगड़कर सुँघावे खाने को आश जौ दे फिर ज्वर और शिरपीड़ा का यत्न करे ।

मिरगी का वर्णन ।

यह रोग बहुधा कफ़ से होता है और जब मिरगी आती है तो रोगी पृथ्वी पर गिरपड़ता है हाथ पांव टेढ़े होजाते हैं चेष्टा विगड़जाती है कफ मुँहसे निकलता है इस रोग में अवश्य करके शिर भारी होता, जिह्वा की नीची रँगें सब्ज़ होती हैं ।

मिरगी की औषधियां ।

जब मिरगी आवे तो रोगी के अवयवों को मूल दशा पर देखते रहें—और सोंठ, कालीमिरच, पीपल, नौसादर, इन्द्रायन के फल के अन्दर का परदा कलौंजी आदि हरएक अलग अलग या मिलाकर पीसकर नाक में फूंकें जब मिरगी दूर हो तो मुंजिज देकर हुबअयारज से मुसिल दे और चौपायों के मांस और तर मेवों और दूध, प्याज़ और मसूर बरन उन वस्तुओं से जो तन्द्रा या नशा करती हैं पथ्य करें और दुर्गन्धि के सूंघने और बहुत जागने और ठंढे पानी में नहाने और पेटभर कर सोने और धूप और मेह में फिरने और भयानक शब्दों और ठण्ढी पवन से भी अलग रहे जो लड़कोंकी मिरगीमें ज्वर बहुत हो तो गरम वस्तुओं का अधिक सेवन न करें और अधिक ठण्ढाई भी मना है और

शाफ़े अर्थात् बस्ति से बद्धकोष्ट दूर करना उचित है इस जगह थोड़ीसी सुगम औषधियां जो इसरोग के लिये उत्तमोत्तम हैं लिखी जाती हैं।

गोलियां—जब मिरगी का दौरा न हो तो देनी चाहियें।

गूगल की गोली—मिरगी को गुण करे मुसिल देने के उपरान्त वैद्य प्रकृति के सम करने के लिये सेवन करते हैं—कूट, सोंठ, कबाबा, देवदारु हरएक तीन तीन टंक, भंगरा काला, काली मिरच, अकरकरा, गजबेलि, सनके बीज हरएक नौ नौ टंक गूगल सबके बराबर कूट छानकर शहद में गोलियां बनावें खूराक २ टंक प्रभात और सन्ध्या को कुछ गरम पानी से निगलें।

औषधि—जदवार नरीना लड़केवाली स्त्री के दुग्ध में रगड़कर पिलावें।

दाग़—लड़कों की मिरगी के लिये आज़माया हुआ है, दोनों भवों के बीच में मूँगे का दाना गरम करके दाग़ दें और बकरीकी मेंगनी से भी दाग़ देना उत्तमोत्तम है।

अन्य—औषधि मिरगी के दौरे के समय श्रेष्ठ है—शरीफ़े के बीजोंकी गिरी को पीसकर कपड़े की बत्ती में रखकर उसका धुवां नाक में पहुँचावें।

अन्य—मिरगी के समय कपड़े का बन्द खटमल के रुधिर में भिगोकर उसका धुवां नाक में पहुँचावें।

अन्य—मिरगी के दौरे के समय या उसके आगे पीछे लाभदायक है—आक की जड़ का बक्कल बकरी के दुग्ध में घिसकर नाक में टपकावें। कछुये का रुधिर जौ का आटा शहद में सबको बराबर मिलाकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावें सुबह और शाम एक एक गोली खावें।

अन्य—मिरगी के समय ढाक की जड़ जल में रगड़कर नाक में टपकावें।

अन्य—गीदड़ के पित्ते को कई कालीमिरचें डालकर सुखावें

मिरगी के समय उनमें से दो मिरचें पानी में पीसकर दोनों नथुनों में दो तीन बूँदें टपकावें मिरगी जाती रहेगी।

अन्य–मिरगी के समय काम आती है–आधे महुवेकी गुठली अढ़ाई कालीमिरचों के साथ पानीमें पीसकर नाक में टपकावें।

अन्य–मिरगी के दौरे के समय सेवन करने से तत्काल मूर्च्छा दूर हो कड़वी तोरई जलमें पीसकर दो तीन बूँदें नाक में टपकावें।

अन्य–छोटी कटाई का दूध दौरे के समय नथुनों में टपकावें।

अन्य–रुई हाथी की मस्ती में अर्थात् उस तरी में जो मस्ती के समय हाथी के कान के पास या उसके माथे से बहती है भिगोकर मिरगी के समय दे तीन बूँदें नाक में टपकावें।

अन्य–दो भाग नौसादर आधा हिस्सा सब्रसकूतरी अर्थात् एलुवा चौथे हिस्से तिलों के तेल में पीसकर कई बूँदें नाक में टपकावें।

अन्य–कटाई की जड़ भंग के बीज बराबर लेकर लड़के के मूत्र में पीसकर नाक में टपकावें।

अन्य–बकरी के सींग का धुवाँ दौरे के समय नाक में पहुँचाना शीघ्रही लाभ देता है।

चूर्ण–जो बिशेषकरके इस रोगको दूरकरे–भैंसे का सुम जलाकर एक टंकके प्रमाण मिरगीवालेको खिलाना आराम करता है।

गुललाला का शरबत।

अन्य समय या दौरे के वक़्त मिरगी दूर करता है–लाले के फल बीस टंक लेकर जल में औटावें और साफ़ करके चालीस टंक मिश्री में क़वाम करके शरबत तैयार करें लड़के को आधा टंक और दाई को दो टंक खिलावें।

औषधि–दौरेके समय राई को पीसकर सूँघे।

अन्य–कुन्दश पिसाहुआ थैली में बांधकर सूँघे–इस मिरगी के रोग के लिये जालीनूस की परीक्षा से अकरकरा अति उत्तमहै मुसिल लेने के उपरान्त समय पर वा अन्य समय में अकरकर

कूटकर बराबर सिरके में पीसकर तीन हिस्से शहद में पाक बनावें और सात माशे कुछ गरम जल से खावें।

अन्य-औषधि-छोटी कटाई कायफल सुखाकर कायफल, नकछिकनी दोनों छः छः माशे तम्बाकू की नास चार तोले सब को कजली करके दो माशे के अनुमान प्रतिदिन सूँघे।

नाक में फूँकने की औषधि।

जो दौरेके समय काम आती है-घूँसके पित्ते में कालीमिरच भरकर छाया में सुखावें समय पर पीसकर दो चावल भर नाक में फूँकें।

अन्य-रत्नज्योति पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य-दौरे के समय वा अन्य समय सेवन करसक्के हैं साबूत रीठा उसके बक्कल और बीज समेत पीसकर नास लिया करें।

अन्य-समय पर मिरगी को दूर करे-बड़ा बोट कि आकके वृक्षपर अनेक रंग का होता है उछलता है उड़ नहीं सक्ता उसको सुखाकर कालीमिरच की बराबर लेकर पीसकर रोगी की नाक में फूँकें आज़माया हुआ है और साहब खैरुल्तिजारब ने काली-मिरच के बदले गौ का घी लिखा है।

अन्य-चूहे का भेजा सुखाकर पानी में पीसकर आधे माशे के अनुमान नाक में फूँकें तीन दिन में आराम हो जावेगा।

औषधि-जो बिशेष करके मिरगी को दूर करे तिबफ़रीदी में लिखा है कि मिरगी के रोगी के गले में जायफल लटकाना अति लाभकारक है मिरगी को फिर नहीं आने देता इसीप्रकार हींग को लटकाना चाहिये। सुवर के सुमकी अंगूठी मंगलके दिन दहिने हाथ में पहिनना मिरगी को दूर करता है वह मिट्टी जिसपर सुअर ने मूत्र किया हो अपने पास रखना विशेष करके मिरगीको दूर करे और भेड़िये के दांत लड़के के गलेमें बांधनेसे मिरगी नहीं आती।

अन्य-भेड़िये की बिष्ठा और हड्डी अपने पास रखनेसे मिरगी दूर होती है।

अन्य-गायके बायें सींगकी अंगूठी बनाकर बायें हाथ में पहिनना भी श्रेष्ठ है ।

अन्य-चूहे का होंठ लड़के की गरदन में लटकाना लड़कों की मिरगी को दूर करता है ।

सकते की औषधि का वर्णन ।

सकता वह रोग है कि जिसमें मनुष्य हिलजुल नहीं सक्ता और वह रोगी मुरदा मालूम होता है उसका कारण मुख्य भेजे में नल की गांठ पड़ने का है ।

यत्न-जो रुधिरसे हो तो सरेरूकी फ़स्द खोलें जो कफ़की अधिकता हो तो कफ़ के वास्ते बस्तिकर्म और शाफ़े के द्वारा मल निकालें और शिरको भी सेंकें और कान में औषधियां टपकावें और सूँघें और बमन करना उत्तम है और हाथ पांव का मलना और बांधना श्रेष्ठ है ।

अन्य-शिर में तालू पर नश्तर देकर उसपर पारा मलना लाभ देता है और मुंजिज के उपरान्त कफ़के निकलने का उपाय करें जब इस रोग में सांसका चलना मालूम न हो तो असाध्य जानो और जो सांसका आना जाना मालूम हो तो साध्य जानो सकते के बीमार और मुरदे में इतना अंतर है कि सकते की हालत में रोगी के नेत्र में देखनेवाले का प्रतिबिम्ब मालूम होता है और मुरदेकी आंख में नहीं मालूम होता ।

नाक में टपकाने की औषधि ।

सकतेको दूरकरे-नकछिकनी, पापड़िया खैर, एलुवा, चुकन्दर की जड़ जलमें पीसकर छान करके कुछ बूँदें नाक में टपकावें ।

अन्य-थोड़ी सी हींग सौंफ़ के अरक़ में पीसकर कण्ठ में टपकावे ।

औषधि-जो शिर मुड़ाकर पछने लगाकर मनुष्य के मूत्र में बच्छनाग पीसकर उसपर मले तो तत्काल चेत होवे ।

निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने के रोग के विषय में।

बहुधा बुढ़ापे में कफ़की अधिकता से निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहनेका रोग होताहै जो यह रोग युवावस्था में हो तो ब्रह्मांड की बीमारियों के रोगों की ख़बर देताहै इसका मुख्य यत्न यह है कि मलके पकने के उपरान्त ब्रह्मांडको ठएढे मुसिल से साफ़ करे।

भिलावेंका पाक—जो निसियान और दूसरे रोगों को श्रेष्ठ है—पीले हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बालछड़, तज, तेजपात, नागरमोथा, अस्तखद्दूस हरएक डेढ़ डेढ़ तोला कालीमिरच, नरकचूर दो दो माशे, भिलावें का तेल सात माशे, सवापाव शहद में चटनी करके पाक बना लेवे।

अन्य—तज की माजून जो निसियान की बीमारीको दूर करे—तज, नागरमोथा, दोनों दश दश टंक, सोंठि, कालीमिरच हर एक पांच पांच टंक कूट छानकर दुगुने शहद में मिलावें बाजी पुस्तकोंमें औषधियों की तोल बराबर लिखी है—खूराक दो टंक।

चूर्ण—जो इस रोग को दूर करे—कुन्दर, सोंठि, नागरमोथा बराबर कूटकर फंकी बनावें अपनी रुचि के अनुसार मुनक्के के सात दानोंका रस निकालकर उसके साथ एक सप्ताहभर फाँकें।

अन्य—वज की माजून जो निसियान को दूर करती है और पट्ठों को गरम करती है सफ़ेद शक्कर पाव भर क़वाम करके तीन टंक वज औषधि पीसकर उसमें मिलाकर माजून तय्यार करें खूराक एक तोले के अनुमान।

औषधि—जो स्मरणको उत्तम है—कालीमिरच, पीपल, हल्दी, कूटमीठी, मुलहटी, कालाज़ीरा, सांभरनोन, अजमोद सब एक एक टंक महीन पीसकर प्रतिदिन एक टंक शहद और घी में मिलाकर खावें।

अन्य—यह औषधि ब्रह्मांड की सरदी के रोगों और निसियान को श्रेष्ठ है पांच टंक भिलावां प्रति दिन खावे।

अन्य—एक तोला ब्रह्मदंडी कूट छानकर गाय के दूधसे पंद्रह

दिन फांकें परन्तु जागने और शीतल जलसे नहाने और मदिरा और बहुत पानी पीने से पथ्य करें।

जवारिश सोंठि सादी की–जो कोष्ठ की बीमारियों में वर्णन होगी निसियान के लिये लाभदायक है।

अन्य–मालकांगनी का तेल पान में लगाकर एक माशा पारा उसपर रखकर खूब मलें पारा उसी समय बिथर जावेगा उसी समय इस पानको पारेसे साफ़ करके पान की गिलौरी में रखकर खावें और इसी प्रकार सर्वदा खाया करें।

मालकांगनी के तेल के निकालने की विधि।

मालकांगनी को कूटकर गजी की थैली में भरकर उसका मुँह सीकर तांबेके बरतन में रखकर उसके नीचे कोयले की आग सुलगावे और थैलीपर एक भारी पत्थर रखदे तेल निकल आवेगा।

औषधि–जो निसियानको अच्छाकरे–एकटंक कुन्दर रात्रिको जल में भिगो दे प्रातसमय साफ़करके थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

द्वार व सदर बीमारियों का वर्णन।

द्वार उस रोगका नामहै कि हरएक वस्तु फिरती हुई मालूम हो और सदर कि उठने के समय आंखके नीचे अँधेरा आजावे यह रोग दोषों की भाफ़ के हिलने और उनके ब्रह्मांड पर चढ़ने से पैदा होताहै रोग के वेग के समय पर मुंजिज़ के उपरान्त भेजे को साफ़ करना उचित है।

इतरीफल–जिसे शिरोरोग में वर्णन करचुके हैं उत्तम है।

कल्क–दोनों रोगोंको श्रेष्ठ है परन्तु जो वह पित्तसे हों धनियां, आमला कुचल कर तीन टंक रातको जलमें भिगोकर प्रभात को मलकर थोड़ीसी शक्कर या शहद मिलाकर पिलावें।

काढ़ा–द्वारका गुणकारक–सरफ़ोंका, धनियां पीसी, हड़की जड़ जवकुट करके हरएक साढ़े तीन तीन तोले औटाकर एक सप्ताह भर पिये।

अन्य–जो दौरानशिर को दूर करे ख़शख़ाश का रस दो

टंक, धनियें का शीरा दो टंक, थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य–द्वार को गुण करे–पटसन के बीजों को पीसकर गेहूँ के आटे में मिलाकर रोटी पकाकर खावे ।

चूर्ण–जो सदर और द्वारको गुण करे सफ़ेद ख़शख़ाश, धनियां, बिनौले की मींगी बराबर लेकर दुगुनी मिश्री मिलाकर पीस छानकर प्रतिदिन गुलाब या जलके साथ फांके ।

सुवात अर्थात् अधिक सोने की दवाओं के विषय में ।

यह रोग बहुधा अधिकता से भेजे पर चाहे सादा हो या मल का होता है ।

औषधि–मुंजिज़ के उपरान्त कफ़का मुसिल दें उसके उपरांत कालीमिरच घोड़े की लारमें पीसकर नेत्रमें लगावें निद्राके अधिक बेग को दूर करेगी और ठण्ढी बस्तु के खाने से पथ्य करें और सिरका सूँघना नींद की अधिकता दूर करता है और इतरीफल खाना उत्तम है।

सहर अर्थात् निद्रा न आने की औषधियों का वर्णन ।

बहुत जागना भेजेकी खुश्कीका कारणहै सादा हो वा मलका।

उपाय–भेजे को तर करे और जो यह रोग मल से हो तो भेजे को सांफ़ करना भी अवश्य है ।

औषधि–बकरी का दूध हांथ की हथेली और पांव में मलना श्रेष्ठ है ।

अन्य–ख़शख़ाश का तेल तलुओं और तालूपर मलना लाभ करता है और ख़शख़ाश के तेल को बादाम के तेल की तरह निकाल लें ।

अन्य–अफ़ीम सूँघना और पसलियोंपर मलना नींद लाता है ।

अन्य–नाज़बो के पुष्प का सूँघना और सोये के साग को तकिये के नीचे रखने से अवश्यही निद्रा आती है ।

औषधि–जो निद्रा लावे–ख़शख़ाश के बीज के दो टंक, काहू एक टंक शीरा निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाके पियें ।

तैल पांच बीजों का जिसका नाम रोग़न हुबूबख़मसा है— और नींद लाता है और शिरपीड़ा और पैत्तिक सरसाम को लाभ देता है।

काहू के बीज, कद्दू के बीजों की गिरी, तरबूज़ के बीजों की गिरी, ख़शख़ाश, तिल बराबर लेकर बादामरोग़न की तरह तेल निकालकर शिरपर मलें।

काहू का तेल शिरपर मलने से नींद आती है।

तेल निकालने की रीति—काहू के पत्तों का जल दो भाग निकालकर एकभाग मीठे तेल में मिलाकर खूब औटावे जब तेलमात्र रहजावे तो उतार ले।

लेप जो निद्रा लावे—हरी भंग की पत्तियां बकरी के दूध में मेहँदी की भांति पीसकर तलुओं में लगावे या भंग का तेल तलुओं में मले और भंग के तेल के निकालने की यह रीति है कि भंग के पत्ते बकरी के दुग्ध में पीसकर टिकिया बनाकर घी में जलावे जब काली होजावे छानकर उस घृतका सेवन करे।

रोगी के हाथ पांव इतने खींचकर बांधे कि खिंचावट से पीड़ा करें और ऊँघा न जावे और एक दीपक उस रोगी के आगे जलावे और लोग इकट्ठे होकर क़िस्सा कहानी कहना शुरू करें जब देखे कि रोगी थक गया है हाथ पांव खोल दे और सब चुप होजावें चिराग़ उठाले तो यह उपाय निद्रा लाने का है।

चक्की की आवाज़ और जल के बहने के शब्द, पवन और दरख़्तों के पत्तों के हिलनेकी आवाज़ से भी निद्रा आती है काहू का तेल शिरपर मलनेसे भेजे की खुश्की दूर हो—कद्दू के तेल के निकालने की रीति सरसाम में वर्णन होचुकी है।

औषधि—स्त्री के दूध को नाक में टपकाने से भेजेकी ख़ुश्की दूर हो और भोजन के पचजाने के उपरान्त कुछ गरम जल से नहाना निद्रा लाता है और जो ज्वरके कारण निद्रा न आवे तो पाशोया करे।

चूर्ण–जो निद्राके दोष और नज़ले को दूर करे–और भेजेका बलदायक है भुनीहुई धनियां, काहू के बीज की मींगी, भुनीहुई ख़शख़ाश के बीज हरएक अढ़ाई अढ़ाई मिस्काल शक्कर सफ़ेद बारह मिस्क़ाल कूट छानकर चूर्ण बनावे शरबत दो मिस्काल।

औषधि–जो निद्रा लावे–बनफ़शा, पोस्ता, काहू के बीज, ख़शख़ाश, नाज़बो औटाकर तरेड़ा दे।

अन्य–नास जो निद्रा लावे–ख़शख़ाश के बीज, काहू के बीज, धनियां, सूखे सोये के बीज बराबर लेकर भूने और कपड़े में ढीला ढीला बांध बांध सूंघे।

अन्य–हरे काहू का पानी लेकर छानकर स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे।

सुरमा–स्त्री की कंघी पर चिराग़ से काजल पारे और आंख में लगावे और कंघी शिरहाने रखकर सो रहे।

लकवह और फ़ालिज अर्थात् अर्दितरोग के विषय में।

फ़ालिज उस रोग को कहते हैं कि जिससे आधा शरीर लम्बाई में ढीला होजाता है और लकवह में एकओर को मुँह टेढ़ा होजाता है। यह दोनों कफ़ से होते हैं इन दोनों रोगों का यत्न मिलता हुआ है इसलिये एकही जगह पर लिखा जाता है।

इस रोगके आदि में उत्तम से उत्तम यह उपाय है कि दो तीन लंघन कराकर जल की जगह माउलअसल पिये और जो यह रोग बहुत बली हो सात दिन पर्यंत भोजन न करे।

माउलअसल के बनाने की रीति।

शहद एकभाग, जल दो भाग औटावे जब तीसरा हिस्सा शेष रहे साफ़ करे और जहां शहद न मिले उसके बदले गुड़ही ऊपरकी लिखी हुई रीति से औटाकर सेवन करे।

भोजन–कबूतर या चिड़िया का शोरबा और चनों का पथ्य दोष का पकाना रोग से चौथे दिन आरम्भ करके हुबअयारिज का नवें दिन या चौदहवें दिन मुसिल दें और दूसरीबार भी मल

निकालना इस रोगमें आवश्यक है और हर दोष के मुंजिज़ की औषधि हरदोष के नीचे वर्णन होचुकी है।

मुंजिज़ का काढ़ा–सौंफ़ छःमाशे, सौंफ़ की जड़ एक तोला, सोये के बीज, अजवायन, अजमोद् तीन तीन माशे, बालछड़ चार माशे, कासनी की जड़ एक तोला, गुलक़न्द दो तोले डेढ़पाव जल में औटावे जब आधपाव रहे तो पिये और प्रतिदिन इसी तरह सेवन करे।

अयारज की गोलियां–फ़ैक़राअयारज फ़ैक़रा छःटंक, पीले-हड़ों की छाल पांच टङ्क, शोधीतुरबुद चार टङ्क, हुबुलनील दो टङ्क, इन्द्रायण के फल का परदा दोनों एक एक टङ्क, हिन्दी नमक पांच टङ्क कूट छानकर गोलियां बनावे।

अयारजफ़ैक़रा की तरकीब पिछले हकीमों की तरकीब पर।

असारों, बालछड़, तज, मस्तंगी, दारचीनी, अस्तख़़ुदूस, सौंफ़, गुलाब के फूल हरएक एक एक टङ्क एलुवा दुगुना कूट-पीसकर छान ले मुसलों के दे चुकने के उपरान्त इस रोग के बराबर करने के लिये जिसका वर्णन कियाजाता है सेवन करें।

काँपनी और कफ के सम्पूर्ण रोगों तथा कमर और पेटके दर्द की गोलियां।

धोई हुई गन्धक, पारा, लाल हरताल, बेशमदीर जो एक प्रकार का बिष है नींबूके जल में आठ पहर खरल करके उड़द के बराबर गोलियां बनावे एक गोली से तीन गोली तक घृत के साथ खाय।

अन्य–जो फ़ालिज और लकवे में मुसिलों के उपरांत प्रकृति के बराबर करने के लिये श्रेष्ठ है–अक़रकरा, कालीमिरच, पीपल हरएक तीन तीन माशे, पीपलामूल छःमाशे, सोंठ, मीठा-तेलिया एक एक तोला कूट छानकर गुड़ और घी में मिलाकर मूँग की बराबर गोलियां बनावे और एक या दो गोली खाय।

गोली वैद्यक की रीति पर।

मालकांगनी, रतनज्योति, पीपल तीन तीन टंक मुसली काली

पन्द्रह टंक, सोंठ सोलह टंक, जमालगोटेकी गिरी सब्ज़ी दूर करके चार टंक यह सब दवा कूटछानकर जल मिलाकर खरल में पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे और दो गोलियां प्रतिदिन खाय।

लकवे की और गोलियां।

सोंठ, बच बराबर कूटकर शहद में मिलाकर अखरोट के बराबर प्रतिदिन दोबार खाया करे और इस औषधि के सेवन के समय में माउलअसल का पीना उचित है।

बफ़ारह—फ़ालिज और लकवे के लिये लहसन एक टंक, पक्का सोंठ एक टंक, बकायनके पक्के पत्ते, संभालू के पत्ते पाव पाव सेर, सोंठ जवकुट करके सबको मिलाकर दो सेर जलमें औटावे जब आधा रहे रक्षा से लिहाफ़ के अन्दर उसका बफ़ारा ले।

अन्य—कुचला फ़ालिज लकवे और भेजे के रोगों और कटि-पीड़ा के लिये श्रेष्ठ है और शीतलप्रकृतिवालों के स्वभाव को अच्छा करदेता है—पन्द्रह कुचले पन्द्रह दिन जल में भिगोकर तीन दिन पीछे जल बदलते रहें जब पन्द्रह दिन पीछे नरम होजावे बक्कल दूर करके सुखावें फिर अग्नि में इतना जलावें कि धुवाँ बन्द होजावे कोयला बनाकर ठण्ढा करके उसके बराबर कालीमिरच मिलाकर पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बांधे एक गोली प्रतिदिन सुबह खाय।

अन्य—बैद्यक की रीति का नुस्ख़ा जो फ़ालिज और कफ के रोगों को शान्त करता है—कुचला, भंग के बीज, नकछिकनी आठ आठ टंक तीनों औषधियों को पावभर दूध और आध-पाव जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे कुचला और भंग के बीज छिलके उतारकर तज, पीपल, सोंठ, सौंफ़ हरएक डेढ़ डेढ़ टंक कूटछान हरी ब्रह्मदंडी या सूखी ब्रह्मदंडी के जलमें औटाकर उसमें सब औषधियोंको खरल करे और चनेकी बराबर गोलियां बनाकर प्रातः और संध्या को एक वा दो गोली खाय इस रोगमें

जब तक भूख सच्ची न हो भोजन न करे और जबतक प्यास न लगे माउलअस्सल न पिये और लकवे के रोगी को अँधेरे निर्वासस्थान में बैठाना उचित है और जिसको फ़ालिज ज्वर के साथ हो गरम दवायें न दे किन्तु पहिले ज्वर का यत्न करे फिर फ़ालिज को दूर करे गरम जल फ़ालिज के रोगी को हानिकारक है ।

फ़ालिज के लिये वैद्यों की आज़माई हुई औषधि ।

क़लई, जस्त, बेशसियाह, पारा हरएक दश माशे, कालीमिरच पांचटंक पहिले जस्त और क़लई को गलाकर पारे में डाले कि गोला बँधजावे फिर छःपहर खरल करे फिर बेशसियाह को थोड़ा थोड़ा उसमें छिड़ककर छःपहर पीसे फिर कालीमिरच थोड़ी थोड़ी डालकर उसी प्रकार खरल करे कि अठारह पहर खरल होजावे और प्रभात उठकर एक चावलभर खावे और उड़नेवाले जानवरों का मांस भोजन करे ।

बज़की माजून—जो लकवे के लिये आज़माई हुई है—बज बीस टंक, सोंठ, कालाज़ीरा सात सात टंक, सौटंक शहद में मिलावे और प्रतिदिन एक टंक खाया करे इस औषधि के सेवन में माउलअसल पीना आवश्यक है ।

अन्य—जो फ़ालिज और सम्पूर्ण कफ़के रोगों के लिये उत्तम है—बज दश टंक, कालीमिरच, पोदीना, कालाज़ीरा, कलौंजी तीन तीन टंक, पावभर शहद में मिलावे और दो टंक खावे ।

अन्य—भिलावें की मींगी को शक्कर के साथ विरेचन के उपरान्त खाना फ़ालिज लकवे और मिरगी को दूर करे ।

मलने की औषधि ।

जिह्वा पर मलने से फ़ालिज को अच्छी करे—राई, अक़रकरा पीसकर शहद में मिलाकर जिह्वा पर मले ।

औषधि—जो फ़ालिज के रोगी की प्रकृति को समान करती है एक बीरबहूटी शिरपांव उखाड़कर पानकी गिलौरी में प्रतिदिन खाया करे ।

औषधि–फ़ालिज में उत्तमोत्तम औषधि भंग है जालीनूस कहता है कि जो काली मिरच महीन पीसकर तेल में मिलाकर मले कोई औषधि इसके बराबर नहीं।

अन्य–लकवे को श्रेष्ठ है–सनके बीज पांच टंक शहद में मिलाकर जुलाब के उपरान्त पन्द्रह दिन खावे।

तेल–जिसका मलना फ़ालिज और लकवे के रोगी को श्रेष्ठहै सफ़ेद कनेर की जड़की छाल, सफ़ेद घुंघची की दाल, काले धतूरे की पत्तियां हरएक दो दाम सबको कूट छानकर टिकियां बनाकर पावभर तेलमें तले जब टिकियां जलजावें उसी तेल में कजली करे जब वह थिराजावे फ़ालिज के रोगी के जोड़ों पर उस तेल को मले और इस तेलका लगाना बीर्यको भी बलदेता है।

अन्य तेल–जिसका मलना अर्दित रोगको दूर करे मीठातेल पावभर, कठ, कलौंजी दोनों दो दो दाम इन दोनों को तेल में खूब जला कर सेवन करे।

अन्य–जिसका मलना फ़ालिज को अच्छा करे अरण्ड के पत्ते, धतूरे के पत्ते, आक के पत्ते, सहदेई के पत्ते, सहँजनके पत्ते, असगन्धके पत्ते, सँभालू के पत्ते सब बराबर कूटकर पानी निचोड़कर बराबर मीठेतेल में औटावे यहांतक कि पानी जलकर तेल रहजावे उसके उपरांत सोंठ और कड़वीकठ पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य–वह तेल कि पट्ठों को बलदे और फ़ालिज और झोले को गुण करे और पेट की बात को निकाले–कूट दो टंक, बालछड़, अशना, तेजपात, अक्करक़रा, सोंठ, हर एक एक टंक जवकुट कर जल में भिगोदे और प्रातःकाल औटावे कि तीसरा हिस्सा रहजावे और मलकर छानकर पावभर मीठातेल मिलाकर फिर औटावे कि पानी जलजावे और तेल रहजावे।

दाउदीका तेल–जो बाबूने के बदले भी काम में आता है और सरदी के रोगों को उत्तम है–गुलदाउदी से यथाविधि रोग़नगुल तैयार करे परन्तु फूल तीनबेर बदले।

तितली का तेल–उसका मलना बदन के झोले को और पट्ठों को अतिश्रेष्ठ है–तितली के हरे पत्तों को चौगुने मीठेतेल में औटावे जब केवल तेल शेष रहे सूखी साढ़ेचार अदकिये तितली सेरभर जल में पकावे जब आधा रहजावे साफ़ करके एक अदकिया वही मीठातेल डालकर यहांतक औटावे कि तेलमात्र ही शेष रहजावे ।

बाबूनेका तेल–भेजे की सरदी के रोगोंको अतिश्रेष्ठ है बाबूने के हरे फूल दो भाग, मेथी एकभाग, तिलका तेल छःभाग शीशे में करके चालीस दिन धूप में रक्खे और बाजलोग बाबूने के फूल और मेथी को दशभाग जल में औटाते हैं यहांतक कि तेलमात्र शेष रहजाता है ।

अन्य–तितली के हरे पत्तों के साथ तिलों का तेल मिलाकर शीशीमें करके धूप में रक्खे चालीस दिनके उपरान्त सेवन करे ।

अन्य तेल–जो मलने से फ़ालिज और काँपनी को दूर करे, हुबा छिला हुआ चारदाम, कठकड़वी दो दाम, कायफल, धतूरे के बीज दो दाम, कूट छानकर पानी में टिकियां बनाकर बांधकर दुगुने मीठे तेल में जलाकर साफ़ करके मले ।

वाय और कफ के दूर करने का तेल ।

अजवायन, अक़रक़रा, इस्पन्द, खारी नोन बराबर लेकर अधकुचला करे और आठ हिस्से जलमें भिगोकर औटावे जब चौथा भाग रहे छानकर तिलों का तेल बारबर औषधियों को मिलाकर फिर औटावे कि तेल शेष रहजावे ।

फ़ालिज के लिये बावची का तेल ।

बावची आधसेर, सुरख़ अजवाइन अढ़ाई दाम कूट छानकर पानी में टिकियां बनावे और अढ़ाई सेर धतूरे के बृक्ष का जल और आधसेर मीठातेल मिलाकर लोहे की कड़ाही में पकावे जब टिकिया जलजावे छानकर मले ।

तेल–सम्पूर्ण शीत के भेजेकी बीमारियों को दूर करे, माल-

कांगनी, भिलावाँ, लहसुन बराबर कूटछानकर गोलियां बनाकर तीनदिन सुखा के पातालयन्त्र में तेल खींचे एक घुंघची से चार घुंघची पर्यंत पान में खावे।

तेल–जो झोले के रोग और वायु आदिक शीतके रोगों को श्रेष्ठ है मैनफल पांचदाम, सोंठ चारमाशे, करंजुवा, बाबूना, कठकड़वी तीन तीन दाम, कलौंजी, पवाँर के बीज, धतूरे के बीज, अजमोद, मालकांगनी, इस्पन्द, पीपलामूल, कायफल, खुरासानीअजवाइन, अक़रक़रा, अजवाइनदेशी दो दो दाम, दारुहल्दी, बायबिड़ंग एक एक दाम, तिलोंका तेल दोसेर, रेंड़ी का तेल आधपाव, अलसी का तेल आधपाव यथाविधि तेल तैयार करके मर्दन करे परन्तु सरदी के दिनों में वायु और ठंढी चीज़ों से पथ्य करे।

फंकी–जो फ़ालिज और बातज रोगों के लिये श्रेष्ठ है अजमोद, बायबिड़ंग, काबिली, नमक लाहौरी, देवदारु, शैतरा, चीता, पीपलामूल, सौंफ़, पीपल, कालीमिरच हरएक अढ़ाई टंक, पीले हड़की छाल साढ़े बारह टंक, बिधारा, सोंठ एक एक टंक कूट छानकर एक तोले से डेढ़ तोले पर्यंत खाया करे।

लहसुन की माजून।

आधपाव लहसुन के बड़े २ जवे छीलकर डेढ़पाव गायके दूध में औटावे जब घुलमिल जावें छानकर क़वाम करके बाबूने के फूल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, कालीहड़की छाल, अक़रक़रा, क़बाबा, खूलंजान अर्थात् कुलींजन एक एक दाम कूटछानकर क़वाम में लावे।

अन्य औषधि–जो फ़ालिज और लकवे को श्रेष्ठ है सोंठ, लाहौरीनमक पीसकर नाक में नास लें।

बाबचो की माजून।

जो शीतके रोगों को दूरकरे बाबची, सोंठ, तेजपात, बालछड़, नागरमोथा, कालीमिरच, अक़रक़रा, कलौंजी, कठ, शहद,

भिलावाँ यह सब दो दो भाग, भंग, राई, पीपल एक एक भाग कूट छानकर बादाम के तेल में पकाकर तिगुने शहद में मिलाकर रक्खे छःमहीने के उपरान्त सेवन करे ।

शरबत—एक टंक से दो टंक पर्यंत ।

नाक में टपकाने की औषधि ।

जो लकवे और मिरगीको श्रेष्ठहै और भेजेको तरी से साफ़ करताहै थोड़ी कलौंजी और इस्पंदलेकर चुकंदर की जड़ और इन्द्रायनकी जड़को जलमें पीस छानकर दो तीन बूंद नाकमें टपकावे ।

शरबत—जो लकवे और फ़ालिज के रोगी के भेजे के साफ़ करने के लिये काम आता है ।

सोंठ, बालछड़, कुलींजन एक एक मिस्काल; कालीमिरच, पीपल आधा आधा टंक यह सब औषधि कुचल के थैली में बांधकर तीन सेर शहद और तीन सेर जल में औटावे और बार बार थैली को मलता रहे कि क़वाम होजावे और दो तोले प्रभात उठकर पिये ।

चटनी—जो फ़ालिज और कफ के रोगों को उत्तम है—बच, अक़रक़रा, कायफल, कुलींजन, कालीमिरच, पीपल, सोंठ, नरकचूर, पीपलामूल बराबर लेकर बराबर शहद में मिलावे और वैद्य की मति के अनुसार खाय ।

मालखोलिया अर्थात् बिक्षिप्त होने का यत्न ।

जो यह रोग अधिक हो तो उसको जनून कहते हैं और जो क्रोध और चिन्ता आदिक हो तो मानिया बोलते हैं और जो हँसी खेल और दुःख देना अधिक हो उसको [illegible] कहना उचित है जो [illegible] और मनुष्यों से अरुचि हो उसको [illegible] कहते हैं मालखोलिया के यत्न में शीघ्रता अवश्य है—पहिले पहिल फ़स्द करे क्योंकि पहिले यह यत्न सुगम है और स्थिर होने के पीछे बड़ी कठिनता होती है । हरदशा में रोगी को प्रसन्न रखना, अच्छी जगह बैठाना, घृतसंयुक्त भोजन खिलाना

और बहुत सुलाना तथा कई बेर मुसिलों के द्वारा मल निकालना और मनको पुष्ट रखना उत्तम से उत्तम यत्न है, मालख़ोलिया के रोगी को जो अच्छा लगे वही करने देना उचित है परन्तु एकान्त और भय हानिकारक है। जो ऐसा रोगी काम की अधिक चिन्तना करे तो आज्ञा देदे परन्तु अधिक नहीं और फ़स्द के उपरान्त माउलजबन पिलाना उत्तम है। माउलजबन के सेवन के दिनों में बल देखकर मुसिल देता रहै।

अमलबेद की सिकञ्जबीन।

जो दग्धित दोष को श्रेष्ठ है—अमलबेद सात मिस्काल, शाहतरा, गावज़बाँ हरएक चार मिस्काल, मिश्री तीनभाग, बहुत खट्टा सिरका, मिश्रीका तीसरा हिस्सा सबकी चाशनी करे बकरी का दूध जिसका माउलजबन बनावे इसी सिकञ्जबीन से फाड़े मालख़ोलिया में बहुधा शिर पर मारना लाभ करताहै कि उस को बुद्धि आवे और इन्द्रियों का बल पीड़ा के कारण चैतन्य होजावे जो रोगी फिरजावे फिर मारे और अफ़ीम खिलाना उसकी औषधि है और दो रत्ती से प्रारम्भ करके आधे टंक पर्यन्त पहुँचावे परन्तु यह उसीको लाभ करती है जो युवा हो। दाग़कर दाग़को छोड़ देना उत्तमोत्तम यत्न है तिब्बयूसफ़ी में सर्वदा मद्य पीना और नाच दिखाना इसके यत्न में लिखा है।

अन्य—सिकञ्जबीन अमलबेद माउलजबन में इस दग्धित दोष के रोग के लिये सेवन करते हैं कालीहड़, नमक हिंदी एक एक मिस्काल, अमलबेद पांच मिस्काल, सिरके में भिगोकर इस सिरके से सादी सिकञ्जबीन बनाकर आधे अदकिये दो रतल भर दूध में मिलाकर पकाकर ठण्ढा करके टपकावे। पांच अदकिये से नौ अदकिये पर्यंत जितना चाहे खावे।

नाक में टपकाने की औषधि।

(जो विक्षिप्तताको लाभदायक है) मनुष्य के केश जलाकर गुलरोग़न में कजली करके नाक में टपकावे।

कहानी–एक मनुष्यको अकेले बैठनेका व्यसन और उन्माद शुरू हुआ ग़रीबी के सबब उस बेचारे को रोगशांति का मक़दूर न था मैंने पहिले हफ़्तन्दाम की फ़स्द खोली फिर उसको बकरी का दूध खाकसीर के साथ पिलाया बहुत गुण किया और मालखोलिया का एक प्रकार मिराक के साथ होता है और मिराक एककोष्ठ के ऊँचेका परदाहै उसके लक्षण–गुदाके पवनकी अधिकता, अफरा, पीड़ा, उदरदाह और खट्टी डकार जली हुई और मन्दाग्नि और खफ़क़ान अर्थात् उन्मादहै उसका यत्न हर चिह्ने में वासलीककी फ़स्द ले और ताजखरूस के पत्तोंका रस पिलाना इस रोग में अतिगुणदायक है और मालखोरिया का एकप्रकार और है उसको इश्क़ कहते हैं ।

यत्न–रोगी को किसी और कामों में लगावे और उसके प्रियतम की भेंट धर्मशास्त्रानुसार उत्तम यत्न है । उन मनुष्यों को रोगीके आगे नियत करे कि उसके प्यारे की बुराई करैं और जो प्यारा न हो उससे भोग करना भी प्रीतिको कम करता है ।

तिबफ़रीदी में लिखा है कि लोहे के बुझे हुये जलका पीना प्रीति को कम करता है और उसकी यह रीति है कि लोहे को गरम करके जब पानी में बुझाने लगे यह कहे कि जिस तरह यह गरम लोहा पानी में ठण्ढा होताहै उसीप्रकार अमुकके पुत्र अमुक की प्रीति अमुक की सन्तान अमुक से ठण्ढी करदे तीन बेर यह कहकर लोहा ठण्ढा करे फिर उस जलसे प्रीति करनेवाले का मुख धोये और उसके हृदयपर छिड़के तीन दिनके सेवन में प्रीति भूल जावेगी ।

तिबफ़रीदी और अन्य पुस्तकों में लिखा है कि उस संगमर्मर का टुकड़ा जिसमें किसीके मरनेकी तारीख लिखी हो लेकर थोड़ा घिसकर प्यारे और प्यार करनेवाले के वियोग के संकल्प से दोनों को कहे बिना खिलावे विशेष करके प्रीति को दूर करता है ।

एक पुस्तकमें मैंने देखा कि जो बिच्छूका डंक, कुत्तेका नाखून

और कछुये का नाखून ऊँट के चमड़े में यन्त्र बनाकर विक्षिप्त रोगवाले के गले में बांधे तो यह बीमारी दूर हो और यह यत्न मिरगी को भी उत्तम है।

औषधि नाक में टपकाने की।

फिरंगी डाक्टर ने विक्षिप्तता के दूर करने के लिये आज़माई हुई बताई है।

उल्लू का भेजा अढ़ाई रत्ती टिघलाकर कौड़ीभर कपूर मिलाकर पीसे कि खूब मिलजावे फिर अढ़ाई रत्ती कौवे का रुधिर उसमें मिलाकर दो यवके अनुमान लेकर कई बूँदें तुलसीके रस में नाक में टपकावे विक्षिप्तता दूर होजावेगी।

अन्य–कद्दू का तेल जिसका सहर और सरसाम में वर्णन हुआ विक्षिप्तता को उत्तम है।

अन्य–तोफ़तुल्मोमनीन में लिखा है कि नये कुल्हड़ में स्त्री के केश जलाकर उस कुल्हड़ में प्यार करनेवाले पुरुष को जल पिलाने से प्रीति कम होती है किन्तु उससे अरुचि होजाती है।

शरीर के फड़कने का यत्न।

फड़कने का कारण पवन है फड़कनेकी अधिकता किसी रोग का कारण होती है।

यत्न–नोन और भूसीसे सेंके और जो तेल फ़ालिजमें वर्णन किये गये हैं उनको मर्दन करे गरमदवा का लेप भी गुणकारी है जो इन चीज़ों से दूर न हो तो कफ़को मुसिल से निकाले।

अंगों के कांपने का यत्न।

जो मल कफ़ का हो तो उसके लक्षण मालूम करके उसी अंग के मल को साफ़ करे और जो कांपनी मैथुनकी अधिकता से हो तो मैथुन छोड़दे और जो मद्य की अधिकता से हो तो मदिरा छोड़दे और ताज़ा दूध पीना और आधा भूना मुरग़ी का अण्डा खाना कांपनी को गुणदायक है।

नेत्ररोग का यत्न ।

शरीर का उत्तमोत्तम अंग नेत्र है जो इसमें कोई दोष आ-जावे तो उसके यत्न में आलस्य न करना चाहिये और आंखको झांप और धुयें और गंदी पवन से बचाना चाहिये और रोनेकी अधिकता और मैथुन और नशे और खींचनेवाली अधिक चीजें नेत्रको हानिकारक हैं और सर्वदा सूक्ष्म वस्तुओंको देखना निषेध है परन्तु श्रम की रीतिपर उचित है हरियाली पर दृष्टि करना नेत्रके तेजको संचित करताहै और नेत्ररोगपर जबतक तीनदिन न बीतें कोई यत्न न करना चाहिये—नेत्र की पीड़ा और शोथ को जो मांस के परदे की लाली के साथ हो रमद कहते हैं।

यत्न—सरेरू की फ़स्द लें जो नाना प्रकार की रमद को गुण-दायकहै और जोंक लगाना भी लाभ देताहै मांस और मिठाई और खटाई से पथ्य करना उचित है और रमद के प्रारम्भ में ठण्ढाजल नेत्र पर लगाना निषेध है और पीला कपड़ा हल्दी में रँगकर या नीला कपड़ा आंख के सामने लटकाना उचित है अब कोई दवा रमद की जो सुगम हैं बर्णन करता हूँ।

गोली—जो रमद के लिये श्रेष्ठ है लिखा है कि इससे रमदकी पीड़ा के लिये कोई उत्तम यत्न नहीं है।

भुनीहुई फिटकरी पक्के दो दाम, हल्दी सात माशे जो कच्ची हो तो उत्तम है, अफ़ीम पांच माशे पक्के पावभर कागज़ी नींबू के रस में लोहे की कड़ाही में नरम आगमें पकाकर कजली करे जब गोलियां बनाने के योग्य हो गोलियां बना रक्खें जल में रगड़कर पतला पतला आंख पर मले और नेत्र के किनारों की तरफ़ से थोड़ी आंख में भी लगावे।

औषधि—जो गुणकारी है और कान के जख़्मों को टपकाने की दवा की रीति पर सेवन से गुणकारी है और दूधमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेना मूत्र के निकलने की जगह को उत्तम है—धोया हुआ सफ़ेदा छः टंक, निशास्ता, क़तीरा, बबूलका गोंद

हरएक डेढ़ टंक कपूर दो दाम, कुन्दर अफ़ीम आधी आधी दिरम ८ शाफा बनावे।

औषधि—नेत्र की पीड़ा को एक दम में ठहरावे—लोध, गेहूं की मैदा, घी, हरएक चार टंक सबको खमीर करे और चार गोलियां बनावे और ठीकड़ा आगपर रखकर उसमें एक गोली रखदे जब कुछ गरम हो नरम नरम नेत्रपर बांधे ठंढा होने के उपरान्त दूसरी गोली बांधे इसीप्रकार चारों गोलियां बांधने से पीड़ा दूर होती है।

पोटली—जो नेत्र की पीड़ा के लिये अद्वितीय है। घिकुवार की गूदी एक माशा, अफ़ीम एक रत्ती खूब पीसकर घिकुवार की गूदी में पोटली बांधकर पानी में भिगोकर आंख पर फेरै एक दो बूंद नेत्र के बीच में भी टपकावे।

अन्य—जो नेत्रपीड़ा के लिये आज़माया हुआ है—लोध एक माशा, भूनी फिटकरी एक माशा, अफ़ीम आधा माशा, इमली की पत्तियां चारमाशे सबको पीसकर पोटली बनाके प्रतिसमय आंख पर फेरे।

अन्य—आंखों की पीड़ा और सबलबायु को उत्तम है इमली की पत्तियां, सिरस की पत्तियां, हल्दी, फिटकरी आधा आधा टंक महीन कूटकर पोटली बनाकर पानी में भिगोकर प्रतिसमय आंख पर फेरै और कुछ उसका जल आंख पर टपकावे।

तथा—रमद के लिये—कोकनार एक, अफ़ीम एक रत्ती, दो लौंग, भूनीहुई बेलगिरी चार माशे, हल्दी चनेके बराबर, इमली की पत्तियां थोड़ीसी पोटली बांधकर पानी में भिगोकर आंख पर फेरै और अन्दर भी टपकावे।

तथा—कपूर तीन भाग, पठानीलोध एक भाग आपस में पीसकर पोटली बांधे और दो घड़ी पानी में भिगोकर आंखपर फेरे और भीतर भी टपकावे।

तथा—लोध, फिटकरी, मुरदारसंग, हल्दी, ज़ीरा सफ़ेद, हर एक टंक टंक अफ़ीम चने के बराबर, कालीमिरचें चार तूतिया हरे उड़दके बराबर कूट छानकर पोटली बांधकर पानीमें भिगोकर आंखपर फेरै।

अन्य—रमद को दूर करे—पीली हड़ की छाल, काबिली हड़ की छाल, आँवला, रसौत, गेरू, इमली की पत्तियां, अफ़ीम, भुनी फिटकरी, सफ़ेद ज़ीरा यह सब थोड़ी थोड़ी कपड़े में पोटली बांधकर गुलाब हो तो अच्छा नहीं तो जलसे भिगोकर आंखपर फेरै।

औषधि—( जो नेत्रों की पीड़ा को लाभ दे ) कालाज़ीरा, सफ़ेदलोध महीन पीसे और भुनी फिटकरी भी पीसकर घिकुवारके गूदे में मिलाकर पोटली बांधे और पानी से भिगोकर फेरै।

अन्य—जो सर्वप्रकार के नेत्ररोग को गुण करे—अफ़ीम एक माशा, भुनी फिटकरी दो माशे, इमली की पत्तियां दश माशे सब महीन पीसकर पोटली बांधकर आंख पर फेरै और पानी उसका आंख में टपकावे।

आंख की ललाई दूर करने की औषधियां।

फिटकरी एक माशा, अलसी दो माशे दोनों साबूतपोटली बांधकर पानी से भिगोकर आंखपर फेरै।

अन्य—( पैत्तिक नेत्रपीड़ा को गुणदायक है )—ईसबग़ोल का लुआब आंख में लगावे।

अन्य—जिसदिन नेत्रपीड़ा हो उसीदिन धतूरे की पत्तियां कुछ गरम करके कान में टपकावे जो बाईं आंख में पीड़ा हो तो दाहिनी में जो दाहिनी में हो तो बाईं में डाले।

अन्य—जो बच्चों के रमद को गुणदायक है—नींबकी कोंपल पीसकर कुछ गरम करके जिस तरफ़ पीड़ा न हो उस ओर टपकावे और जो दोनों नेत्रों में पीड़ा हो तो दोनों कान में टपकावे।

अन्य–नेत्रपीड़ा को दूरकरे–केवल घिकुवार की मींगी पीस-कर सोने के समय आंख में टपकावे।

आंखों की पैत्तिक पीड़ा को दूरकरने की औषधि।

गोंदी की पत्ती मलकर उसका पानी निकालकर आंख में टपकावे।

अन्य–हल्दी जलमें पीसकर अन्योन्य ओर कान में टपकावे।

औषधि–बिहीदाने का लुआब उस स्त्री के दुग्ध में जिसने बेटी जनी हो और धनियां के पत्तों का जल मिलाकर छानकर आंख में टपकावे तो आंख की ललाई को दूर करे।

औषधि–नींबू का रस लोहे के बर्तन में लोहे के दस्ते से हल करे जब काला होजावे आंख के चौगिर्द अनुलेपन करे।

अन्य–लोध, आंवला, गायके घी में भूनकर ठण्ढे जलमें पीसकर मले परन्तु आंख के बीच जाने न पावे।

अन्य–पीली हड़की छाल, गेरू, रसौत, जंगीहड़, घिसकर आंख के गिर्द लेप करे।

अन्य–आंख की ललाई को गुण करे–सूखी इमली बीज निकालकर पानी में भिगोकर मलकर छानकर अफ़ीम तीनरत्ती, फिटकरी पांचरत्ती उसी इमली के जलके साथ लोहे के बासन में पकावे कि पानी गाढ़ा होजावे उसको सीपमें रखकर लेप करे जो इमली न मिले उसके पत्तों का जल लेकर पकाकर लेप करे।

अन्य–सोंठ, सम्मग़अरबी एक एक टंक गेरू एक मिस्काल अफ़ीम दो टंक कूटछानकर पानी में कजली करके शाफ़ा बना-कर लेप करता रहे।

अन्य–अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़ा थोड़ा पानी के साथ खूब पीसकर लेप करे और आंख में टपकावे।

नेत्रपीड़ा को तत्काल दूरकरने की औषधि।

बरगद का दुग्ध आंख में लगावे।

अन्य–नींबके पत्ते और सोंठ बराबर अलग अलग पीस

छानकर दोनों को बराबर लेकर चने की बराबर गोलियां बनावे समयपर जल से पीसकर लगावे।

औषधि–जो आंख की ललाई और गुबार को जो बग़ल की दुर्गन्धि से हो गुणदायक है–अढ़ाई कालीमिरचें थोड़ी चूल्हे की मिट्टी, लाल जली हुई तीनों को बांस के चोंगे या चीनी के प्याले में ख़ूब कजली करे जब काला होजावे आंख में लगावे।

औषधि–( जो नेत्र की सुरख़ी को आराम करे ) बांसे के पत्ते पीसकर टिकिया करके तीन दिन आंख पर बांधे।

अन्य–कपास की पत्ती दही में जोश देकर पीसकर आंख में लगावे।

अन्य–अनार की पत्ती पीसकर टिकिया करके सोते वक़्त आंख पर बांधे।

अन्य–जो लड़कों की रमद को गुण करती है। लड़के के मूत्र में रुई भिगोकर आंख पर बांधे।

अन्य–जब रमद शुरू हो, जो पीड़ा दहने नेत्रमें हो तो बायें अँगूठे के नाखून में और जो पीड़ा बायें नेत्रमें हो तो दहने पांव के अँगूठे के नखमें मदार का दुग्ध भरदे।

औषधि–जो रमदको गुण करे–गोभी को पीसकर टिकिया बनाकर आंख पर बांधे।

अन्य–आंख, हृदय और पेट की जलन को गुण दे–मकोय, आमला, मुलहठी, नागरमोथा, ख़स, नीलोफ़रके बीज, एक एक टंक, मिश्री नौ टंक कूट छानकर दो दाम के अनुमान खावे।

अन्य–कफ़ के रमद को गुणदायक–सहँजने के पत्तों का थोड़ासा रस शहद में मिलाकर आंख पर लगावे उसपर वस्त्र बांधकर सोरहे प्रातसमय खोले तीन दिन में आराम होगा।

अन्य–जो लड़कों आदिके रमदको गुण करे–साफ़ किया हुआ चाकसू दो मिस्काल, अंजरूत, मिश्री एक एक मिस्काल महीन कूट छानकर छिड़के और बाज़े अंजरूत के बदले ममीरा डालते हैं।

अन्य–जलीहुई मेथी का लुआब थोड़े क़तीरे के साथ आंख में टपकाना बड़ी पीड़ा को दूर करता है।

अन्य–आंब की कैरी पीसकर आंखपर बांधे–

अन्य–कटाई के पत्ते पीसकर आंखपर बांधे और कटाई के पत्तों का पानी भी आंख में टपकाना अति श्रेष्ठ है।

अन्य–सुरख़ी दूर करे–छीली हुई मुलहठी कूटके थोड़े जल में पीसकर रुई उसमें भिगोकर आंखपर रक्खे।

अन्य–सुरख़ी को दूर करे–लोध छः टंक, पीली हड़की छाल दो टंक, अनार के पत्तों के जलमें पीसकर रुई उसमें भिगोकर तीनदिन बराबर रातको आंखपर रक्खे।

अन्य–वह औषधि पतली जिससे किसी अंग को धोवे जो नेत्रों को बुख़ारको दूर करे और खुजली को गुण करे और सुरख़ी को दूर करे–पीलीहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला जवकुट कर रात्रिको जलमें भिगो रक्खे प्रातःकाल को उस जलसे नेत्रों में एक दिन धोवे।

अन्य–कि आराम होने की–दश सेवन करने से एकबर्ष आंख न दूखे चालीस मुण्डी निगलजावे तो दो बर्ष पर्यन्त आराम से रहे यह आज़माया हुआ है यूनानी कहते हैं कि जो बुधबार को सूर्योदय के समय एक अनारकी कली जो फूली न हो बृक्षसे मुखसे तोड़कर निगले एक बर्ष पर्यन्त रमदसे रक्षित रहे जो दो निगले तो दो बर्ष पर्यन्त बचे रहे।

रतौंधी का यत्न।

कालीमिरच, कमीला, पीपल बराबर बारीक पीसकर आंख में लगावे।

अन्य–काली हड़, सोंठ, कालीमिरच कूट छानकर गोली बनाकर पानी में घिसकर लगावे।

औषधि–आज़माई हुई बौअली सैनाकी बकरी की कलेजीका कबाब बनावे उससे जो जल टपके आंख में लगावे कई साबूत

पीपल कलेजी में रखकर आगपर इतनी देर रखते हैं कि जलजावे फिर पीपल को निकालकर शहद मिलाकर आंख में लगाते हैं ।

अन्य—प्याज़ का जल आंख में लगावे सिरस के पत्तों का पानी आंख में लगावे ।

अन्य—समन्दर फल की गूदी बकरी के मूत्र में घिसकर आंख में लगावे ।

अन्य—लाहौरी नमक की सलाई आंख में फेरे ।

अन्य—दही के तोड़ में थूक मिलाकर आंख में लगावे ।

अन्य—अदरक पीसकर उसका जल नेत्र में टपकावे जो अदरक न हो तो सोंठ पानी में घिसकर दो तीन बूँदें आंख में टपकावे ।

अन्य—कालीमिरच थूक में घिसकर आंख में लगावे ।

अन्य—रोहू मछली का पित्ता आंख में लगावे ।

अन्य—कसौंधी के फूल का पानी आंख में लगावे ।

अन्य—सहँजने की कोमल डाली का जल दो मिस्काल शहद में मिलाकर आंख में टपकावे ।

अन्य—सिरस के बीज चारदाम खूब पीसकर आटे में मिलाकर रोटी पकाकर तीन दिन खावे ।

अन्य—हड़, लालमिरच, शहद में मिलाकर आंखमें लगावे ।

अन्य—कालीमिरच रोहू के पित्ते में भिगोकर सुखावे जब पित्ता मिलजावे मिरच घिसकर आंख में लगावे ।

अन्य—गधेका रुधिर ताज़ा आंख में लगावे दो तीन दिन में दूर हो ।

अन्य—मनुष्य के कानका मैल पीली हड़ की छाल के साथ बराबर पीसकर गोलियां बनावे और जलमें कजली करके सन्ध्या के अनुमान आंख में लगावे ।

अन्य—सरकंडे को गिरह से तोड़कर उसीके ऊपर की छाल जलावे ज़ब चार अंगुल जलने से शेष रहे उसके दो टुकड़े करे लालतरी कि उसके बीच जमा होगी आंख में लगावे यद्यपि वह

तेज़ी के कारण पीड़ा और दाह करेगी परन्तु मलको आंसुवों के साथ बहाकर रोग को खोदेगी।

अन्य—हुक्के की नै जिसपर चिलम रखते हैं उसकी कीट आंख में लगावे।

दिनौंधी का यत्न।

भेजे को तरकर और बकरे का कल्ला और पायँ और उड़द की दाल खाया करे कि रुधिर गाढ़ा होजावे ठण्ढे जलमें ग़ोते लगाना और उसमें आंखें खुलीरहना गुण करता है।

पलकों के मोटा होजाने का वर्णन।

सलाक़ पलकों के मोटा होजाने को कहते हैं कि उसके साथ खुश्की और खुजली हो और पलक के बाल गिरजावें उसको लौकिक में बाम्हनी बोलते हैं उसका उत्तमोत्तम यह उपाय है कि सरेरू की फस्द ले और शिरके पीछे पछने लगावे फिर औषधि का सेवन करे।

सलाक का गुणकारक यत्न।

जो पलकों को घासकी भांति उगाता है रुई की बत्ती मदार के दुग्ध में भिगोकर सुखावे और दिये में मीठा तेल भरकर वह बत्ती जलाकर काजल पार के आंख में लगावे कई पुस्तकों में मीठे तेल के बदले घृत लिखा है।

अन्य—सलाक को गुण करे—धतूरे और भँगरे के पत्तों का पानी लेकर उसमें रुई भिगोकर छाया में सुखावे और मीठे तेल में वह बत्ती जलाकर काजल पारे वह काजल बासी पानी से आंख में लगावे।

अन्य—पुराने डोल का चमड़ा कोयलों की आगपर जलाकर कोयला करके पीसकर धुनीहुई रुई में रखकर बनावे और सरसों के तेल में जलावे और उसका काजल लेकर आंख में लगावे।

अन्य—मदार की जड़ जलाकर राख उसकी पानी में मिलाकर आंख के गिर्द अनुलेपन करे आंख की खुजली और सुरख़ी

और पलकों के फूलने को दूर करती है और बाजी पुस्तकों में लिखा है कि जो नींबके पत्ते पीसकर उसका पानी लेकर आंख में लगावे तो खुजली और सलाक को दूर करे।

अन्य—अधिक बालोंको जो पलकों में निकल आते हैं अर्थात् प्रबालको श्रेष्ठ है और सलाक और आंसू और आंखकी खुजली और सुरखी को दूर करे। दो दाम जस्त लोहेके बर्तन में कोयलों की आगपर टिघलाकर बथुये के सागका पानी थोड़ा थोड़ा उस पर टपकावे कि पीला या सफ़ेद कुश्ता होजावे उसे महीन पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—पलकों के गिरजाने और सलाक को श्रेष्ठ है—छछूँदर का गूह आधा जलाकर और आधा बे जला दोनों को पीसकर शहद में मिलाकर लेप करे।

अन्य—जो सलाक को दूर करे और खुजली और पलक की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सफ़ेद बिसखोपड़े की जड़ छाया में सुखाकर पानी में घिसकर आँख में लगावे।

अन्य—मक्खी का शिर तोड़ करके सुखाकर पानी में पीस-कर मले।

अन्य—पलकों के फूलने को दूर करे—सीप जलाकर पीसकर नेत्र में लगावे।

अन्य—दिनौंधी को उत्तम है—कटाई का फल पानीमें उबाल कर इसका बफारा ले।

अन्य—कबूतरकी बीट शहद में मिलाकर पलक पर लगावे।

अन्य—सर्प की केंचुली जलाकर तिल के तेल में मिलाकर पलक पर लेप करे।

अन्य—उस सलाक को दूर करे कि पलक गिरजावे और किनारे लाल हो बबूल की पत्तियां एकसेर पांचसेर जलमें औटावे, जब चतुर्थांश रहजावे छानकर प्रतिदिन दोबेर पलकपर लेप करते रहें थोड़े दिनोंमें ईश्वर की कृपासे आराम होजावेगा।

अन्य-गधे की लीद सुखाकर पातालयन्त्र की रीतिपर तेल खींचे और पलक पर मले।

अन्य-कद्दू को जलाकर उसकी राख सुरमेकी भांति लगावे।

अन्य-ज़ो सलाक को श्रेष्ठ है-पुराना कपड़ा गाढ़ा या रुई तीनबेर हल्दी में रँगकर सुखा के फिर उसीप्रकार तीनबेर निबौली की गिरीके सीरेमें भिगोकर सुखाकर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकर उसका काजल लेकर लगावे।

अन्य-संगबुसरी, तूतिया, कपूर, मिश्री बराबर कूटछान के पानी में खरल करके गोलियां बनावे आवश्यकता पर जलमें घिस कर आंख में लगावे।

अन्य-कुन्दर को सुरमे की भांति करके नेत्रमें लगाना आंख की ज्योति को साफ़ करता है और आंख के घाव और आंख के जमेहुये रुधिर और आंख के आंसू बहने और सलाक और आंख की सफ़ेदी और खुजली को गुण करता है। और धुंध को दूर करता है बिशेष कर शहद में मिलाकर और कुन्दर का काजल भी यही गुण करता है।

काजल पारने की रीति।

कुन्दर को दिये में जलाकर उसपर एक बर्तन औंधावे कि काजल उसमें इकट्ठा हो।

अन्य-पलकों के झड़ने को गुण करे-खुरमा के बीज तीन टंक बालछड़ दो टंक पानी में पीसकर आंख में लगावे।

अन्य-पलकों के बाल जमाने के लिये कि कोढ़ से गिरगये हों जंगीहड़, माज़ूफल को जलाकर सुरमा मिलाकर लेप करे।

मोतियाबिंद का यत्न।

उसके यह लक्षण हैं कि प्रारम्भ में रोगी के बिचार मक्खी और मच्छर की भांति नेत्र के सामने मालूम हों और दिन दिन अधिक होते जावें और उतरने के उपरांत पुतली बदलजावे और ज्योति जाती रहे।

पानी उतरने के बंद करने का यत्न।

पहले कनपटियों पर गुल देना है कि सुरमा बनानेवाले जानते हैं जोंकें लगाना कनपटियों पर प्रारम्भ में भी गुण करता है जब पानी सब उतर आवे मलके पकाने के उपरांत भेजेको साफ़ करे।

बच की माजून।

मोतियाबिन्दके प्रारंभ में सेवन करना उचित है—बच, हींग, सोंठ, सौंफ बराबर लेकर शहद में मिलावे और एक मिस्काल के अनुमान खावे।

अन्य—मोतियाबिन्द को दूर करे—निर्मली शहद में पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द को दूर करे—हँकूत के बीज दो भाग, अफ़ीम एक भाग कूट और छान के शाफ़ा बनावे।

अन्य—नौसादर को सुरमे की भांति नेत्र में लगाना मोतियाबिन्द को दूर करता है।

अन्य—सफ़ेद घुंघचीका जल काग़ज़ी नींबूके रसमें मिलाकर प्रातःकाल नेत्र में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द के लिये आश्चर्यदायक गुण रखता है और अधिक होने नहीं देता—इमली के पत्ते दशतोले फूलके कटोरे में नींब की लकड़ी के दस्ते से कि उसमें पैसा जमाया हुआ हो इतना कजली करे कि गाढ़ा होजावे फिर उस स्त्री के दुग्ध में कि पुत्रजनी हो चालीस पहर खरल करके सेवन करे।

मोतियाबिन्दनाशक सौंफ का सुरमा।

सौंफ का हरा बृक्ष लेकर शीशे या चीनी के बासन में रक्खे जब सूख जावे पीसकर सुरमा लगावे।

सेवती का सुरमा।

सेवती के फूल कुन्दर बराबर पीसकर रुई में लपेटकर बत्ती बनाकर मीठे तेल में जलाकर उसका काजल लगावे।

औषध—भीमसेनीकपूर पुत्रवती स्त्री के दुग्धमें पीसकर लगावे।

अन्य-कौवे का पित्ता आधा वज़न शहद में मिलाकर खूब कजली करके आंख में लगावे रोग शान्ति को प्राप्त होगा।

अन्य-निर्मली, हींग, सफ़ेद फिटकरी, सङ्गबुसरी, तूतिया एक एक दाम बारीक पीसकर दही में खरल करे यहां तक कि आठसेर दही खरल में भलीभांति कजली करे इसके उपरान्त गोलियां बनाकर रक्खे और आवश्यकता पर स्त्रीके दुग्धमें घिसकर लगावे।

अन्य-प्रारम्भ में सेवन करनेसे मोतियाबिन्द दूर होता है-हड़की गुठली की गूदी स्वच्छ जल में तीस पहर खरल करके गोलियां बनाकर नेत्र में लगावे।

अन्य-मोतियाबिन्द के लिये आज़माया हुआ है-जो इस रोग के प्रारम्भमें सेवन करे अधिक होने न दे-दो काग़ज़ी नींबू का रसलेकर चार तोले गायके मक्खन में खूब मलकर मक्खन में थोड़ा जल डालकर दो रातदिन रखदे फिर मक्खन को जलसे धोकर उसी प्रकार दो नींबू के रसमें कजली करके जल डाल कर दो रातदिन रक्खे और धोवे इसी प्रकार पच्चीसबेर करके चीनी व शीशा के बासन में रक्खे और दो दाने खशखाश के बराबर लगाया करे।

अन्य-नींब के बीज का सुरमा लगाना पानी उतरने को गुण करता है।

अन्य-मनुष्य के कानका मैल, हींग बराबर शहद में पीसकर आंख में लगाया करे दूध मछली खाना मोतियाबिन्द के रोगी को हानि करता है।

### आंख और पलकों की खुजली का यत्न।

पहिले सरेरू की फ़स्द ले फिर खुजली की औषधियों का सेवन करे।

माज़ू, जंगीहड़ पीसकर आंखपर लेप करना आंख और पलकों की खुजली को गुण करता है।

मनुष्यके शिरके बालों का सुरमा।

मनुष्य के शिरके केश जलाकर महीन पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—अंडेका छिलका जलाकर महीन पीसकर लगावे नींब का सुरमा बहुधा नेत्ररोगों को गुणदायक है नींब के पत्तों को आबखोरे में रखकर कपरौटी करके इतनी देर आग में रक्खे कि भीतर जलकर राख होजावे उस राख को नींबू के रसमें खरल करके लगावे।

अन्य—आंख की खुजली और दाहको गुण करे सीसे का मैल आंख में लगावे और सीसे का मैल उस स्याही को कहते हैं कि सीसे के टुकड़े को जूती के तले या बांस के चोंगले पर रगड़ने से प्रकट हो उस स्याही को उँगली में लेकर आंख में लगावे।

नेत्रकी ज्योति का यत्न।

यह रोग कई प्रकार से होता है बहुधा बुढ़ापेमें नेत्रकी भेजेकी कमज़ोरी और अग्निके मन्द होनेसे नेत्रकी ज्योति कम होजाती है यह असाध्य है परन्तु उपाय से हाथ न उठाना चाहिये कि अधिक न होजावे।

यत्न—भेजे का मल निकाले और बल दे कच्चे शलगम और पकाकर खाना नेत्र की ज्योति को गुण देता है और शिरमें कंघी करना बूढ़ों की ज्योति को उत्तम है चाहिये कि प्रतिदिन कईबेर कंघी दे कि बुख़ार को आंख से शिरकी ओर सुखादे और शेखुलरईस ने कहा है कि साफ़पानी में पैरना और उसमें आंख खोलना भी लाभ देता है और थोड़ा वमन आंख की ज्योतिको गुण देता है और नीचे के शरीर का श्रम और उसका दबाना और मलना ज्योति को श्रेष्ठ है और ज्योतिकी हानिकारक यह बातें हैं बहुत रोना और गरदनके पीछे पछने लगाना और बहुत भूखा रहना और बहुत भोगकरना और सोया, मसूर और जो कुछ बन्धकोष्ठकारक वस्तु हों विशेष करके ज्योति की हानि कारक हैं।

मुंडी के शरबत का नुस्खा।

जो ज्योति की हीनता और दिमाग़की तरीको गुणदायक है और बुख़ारों को विभाग से दूर करता है–मुंडी के फूल पावभर, शक्कर सफ़ेद तीन पाव, मुंडी के फूलों को डेढ़सेर जलमें रात्रिको भिगोकर प्रातःकाल जोशदे जब तृतीयांश रहे छानकर शक्कर मिलाकर शरबत का क़वाम करे और चार तोले खावे मुंडी का अरक़ भी नेत्रोंको बल देता है।

सौंफ का चूर्ण।

नेत्रों की ज्योति को बलदायक आज़माया हुआ है–तिब-दाराशिकोही से यह औषधि प्रति कीगई–रात्रि को दो टंक सौंफ कूटछान के दो टंक सफ़ेद शक्कर के साथ मिला खाकर सोरहे इसीप्रकार से सर्बदा सेवन करे सौंफ़ की अतर सौंफ़ के अरक़ से निकाल कर आंख में लगावे बहुत गुण करता है।

गोली–चमेली के फूल डंडी तोड़कर बराबर मिश्री मिलाकर खरल करके आंख में लगावे।

अन्य–ज्योति को बलदे–सङ्गबुसरी आधातोला टुकड़े टुकड़े करके दो तीन काग़ज़ी नींबू के रसमें भिगोवे और मिट्टी के बर्तन में रखकर कपरौटी करके जंगली कण्डों में रखकर आग दे फिर निकालकर पीसकर आंख में लगावे।

गोलियां–ज्योतिको श्रेष्ठहैं–हड़के बीजकी मींगी बारह, पीपल पांच, कालीमिरच पांच, आंवले के रसमें इतना पीसे कि काली होजावें फिर गोलियां बनाकर पानीमें घिसकर आंख में लगावे।

अन्य–रीठे के बीजोंकी मींगी नींबू के रसमें खरल करके गोलियां बनाकर रक्खे प्रात समय थूंकमें घिसकर आंख में लगावे।

गोली–ज्योति की हीनताको गुण करे और आंख की ललाई को श्रेष्ठ है–जंगीहड़ मिश्री बराबर पीसकर गोलियां बांधकर आंख में लगावे।

सलाई–जिसका सेवन बैद्यक में लिखाहै–शीशे को अग्निमें

गलाकर त्रिफले के जलमें बुझावे फिर मुँह के पानी में फिर भँगरे के जलमें फिर घृतमें बुझावे फिर शहद में फिर सलाई बनाकर प्रातसमय आंख में फेरे आंख की सब बीमारियों को श्रेष्ठहै और ज्योति को बल देती है।

औषधि—बहुधा नेत्र की बीमारियों को गुण करे और उसके सर्बदा सेवन से आंख अच्छी रहती है जब कि नींद से जगे अपना थूंक आंख में लगावे।

अन्य—ज्योति को उत्तम है—हँकूत की गूदी पानी में पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—निर्मली जलमें घिसकर आंख में लगाना ज्योति को अधिक करता है।

अन्य—सिरस का चूर्ण गजी का कपड़ा सिरसके पत्तों के पानी में भिगोकर सुखावे तीन बेर इसी तरह करे फिर उसकी बत्ती बनाकर चमेली के तेल में जलाकर उसका काजल लेकर रक्खे और अंजन की रीतिपर आंख में लगाया करे।

लेप—आंख के बुख़ार और लाली और नेत्र की ज्योति की कमज़ोरी को गुण करता है परंतु बहुत दिनोंतक लगाना चाहिये—जंगीहड़ बहुत छोटी दो, अफ़ीम चार रत्ती, लौंग शिरकी तरफ़ से सबको कूपजल में पीसरक्खे और आंखपर लगाया करे जो किञ्चित् नेत्र में जावे तो कुछ हानि नहीं।

औषधि—बहुधा नेत्ररोग और ज्योति और मोतियाबिन्द के प्रारंभको श्रेष्ठ है—प्याज़ का जल शहद में मिलाकर आंखमें लगावे।

ज्योतिकारक सुरमा।

सोलह कालीमिरचें, साठ पीपल, पचास चमेली की कली, अस्सी तिलके फल सबको मिलाकर खरलकरके सुरमा लगावे।

अन्य—कालीमिरच एक माशा, पीली हड़की छाल दो माशे, छिलीहुई हल्दी तीनमाशे, गुलाब या पानी में खरल करके सुरमे की भांति करके आंख में लगावे।

अन्य—ज्योति को श्रेष्ठ है—मोजिज फ़ारसी पुस्तककी प्रति—दो अख़रोट, हड़की मींगी तीन दोनों को जलाकर पीसे और चार कालीमिरचें मिलाकर खरल करके सुरमे की भांति बनावे रसौत को सुरमे के बदले लगाना सर्बदा नेत्र को गुण करता है।

अन्य—नींब के फूल छाया में सुखाकर उसके बराबर क़लमी-शोरा लेकर सुरमा करके सोने के समय नेत्र में लगावे सबल और नाख़ुना को भी लाभ करता है।

औषधि—धुनीहुई रुई मदार के दुग्ध में भिगोकर छाया में सुखाकर बत्ती बनाकर सरसों के तेलमें जलाकर उसका काजल रक्षापूर्बक लेकर नींब की लकड़ी में पीसकर फूलके कटोरे में गुलाब के साथ सातदिन खरल करे और सलाई के साथ आंख में लगावे।

सबलबाय और आंख की सफ़ेदी इत्यादि का बर्णन।

सबल एक परदाहै आंखकी रगों में मलके भरजाने से उत्पन्न होताहै उसको माड़ा और फूली बोलते हैं ज़करह अर्थात् नाख़ुना आंख के बड़े कोयेकी ओर पैदा होता है आंख की सफ़ेदी को हिन्दी में जाला बोलते हैं वह सफ़ेदी है कि आंख की स्याही पर पैदा हो।

यत्न—पहिले फ़स्द सेरेरू या माथे की रग खोले उसके उपरान्त जो दवायें आंख को साफ़ करती हैं सेवन करे—आंख के दर्द नाख़ुना और दमा को गुणकारक—अरहर का रस एक दाम छानकर बिना क़लई कियेहुये बरतन में उस नींब की लकड़ी से जिसमें पैसा जमाया हो दश काग़ज़ी नींबूके रसमें खरल करके गोलियां बनारक्खे समयपर घिसकर आंख में लगावे।

गोली—सबल और आंख के गुण अर्थात् फूलीको उत्तम है—सिरस के बीजोंकी मींगी खिरनी के बीज कूट छानकर सिरस के पत्तों के रसमें मिलाकर खरल करके गोलियां बांधकर समयपर स्त्री के दूध में घिसकर लगावे।

अन्य–फूली को गुणकारक–जंगीहड़, पलाशपापड़ा, लाहौरीनोन, रक्तचन्दन बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे और पानी में घिसकर लगावे ।

गोली–सबल और सलाक और नज़ले को गुणकारक है–समुद्रफल की मींगी, रीठे की मींगी, खिरनी के बीज, कालीहड़ के बीज बराबर लेकर नींबू के रस में कजली करके खरल करे और गोलियां बनाकर लगावे ।

अन्य–रक्तचन्दन एक तोला, भुनीहुई फिटकरी बराबर कूटछानकर घिकुवारके लुआब में खरल करके गोलियां बनाकर एक गोली घिसकर आंख में लगावे ।

अन्य–नाखुने को श्रेष्ठ बुअलीसेना का आज़माया हुआ है–शहद बकरी के पित्ते में मिलाकर आंख में लगाया करे ।

अमल–आज़माया हुआ है कि जाले को आंख से दूर करता है–नोन और शक्कर को जिह्वापर रक्खे कि जिह्वा खरखरी हो जावे सो उस जिह्वा से आंख के जाले को चाटे ।

गोली–नाखुना और सफ़ेदी और पानी उतरने के प्रारम्भ को गुणदायक है–साबुन कच्चे पांच दाम, तूतिया, राल साढ़ेतीन तीन माशे साबुन को छुरी से टुकड़े टुकड़े करके लोहे के बर्तन में आगपर गलावे फिर तूतिया पीसकर साबुन में मिलावे फिर राल डालके उस बर्तन को आगपर रहने दे और लोहे के दस्तेसे कजली करे जब काला होजावे उतार ले समयपर ख़शख़ाश के दाने के बराबर लेकर सीप में मिलाकर आंख में लगावे फिर उसी प्रकार तीन दिन के उपरान्त लगावे ।

नाखुने की औषधि–हल्दी, दारचीनी, आंबाहल्दी एक एक दाम नींब के पत्ते छः टंक कूटछानकर छः महीने के बछड़े के मूत्रमें दो पहर खरल करके गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर आवश्यकता पर गुलाब में घिसकर लगावे ।

तथा–एक हल्दी की गिरह लम्बी चौड़ी लेकर उसमें छिद्र

करके गेहूँ की दो कच्ची रोटियों में उस गाँठ को रखकर तवे पर आग से पकावे जब रोटी जलजावे हल्दी निकाल ले समयपर हल्दी को फिटकरी के साथ घिसकर आंख में लगावे।

बारहसिंगे के सींग की गोलियां।

जो आंख के जाले को गुणकारक है–पहिले बारहसिंगे के सींगको पानी में पीसे फिर काग़ज़ी नींबू के रसमें खूब पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियाँ बनावे समयपर घिसकर आंख में लगावे थोड़े दिनों में आराम होजावेगा।

जाले को दूरकरने और।मोतियाबिन्दु को खोदेने का सुरमा।

मिश्री दो भाग, लाहौरीनोन एक भाग दोनों पीसकर सुरमें की भांति करके आंख में लगावे एक सप्ताह में मोतियाबिन्दु जाता रहेगा।

औषधि–सबलको दूर करे–कबूतर या मुरग़ीकी बीट काग़ज़ी नींबू के रसमें कजली करके तांबे के बर्तन में रक्खे समय पर आंख में लगावे।

अन्य–अबाबील की बीट शहद में मिलाकर आंखमें लगावे तिबफ़रीदी के ग्रन्थकार ने जाले के लिये आज़माया हुआ लिखा है।

औषधि–जो जाले को गुण करे–बारहसिंगे का सींग दूध में घिसकर लगावे।

अन्य–लाहौरीनोन से सलाई बनावे और दिन में कई बेर आंख में फेरे नाखुना और जाले को गुणदायक है।

अन्य–फूली को गुण करे–कबूतर या चिड़िया की बीट पीसकर आंख में लगावे।

अन्य–नाखुना को गुणदायक–मदार की जड़ जलमें घिसकर लगावे।

अन्य–नेत्रपीड़ा और जाले को दूर करे–कटाई की जड़ नींबू के रसमें घिसकर लगावे।

अन्य–फूली अच्छी हो–अरहर के पुराने वृक्ष की जड़ घिसकर लगावे।

अन्य–सफ़ेदीको दूर करे–बरगदके वृक्षका दूध आंखमें भरदे।

अन्य–फूली को उत्तम– बैंगन की जड़ पानी में घिसकर लगावे।

अन्य–फूली को गुणकारक–कड़वी तोरई के बीज की गिरी मीठेतेल में पीसकर आंख में लगावे।

अन्य–समुद्रझाग पीसकर लगावे और बाजे समुद्रझाग बि-नौले के तेल में पीसकर लगाते हैं।

अन्य–सफ़ेदी को श्रेष्ठ है–लाले का पुष्प शहद में महीन पीसकर लगावे।

अन्य–लड़कों की फूली को श्रेष्ठ है–मिश्री उस स्त्री के दुग्ध में कि बेटा रखती हो पीसकर लगावे।

अन्य–सोंठ, फिटकरी, लाहौरीनोन बराबर कूटछानकर प्रति-दिन आंख में लगावे कि जाला दूर हो।

अन्य–सफ़ेदीको गुण करे–गधे का सुम जलाकर महीन पीस कर लगावे।

अन्य–चमेली के फूलों की गोलियाँ जो नेत्र की ज्योति के विषय में वर्णन हुआ जाले को उत्तम हैं।

औषधि–नाखुने को उत्तम है–प्याज़का लालपानी कईदिन आंख में लगावे।

अन्य–तेजपात महीन पीसकर आंख में लगाना आंखों की अँधेरी और नाखुना और मोतियाबिन्द को गुण देता है।

औषधि–नेत्र की ज्योतिको बल दे और नाखुना और फूली और बहुत से रोगों को गुणकारक है–क़लमीशोरा बहुत सफ़ेद महीन पीसकर हल्दी रंगके अनुमान मिलाकर लगावे।

औषधि–गुणदायक है–बिषखपड़े की जड़ और सफ़ेदा पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–जो सबल को श्रेष्ठ है–रेंड़ी एक, मिश्री साढ़े चार-माशे, अंजरूत शोधीहुई तीन मिस्काल पीसकर लगावें।

अन्य–शाफ़ा सबल और नाखुने और ख़ारिशमें गुणकारक–ज़ंगार, सम्मग़अरबी, सफ़ेदाकाशगरी बराबर पीसकर पानी से शाफ़ा बनाकर सुखाकर रक्खे समयपर जलसे घिसकर लगावे।

टपकाने की दवा।

आंखकी फूलीको दो दाम आंवले जवकुटकर पानीमें दो घंटे औटावे और साफ़ करके प्रतिदिन तीनबेर आंख में टपकावे।

सुरमा–जो सबला फूली नाखुनाको उत्तमहै–चूरीसब्ज़ एक दाम महीन पीसकर नींबू के रसमें खूब खरल करे जब सूखजावे आंख में लगावे।

अन्य–सुरमा फूली, सबल, रतौंधी, तरी के सुखाने और ज्योति को गुण करे–नौसादर, फिटकरी बराबर महीन कूट छानकर अच्छी तरह खरल करके लगावे।

अन्य–फूलीको श्रेष्ठ है–आधसेर प्याज़का जल निकालकर उसमें कपड़ा भिगोकर फिर सुखावे और खट्टे मीठे से बचावे फिर उसकी बत्ती बनाकर पावभर मीठे तेल में जलावे और उस का काजल पारकर आंख में लगावे।

काढ़ा–बैद्य का बनाया हुआ सबल को श्रेष्ठ है पन्द्रह दिन सेवन करना चाहिये–पीली हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमला, नींबके बृक्ष की छाल, गुर्च, चिरायता, रक्त चन्दन, शहतरा, खस, मुण्डी के फूल तोला तोला भर औटाकर साफ़ करके एक दाम शुद्ध शहद मिलाकर पिये।

अन्य काढ़ा–रक्त चन्दन, निबौलबेर, नींबूकी छाल, आंबा-हल्दी, पीली हड़ों की छाल, बहेड़ा, आमला, बांसा दो दो दाम, कुटकी तीन दाम, फलूस की गिरी चार दाम, कडुवाचिरायता डेढ़ दाम, सोंठ, गुर्च, नागरमोथा एक एक दाम सबको कूटकर प्रतिदिन दो दाम तीन पाव जलमें औटावे जब आधपाव जल

शेष रहे छानकर दो दाम शहद मिलाकर चौदह दिनतक इसी तरह पिये।

### मुंडी की माजून।

आंख की बीमारियों को श्रेष्ठहै—पीली हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, जंगीहड़की छाल, काबिली हड़की छाल, धनियां, शहतरा, मुलेठी एक एक तोला मुराडी के फूल सब औषधियों के बराबर मिश्री तीन हिस्से सब हड़ों को तेल में भूनकर मिश्रीमें क़वाम करे—खूराक दो तोले।

### ढलका अर्थात् आंख से प्रतिसमय आंसूबहने का यत्न।

इस रोग में मुंजिज़ के उपरान्त जुलाब दे—फिर औषधियों का सेवन करे।

गोली—खुजली और ढलके को दूर करे—पीलीहड़ के बीज दो भाग, बहेड़े की मींगी तीन भाग, आमले के बीज की गिरी एक भाग पीसकर रक्खे और समयपर पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—ढलके को गुणदायक—सिरस के बीज, कालीमिरच, बनफ़शा अलग अलग कूट छानकर शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर नेत्र में लगाया करे।

अन्य—जो ढलके को दूर करे—जंगीहड़, माजूफल, बालछड़, पीलीहड़ की छाल बराबर जलमें पीसकर गोलियां बनाकर आंख में और आंख के गिर्द लगावे।

शाफ़ा—किरमह, ढलका, नेत्रकी लाली और खुजली को गुण करे—समन्दरझाग, सफ़ेद कत्था, भुनीफिटकरी, पीलीहड़ की छाल, रसौत, अफ़ीम, तूतिया बराबर लेकर स्वच्छजल में खरल करके शाफ़ा बनाकर लगावे।

सुरमा—ढलके को गुणकारक—जले हुये पीली हड़ के बीज तीन टंक, माजूफल, लाहौरीनोन डेढ़ डेढ़ टंक पीस छानकर सेवन करे और किसी किसी ने जलीहुई पीली हड़ोंके बदले जली हुई कालीहड़ लिखी है।

सुरमा–ढलके को गुणकारक–नोन, कालीमिरच एक एक भाग, पीपल दो भाग, समुद्रझाग अर्धभाग, सुरमा औषधियों के तीन भाग, सबको खरल करके सुरमा बनावे।

औषधि–जो घोड़े के ऊपर का दांत पानी में रगड़कर आंख में लगावे पानी उतरने को श्रेष्ठ है–

औषधि–अधिकढलकेके पानी गिरनेको श्रेष्ठहै–तीन बत्तियां धुनीहुई रुईकी बनाकर सात टंक धतूरे के जलमें दो बेर भिगोकर सुखावे फिर मदार के दूधमें दो बेर तर करके छाया में सुखाकर रेंड़ी के तेल से चिराग़ भरकर वही बत्तियां जलावे और उसका काजल लेकर थोड़े घृत और भुनी हुई फिटकरी और तूतिया में मिलाकर रक्खे और आंख में लगावे।

औषधि–ढलके को श्रेष्ठ है–कुन्दर जलाकर गुलाब में मिलाकर आंख को उससे धोवे जो गुलाब न हो तो पानी काफ़ी है।

अन्य–आबनूस की लकड़ी घिसकर आंखमें लगावे।

अन्य–पीलीहड़ की छाल अंजरूत बराबर पीसकर लगावे।

## करंजे का यत्न।

जो जन्म से है तो उसका यत्न नहीं परन्तु लिखाहै जब लड़का करंजा उत्पन्न हो तो उसको उस स्त्री का दूध जो बहुत काली हो पिलाना चाहिये जो दाई हब्शिनिहो तो सबसे उत्तम और शेख़रईस ने अपनी पुस्तक क़ानून में लिखा है कि सलाई इन्दरायन के हरे फलमें चुभोकर आंख में फेरे और इसीप्रकार गाजरका छिलका महीन पीसकर लगाना गुण देता है।

## अरब का यत्न।

यह एक नासूर है कि नाककी तरफ़ के आंख के कोये में होताहै उसतरफ़ दबाने से उससे आलायश निकलती है।

यत्न–नासूर को मैल से साफ़ करके मरहम लगावे।

अन्य–संगजराहत के दो टुकड़े रेंड़ी के तेलमें घिसे जब गाढ़ा होवे उसमें बत्ती भरकर नासूर में रक्खे।

अन्य–चिराग़ की कीट जो पुराने दिये की जगहपर जम-जाती हैं लेकर कपड़े में लगाकर नासूर पर जमावे ।

अन्य–बथुये के पत्ते, तम्बाकू के फूल बराबर लेकर गौ के घृत में कजली करके लगावे ।

अन्य–हुक्के की नै की कीट अफ़ीम बराबर पीसकर बत्ती बनाकर रक्खे ।

अन्य–समुद्रशोष नरम पीसकर पानी मिलाके बत्ती बनाकर रक्खे ।

अन्य–नींब के पत्ते, प्योंदीबेर के पत्ते पीसकर कपड़े पर लपेट कर लगावे ।

अन्य–कत्था, एलुवा बराबर पीसकर नासूर पर लगावे ।

अन्य–कुत्ते की जिह्वा जलाकर थूंक में मिलाकर लेप करे ।

गुर्च का तेल ।

गुर्च हल्दी को कूटकर मीठे तेल में औटाकर छानकर नाक में टपकावे ।

औषधि–स्वच्छ शहद आगपर रखकर गहरा करके थोड़ा समुद्रझाग उसमें मिलाकर उतारले और बत्ती उसमें डुबोकर नासूर में रक्खे ।

अन्य–छिलीहुई मसूर और अनारका छिलका कूट छानकर लगावे ।

घांज़नी का यत्न ।

रसौत, गेरू, जंगीहड़, पोस्ता पीसकर लेप करे ।

अन्य–लौंग, हल्दी पीसकर लेप करे ।

अन्य–हींग सिरके में कजली करके कुछ गरम करके लेप करे–पुरानी कच्ची दीवार का कोयला गरम पानी में घिसकर लगावे ।

. शईरह वह लम्बाशोथ जो पलकपर जौके आकार का होता है ।

मक्खी का शिर दूर करके उस जगह मलकर गरम मोम से सेंके ।

प्रबाल का यत्न।

बालों को अन्दर से उखाड़कर खटमल का रुधिर लगावे।

औषधि—बालों के उखाड़ने के उपरान्त नौसादर बकरी के पित्ते में मिलाकर मले।

चूर्ण—जो आंख की बहुत बीमारियों को गुण करताहै—मुण्डी की जड़ छाया में सुखाकर कूटकर उसके बराबर शक्कर मिलावे आधा दाम हर सुबह को पन्द्रह दिन पर्यन्त गाय के दुग्ध में फांके।

कर्णरोग का यत्न।

हकीमों ने लिखाहै कि जो मनुष्य कान के रोगों से बचा रहना चाहे तो सोते वक़् कान में रुई रखकर सोये और कहाहै कि जो वस्तु कान में टपकावे कुछ गरम करके टपकावे अब यहां कर्णरोगों की औषधियों का वर्णन करता हूँ।

औषधि—जो सरदीके कर्णशूलको गुण करे—बकरीकी मेंगनी, अजवायन मनुष्य के मूत्र में औटाकर वफ़ारा ले।

तथा—कर्णपीड़ा को गुण करे—घाव को पीबसे साफ़ करके नींब के पत्ते औटाकर बफ़ारा ले।

मूली का तेल।

मूली के पत्तों का रस तीनभाग तिलका तेल एक भाग सब को औटावे जब तेल शेष रहे छानकर कान में टपकावे।

अन्य तेल— सब प्रकार के कर्णरोगों को जो शीतसे हों गुण करताहै—इस्पन्द, मालकांगनी, अजवायन बराबर मीठे तेल में जो औषधियों की तौलके बराबरहो जलाकर छानकर सेवन करे।

अन्य—सरदी की कर्णपीड़ा को गुणकारक—कूट, इस्पन्द, सोंठ बराबर पीसकर टिकिया बनाकर सरसों के तेल में पकावे जब जलजावे साफ़ करके कई बूँद कान में टपकावे।

अन्य—सरदी की कर्णपीड़ा और शीतकी शिरपीड़ा को गुण देताहै—किस्त अर्थात् कूट, चिरायता, बायबिड़ंग, असगन्ध,

बिधारा, हल्दी, आंबाहल्दी, सँभालू के पत्ते, अंजीर की जड़, इस्पन्द, सुहागा, सोंठ, मिरच यह एक एक टंक तेल दो सेर दवा कूटकर, रात को आधसेर जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर छानकर तेल मिलाकर आगपर रक्खे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे तो सेवन करे।

टपकाने की औषधि–कानकी पीड़ा को गुण करे–सुखदर्शन के पत्ते निचोड़कर उसका जल कुछ गरम करके कई बूँद कान में टपकावे।

अन्य–शीतकी कान की पीड़ा को श्रेष्ठ है–लहसन कूटके उसका साफ़ रस लेकर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य–गरमी और सरदी की कर्णपीड़ा को गुणदायक–भंग के पत्तों का रस निचोड़कर छानकर कुछ गरम कानमें टपकावे।

अन्य–भंग के पत्तों के रसमें बत्ती लपेटकर कान में रक्खे या भंगको पीसकर मीठे तेल में जलावे और छानकर कान में टपकावे।

अन्य–कानकी पीड़ा और कान के बहने को उत्तमहै–महावर रातको पानी में भिगोकर प्रातसमय साफ़ करके कुछ गरम करके तीन बूँद कान में टपकावे।

अन्य–कानकी पीड़ा को गुण करे जो सरदी से हो–नींबकी पीली पत्तियां अढ़ाई, थोड़ी अजवायन, हल्दी चने बराबर लड़के के मूत्र में पीसकर दो तीन बूँद कुछ गरम करके टपकावे।

अन्य–कर्णपीड़ा को गुणकारक–सिरस या आमकी पत्तीका रस निकालकर कुछ गरम दो बूँद कान में टपकावे।

अन्य–कर्णपीड़ा को गुणकारक–थोड़ी मक्खीकी बिष्टा जल में कजली करके कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य–कानके दर्द को जो सरदी से हो श्रेष्ठ है–कालानोन मूत में पीसकर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य–दूधपीते बच्चेका मूत्र कुछ गरम करके कानमें टपकावे।

अन्य–मनुष्यके शिरके केश जलाकर उसकी राख गुलरोग़न में कजली करके कान में टपकावे।

अन्य–घिकुवार के पत्ते गरम करके दूसरे कान में टपकावे।

अन्य–जो पीड़ा शीतसे हो तो मुरमकी गौके मूत्रमें मिलाकर कुछ गरम कान में टपकावे।

अन्य–रैहां अर्थात् नाजबो के बीज निचोड़कर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य–चुकंदर निचोड़कर कान में टपकावे।

अन्य–आज़माई हुई–एक रत्तीभर अफ़ीम जलाकर उसकी भस्म चार चावल भर लेकर गुलरोग़न में कजली करके कानमें टपकावे।

अन्य–कानमें जमेहुये रुधिरको घुलाकर निकाल डाले--करम्ब के पत्तों का रस निचोड़कर सिरके या गुन्दनी के रसमें कुछ गरम करके टपकावे।

अन्य–गौ का पित्ता कुछ गरम करके कान में टपकावे वात की और कफ की पीड़ा को शान्त करे।

अन्य–मुरग़ी के अण्डे की सफ़ेदी कान में टपकाना कानके गरम शोथको नाश करे।

अन्य–पक्के इन्द्रायन के फल के परदे मीठे तेल में मिलाकर टपकाना ऊँचा सुनने को गुण करे।

अन्य-राई का तेल कान के सुद्दे को खोलताहै और दिनी बहिरपने को गुण करता है।

अन्य–पपड़ियाखार में कुछ गरम पानी मिलाकर टपकाना अत्यन्त पीड़ा को गुण करता है।

अन्य–खट्टे अनार का अरक़ शहद के साथ पैत्तिक कर्ण-पीड़ा को नाशकारक है।

अन्य–खुरफ़े के पत्तों का रस तेल के साथ पैत्तिक कर्णपीड़ा को नाश करता है।

अन्य–प्याज़ के रसमें अंडे की सफ़ेदी मिलाकर टपकाना श्रेष्ठ है।

लेप–कान की कठोरता को जो पित्त से हो गुणदायक है–पपड़ियाखार ख़तमी पीसकर लेप करे।

ऊँचा सुनने का यत्न।

प्रारम्भमें जुल्लाब दे जब बहुत दिनों का होताहै नहीं जाताहै इसलिये उचित है कि शीघ्र इसरोग में हुबअयारज से जिसका बर्णन कर चुकाहूँ ब्रह्माण्ड के मल निकलने को जुल्लाब दे फिर दवा कान में डाले–

औषधि–कान के भारी होनेको गुण करे–मदार के पीले पत्ते जो अछिद्र हों आग पर गरम करके उसका रस कान में टपकावे इसी प्रकार दो सप्ताह पर्यन्त करे।

अन्य–कान के भारीपने को–लहसुन में बकरी का पित्ता मिलाकर थोड़े तेल में औटाकर कुछ गरम कान में टपकावे।

अन्य–ऊँचा सुनने को गुण करे–ऊँट का मूत्र कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य–काली गाय कलोर का मूत्र सवासेर मधुरी अग्नि में औटावे जब पांच दाम शेष रहे साफ़ करके शीशे में रखकर प्रतिदिन अढ़ाई बूँद कान में टपकावे।

अन्य–प्याज़का रस कुछ गरम कानमें टपकाना और ऊँचे सुनने और भिनभिनाहट और पीड़ा और कान के बहने को गुणकारी है।

इन्द्रायन का तेल।

बहरेपन और कान की भरभराहट को श्रेष्ठहै--हरा इन्द्रायन का फल तिलों के तेल में तलकर साफ़ करके रक्खे दो तीन बूँद कान में टपकावे।

औषधि–बहरेपनको नाश करे–दो कालीमिरचें पीसकर छूंछी में रखकर प्रतिदिन एकबेर कानमें फूंके और चिल्लाने की आवाज़

और नक़ारह और नरसिंहा और तोप आदिका शब्द सुनना ऊँचा सुनने को श्रेष्ठ है कि यह कान के लिये मानों उत्तम परिश्रम है।

अन्य–पपड़ियाखार सिरके में कजली करके छानकर कुछ गरम कान् में टपकावे।

कान के घाव का यत्न।

जब कान से मल निकलने लगे शीघ्र खुश्क औषधिका सेवन न करे कि उससे पीड़ा पैदा होजाती है किन्तु उस मैलको औषधि से साफ़ करे उसके उपरान्त ख़ुश्क दवा डाले और शहद् कानमें टपकाना बत्ती शहद् में भिगो करके कान में रखना कान के मैल को साफ़ करता है और पीड़ा को नाश करता है और नींब के पत्तों का बफ़ारा लेना भी कान के मैल को साफ़ करता है।

अन्य–कान के घावको गुण करे---प्याज़ का रस मुरग़ के अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर कान में टपकावे।

औषधि–नींब के तेल में शहद मिलाकर बत्ती उसमें भिगोकर कान में रक्खे।

अन्य–कान के घाव को गुण करे---एलुवा, समुद्रझाग, गेरू, कुन्दर हरएक थोड़ी थोड़ी पीर रोग़न में पीसकर सुरमा मिलाकर कान में टपकावे।

अन्य–बकरी का दूध कान में टपकावे।

अन्य–लड़के के मूत्र में अनार की छाल जोश देकर साफ़ करके कान में टपकावे।

अन्य–भुनी फिटकरी, मुरमक्की हरएक बराबर शहद में मिलाकर उससें बत्ती तर करके कान में रक्खे।

अन्य–भुना सुहागा पीसकर छूँछी में रखकर कानमें फूँककर उसके ऊपर कई बूँद नींबू के रस को टपकावे।

अन्य–मैल निकलने को गुण करे और घाव को भर दे–विशेष करके बालकों को अतिउत्तम है–गँगनधूल कान में फूँक कर उसके ऊपर कई बूँद टपकावे।

अन्य–खुजली और पीव बहने को गुण करे–मेथी दूध में सानकर और छानकर कुछ गरम कान में टपकावे कर्णपीड़ा में स्त्री का दुग्ध और दूधों से उत्तम है।

अन्य–कान की आलायश को उत्तम है–घुड़बच पानी में पीसकर कुछ गरम कान में टपकावे।

अन्य–कान के घाव को नाश करे–कान से मैल साफ़ होने के उपरान्त पीली कौड़ी जलाकर कान में फूँककर उसके ऊपर कई बूँद नींबू का रस टपकावे।

अन्य–लोध महीन पीसकर कान में डाले अन्य कान के कीड़ों को नाश करे और घाव को सुखावे लाल साग का रस निचोड़कर कान में टपकावे।

अन्य–कर्णव्रण को श्रेष्ठ है एक जुगुनू गुलरोग़न में पीसकर टपकावे।

तेल–जो कान के नासूर को दूर करता है–छोटी घोंघी सजीव पावभर महीन खरल करके उसके बराबर सरसों पीसकर मिलावे और दो सेर जल डालकर इतना औटावे कि पानी जलकर तेल शेष रहजावे प्रतिदिन कान में टपकावे और जो घोंघा तेलमें भूने यही गुण करता है और जहां सरसों का तेल न मिले मीठातेल ही डाले तेल नासूर और शाफ़ा को श्रेष्ठ है, जो एक प्रकारकी फुन्सियां हैं–कडुवा तेल पावभर, आमला, मुण्डी एक एक तोला, नींबू के पत्ते दश, कंमीला, कालीमिरच तीन तीन माशे, तूतिया एक माशा पहिले तेल को गरम करके कमीले के सिवा सम्पूर्ण औषधि उसमें डालकर जलावे फिर निकालकर पीसे और कमीला भी पीसकर मिलावे और कान में टपकाया करे औषधि उस घाव को दूर करे कि जो बहुधा लड़कों के कान के पीछे होता है रोली जिसका टीका लगाते हैं उसको बालक के मूत्र व

जलमें पीसकरलगावे यद्यपि कुछदाह होगा परन्तु बहुत गुणकरेगा।

कानबहने और उसके मैलके निकालने का यत्न।

जो बोहरान के कारण से हो बन्द न करे और बोहरान से न हो माज़ू जवकुटकर सिरके में औटावे और मलकर छानकर कान में टपकावे।

कान के शोथ का यत्न।

जो शोथ कान के भीतर हो तो अति भयानक है इस दशा में सरेरू की फ़स्द खोलना उचित है लेप–इस सूजन को जो कान के पाछे हो श्रेष्ठ है–मसी अर्थात् चकसोन कि एक प्रसिद्ध बृक्ष है उसकी नई पत्तियां लाहौरीनोनके साथ पीसकर लेप करे।

अन्य–उसी सूजन को गुण करे–सुपारी, बिषमारी की जड़, करेले के बीज, गेरू, कालाज़ीरा, कुचला पानी में पीसकर कुछ गरम करके लेप करे।

अन्य–उसी शोथ को गुण करे--लहसुन की जड़ पीसकर कुछ गरम करके मले।

औषधि–कान के शोथ को अच्छा करती है, और शीघ्रही बहाकर निकाल देती है–हुलहुल की पत्तियां कूटकर कई बूँद कई दिनतक कान में टपकावे।

अन्य–प्याज़ का रस मेथी या अलसी या ईसबग़ोल के लुआब में पकाकर टपकाना भी गुण रखता है।

कान के कीड़ों का यत्न।

कभी गरमी के कारण कान में कीड़े पड़ जाते हैं उसका यत्न--एलुवा जलमें पीसकर उस पानी से कानको भरदे और देरतक भरा रहने दे जो कीड़े मरजावें फिर कानको इसतरह झुकावे कि पानी निकल जावे।

औषधि।

मलीम एक लकड़ी होती है उसे महीन पीसकर कान में डाले कीड़ों को दूर करे।

अथवा–सँभालू के पत्तों का रस कान में टपकावे।

अन्य–हल्दी की एक गांठ और आधा दाम शहद नींब के पत्तों का रस सरसों के तेल में डालकर यहां तक औटावे कि औषधियां जलजावें इस तेलकी दो बूँद कान में टपकावे शीघ्र आनन्द होगा।

अन्य–आधा टंक तिलोंका तेल कान में टपकाने से कान के कीड़े और वह कीड़े जो कान में घुसगये हों मरजाते हैं इसी तरह प्याज़ का रस जो वह मक्खी जो घोड़े और कुत्तों पर बैठती है कान में घुसजाके मकराके पत्ते कि हिन्दू उसको चन्नद के बदले समझते हैं कानमें टपकावे आश्चर्यदायक फल रखताहै।

अन्य–तेज़शराब कान में टपकाना कान की पीड़ा और मल को नाश करे।

कान की खुजली का यत्न।

तेल और सिरका औटाकर छानकर टपकावे खुजली दूर हो।

अन्य–चँबेली के तेल में थोड़ा एलुवा कजली करके कुछ गरम करके कान में टपकावे।

कान में पानी रहजाने का यत्न।

छींकना और खाँसना उसको गुण करताहै--और शिर उस तरफ़ झुकारखना कि जिस तरफ़ के कान में जल है या सौंफ़ की लकड़ी कान में लगाकर चूसे और तिलका तेल कुछ गरम करके टपकाना गुण करता है या हथेली कानपर रखकर एक पांव पर खड़ा होकर जिस ओर के कान में पानी है शिर को उस तरफ़ झुकाकर कूदे।

नाक के रोगों का यत्न।

नाक में दो राहें हैं एक भेजे की तरफ़ दूसरी मुख की ओर और नाक की बीमारियों में एक रोग नकसीर है जो वह ज्वर या सरसाम या बोहरान के दिन कि चौथा सातवां ग्यारहवां चौदहवां दिन है नकसीर फूटे बन्द न करे क्योंकि बोहरानी

नकसीर में मुख्य मलको इस ओरसे दूर करती है परन्तु अधिकता में शीघ्र बन्द करे जो दोनों रानों और दोनों पांवों और दोनों अंडकोषों को ज़ोर से बांधे तो नकसीर बन्द होजाती है और ठंढा पानी शिरपर डालना उससे ग़रग़रा अर्थात् कुल्ली करना उत्तम है—लेप—जो नकसीर को गुण करे—सरेस, मुल्तानीमिट्टी बराबर पीसकर कुछ गरम माथे और नाक पर मले।

अन्य—ईसबग़ोल को सिरके में भिगोकर माथेपर मले।

अन्य—माज़ूफल ख़ूब पीसकर नाक में फूँके।

अन्य—रसौत की राख नाक में फूँके।

अन्य—चक्की की गरद नाक में फूँके।

अन्य—उड़द का आटा नरम गूंदकर तालूपर लगावे।

अन्य—बेर की पत्ती पीसकर माथे पर मले।

अन्य—छोटी कटाई पानी में पीसकर तालूपर लगावे और उसके पत्तों और जड़ का पानी निचोड़ कर नाक में टपकावे।

अन्य—केले के बृक्षका रस सुड़कना नकसीर को गुण करे—अण्डे का छिलका इसतरह जलावे कि काला होजावे उसको पीसकर छूँछी में रखकर जिस नथने में नकसीर फूटी हो फूँके।

अन्य—घोंघा और गौ का सींग और बकरी का सींग जलाकर महीन करके नाक में फूँके।

अन्य—आमला भिगोवे जब नरम होजावे टिकिया बनाकर तालू में बांधे।

अन्य—गधेकी लीद निचोड़कर कान में टपकावे।

अन्य—गायका सूखा गोबर पीसकर नाक में फूँके और ताज़े गोबर को माथे पर लगाना गुण करता है।

अन्य—नींबके पत्ते और अजवायन पीसकर माथेपर लगावे।

अन्य—शोराक़लमी सिरके में पीसकर माथे पर मले।

अन्य—बत्ती को मुरग़े के अण्डेकी सफ़ेदी में मिलाकर थोड़ा कपूर उसपर छिड़क कर नाक में रक्खे।

अन्य—गधे की लीद जलाकर उसकी राख नाक में फूँके।

अन्य—जंगली कण्डे की राख महीन पीसकर नाक में फूँके।

अन्य—गूलर के बृक्ष की छाल पानीमें पीसकर तालूपर बांधे।

अन्य—नींब के पत्ते चौलाई पीसकर माथेपर लगावे।

अन्य—पुरानी गज पानी में पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य—जौ का आटा, मुल्तानीमिट्टी, धनियां, ईसबग़ोल, आमला, गेरू बराबर पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य—ऊँट के बाल जलाकर उसकी राख घी में मिलाकर पतला पतला नाक में टपकावे।

अन्य—ढाक के फूल चार सेर पानी में औटावे जब आधसेर शेष रहे ठण्ढा करके तीन टंक शहद मिलाकर पिये नकसीर और स्त्री के ऋतु के रुधिर को बन्द करे।

अन्य—कुंदर महीन पीसकर नाक में फूँके।

अन्य—हरी दूब कूट निचोड़कर उसका साफ़ रस लेकर नाक में टपकावे।

अन्य--रक्तचन्दन पीसकर थोड़ा कपूर कजली करके कुछ दिन खावे नकसीर दूर होगी।

अन्य—निशास्ता सिरके में मिलाकर शिर पर आगे की तरफ़ रक्खे।

अन्य—नकसीरको गुणदायक---कुन्दर अफ़ीम एक एक कौड़ी के बराबर लाल साग के रसमें जो मिले तो उत्तम है नहीं तो पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

### ज़ुकाम और नज़ले का यत्न।

जो मैल भेजेसे नाककी ओर निकले उसको ज़ुकाम बोलते हैं और जो कण्ठ की ओर गिरे उसका नाम नज़ला है जो इन तरियों के निकलने में छीलन और पीलाई और नेत्र में जलन मालूम हो गरमी से है जो इसतरह न हो तो वह सरदी से है इस रोगमें मैथुन और औंधेसोने और खटाई और दूध दही से

पथ्य करे और शिरके नीचे ऊँचा तकिया न रक्खे और एक दो दिन भोजन न करे और न पानी पिये ज़ुकाम चाहे शीत से हो या पित्त से शिरको खुला न रखना चाहिये अब कुछ औषधियाँ ज़ुकाम और नज़ले की गुणकारक लिखता हूँ।

माजून—जो ज़ुकाम और नज़ले को गुण करे—अजवाइन, अफ़ीम पांच पांच टंक, कालीमिरच दश टंक, अक़रक़रा, बालछड़, नरकचूर, गूगल, तज, कायफल, सोंठ एक एक टंक, मुरमक्की आधा टंक तिगुने शहद में क़वाम करे।

अन्य—जो ज़ुकामको उत्तमहै—झाऊकी पत्तियोंका बफ़ारा ले।

अन्य—कूटका बफ़ारा ले और इसतरह कोरे काग़ज़ का धुआं नाक में पहुँचाना ज़ुकाम को गुण करता है।

अन्य—शक्कर और चन्दरस का धुआं गरम ज़ुकाम को गुण करे।

गोली—जो नज़ले और ज़ुकाम को गुण करे और भूख बढ़ावे—ज़ंदबारख़ताई चार मिस्काल, अजवाइन पांच मिस्काल, अफ़ीम सात मिस्काल, क़तीरा, बबूल का गोंद, मुलहठी, कालीमिरच, इलायचीके दाने दो दो मिस्काल, नरकचूर, नागरमोथा, बालछड़, तेजपात, कबाबा, खोलञ्जान, पीपल, अजवाइन, सोंठ, इस्पन्द दो दो टंक, मुरमक्की, अकरकरा आधा आधा मिस्काल पीस छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे एक गोली रोज़ खावे।

### ख़शख़ाश का ख़मीरा।

पैत्तिक ज़ुकाम को गुण करे—ख़शख़ाश के पोस्त २५ पानीमें भिगोकर आधसेर शक्कर में क़वाम करे क़वाम के अन्त में सफ़ेद ख़शख़ाश का दूध ईसबगोल का लुआब पांच पांच मिस्काल उसमें डाले उतारने के समय बबूल का गोंद, ख़तमी के बीज, निशास्ता, छिलीहुई मुलहठी चार चार टंक कूटछानकर मिलावे।

अन्य—जो नज़ले को छातीपर गिरने न दे और खांसी को

गुण करे-खशखाश के पोस्ते बिये समेत बीस टंक सफ़ेद मिश्री पचास टंक, पूर्ववत् क़वाम में लावे ख़ुराक दश दश टंक पानी के साथ।

अन्य-ज़ुकाम का गुणकारक-सात कालीमिरचें थोड़े पानी में निगलले मुहम्मदज़करिया ने बरुलसाअ़त में लिखा है कि जो गरम पानी से ज़ुकामवाले के शिर पर तरेड़ा दे और पानी की गरमी भेजे में अपना फल करे तो शीघ्र शान्ति होती है और कपड़ा सेंककर तालूपर रक्खे जब गरमी उसके भेजे में पहुँचेगी तो शीघ्रही आनन्द होगा।

अन्य-नज़ले को नाक की तरफ़ गिरावे पुरानी रुई की बत्ती नाक में रखना उत्तम है और कईबेर परीक्षा हुई है जो शिर पीड़ा नज़ले से हो उसको दूर करता है।

गोली-नज़ले को दूर करे-अजवाइन एक मिस्काल, काहू के बीज एक मिस्काल, पोस्ता आधा मिस्काल, मूँग के बराबर गोलियां बनाकर मुँह में रक्खे।

अन्य-नज़ले को गुण करे और भेजे को तरी से साफ़ करे-समुद्रफल की मींगी स्त्री के दूध में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य-ज़ुकाम को गुण करे-कलौंजी भुनीहुई, नौसादर दो दो माशे, सोंठ तीन माशे, पोटली बांधकर सूँघे और बाज़े उस में सिरका भी मिलाते हैं।

अन्य-जो सुद्दा खोलता है और ज़ुकाम को गुण करता है इस्पन्द थोड़े सिरके में भिगोकर भूनकर कपड़े में ढला बांध कर सूंघे।

अन्य-कलौंजी पीसकर गुलरोग़न में मिलाकर सूंघे।

लेप-नज़ले को गुण करे-मुरमक्की, एलुवा, बबूल का गोंद, निशांस्ता, गेरू, छालिया तीन तीन माशे, अजवाइन, अफ़ीम डेढ़ डेढ़ माशे कूटछानकर काग़ज़पर कि सुई से उसमें छेद किया हो मलकर दोनों कनपटियों पर लगावे।

गोली–ख़शख़ाशके बीज, सफ़ेद छिलीहुई मुलहठी, कुचली अफ़ीम तीन तीन टंक, सम्मग़अ़रबी जो एक प्रकार का विलायती गोंद होता है, क़तीरा, निशास्ता, काहू के बीज दो दो टंक, अजवाइन, मुरमक्की, अक़रक़रा आधा आधा दाम कूटछानकर चने की बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक दो गोली।

लेप–शीतके नज़ले को उत्तम है–लौंग पीसकर तालू में लगावे ज़ुकाम को उत्तम है गेहूँ की भूसी भिगोकर उसका पानी लेकर सिरके में औटावे और सिरके को उसके बुख़ार पर रक्खे।

अन्य–कफ़के ज़ुकाम को गुण करे–सोंठ, धवके फूल डेढ़ डेढ़ माशा, ख़शख़ाश का पोस्ता एक, तीनपाव जल में औटावे जब चार दाम शेष रहे उसको बुनकी तरह पिये और चाहे मीठा करले।

अन्य नास–मस्तकपीड़ा को गुणकरे और बन्द नज़ले को खोलती है–हड़के बीज छः माशे, सफ़ेद घुँघुची की मींगी चार माशे, कालीमिरच दो माशे, नौसादर एक माशे कूट छानकर थोड़ा नास ले नाक से पानी बहेगा और बहुत तेज़ है।

अन्य नास–नज़ले को उत्तम है सिरस के बीजों को महीन पीसकर नास ले।

### नाककी बदबू का यत्न।

यदि नासिका की दुर्गन्धि भेजे के दोष से हो ब्रह्माण्ड को साफ़ करे और जो नाक के घाव के कारण हो घावपर मरहम लगावे।

अन्य–नाक की दुर्गन्धि को श्रेष्ठ है–तोंबे का रस एक बूँद भर नाक में टपकावे और जो हरा तोंबा न मिले तो सूखा तोंबा पानी में भिगोकर ओस में रक्खे प्रभात को एक बूँद उसमें से नाक में टपकावे।

अन्य–गधे का मूत्र नाक में टपकावे।

बहुत छींकों के आने का यत्न।

यद्यपि थोड़ी छींकें आना आरोग्यता के चिह्न हैं परन्तु बहुत मनुष्य उसको रोग जानते हैं।

उपाय—छींक रोके छोंगनिको उसी हाथ की तर्जनी उँगली और अँगूठे से पकड़ ज़ोर से दबावे और ज़ोर से मले और धनियें की पत्तियां और चन्दन सूँघना छींक को गुण करे।

अन्य—कुलींजन की पोटली बांधकर सूँघे छींक को दूर करे जो बालक को छींकें आवें बकरी का कल्ला आग पर भूने जो पानी उससे टपके लड़के की नाक में टपकावे।

पीनस का यत्न।

यह वह रोग है कि रोगी नाक से बोलता है और बहुधा खाना पानी नाक से निकल आता है।

गोली—पीनस को दूर करे—सोंठ, पीपल, छोटी इलायची के दाने एक एक टंक, पुराना गुड़ चौबीस टंक कूटकर गोलियां बनावे और दो माशे रात को प्रतिदिन खाया करे बहुत गुण करेगा।

मुँह के रोगों का यत्न।

किसी वस्तु के स्वाद न मालूम होने को बुतलानज़ौक बोलते हैं कभी इतना मुख का स्वाद जाता रहता है कि रोगी मिठाई और खटाई का स्वाद नहीं जानता इसका कारण तरी की अधिकता है।

यत्न—पहिले मुंजिज़ के उपरान्त भेजे को जुल्लाब दे नानख़्वाह और तीक्ष्ण वस्तुओं का चावना जैसे कि मिरच और राई और सिरका और लहसुन और प्याज़ गुण करता है।

दांतों के रोगों का यत्न।

दांत के रोगी को उचित है कि कठोर वस्तु दांतों से न तोड़े और जिस चीज़ के खाने से दांत झूठे पड़ें न खावे और जब कोई वस्तु खाने के समय दांतों में रहजावे दांतों को ख़िलालसे

साफ़ करता रहे कि दुर्गन्धि न आवे परन्तु इतना बहुत ख़िलाल न करे कि दांतों की जड़ ख़राब होजावे और गरम और सर्द चीज़ों से पथ्य करे।

दांतों की पीड़ा का यत्न।

जो दांतों के हिलने से हो और दांत कम हिलते हों और बुढ़ापा न हो यत्न करे और जो अधिक हिलें दांतों को उखाड़ डाले थोड़ा नरकचूर सदा मुँह में रखना दांतों की रक्षा करता है जो पीड़ा के साथ मसूढ़ों पर शोथ हो तो उन चीज़ों से कुल्ली करे जो सूजन को गुण करे–और एकबेर गरम जल और ठण्ढे पानी से कुल्ली करे और ध्यान रक्खे कि जिस जल से पीड़ा शान्त होती है जो गरम से पीड़ा होगी तो ठण्ढे पानी से पीड़ा शांत होगी और जो शीत से पीड़ा होगी तो गरम जल से दर्द दूर होगा इस जगह कुछ सुगम औषधियों का जो दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ हैं वर्णन करता हूँ।

हल्दी महीन पीसकर कपड़े में रखकर जो दांत कि पीड़ा करताहै उसके नीचे रक्खे और इसका मञ्जन भी मलना उत्तम है।

अन्य–शीत के दन्तरोग को नाश करे–अदरक के वरक़ करके नोन पीसकर उसपर छिड़के और पीड़ावाले दांत पर रक्खे।

अन्य–तुलसी की पत्तियां और कालीमिरच पीसकर गोली बनाकर दांतों के नीचे दबावे।

अन्य–बिनौला गरम करके दांत के नीचे दबाकर सोरहे और बिनौला औटाकर कुल्ली करना भी श्रेष्ठ है।

अन्य–मँजीठ का लगाना दांत की पीड़ा को दूर करता है।

अन्य–अंजीर के दूधसे रुई भिगोकर दांतों के नीचे दबावे गुण करेगा।

अन्य–ईसबग़ोल सिरके में भिगोकर दांतोंपर रखना पैत्तिक दन्तपीड़ा को शांति करे।

अन्य–पुराने दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है–कपूर दांतों के नीचे

रक्खे जो दांतों को कीड़ों ने खाया हो छेदों में उसके भरदे अधिक छिद्र बढ़ने न देगा और कीड़ों को मारडालेगा।

अन्य–अक़रक़रा एक टंक, नौसादर, अफ़ीम पांच पांच टंक, महीन पीसकर कीड़े के खाये हुये छिद्रों में रक्खे।

अन्य–दांतों की पीड़ा को शांत करे और कीड़ों के खाये हुये को गुण करे–सोंठ नरम कूटकर शहद और सिरके में मिलाकर दांतों के छिद्रों में रक्खे।

अन्य–मदार की जड़ का बक्कल चौथाई टंक पानीमें भिगोकर दांतों पर रक्खे।

अन्य–नौसादर ज्वार के बराबर रुई में लपेटकर दर्दवाले दांतों के नीचे रक्खे और जितना जल मुँह से निकले निकलने दें पीड़ा शांत होजावेगी।

अन्य–दांतोंके कीड़ोंको गुण करे–बायबिड़ंग छीलकर सालू में जो लाल कपड़ा है पोटली बांधकर कीड़े खाये हुये दांतों के नीचे रक्खे।

अन्य–थोड़ा गंधक सिरके में मिलाकर उससे रुई भिगोकर कीड़े खाये हुये दांतों पर रक्खे।

अन्य–मुलीम घिसकर दांतों पर रक्खे।

अन्य–जो दन्तपीड़ा और मसूढ़ों की सूजनको गुण करे–प्याज़, कलौंजी दोनों बराबर चिलम में रखकर तम्बाकू के बदले इतना पिये कि मुँह से लार बहे।

अन्य–दांतों को सुगमता से निकालता है सेंधे वृक्षका दूध हिलते हुये दांत पर रक्खे और इस बातकी रक्षा करे कि दूध दूसरे दांत पर न पहुँचे।

अन्य–दांत के दर्दको गुण करे है–अक़रक़रा मस्तगी बराबर लेकर थोड़ा मोम मिलाकर एक चने के बराबर दांतों के नीचे इतनी देर रक्खे कि लार मुँहसे बहने लगे।

अन्य–उस दांत के रोगको श्रेष्ठ है कि कीड़ों के खाने के

कारण हो–छोटी कटाई का फल तम्बाकू की तरह हुक्के में पीकर उसका धुआँ मुँह में रोके।

अन्य–सुहागा मोम मिलाकर दांतों के छिद्र में जिसको कीड़ों ने खाया हो रक्खे पीड़ा जाती रहेगी।

अन्य–विशेष करके दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है–लड़के का दांत जो छोटी उमर में गिरा हो उसको दूध का दांत बोलते हैं चांदी में यन्त्र बनाकर अपने पास रक्खे पीड़ाको दूर करे।

अन्य–पीलू की लकड़ी से दातोन करना दांतों को पुष्ट करता है।

अन्य–नींब की लकड़ी से जो दातोन करने का अभ्यास करे तो दांतों में कीड़े नहीं पड़ते हैं और गरमी से दांतों में दर्द नहीं होता है।

मंजन–जो दांतों की पीड़ा को गुण करे–भुनी फिटकरी एक टंक, जले हुये करंजुवे दो, भुना तूतिया एक टंक, कालीमिरच बारह कूटछानकर मले।

अन्य–जली फिटकरी बराबर उसके मिस्सी मिलाकर मले।

अन्य–शीत की दंतपीड़ा को गुणकारी है–तम्बाकू दो भाग कालीमिरच एक भाग पीसकर दांतों पर मले।

अन्य–हरप्रकार की दंतपीड़ा को दूर करे–सुपारी और कत्थे की राख, पीपल की राख तीनों बराबर तूतिया एक औषधि का चतुर्थ भाग सबको कूट छानकर दांतों और दांतों की जड़पर मलकर एक घण्टा शिर नीचे करे कि मुँहसे लार निकले फिर कुछ गरम जल से कुल्ली करे।

अन्य–करंजुवा जलावे और राख उसकी नमक में मिलाकर मले।

अन्य–ठण्ढी पीड़ा को गुण करे–सज्जी, कालीमिरच पीस कर मले।

अन्य–हर प्रकार की पीड़ा को शान्त करे–अक़रक़रा, कपूर बराबर पीस कर मले।

अन्य–दांतों को दृढ़ करे–भूनी फिटकरी एक भाग, तूतिया भुना चतुर्थभाग, कत्था डेढ़भाग कूटछानकर मंजन बनाकर मले।

अन्य–तूतिया सब्ज़ आधा दामभर घी में जलावे और नींब की पत्तियों की राख कि उसको छोटे कुल्हड़े में जलाया हो आधादाम,संगजराहत एकदाम बराबर मिलाकर दांतोंपर मले।

अन्य–कत्था सफ़ेद एक तोला, गुलसेवती सूखी, गुलनार तीन तीन माशे, मस्तगी आधा माशा, बड़ी इलायची छः माशे, मिस्सी एक तोले, भूनी सुपारी डेढ़ तोला, भूनी धनियां छः माशे सबको जलाकर पीसे और मंजन बनावे।

अन्य–रेवन्दचीनी पीसकर मिस्सी उसमें मिलाकर मले शीघ्रही आराम होगा।

अन्य–भिलावाँ जलाकर इस्पन्द महीन पीस कर मले दांतों को दृढ़ करता है।

अन्य–सुपारी, माजूफल, भिलावाँ तीनों औषधि जलाकर मंजन बनाकर मिस्सी की भांति मले लार मुँहसे बहेगी और दांत दृढ़ होंगे और पीड़ा दूर हो जावेगी।

अन्य–पीड़ा को गुण करे और दांतों को दृढ़ करे–हिन्दी तूतिया तेल में भूनकर, सोंठ, सफ़ेद कत्था, सुपारी जलाकर मंजन बनावे।

अन्य–उस दांत की पीड़ा और मसूढ़ों को गुण करे कि शीत से हो–सोंठ, हल्दी, लाहौरीनमक, कालीमिरच, तम्बाकू की नास सम्पूर्ण औषधि बराबर पीसकर दांतों पर मलकर लार मुँहसे निकाले और एक घण्टे के उपरान्त पान खाकर दांतों

को पीक से धोवे फिर दूसरी गिलौरी खावे जो आवश्यक हो तो दो घड़ी के उपरान्त पानी पिये।

अन्य–दांतों को दृढ़ करता है---फिटकरी दो टंक, नोन एक टंक कूटकर मंजन मले।

अन्य--राल का मंजन मलना गुण करता है।

अन्य–दांतों की दर्द और कीड़ों के खाये हुये दांत को गुण करे---तूतिया अग्नि पर रक्खे और लोहे के दस्ते से पीसे फिर अग्नि से उतार पीसकर दांतों पर मले।

अन्य---दांतों से रुधिर निकलने न दे---जामुन की लकड़ी जलाकर और पीसकर मले।

अन्य---चन्दरस मलना दांतों की पीड़ा को गुण करे।

अन्य–मौलसिरीकी लकड़ी जलाकर पीसकर मलना उत्तम है।

अन्य---संगजराहत मलना मसूढ़ों से रुधिर निकलने को बन्द करे।

अन्य---कचनार की लकड़ी जलाकर मंजन बनाकर मले।

अन्य--पीड़ा को गुण करे--राई पीसकर मंजन बनावे।

अन्य---बारहसिंगे का सींग जलाकर पीसकर मलना दांतों को बल देता और साफ़ करता है।

अन्य--बसद पीसकर मलना दांतों को दृढ़ और साफ़ करता है।

अन्य---मसूर जलाकर मले तो दांतों को साफ़ करता है।

अन्य---सरूकी पत्तियां जलाकर राख उसकी मलना दांतोंको साफ़ करता है।

अन्य--बरगद की छाल पीसकर दांतों के नीचे रक्खे तो पीड़ा दूर हो।

अन्य---कालीमिरच, सोंठ, मुरमक्की, थोड़ा नमक मिला पीसकर मले तो दांतों की पीड़ा को जो शीत से हो गुण करता है।

अन्य--सीप जलाकर मलना दांतों को साफ़ करता है।

अन्य--बालछड़ पीसकर मलना मसूढ़ों और दांतों को बल देता है और मुख को सुगन्धित करता है।

अन्य--शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है-पाह कालीमिरच बराबर कूट-छानकर दांतों पर मले।

अन्य-दांतों को मज़बूत और पीड़ा को दूर करे-सिरसका गोंद, कालीमिरच महीन पीस मंजन बनाकर मले।

अन्य-जला हुआ माजूरक, बेजला एक, जलीहुई छालियां एक बेजली एक कूट छानकर मंजन मले फिर कुछ गरम जलसे कुल्ली करे।

कुल्ली-जो दर्द को दूर करे और दांतों को मज़बूत करे-बायविड़ंग सैंतीस दाने, कबाबचीनी अठारह दाने, मसूर की पत्तियां ग्यारह, झाऊ की कोंपल एकदाम आधपाव जलमें औटावे जब तृतीयांश शेष रहे कुछ गरम जलसे कुल्ली करे।

अन्य-दांतों के कीड़ों को उत्तम है-चँबेली की पत्तियां एक मुट्ठी, इस्पन्द डेढ़ तोला, सेरभर जलमें औटावे जब पाव सेर शेष रहे साफ़ करके कुल्ली करे।

अन्य-दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है-पीपल की छाल, बरगद की छाल, पानी में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य-फिटकरी एक तोला, मोचरस छः माशे जवकुटकर आधसेर पानी में औटावे जब आधा शेष रहे कुल्ली करे तो पीड़ा को शांत करे और दांतों को मज़बूत करे।

अन्य-बबूल की छाल दो दाम, कायफल तीन माशे, इस्पन्द तीन माशे कूटकर पावभर जलमें औटावे जब आधा शेष रहे तो सोने के समय कुल्ली करे।

अन्य-उस पीड़ा को शांत करे जो नज़ले, बात, तरी और मसूढ़ों के ढीले होने से होवे-मकोय, ख़शख़ाश का पोस्ता, इस्पन्द, मँजीठ बराबर पानी में औटावे जब अर्धभाग शेष रहे कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—अक़रक़रा, मसूर, ख़शख़ाश का पोस्ता औटाकर कई बेर कुल्ली करे।

अन्य—दन्तपीड़ा को गुणकारक—अबहलपाह जो कसीसकी भांति होती है औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गेहूँकी भूसी पुराने यवकी भूसी औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—जो दांतों से मैल या पीब आने को गुण करे—फिटकरी, माजू औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पीड़ा को शांत करे—माजू, तोंबरी के बीज चार दाम के अनुमान लेकर एक सेर जलमें औटावे जब आधा शेषरहे साफ़ करके कुल्ली करे शीघ्रही फल करेगा ( तोंबरी खिले हुये कबाबे की सूरत की होती है )।

अन्य—मसूढ़ों की सूजन को गुण करे—काले चने भिगोकर औटाकर कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—दांतों की पीड़ा और कीड़ों से खोखले हुये दांतों को गुण करे—कटाई का वृक्ष डाल फूल और फल समेत कूट कर पानी निचोड़ कर उससे कुल्ली करे या कटाई को पानी में औटाकर चार दिन पर्यन्त कुल्ली करे।

अन्य—सरू के फूल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पियाबांसा की पत्तियां औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—मौलसिरी की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—कचनार की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—सिरस के वृक्षकी छाल कुचलकर औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—रूसे की पत्तियां औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—अनार और गुलनार और माजू यह सब एक २ या दो दो और मसूर उसके बराबर मिलाकर औटाकर कुल्ली करना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर निकलने को बन्द करता है।

अन्य—गुनगुने पानी से कुल्ली करना मसूढ़ों की पीड़ा को गुण करे।

अन्य–माजू दांतों पर मलना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर आने को गुण करे।

लेप–इसपन्द पीसकर कुछ गरमजल में मिलाकर गालों के ऊपर जहां पीड़ा हो लगावे।

### दांतों के खट्टे होने का यत्न।

खट्टे और कसैली चीज़ खाने से दांत खट्टे होजाते हैं।

यत्न–गेहूं की रोटी गरम दांतों में दबावे नारियल, बादाम, पीलामोम और हींग चबाना दांतों के खट्टे होने को दूर करे– पैत्तिकप्रकृतिवाले को खुरफ़े के बीज चबाना और राईका मलना गुण करे और हरप्रकार के खट्टे दांतों को नोन पीसकर मलना लाभ करता है।

### दांतों में छिद्र होने का यत्न।

नौसादर और अफ़ीम कूटकर दांतों के छिद्रों में रक्खे और थोड़ी मस्तगी पीसकर दांतों पर लगावे।

कुल्ली–मसूढ़ों के शोथ और दंतपीड़ा को गुण करे–पीले हड़ों की छाल, मकोय, धनियां, इस्पन्द दो दो मिस्काल, ख़श्ख़ाश के पोस्ते दो, अजवाइन दो टंक, आधसेर जलमें औटावे जब आधा शेष रहे साफ़ करके कुल्ली करे।

### लड़कों के दांत सुगमता से निकलने की औषधियां।

चिकनी चीजें जैसे कि अण्डे की ज़रदी, हराम मग़ज़, भेजा और मुरग़ का पर धीरे से दांतों की जगह पर मले।

औषध–गुलरोग़न मकोय के पत्तोंका रस निचोड़कर उसमें मिलाकर पीड़ा के समय मलना श्रेष्ठ है। ताबूलख़वास में लिखा है कि लड़के के गले में सीप का लटकाना मुख्य करके शीघ्रही दांतों को उगावेगा इस प्रकार होंठ छछूंदर का और सँभालूकी जड़ का लड़के के गले में लटकाना मुख्य करके फल रखता है।

### जिह्वा के रोगों की औषधियां।

यह रोग बहुधा तरी से होता है।

यत्न—राई, पीपल, सोंठ, नौसादर, अक़रक़रा इन दवाओं से एक एक या सब पीसकर जिह्वापर मले और कभी उसमें सिरका मिलाते हैं और कायफल के काढ़े से कुल्ली करना गुणकारी है।

अन्य—जिह्वाके भारी होनेको जो पित्तसे शोथ हो गुणकारी है—गुलाब के फूल छिलीहुई मसूर दोनों के साथ पीसकर और मकोयकी पत्तियों का रस मिलाकर जिह्वा की जड़पर मले।

### जिह्वा के दाह का यत्न।

दही पानी में मिलाकर कुल्ली करे और कत्था जिह्वा पर रक्खे।

### जिह्वा के दानों का यत्न।

इसको मुँहआना भी कहते हैं कदाचित् रुधिर के दोष से हो तो दानों का रंग लाल होगा और पित्त की अधिकता में पीला कफ में सफ़ेद और सोदावी अर्थात् दग्धितदोष में कालारंग होता है जो यह रोग दग्धितदोष से हो तो बहुत बुरा है जो बालकों को हो तो मृत्यु के चिह्न हैं।

यत्न—जो युवा मनुष्य का मुँह आवे तो चारबन्द की फस्द ले।

अन्य—औषध जो जवानों और लड़कों के मुँह आने को गुण करे—बकायन की छाल पीसकर उसके बराबर सफ़ेद कत्था मिलाकर जिह्वा पर छिड़के।

अन्य—जला हुआ काग़ज़, बड़ी इलायची के दाने, सफ़ेद कत्था, भूनी फिटकरी बराबर पीसकर थोड़ा थोड़ा मुँह में छिड़के।

अन्य—मसूर जलाकर उसके बराबर सफ़ेद कत्था मिलाकर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य—जला हुआ गावज़बां उसके बराबर सफ़ेद कत्था मिलाकर मुँह में छिड़के।

अन्य—बड़ी इलायची के दाने, छालिया दोनों जलाकर महीन करके मुँह में छिड़के।

अन्य—सफ़ेद कत्था, शोराक़लमी बराबर पीसकर मुँह में छिड़के।

अन्य—मुँह आने को गुण करे और विशेष करके लड़कों की जिह्वा के दानों को दूर करे—मिश्री पीसकर थोड़ा कपूर मिलाकर छिड़के।

अन्य—भुनी फिटकरी, माज़ू बराबर पीसकर मुखमें छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को दूर करे बाज़ या जुर्रा या बाशा की बीट दो रत्तीभर पीसकर लड़के के मुँह में छिड़के कफ़ के मुँह आने को गुण करे।

अन्य—छिलेहुये जौ जलाकर कत्था सफ़ेद बराबर मिलाकर पीसकर छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को गुण करे—मनुष्य के शिरके केश जलाकर राख उसकी जिह्वापर मले जो कफ़ से मुँह आवे तो शहद में मिलाकर मले।

अन्य—रसौंत नींबू के रसमें पीसकर मले।

अन्य—जो लड़कों के मुँह आनेको गुण करे—निशास्ता जलमें कजली करके मले।

अन्य—गुलाब की पत्तियां और खुरफ़े की पत्तियां चाबना गरमी के मुँह आने को दूर करें।

अन्य—अमलतास की पत्ती जिह्वा पर मले।

अन्य—शहतूत की पत्ती चाबे।

अन्य—गोंदी की छाल में कत्था लगाकर चाबे।

अन्य—बबूल की कोंपल पीसकर मलना और पीना हरप्रकार के मुँह आने को गुण करे।

कुल्ली—गरम मुँह आने को गुण करे--त्रिफला और सफ़ेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य–गरम मुँह आने को गुण करे–माज़ू, गुलेनार, शिरके में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य–आमले पानी में भिगोकर उस जलसे कुल्ली करे।

अन्य–सौदावी अर्थात् दग्धित दोषके जिह्वा के दानों को गुण करे–मेहँदी की पत्तियां चबावे।

अन्य–गाय की हड्डी की मींगी मले।

अन्य–अनार की छाल, गोंदी की छाल, सफ़ेद कत्था औटा-कर कुल्ली करे।

अन्य–बबूल की छाल, झड़बेरी की छाल औटाकर कुल्ली करना श्रेष्ठ है और जो पारे, शिंगरफ़ और रसकपूर खाने से हुआ हो उसको भी गुण करे।

अन्य–मुँह आने को गुणकारक–अरहर की पत्तियों का शीरा निकाल कर उससे कुल्ली करे।

अन्य–अरहर की दाल पानी में भिगोकर उस पानी से कुल्ली करे।

अन्य–अरहर की दाल, मसूर की दाल औटावे और साफ़ करके कपूर मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य–मेहँदी भिगोकर उसके जल से कुल्ली करे।

अन्य–उस मुँह आनेको श्रेष्ठ है जो पारे और रसकपूर खाने से पैदा हो–त्रिफला, मोचरस, ख़शख़ाश का पोस्ता औटाकर कुछ रेंड़ी का तेल मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य–जिह्वा के फट जाने को गुण करे–लसोढ़ा मुँह में रक्खे और ईसबग़ोल के लुआब से कुल्ली करे और कत्था मुख में रखना गुण करता है।

मुखसे लार बहने का यत्न।

बहुधा सोने के समय मुँह से लार बहना कोष्ठ की तरी से होता है।

यत्न–कोष्ठ को साफ़ करे और इतरीफल, सग़ीर खावे और

राई पीसकर उसमें शक्कर मिलाकर फांकना गुण करता है और देरतक दातौन करना श्रेष्ठ है और कासनी जवकुटकर थोड़ा नोन मिलाकर चूर्ण बनाकर कुछ दिन फांके ।

औषधि–जो लार बहनेको बन्द करे–शक्कर सफ़ेद आधपाव क़वाम करे, सात माशे मस्तगी उसमें मिलावे लड़के के लिये खुराक दो माशे जवान के लिये नव माशे ।

### ओंठों के फटजाने का यत्न ।

ओंठों के फटजाने का कारण ख़ुश्की है ।

यत्न–घृत में नोन मिलाकर प्रतिदिन तीनबेर नाभि पर मले गुणदायक है ।

अन्य–ओंठ और जिह्वा के फटजाने को उत्तम है–मीठे कद्दू के बीजों की मींगी या तरबूज़ के बीजों की मींगी पानी में पीस कर मले ।

अन्य–कतीरा पीसकर और ईसबग़ोल का लुआब ओंठों पर मले ।

अन्य–बायबिड़ंग की भाग निकालकर ओंठों पर मले ।

### कण्ठ के रोगों का यत्न (खुनाक़) ।

खुनाक वह शोथ है कि नरखरे या नरखरे के पट्ठे या मरी या मरी के पट्ठे में पैदा होता है नरखरा उसको कहते हैं कि उससे आवाज़ निकलती है और मरी से भोजन और मद्य का सेवन होता है जो नरखरे में शोथ हो तो उसके चिह्न श्वास का रुकना है और जो मरी में शोथ हो तो कठिनता से खाना पीना उतरना उसके चिह्न हैं ।

यत्न–सरेरू की फ़स्द और जिह्वा के नीचे की रग खोले और अमलतास मुख में रखना बहुत लाभ करता है और खुनाक में माउलसईर कि मसूर और ख़शख़ाश उसमें मिलाकर पकाया हुआ भोजन करे जो दो भाग ख़शख़ाश और मसूर बराबर हो ।

### शहतूत का शर्बत।

खुनाक की सूजन, गले के शोथ, कव्वे, तालू और जिह्वा की सूजन को श्रेष्ठ है—खट्टे शहतूत का रस निचोड़कर बराबर मिश्री में क़वाम करे।

### ग़रग़रा अर्थात् कुल्ली।

जो गले की पीड़ा और सूजन को गुण करे—नींब की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय में मिलाय औटाकर साफ़ करके कुछ गरम करके कुल्ली करे।

अन्य—खुनाक की गुणकारक—अमलतास, मसूर, मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर कुछ गरम ग़रग़रा करे।

अन्य—शहतूत का रस, धनियां, मसूर भिगोकर उसके पानी में मिलाकर ग़रग़रा करे।

अन्य—जौ अधकुचले भिगोकर उसका साफ़ पानी लेकर कुछ गरम ग़रग़रा करे ठंढा और गरम शोथ और कंठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है इसी प्रकार कुछ गरम पानी से ग़रग़रा करना खुनाक को गुण करे।

अन्य—बबूल की पत्तियां औटाकर ग़रग़रा करे।

अन्य—खुनाक को गुण करे—अरहर की पत्तियों का रस निकालकर कुछ गरम करके ग़रग़रा करे—यदि अरहर की पत्तियां न मिलें अरहर की दाल पानी में भिगोकर कुछ गरम करके ग़रग़रा करे।

अन्य—तूतकी जड़ और पत्तियां और उसकी नरम डालियां पानी में औटाकर ग़रग़रा करे।

अन्य—धनियें का चाबना गले की पीड़ा को गुण करे।

अन्य—मकोय, कालीज़ीरी, कालीमिरच, खड़ियामिट्टी बराबर पानी में पीसकर लगावे गले के शोथ और खुनाक को दूर करे।

अन्य–जदवार, रेवन्दचीनी तीन तीन माशे, अफ़ीम तीन रत्ती कुछ गरम पानी में मिलाकर लेप करे।

अन्य–सूखा करेला सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–गले की पीड़ा को गुण करे–हतीस की जड़ पानी में घिसकर कुछ गरम करके मले।

अन्य–नौसादर मलना खुनाक को नाश करे।

अन्य–मुरग़ी का बिष्ठा सिरके में मिलाकर कण्ठ पर लगावे शोथ को गुण करता है।

अन्य–तोंबे के बीज, गेरू, लालचन्दन, कालाज़ीरा, सिरस की छाल, मसूर, कालीमिरच, कालीज़ीरी, सूखाकरेला, सोये के बीज ये सब औषध बराबर पीसकर सिरके में मिलाकर गुन-गुना मले।

अन्य–मोरया जो हिन्दी जड़ है मैलारंग पीसकर लगावे गले की पीड़ा को गुण करे।

अन्य–रेवन्दचीनी, गेरू, कालीज़ीरी, कालीहड़, हल्दी, आमला, मुल्तानीमिट्टी बराबर कूट छानकर कुछ गरम जलमें मिलाकर मले।

अन्य–जो लड़कों का कव्वा लटक आवै उसको गुण करे–मुल्तानी मिट्टी सिरके में मिलाकर तालू पर रक्खे।

अन्य–माज़ू सिरके में घिसकर तर्जनी उंगली में लगाकर कव्वा लटकगया हो उससे उठावे।

अन्य–चूल्हेकी लालमिट्टी, एक कालीमिरच पीसकर मिला-कर कव्वा उससे उठावे।

अन्य–कपोलके शोथ को श्रेष्ठ है सेंभल की छाल जलाकर तिलों के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य–मेथी, जौ का आटा बराबर सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य–खुनाक को श्रेष्ठ है और यह औषध उलबीख़ां की

आज़माई हुई है कछुये को लेकर मुख उसका रोगी के मुखके बराबर रक्खे जो कछुये के मुखकी श्वास रोगी के कंठ में भी प्रवेश करे और उसकी खुनाक गलकर नाशहो और गर्दन की पीठपर पछने लगाना खुनाक को नाश करता है।

आवाज़ के पड़जाने का यत्न।

जो नज़ला कण्ठ की ओर गिरे और उससे आवाज़ पड़जावे थोड़ी अफ़ीम खावे और ख़शख़ाश के पोस्ते और अजवाइन को औटाकर ग़रग़रा करे गुणदेता है और जो कफ़ के कारण हो तो तीन बर्ष की पुरानी गोंदी की जड़ को जो पृथ्वी के नीचे होती है थोड़ी थोड़ी मुख में रक्खे इस्पन्द से ग़रग़रा करना आवाज़ को साफ़ करता है।

अन्य—बन्द आवाज़ को खोले—अदरक लेकर उसे भीतर से ख़ाली करके थोड़ी हींग और नमक पीसकर उसके छेद में रक्खे फिर अदरक को कपड़े में लपेटकर उसपर ख़मीर लगाकर भूभल में रक्खे जब अदरक पककर उसमें से गन्ध आने लगे आग से निकालकर छीलकर खावे—आवाज़ खुलजावै।

अन्य—बन्द आवाज़ को गुण करे—मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि चावल गुड़ में पकाकर सोने के समय पेटभरकर खावे फिर एक घण्टे के उपरान्त दो चमचे गुनगुना पानी पिये तीन दिन में आवाज़ खुलजावे।

अन्य—थोड़ी हींग गरम जल से कण्ठ के नीचे उतारे।

अन्य—मूली के बीज कूटकर गरम पानी में मिलाकर खावे।

अन्य—हड़ के बीज की मींगी, पीपल, लाहौरीनोन बराबर शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक तोला दो सप्ताहपर्यन्त खावे।

अन्य—बन्द आवाज़ को जो कफ़से हो उत्तम है—मालकांगनी, बच, खरासानी अजवाइन, कुलींजन, पीपल पीसकर शहद में मिलाकर एक दाम के अनुमान प्रभात और सन्ध्या में चाटे।

अन्य–मुजर्रिबात अकबरी से लिखा गया कि–चिराग़ का गुल पान में डालकर खावे उस बन्द आवाज़ को जो सेंदुरखाने से हो अधिक गुण करे।

अन्य–आवाज़ खोलता है---गन्ना भूभल में गुनगुना करके छीलकर खावे।

अन्य–मुख में कबाबा रखना आवाज़ को खोलता है करंब की चटनी आवाज़ के खोलने को गुण करे और करंब की डालियां थोड़े पानी में पकाकर कपड़े में छानकर शहद में क़वाम करके सेवन करे।

कंठमाला की औषधियों का यत्न।

कण्ठमाला शोथ है जो गले में पैदा होता है।

अन्य–मुंजिज़ के उपरान्त कफ़ का जुल्लाब दे।

अन्य–कण्ठमाला को उत्तम है–मूली के बीज, बकरी के दुग्ध में पीसकर लेप करे, प्रतिदिन लसोढ़े की पत्तियां गरम भूभल में गुनगुनी करके दशदिन तक कण्ठमाला पर बांधे।

अन्य–थोड़ी कसौंधी की पत्तियां, चार कालीमिरचों में पीसकर मले।

अन्य–सरसों पीसकर लगाया करे।

अन्य–लिखा है कि जुल्लाब देने के उपरान्त जबतक रोग नाश न हो चार माशे जंगीहड़ कूट छानकर रात को सदा खाया करे–और यह मरहम लगावे---गूगुल एक तोला, कालीमिरच, तीन माशे सिरके में पीसकर मरहम बनावे।

अन्य---मसूर, धनिया सिरके में पकाकर पीसकर लगाया करे।

अन्य---सोंठ एक टङ्क, कुलथी के बीज तीन टङ्क गोमूत्र में पकाकर ठण्ढा करके लेप करे।

अन्य---यह औषध कराबादीन शफ़ाईसे प्रति कीगई है कण्ठमाले को श्रेष्ठ है–क़तीरा पांच भाग, नानख़्वाह दो भाग कूट छान कर धनियें की पत्तियों का रस निचोड़ कर उसमें मिलाकर मले।

अन्य---बकरी के कंधे की हड्डी लेकर जलाकर एक सप्ताह पर्यन्त दो टंक खावे---मोरिया की लकड़ी उसको मदनमस्त भी कहते हैं कूट छानकर गुनगुना करके लेप करे ऊपर से पुरानी रुई गरम करके बांधे।

अन्य---गौ का सींग और नख जलाकर तेल में मिलाकर कण्ठमाला के रोगी को लेप करे।

अन्य---पीलू की पत्तियां, ऊंट या गौ के मूत्र में पीसकर लगावे उसके ऊपर पान बांधे।

अन्य---मुंडी के फूल दो तोले पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ़ करके पिये इसीप्रकार एक मास पर्यन्त सेवन करे।

अन्य—आज़माया हुआ है, कण्ठमाला के मलको उखाड़े और यह औषध मुजर्रिबात अकबरी की है---एक भाग सिरसके बीज कूट छानकर दो भाग शहद में मिलाकर हांडी में रक्खे और उसपर सरपोश ढांककर उसके किनारे उड़द का आटा लगावे और एक सप्ताहपर्यन्त धूप में रक्खे इसके उपरांत खोलकर प्रतिदिन एक तोला भर खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे यद्यपि इस औषध में दुर्गन्धि है परन्तु कण्ठमाला के मलके दूर करने में अद्वितीय है।

अन्य—चूके की जड़ बांधना विशेष करके कण्ठमाला को श्रेष्ठ है।

अन्य—बकरी के सींग का गूदा जंगली कण्डे की आग में जलावे जब जलकर सफ़ेद होजावे चूर्ण बनाकर प्रतिदिन सात माशे चौदह दिनतक फांके भोजन खिचड़ी खावे।

अन्य—कण्ठमाला को दूर करे—जौ का आटा, अलसी, कबूतर की बीट सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य—धनियां और जौ का सत्तू सर्वदा कण्ठमाला पर लगाया करे।

अन्य—सिरस की छाल, तोंबा, कालीमिरच, कालीज़ीरी पीस-कर बराबर लगाया करे।

अन्य—बरगद का दूध कण्ठमाला पर लगाना कण्ठमाला को पचाता है।

अन्य—सरेरू की फ़स्द खोलना और भोजन कम करना उत्तमोत्तम यत्न हैं।

कंठ में जोंक के लिपटरहने का यत्न।

नोन, नौसादर, सिरके में मिलाकर ग़रग़रा करे और गन्धक का धुवां कण्ठ में पहुँचाना जोंक को कण्ठ से गिरादेता है और धुवां पहुँचाने की यह रीति है नरकुल लेकर एक ओर उसके गन्धक रक्खे उसपर आग रखकर दूसरी ओर से हुक्के की भांति खींचे जो जोंक कण्ठ से छूटकर कोष्ठ में गिरजावे शीघ्रही वमन करे न निकले तो मुसिलले।

अन्य—कालीमिट्टी कपड़े में बांधकर रोगी के मुख में रक्खे शीघ्रही जोंक मिट्टी की सुगन्ध से निकल आवेगी।

अन्य—पिसीहुई राई दो भाग, सिरका आठ भाग दोनों मिलाकर ग़रग़रा अर्थात् कुल्ली करे।

अन्य—राई, कलौंजी पीसकर साम में फूंके गुण करती है।

अन्य—मोठ हिंदी मुख में रक्खे जोंक उसकी प्रीति से निकल आवेगी।

हृदय रोगों का यत्न।

दमा अर्थात् श्वास बहुधा बुढ़ापे में कफ़ की अधिकता से होता है यह रोग बहुत दिन रहनेवाले रोगों में से है इसके उपाय से भूल न करे मुंजिज़ के उपरांत कभी कभी कफ़ का जुल्लाब मुसिल से करता रहे।

गोली—श्वासरोग को श्रेष्ठ है—करंजुवे की गूदी, पीपल पीस कर अदरक के रसमें कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर दो तीन गोलियां प्रभात को खाया करे।

अन्य गोली–हल्दी, राई, सज्जी चार चार भाग, गुड़ अठारह भाग कूटछानकर जंगली बेरके बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम को इसी प्रकार चालीस दिन तक खावे।

अन्य–सीप जलाकर अदरक के रस में खरल करके चनेकी बराबर गोलियां बनाकर खावे।

अन्य–गोली जो श्वास रोग को गुण करे–मदार की कली जो खिली न हो दो भाग, पीपल एक भाग, लाहौरीनोन एक भाग महीन पीसकर जंगलीबेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली प्रतिदिन खावे।

गोली–एक मदार का पत्ता पच्चीस कालीमिरचें कूट छानकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे जवान सात गोली और लड़के दो गोली खावें।

अन्य–पीपल, कालीमिरच एक एक टंक, काकड़ासिंगी आधा टंक, सज्जी सफ़ेद चौथाई टंक, अफ़ीम चार रत्ती कूट छानकर अदरक के जल में जंगली बेर की बरावर गोलियां बनावे खूराक एक गोली जो अदरक न मिले तो पांच टंक सोंठ मिलाकर गोलियां बनावे।

अन्य–एलवा सफ़ेद, सज्जी, कालीमिरच, हल्दी कूट छानकर घीकुवार के रसमें खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली गुनगुने जलसे खावे।

अन्य–नीलचौका लकड़ी दो टंक, मालकांगनी चौथाई टंक, कूट छानकर पानीमें खरल करके चनेकी बराबर गोलियां बनावे प्रात-संध्या एक गोली खाया करे खटाई से पथ्य करे चिकना भोजन खावे।

अन्य गोली–सांक और कफ़ की खांसी को श्रेष्ठ है–अक़रक़रा, कालीमिरच, अनार की छाल, अजमोद, वांसेकी पत्तियां, छोटी कटाई की जड़, बबूल की छाल, सफ़ेद सज्जी, लाहौरीनोन, सांभरनोन एक एक माशा, अफ़ीम दो माशे कूट छान-

कर अदरक के रसमें चने की बराबर गोलियां बनाकर मुख में रखकर उसकी राल निगल जावे।

अन्य–दमे को श्रेष्ठ है–एलवा, सुहागा, मुरमक्की कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे दो प्रभात को दो सन्ध्या को खाया करे।

अन्य–पीपल एक तोला कपड़े को पानी में भिगोकर पीपल उसमें लपेटकर भूभल में रक्खे एक घण्टे के उपरान्त निकालकर भुना सुहागा, कुलींजन, कालीमिरच एक एक मिस्काल, पीपल, अक्करक्करा डेढ़भाग, बारीक पीसकर घीकुवार के रसमें खूब खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज़ खावे।

अन्य–बांसा, कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, कालीमिरच, कलौंजी, पीपल, भारंगी, कटाई के बीज बराबर लेकर अदरक के रसमें गोलियां बनावे एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य–कसौंधी का हराफल भूनकर खावे।

अन्य–रीठे की गिरी खाना सांक को गुण करे।

अन्य–आश्चर्यदायक औषध है–रूसेके बीज, नकछिकनी, पान तीनों औषध भूनकर पीसकर चार रत्ती के बराबर पान में खावे।

अन्य–मदार के पत्ते, मुरमक्की, कत्था सफ़ेद पानी में पीसकर मले और मुरमक्की घी के मिट्टी के बासन में रक्खे और बरतन का मुख बन्द करके जलते हुये चूल्हे या तन्दूर में रक्खे जब जलकर राख होजावे पीसकर प्रतिदिन एक रत्ती पान में खाया करे।

अन्य–कासश्वास को नाश करे–मदार की पत्ती जो पीली होकर दरख़्त से गिर पड़ी हों एक सेर, चूना, नोन दो दो टंक दोनों को जलमें पीसकर मदार के पत्तों पर लगाकर सुखाकर मिट्टी के बासन में रखकर जंगली कंडे की आग में एक पहरतक

जलावे जब भस्म होजावे एक रत्ती रोज़ खाया करे दूध दही और खटाई से पथ्य करना उत्तम है।

अन्य–मदार की कोंपल पान में रखकर सरदी में तीनदिन पर्यन्त प्रतिदिन एक कोंपल खावे चौथे रोज़ डेढ़ कोंपल पांचवें दिन दो कोंपल इसी प्रकार चालीस दिन पर्यंत आधी आधी कोंपल प्रतिदिन अधिक करके खावे।

अन्य–मदार की कली जो खिली न हो जितनी चाहे लेकर हर फूल में एक कालीमिरच रखकर मिट्टीकी नई हांड़ी में रक्खे उस पर खारीनोन बिछाकर हांड़ीका मुख मूंदकर तन्दूर में रक्खे ठण्ढे होने के उपरान्त निकालकर चार रत्ती उसमें से रोज़ खाया करे।

अन्य–कफ़ के दमे की नाशकारक–इलायची के दाने, मालकांगनी दो माशे लेकर निगलजावे।

अन्य–अदरक का रस, प्याज़ का रस, लहसुन का रस, घीकुवार का रस, शहद यह सब औषधि बराबर लेकर चीनी या शीशे के बासन में रखकर पृथ्वी में गाड़े तीनदिन के उपरान्त निकालकर एक कौड़ी के बराबर प्रतिदिन खाया करे।

अन्य–बिसखपरे की थोड़ीसी जड़ प्रतिदिन पानमें खावे।

अन्य–तम्बाकू का गुल आगमें जलाकर सफ़ेद करके पीस कर दो रत्ती पानमें खाया करे बादी और खटाई से पथ्य करे।

अन्य–तम्बाकू का गुल इकट्ठा करके आग में जलावे जब सफ़ेद होजावे उसको पानी में कजली करके एक रात दिन रहने दे और प्रतिदिन दो तीन बेर उसको हिलाते रहें फिर छानकर और उसका जल लेकर पतीली में औटावे जब नोन होजावे उसमें से दो रत्ती लेकर पान में खाया करे।

अन्य–थूहर की लकड़ी खोखली करके एक दाम फिटकरी उसमें रखकर कपड़मिट्टी करके कंडे की आग में जलावे जब ठंढा होजावे फिटकरी निकालकर दो रत्ती के बराबर पान में खाया करे।

अन्य–दमे को गुण करे–चाहे वह सरदीसे हो या गरमीसे ईसबग़ोल अंजुली भर बराबर तीन चार महीने सुबह और शाम फांकने से शान्ति होती है कफ़के श्वासरोग को शान्तिकारक है पान सरवर नाखूनके बराबर पानमें रखकर खाया करे।

अन्य–समुद्रफल दो, पीपल चार दोनों को जलाकर पीसकर एक कौड़ी के बराबर पानमें रोज़ खाया करे।

अन्य–मकड़ी का जाला साफ़ करके गुड़ में लपेटकर खावे गरमी बहुत करता है परन्तु गुणदायक है।

अन्य–रूसे के पत्तोंका रस दमे को गुण करता है।

अन्य–चार तोले गेहूं मदारके रसमें तीनदिन भिगोवे फिर मिट्टी के बरतनमें रखकर उसका मुख बन्द करके जंगली कंडों में जलावे जब ठण्डा होजावे पीस छानकर चार तोले गुड़ मिलाकर दो दाम आलमगीरी के बराबर गोलियां बनावे एक गोली प्रभात को खाया करे और खटाई और बादी से परहेज़ करे।

अन्य–चड़चड़ का नोन थोड़ा खाया करे हृदय को कफ़से साफ़ करता है और श्वासरोग को दूर करता है और थूहर का नोन भी यही गुण रखता है और मदारका नोन खाना भी श्वासरोग को नाश करता है और उसके नोनके बनानेकी यह रीति है मदारके पत्ते सुखाकर जलाकर रात को बर्तनमें भिगोदे प्रभात को उसका साफ़ जल लेकर जलावे कि पानी जलकर खार हो जावे और नोन भी इसीरीतिसे बनाते हैं।

मुसिल–जो विशेषकरके श्वासरोगों को नष्ट करता है जमालगोटा छीलकर चिराग़में जलावे जब राख होजावे पीसकर चार भाग करे प्रतिदिन एक भाग पानमें खावे।

अन्य–भुनी फिटकरी, मिश्री बराबर कूट छानकर फंकी बनावे खूराक एकमाशे से छःमाशे पर्यन्त।

अन्य–गेहूं आवश्यकताके अनुकूल नये कुल्हड़ में जलाकर कोयला करके हल्दी जलेहुये गेहूं के बराबर लेकर जलावे फिर

दोनों महीन पीसकर मिलावे पहिले दिन साढ़े पांचमाशे गरम या ठंढे पानी से खावे दूसरे दिन एक कौड़ी के बराबर अधिक करें इसी तरह एक माशा इक्कीस दिवस पर्यंत सेवन करे जो ईश्वर चाहे तो सात दिन के उपरांत फ़र्क़ मालूम होगा।

अन्य--कलीमदार की जड़ डेढ़भाग, अजवाइन एकभाग कूट छानकर गुड़ में मिलाकर गोलियां बनावे और एक तोला भर हर प्रभात को खावे।

अन्य---करील की लकड़ी जलाकर उसकी भस्म एक माशा भर खाया करे।

अन्य---आंवलासारगन्धक सात माशे, मिश्री चार टंक, शहद में मिलाकर दो माशे पानपर लगाकर मलकर खावे।

अन्य---पियाबांसा का छोटासा वृक्ष जड़ और पत्तों समेत छाया में सुखाकर कूट छानकर चूर्ण बनाकर एक हथेलीभर प्रतिदिन खावे।

अन्य---बारहसिंगे का सींग जलाकर पहिले दिन एक माशे भर शहद में मिलाकर खावे फिर एकमाशा रोज़ अधिक करके एक तोले पर्यन्त पहुँचावे जो इससे गरमी अधिक हो तो छोड़दे।

अन्य---मदार की छाल, सहँजने की छाल तीन तीन टंक, जवाखार एक टंक, पीपल सात टंक, सब्ज़ तूतिया चौथाई टंक भूनकर चूर्ण बनावे खूराक आधा टंक खाय।

अन्य---इन्द्रायनकी जड़, पीपल, सज्जी बराबर कूट छानकर रक्खे एक माशा सुबह और एकमाशा शाम को खाया करे।

अन्य---लाहौरीनोन पहिले दिन दो माशे पीसकर सोने के समय चाटे और हररोज़ आधामाशा अधिक करे कि छःमाशे पर्यन्त पहुँचजावे इसपर जल न पिये जो प्यास बहुत मालूम हो तो गुनगुना पानी पिये।

अन्य---मदार की पत्ती अढ़ाई पाव, मंडवे की टहनियां

टुकड़े टुकड़े करके सवासेर सादी अजवाइन, पन्द्रह दाम अध कुचली आंवलासार गन्धक, सांभरनोन, लाहौरीनोन, काला-नोन, जवाखार, सज्जी तीन तीन दाम यह सम्पूर्ण औषधि हांड़ी में भरकर ढकना देकर उसका मुख मिट्टी से बन्द करदे उसपर से कपरौटी करके बहुतसी लकड़ियों में रखकर जलावे जब भस्म होजावे पीसकर खाया करे और थोड़ा थोड़ा बढ़ाकर एक अंजुली तक पहुँचावे परंतु इस औषधि से रुधिर आने का भय है अधिक न खावे।

फंकी--वैद्य इसका अवश्य सेवन कराते हैं--पुष्करमूल, भा-रंगी, कालीमिरच, पीपल, कटाई के बीज, काकड़ासिंगी, काला-नोन, लाहौरी नोन, सज्जी, बिल्लीलोटन बराबर कूट छानकर फंकी बनावे एक माशा सुवह और एकमाशा संध्या को खावे और भोजन में घृत अधिक खाय।

तम्बाकू का शरबत।

तम्बाकू के हरे पत्तों का रस और उसके बराबर गुड़ लेकर शरबत बनाकर साफ़ करके रक्खे खुराक एक दामसे दो दाम पर्यंत--निर्बल को कम दे कि उसको वमन और अतीसार का भय है और श्वासरोग को बहुतही गुणदायक है पांच दिन में बिलकुल आराम करदेता है।

चटनी--कासश्वास को जो कफ से हो उत्तमहै--अलसी और इस्पन्द बराबर पीसकर दुगुने शहद में मिलाकर प्रतिदिन उस से एक तोला भर चाटे बाज़ों ने लिखा है कि भुनीअलसी तीस टंक, कालीमिरच दशटंक तिगुने शहद में मिलाकर चाटे और बाज़े मिरच के बदले पोदीना मिलाते हैं और बाज़े केवल तिगुनी अलसी में क़वाम करते हैं।

अंन्य--सांस आने को गुण करे--भुना सुहागा तीन तोले, शहद चार तोले मिलाकर रक्खे सोने के समय उसमें से तीन उँगली लेकर चाटे।

अन्य—कफ़ के दूर करने में अद्वितीय है—कायफल, सोंठ, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, भारंगी, पीपल बराबर कूट छानकर शहद में मिलाकर रोज़ एक दाम खाया करे ।

अन्य---बावची, हल्दी, पीपल, आंबाहल्दी, कालीमिरच, कालानोन, कालाचीता, भुनासुहागा एक एक दाम, सज्जी आधा दाम कूटछान कर खूराक एक मिस्काल गरम जलसे ।

अन्य—काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, भारंगी, कायफल बराबर कूट छानकर सोंठ भिगोकर उसके पानी में तरकरके प्रभात और संध्या एक एक टंक के अनुमान खावे ।

अन्य—कासश्वास को गुण करे---हड़ बहेड़ा दोनों एक एक भाग कूटछान कर एक टंक प्रभात और एक टंक शाम को खावे और दो टंक रीठे प्रतिदिन खाना दमे को गुण करता है ।

अन्य—कड़वी कूठ दुगुने शहद में मिलाकर चाटे कास-श्वास को गुण करे ।

अन्य—अलसी, मेथी सात माशे, दाख मुनक्के एक तोला पानी में औटाकर साफ़ करके पिये ।

अन्य—बड़ीकटाई की जड़ टुकड़े टुकड़े करके पावभर जलमें औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे पिये ।

अन्य---कफ़की खांसीको गुण करे--जंगली प्याज़,शैतरा,सोंठ, भारंगी,कटाई जड़ और पत्तों समेत, रूसा,बबूलकी छाल दो दो दाम यह सम्पूर्ण औषधि जवकुट करके छःहिस्से करे एक भाग आधसेर जलमें औटावे जब आधपाव रहे साफ़ करके पिये ।

अन्य---दमे और खांसी को गुण करे---छोटी कटाई की जड़, गिलोय, पुष्करमूल, भारंगी, काकड़ासिंगी, नरकचूर तीन तीन माशे एक सेर जल में औटावे जब आधपाव रहे साफ़ करके पिये।

हलवा—सिल और रूखी खांसी को गुण करे—मीठे कद्दू के बीजों की गिरी, खीरे ककड़ी के बीजों की गिरी, ख़शख़ाश,

निशास्ता बराबर शीरा निकालकर सफ़ेद मिश्री या तुरंजबीन शीरख़िस्त या बनफ़्शे का शरबत मिलाकर पिये ।

हलवा--हृद्रोग, सिल, खांसी और दिक़ अर्थात् जीर्णज्वर और आंतों की गांठ को श्रेष्ठ है और बलकारक और भेजे का तर करनेवाला है--निशास्तेको पानी में औटाकर शक्कर मिलाकर क़वाम करे फिर ख़शख़ाश और कद्दू के बीजों की गिरी का शीरा मिलाकर हलवा बनावे ।

सिल के रोग का यत्न ।

सिल फेफड़े के घावको बोलते हैं इस रोगवाले को ऐसा ज्वर आवे जो कभी न उतरे कभी खांसी से रुधिर भी निकलता है और रोगी दिनदिन क्षीण पड़ता जाता है यद्यपि यह रोग असाध्य है परंतु इसलिये कि रोगी शीघ्र मर न जावे बासलीक की फ़स्द खोले फिर ज्वर और कासका यत्न करे ।

गोली--जो सिलको गुण करे--संगजराहत, ज़हरमोहरा, सफ़ेदकत्था, क़तीरा, सम्मग़अरबी, निशास्ता, सफ़ेद ख़शख़ाश, ख़तमी के बीज, गेरू एक एक टंक, अफ़ीम एकमाशा कूट छानकर गोलियां बनावे और कभी ज्वरकी अधिकतामें थोड़ा कपूर प्रकृति के अनुसार मिलाया जाता है ।

टिकिया--सिल और दिक़को गुण करे--गेंगटा जलाकर दश टंक, निशास्ता सफ़ेद, ख़शख़ाश, काली ख़शख़ाश दश दश टंक, साफ़ किये खुरफ़े के बीज, छिली हुई मुलहठी, छिलेहुये ख़तमीके बीज तीन तीन टंक, सम्मग़अरबी, क़तीरा एक एक टंक, ईसबगोलके लुआब में टिकिया बनावे ख़ूराक दो टंक खाय ।

अन्य--सिलके रोगके लिये इस्माईलख़ां का आज़माया हुआ है ख़शख़ाश सफ़ेद अधकुचला दश टंक, ईसबग़ोल तीन टंक, आधसेर जल में औटावे जब आधापानी रहे आधसेर मिश्री में क़वाम करे ऊपर से सफ़ेद ख़शख़ाश, सम्मग़अरबी दो दो टंक पीसकर मिलावे एक तोला खाय ।

अन्य–सिल को गुण करे–मुल्तानी मिट्टी दो मिस्काल पीसकर पिये।

लड़कों की पसली के रोग का यत्न।

इस रोग में ज्वर और खांसी होती है और पसली दबजाती है यह दो प्रकार का है एक वह कि उसका मल गरम हो उसमें ज्वर भी होता है इससे ऐसी चिंता नहीं इसमें सात दिन पर्यन्त तेज़ चीज़ें कि जिससे भीतर के जोड़ छिलजावे जैसे कि तूतिया और जमालगोटा और वैसी कोई औषधि न दे और उत्तम उपायों से तलीन करना चाहिये कि अमलतास, उन्नाब, मुनक्के, बनफ़्से शीघ्रही मलको निकाले दूसरा वह कि कफ़ के दोष से हो इसमें ज्वर और ऊर्ध्वश्वास भी होता है पहिले से इसमें भय है।

जो लड़कों के डब्बे को दूर करे–कमीला, चूना, सब्ज़ तूतिया, पीलीहड़, बहेड़े की छाल, कत्था सफ़ेद बराबर महीन पीसकर गोलियां बनावे समय पर थोड़े घृत में मिलाकर मले।

गोली–केचुवा, पेठे के बीज, लौंग बराबर लेकर गोलियां बनावे एक गोली प्रतिदिन दे दो तीन दिनमें रोग दूर होजावेगा।

गोली–करंजुवे के बीज की गिरी एक, कच्ची सब्ज़ तूतिया एक रत्तीभर महीन पीसकर सरसोंकी बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावे।

अन्य–एलुवा, जमालगोटा सब्जी दूर करके बराबर लेकर लोहे के बर्तन में उस गोमूत्र में जो जनी न हो लोहे के दस्ते से पीसकर मूँग के बराबर गोलियां बनावे आयु के अनुसार दाई के दूध में दे।

अन्य–लड़कों के डब्बेको श्रेष्ठ है और कीड़ों को निकालतीहै–कमीला ८ माशे, हींग १ माशे, कूटछान कर दही के पानी में काली-मिरचके बराबर गोली बनावे, दूध पीतेहुए बालक को एक गोली गरम जलके साथ और बड़े लड़के के लिये आयु के प्रमाण दे।

अन्य–लड़के की पसली के रोग को शांत करे–चूकाकी लकड़ी, कालीमिरच, पीले हड़ों की छाल, तुरबुदकी छाल बराबर पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाय।

अन्य–सूखा केंचुवा पानी में पीसकर एक बूंद लड़के के कण्ठ में टपकावे बहुत गुण करे।

अन्य–बकायनकी पत्ती कुछ गरम करके पहिले रेंड़ी का तेल पेट पर मले उसपर पत्ती बांधे।

अन्य काढ़ा–कुसुम के फूल एक माशा दो टंक लड़की के मूत्र में औटावे जब आधा या चतुर्थांश रहे पिलावे।

अन्य–जवासे की जड़ दो माशे पानी में औटाकर लड़के को पिलावे।

अन्य–लड़के की पसली के रोग को दूर करे सम्मग़अरबी एक तोला, एलुवा छः माशे कूटछान कर घीकुवार के रसमें मिला कर लगावे।

अन्य–यह औषधि वैद्यों के मतसे निश्चय की गई है कि एक गोली घुड़चढ़ी है अर्थात् उसका गुण रोगी को रोगसे छुड़ाने में उस मनुष्य के छूटने के अनुसार है कि घोड़े पर सवार हो और यह नुस्ख़ा योगियों का है इसको हुबमिसकी निवाज़ भी बोलते हैं इसके नुस्ख़े बहुत हैं उसमें से एक सुगम नुस्ख़ा लिखता हूँ बहुधा रोगियों के रोग की शांति करता है विशेष करके लड़के की पसली को जो ज्वर के विना हो गुण करे।

घुड़चढ़ी की गोली।

गन्धक, पारा, हरताल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आंवला, सुहागा, तरबूज़ के बीजों की गिरी, नाजबो के पत्तों का रस बराबर लेकर पहिले पारे और गन्धक को खूब पीसकर शेष औषधि लोहे के बासन में डालकर

लोहे के दस्ते से भंगरे के रस में तीन दिन पीसकर मूंग के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करे।

दूसरा उड़वटी का नुस्खा।

पारा एक दाम, गन्धकसफ़ेद, तुरबुद दो दो टंक, कालीमिरच तीन टंक, सुहागा चारटंक, पीले हड़ों की छाल आठ टंक, रेंड़ी सात टंक, शोधा जमालगोटा आठ टंक, इलायची चतुर्थ टंक, कूट छानकर गोलियां बनावे।

यह गोलियां श्वासरोग के लिये हड़, बहेड़े और आमले के साथ और ज़ुकाम के लिये शक्कर के साथ और सूखी खांसी के लिये भंगरे के रसके साथ और बिष के दूर करने को ग्यारह गोलियां चिड़चिड़े के रस के साथ और बात के दूर करने को शहद के साथ और बातिक कोलंज अर्थात् वह पीड़ा जो कूलों अन्तड़ी में पैदा होती है सौंफ़ के अरक़ के साथ खाना और लगाना।

बकरी के मूत्र में रगड़कर सफ़ेद दाग़के लिये गुण करे और आंख के जाले के लिये स्त्री के दूध में रगड़ कर लगाना और ताऊन अर्थात् एक फोड़े को जो अंडकोष या कुचों या बग़ल के नीचे निकलता है नींबू के रसके साथ दूर करे और बातके लिये अदरक के रस से एक गोली निगल जाना श्रेष्ठ है।

पहलू की पीड़ा का यत्न।

जो पीड़ा के साथ ज्वर और खांसी भी हो वासलीक की फ़स्त खोले और शेष यत्न जो बड़ी पुस्तकों में लिखे हैं करे जो पहलू की पीड़ा बात और शीत से हो तो वह पीड़ा एक स्थान से दूसरे स्थान में जावे उसमें ज्वर नहीं होता।

औषधि--पहलू की पीड़ाको जो बात और सरदी से हो गुण करे थोड़ी सोंठ और थोड़ी अरंड की जड़ कुचलकर पानी में औटाकर पिये।

लेप--पहलू की पीड़ा को जो ज्वर के बिना हो गुण करे--मदार

की जड़ लड़के के मूत्र में घिसकर पीड़ा की जगह पर लगाकर धूप में बैठे और जंगली कंडों से सेंक करे।

अन्य--बारहसिंगे का सींग, कालीमिरचें पांच पीसकर कुछ गरम करके लेप करे।

अन्य---हृदयरोग को गुण करे---देवदारु अढ़ाई माशे पीसकर पांच माशे गुड़ मिलाकर गोलियां बनाकर खावे बाज़े उसके बराबर सोंठ भी अधिक करते हैं।

अन्य---छाती की पीड़ा को श्रेष्ठ है---सहँजने की पत्तियां पकाकर खावे।

अन्य--मेथी शहद मिलाकर औटाकर पीवे पुराने हृद्रोग और श्वास रोग को गुण करे।

खांसी के रोग का यत्न।

जो खांसी कि पहलू की सूजन और फेफड़े की सूजन जातुस्सदर और कलेजे के शोथ और सिल आदि के कारण हो तो उन रोगों को शांत करे और खांसी का विस्तृत बृत्तान्त यह है कि कभी सूखी होती है जो उसमें कोई वस्तु नहीं निकलती है और कभी तर होती है कि उसमें से कफ निकलता है और छाती में खरखराहट होती है जो यह रोग कफसे हो तो मुंजिज़ के उपरान्त कफका जुलाबदे और सूखी खांसी में तर औषधियों का सेवन करे।

गोली---उस खांसी को दूर करे जो कफ़ से हो—काकड़ासिंगी कूट छानकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य—तर और खुश्क खांसी को दूर करे। साफ़ की हुई मुलहठी, कतीरा, सम्मग़अरबी, निशास्ता, मिश्री बराबर कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य—जो आज़माया हुआ खांसी को गुण करे---पिस्ते छूलके

फूल, पीली हड़ दोनों बराबर लेकर अदरक के रसमें मूंग की बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य–कालीमिरच, सज्जी, चने भूनकर छील करके बराबर लेकर अदरक के रसमें गोलियां बनावे।

अन्य--एक सप्ताह में खांसी को दूर करे–हल्दी एक टंक, सज्जी सफ़ेद चौथाई टंक, कूट छानकर खरल में पीसकर छोटे बेर की बराबर गोलियां बनाकर प्रात और संध्या एक गोली खाया करे।

अन्य–कालीमिरच, सुहागा, काकड़ासिंगी, लौंग, फिटकरी, भारंगी, हड़ की छाल, पीपल, लाहौरी नोन चने की बराबर लेकर सब औषधियों के बराबर सोंठ मिलाकर कूट छानकर नींबू के रस में खरल करके छोटे बेर की बराबर गोलियां बनाकर सोने के समय एक या दो गोलियां खावे।

अन्य–लड़कों की खांसी को जो कफसे हो गुण करे–सुहागा आधा कच्चा और आधा भूनकर उसके बराबर कालीमिरच लेकर घिकुवार के रस में खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर सेवन करे।

अन्य–छोटी कटाई की जड़, मुलहठी, काकड़ासिंगी, कुलींजन, हड़की छाल पानी में औटाकर बबूल की छाल मिलाकर चने की बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य–श्वास कासको नाश करे–कालीमिरच, पीपल, करंजुवे के बीजों की गिरी, कटाई के बीज, भुना सुहागा, सफ़ेद कत्था एक एक टंक, अफ़ीम आधा टंक, कूट छानकर एक पहर अदरक के रस में खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य–हड़की छाल, करंजके बीजकी गिरी, काकड़ासिंगी, कालीमिरच, मुलहठी बराबर कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर मुँह में रक्खे।

अन्य–थोड़ी ख़शख़ाश भूनकर पीसकर थोड़ा लाहौरीनोन और कालीमिरच मिलाकर एक माशे के बराबर प्रतिदिन दो तीन बेर खाया करे।

अन्य–शलग़म पर कपरौटी करके तन्दूर में पकाय उसका कुछ गरम पानी निचोड़कर मिश्री मिलाकर पिये।

गोली–जो कफ़ की खांसी को दूर करे–मुलहठी, कालीमिरच भूनकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर कूट छानकर चने के बराबर गोलियां बनावे रात्रि को दो गोलियां मुखमें रखले।

अन्य–हड़की छाल, बहेड़े की छाल, काकड़ासिंगी, भारंगी, दारचीनी, फिटकरी, सुहागा, चीत, लौंग, लाहौरीनोन, सोंठ बराबर ले और सुहागे को भूनकर छोटे बेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली प्रभात एक सन्ध्या खावे।

अन्य–जो कफ़की खांसी को गुण करे–पँवार के बीज पीस कर चारमाशे की बराबर तीन सप्ताह पर्यंत खावे।

अन्य–केले का पत्ता जलाकर उसकी भस्म लेकर थोड़े नोन में मिलाकर प्रतिदिन कई बेर खाया करे।

अन्य–गुदा पर तेल लगाना विशेष करके कासरोग को शांत करता है।

अन्य–पुरानी खांसी को गुण करे–पीपल चिलम पर रखकर तम्बाकू की तरह पिये।

अन्य–गले में लटकाना विशेष करके श्रेष्ठ है रियाज़ आलमगीरी में लिखा है कि कौवे की बीट थैली में बांधकर लड़के के गले में लटकाये खांसी दूर होगी।

अन्य–कफकी खांसी को गुण करे–कुचला घी में जलाकर पीसकर रक्खे प्रभात को दो रत्ती उसमें से खावे।

हरीरा–खांसी के लिये श्रेष्ठ है–गेहूं की भूसी पानी में मलकर उसका रस निकालकर बादाम की गिरी का रस और निशास्ता और शक्कर मिलाकर हरीरा बनाकर कुछ पिये।

अन्य–लाहौरीनोन, साम्हरनोन, कालानोन, अजवाइन, नमक, नपनी, सुहागा सम्पूर्ण औषधि बराबर लेकर मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर ऊपर से कपरौटी करके आधगज़ का गहरा एक गढ़ा खोदे उसमें जंगली कंडे भरकर उसके बीचमें कुल्हड़ रखकर जलावे जब ठंढा होजावे जलाकर पीसकर उसके बराबर सम्मग़अरबी मिलाकर एक माशा प्रतिदिन खाया करे।

चूर्ण–खांसी को गुण करे–त्रिफला, लाहौरीनोन, अनारकी छाल, कौंच के बीजों की गिरी, रूसे के पत्तों की राख, जवासे की राख एक एक भाग, पीपल, कालीमिरच आधा आधा भाग कूट छान कर एक माशा सुबह और शाम खाया करे तीन दिनमें आराम होवे।

अन्य–अनार की छाल जो बिलायती हो तो अति उत्तम नहीं तो पीपल, काकड़ासिंगी छः छः माशे, लाहौरीनोन, कालानोन एक एक तोला, हड़की छाल दो तोले, कूटछानकर फंकी बनाकर प्रतिदिन कई बेर खाया करे।

अन्य–काकड़ासिंगी, छिलीहुई मुलहठी, बबूर का गोंद, ख़श-ख़ाशका पोस्ता, पीपल, समंदरफल की गिरी बराबर कूट छान-कर फंकी बनावे तीन माशे के अनुमान खावे।

जूफ़ा का शरबत।

कफ़ की खांसी को गुणकारक–साफ़ की हुई मुलहठी, सौंफ़, ख़तमी के बीज, परसियावशान दो दो टंक, ज़ूफ़ा, मुलहठी एक एक टंक, लसोढ़ा तीस टंक, ख़शख़ाशके पोस्ते बीजोंसमेत ग्यारह पावभर शरबत बनावे।

अमलतास की गुलक़न्द।

तबियत को मुलायम करती है कफ़ छाती से साफ़ करती है खांसी को मुफ़ीदहै–अमलतास एकभाग, मिश्री दो भाग, यथा-बिधि गुलक़न्द बनावे और एकतोलाभर खावे।

अमलतास की चटनी ।

जो प्रकृतिको नरम करनेवाली और कफ़ को हृदय से दूर करती है और खांसी को शांत करती है—अमलतास जलमें कजली करके तीन भाग शक्कर में क़वाम करे और दो तोले सौंफ़का अरक़ या उसके रस के साथ खावे ।

हालिम की चटनी ।

कफ़की खांसीको दूर करे और मलको हृदय पर गिरने से रोंकती और पहलू की पीड़ाको दूर करती है—हालिम कूटकर शहद में मिलाकर चाटे ।

अन्य—सरसों पीसकर शहद में मिलाकर चाटना तरखांसी को गुण करता है ।

अन्य—खांसी और ऊर्ध्वश्वास और लड़कोंके खरखर करने को गुण करे—बड़े मुनक्के दो दाम, उत्तम शहद तीनदाम, कालीमिरच, पियावांसा, भारंगी, नागरमोथा, काकड़ासिंगी छः छः माशे अतीस, बच ख़ुरासानी चार चार माशे कूट छानकर शहद में मिलाकर आयुप्रमाण दाई के दूध में मिलाकर दे ।

ख़शख़ाश की चटनी ।

उस खांसीको जो नज़लेसे हो गुणकरे—ख़शख़ाशके पोस्तेदानों समेत तीस, लसोढ़ा उसीके बराबर, सौंफ़ ख़तमी के बीज एक एक तोला आधसेर पानी में औटावे जब आधा रहे साफ़ करके पावभर शक्कर में क़वाम करे फिर साफ़ की हुई मुलहठी दो टंक, सम्मग़अरबी एकटंक, क़तीरा आधाटंक पीसकर मिलावे सोने के समय और प्रभात को एक तोला उसमें से चाटे ।

गोंदी की चटनी ।

खांसी को गुण करे—गोंदी लेकर उसका लुआब निकालकर बराबर की शक्कर मिलाकर क़वाम के अंत में थोड़ा बबूलका गोंद पीसकर मिलाकर सेवन करे ।

अन्य—लड़कों की खांसी और बमन को गुण करे—काकड़ा-

सिंगी, अतीस, पीपल, मुलहठी, सम्मग़ अरबी बराबर कूट छानकर शहद में मिलाकर चाटे ।

अन्य—खांसीको गुण करे—सम्मग़ अरबी डेढ़तोला, क़तीरा, निशास्ता एक एक तोला, छिलीहुई मुलहठी आधातोला, सफ़ेद मिश्री बारहदाम, आलमगीरी और कभी गरमी के समय तरबूज़के बीजोंकी गिरी एकतोला अधिक करते हैं ।

अन्य—लड़कों के खरखर करने और कफ़की खांसी को गुण करे—और उसका सदा खाना लड़कों की पुष्टता और बल को करता है—काकड़ासिंगी पीसकर शहद मिलाकर लड़के को चटावे—खूराक आयुके प्रमाण ।

अन्य—खांसीको गुण करे—और औषधिसे बलमें अधिकहै मुनक्के बड़े दाने निकालकर, काकड़ासिंगी, दारचीनी मिलाकर चटावे ।

अन्य—नागरमोथा, मुलहठी कूट छानकर शहद में मिलाकर थोड़ा उससे दाई के दूध में मिलाकर लड़के को दे ।

पुस्तकनिर्म्मापक की बनाई हुई चटनी ।

जो खांसीको गुण करे—छिली हुई मुलहठी, मुनक्के बड़े चार चार टंक, ख़शख़ाशके पोस्ते दानों समेत सात, लसोढ़े, अलसी दो टंक, सादी अंजीरें तीन, सौंफ़ की जड़, ज़ूफ़ा एक टंक सबको तीनपाव जलमें औटावे जब पावभर जल शेष रहे साफ़ करके पावभर मिश्रीमें क़वाम करे फिर बादाम की गिरी, निशास्ता, चिलगोज़ेकी गिरी चार टंक, काकड़ासिंगी दो टंक, रुब्बिस्सूस, सम्मग़ अरबी एक एक टंक, पीपल आधाटंक, मुनक्का एकमाशा पीसकर मिलावे एक मिस्कालसे दोमिस्काल पर्यंत खावे ।

काढानिर्म्मापक का वर्णित ।

जो खांसी को गुण करे—गावज़बां एक मिस्काल, सौंफ एक टंक, मुलहठी चार टंक, एक ख़शख़ाश का पोस्ता, सम्मग़-अरबी आधाटंक, लसोढ़ेके सत्रहदाने, ख़तमी के बीज एक टंक, बड़े मुनक्के ग्यारह दाने, मिश्री यथाविधि बनाकर सेवन करे ।

अन्य–गेहूं चार टंक, पावभर पानी में औटावे और दो माशे या एक माशे लाहौरीनोन डाले जब तृतीयांश शेष रहे साफ़ करके पिये एक सप्ताह में खांसी दूर होगी।

अन्य–उस खांसी को जो नज़ले से हो शीघ्रही गुण करती है ख़शख़ाश के पोस्तों की डंडी तोड़ करके चार, लाहौरीनोन दो माशे, अढ़ाईमाशे जलमें औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ़ करके सोने के समय पिये।

रुधिर के थूकने का यत्न।

जो खँखार से रुधिर आवे तो हृदयकी गरमी से है और जो बिना खँखार के आवे भेजे से है और जो खांसी में आवे गले और मुँह कलेजेसे है।

यत्न–जो भेजे से रुधिर आवे–सरेरू की फ़स्द खोले और जो हृदय से आवे तो बासलीक की फ़स्द और जो मुखके किसी जोड़ से आवे चारों रगोंकी फ़स्द खोले।

क़हरबा की टिकिया।

मुँहसे लोहू आने और स्त्री के अधिक रजके गिरने और रुधिर के मूत्र को गुण करे–क़हरबा दो टंक, ख़ुरफ़े के बीज, घोंघा जलाया हुआ, भुना धोया हुआ धनियां, निशास्ता, गेरू, अक़ाकिय, क़तीरा एक एक दाम लेकर टिकिया बनावे दो टंक खावे।

गुलनार की टिकिया।

ख़ून थूकने के लिये गुण करे–चार दाम कूके के बीज, धनियां दो टंक, क़तीरा, सम्मग़अरबी, सहँजना, माज़ू एक एक टंक टिकिया बनावे दो टंक खावे कदाचित् बद्धकोष्ठ अर्थात् क़ब्ज़ करने की आवश्यकता हो तो अढ़ाई रत्ती अफ़ीम अधिक करे।

अन्य–सम्मग़अरबी, मुल्तानीमिट्टी, क़तीरा फंकी बनाकर सात माशे ख़शख़ाश के और अदरक के रसमें मिलाकर पिये।

अन्य–गेरू, कुन्दर, गुलनार, सम्मग़अरबी बराबर पीस कर आमले के शरबत में मिलाकर खावे।

आश्चर्यदायक औषधि।

थूक में लहू आने औ रुधिर के बमन करने के लिये—बबूलकी कोंपल, अनारकी पत्तियां, आमला, चार चार माशे धनियां दो माशे रात्रि को जल में भिगो कर सबको पीसकर साफ़ करके थोड़ी मिश्री या शक्कर मिलाकर पिये।

काढ़ा—लोहू थूकने को गुण करे—गिलोय, बाँसे की पत्तियां एक एक तोला औटाकर साफ़ करके दो टंक सम्मग़अरबी पीसकर मिलाकर पिये।

कल्क—गुलख़ैरू एक तोले भर रात्रि को पानी में भिगोकर प्रातःकाल मलकर साफ़ करके पिये।

हुब्बुल्लास का शरबत।

रुधिर के थूकने को जो ख़फ़कान अर्थात् उन्माद और इस हाल अर्थात् अतीसार के साथ हो गुण करे—हुब्बुल्लास चार टंक चन्दनकूर, छिला हुआ आमला, गुलनार दो दो टंक पावभर शक्कर सफ़ेद में क़वाम करे और शीतल होने के उपरान्त भुनी सम्मग़अरबी एक टंक पीस कर अधिक करे।

अन्य—लहू थूकने को गुण करे—बांसे की पत्तियां जो सूखी हों आधा तोला, जो गीली हों एक तोला, पीस कर शहद में मिलाकर खावे।

अन्य—दोटंक खुरफ़ेका जल पीना लहू थूकनेको दूर करता है।

अन्य—लहू थूकने और रुधिर के बमन को श्रेष्ठ है—गोभी पानी में पीसकर एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य—ख़तमी के बीज, छोटीमाईं कूट छानकर पानी में मिलाकर पिये।

अन्य—अफ़ीम खाना लहू थूकने को गुण करता है जो तरकारियां कि लहू थूकने को श्रेष्ठ हैं यह हैं—तुरई, कद्दू, पालक का साग, खुरफ़ा, लालसाग, छिले हुये मसूर।

अन्य-कचनाल और उसकी कोंपल का रस लहू थूकने को गुण करे।

मानसी रोगों का यत्न।

ख़फ़क़ान अर्थात् हौलदिल जिसको संस्कृत में उन्मादरोग बोलते हैं दो प्रकारका है एक वह कि उसका कारण मनमें हो दूसरे वह कि किसी दूसरे अंग के संयुक्त होने से होवे जैसे कि कोष्ठ, कलेजा, भेजा, आंतों और गर्भाशय आदिसे हो जो उन्माद किसी अंगके संयुक्त होने से हो उस अंगका यत्न करे और जो अंगके संयुक्त होने से न हो तो मलको निकाले और सादे ख़फ़क़ान में प्रकृति को सम करना काफ़ी है।

चन्दन का ख़मीरा।

जो पैत्तिक उन्माद के लिये श्रेष्ठ है—चन्दन का बूरा बीस मिस्काल रात को जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर साफ़ करके आधसेर शक्कर में क़वाम करे जो क़वाम पतला हो तो उसको चन्दनका शरबत बोलते हैं और जो खट्टा करना चाहे तो नींबूका रस मिलावे।

गावज़बां का शरबत।

जो मनको बलकारक और उन्माद को उत्तम है—गावज़बां पावभर मिश्री एक सेर यथाविधि शरबत बनावे।

रेशम का शरबत।

दिलको बलकारक है—कच्चा रेशम चालीस टंक तीन दिन जल में भिगोकर औटावे जब तृतीयांश शेष रहे खौलते में साज़िज बालछड़ दो दो मिस्काल, चन्दनबूरा, इलायची के दाने चार चार मिस्काल एक थैली में बांधकर डाले फिर शीघ्रही मलकर साफ़ करके आधसेर क़न्दमें क़वाम करे।

रुई के फूलों का शरबत।

मन को बल और हर्ष देता है और उन्माद, दाह और विक्षिप्तताको दूर करता है—रुई के फूल गुलाब में जो गुलाब न हो पानी

में औटावे जब आधा शेष रहे दूने गुड़में क़वाम करे ख़ूराक बीस टंक पर्यन्त ।

रंगतरे का शरबत ।

पैत्तिक उन्माद को बलकारक है पुस्तक निर्मापक ने बनाया रंगतरे का गूदा फांकों से निकालकर बीज दूर करके निचोड़कर उसका स्वच्छ रस लेकर बराबर मिश्री में क़वाम करे और अन्त में थोड़ा गुलाब मिलावे ।

अनन्नास का शरबत ।

निर्मापक का बनाया हुआ—अनन्नास का रस एक भाग, मिश्री दो भाग, यथाविधि क़वाम करे जो थोड़ा गुलाब और ख़ुश्क अधिक करे तो उत्तम और बलकारक होगा ।

ताम्बूल का शरबत ।

शीत के उन्माद रोग को बल देता है और निसियान और कफ़ और मन्दअग्नि को दूर करता है ताम्बूल पक्के पीलेरंग के सौ कूटकर पानी में औटाकर साफ़ करके आधसेर शक्कर के साथ क़वाम करे जो उसमें थोड़ा गुलाब मिलावे तो बलकारक है ।

अन्य---जो पैत्तिक हौलदिल को गुण करे और मनको गुणकारक है---ज़हरमोहरा घिसकर एक टंक गुलाब के फूल, सूखी धनियां, छिला हुआ ख़ुरफ़ा, चन्दन, गुलाब में पीसकर यह सम्पूर्ण औषध दो दो टंक, गावज़बां, बंशलोचन एक टंक, मुश्क आधा टंक, दूनी सफ़ेद शक्कर, शहद बराबर ।

अन्य--शीत के उन्माद को श्रेष्ठ है—नरकचूर, बालछड़, अशना, सोंठ, पीपल एक एक टंक, साज़िज हिन्दी, बड़ी इलायची के दाने दो दो टंक, लौंग, कस्तूरी आधा आधा टंक, शहद तिगुना ।

अन्य—शीत के ख़फ़क़ान अर्थात् उन्माद को नाश करता है और जीव को रक्षित रखता है और इन्द्री, कोष्ठ और तिल्ली को बल देता है और पसीने की दुर्गंधि को अच्छा करता है और वायु

का पचानेवाला आंतों को दुरुस्त करता और मुख की दुर्गंधिको दूर करता है और शिरपीड़ा और उत्पातकारक मलको नष्ट करता है और प्रसूति और इस्तस्का में गुण करता है साज़िज हिन्दी पीसकर दश दाम, शक्कर सफ़ेद पावभर यथाविधि पाक बनावे चार टंक पर्यंत खावे।

### ज़हरमोहरा।

जो अतिसुगम औषध मनकी बलदायक है—ज़हरमोहरा घिसा हुआ, अक़ीक़ पत्थर, यशवपत्थर, बशद मूंगा दो दो भाग गुलाब में घिसकर नारियल दरियाई, जदवार, तवाशीर एक एक भाग गुलाब में घिसकर सम्पूर्ण औषधियोंको इकट्ठा करके खरल करके गोलियां बनावे फिर चौड़े पत्थर से चिकना करके उस पर सोनेके वर्क़ लगावे समयपर चार रत्तीके बराबर गुलाब में घिसकर पिये।

### चांदनी के फूलों की गुलकन्द।

पैत्तिक उन्मादरोग को गुण करे—चांदनी के फूल सौ, सफ़ेद मिश्री सौ टंक, गुलक़न्द बनाये और थोड़ा गुलाब मिलाकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और एक तोलाभर खावे।

### सेवती का गुलक़न्द।

हिन्दुस्तानके प्राचीन बैद्यों का सेवित है उन्माद रोगको गुण करे और प्रकृति को नरम करे—हरे सेवती के फूल की पँखुड़ी से ज़ीरा निकालकर दुगुनी मिश्री में मिलाकर शीशे में भरकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और तीन हरे सेवती के फूलों का ज़ीरा दूर करके चाबना और खाना उन्माद रोग को दूर करे।

### गुड़हल का गुलकन्द।

मन, इन्द्री और धारणा बुद्धिको बल देता है, हर्ष अधिक करता और बिशेष करके उन्मादरोग को दूर करता है गुड़हल के फूल सब्ज़ी निकालकर दूनी मिश्री में मलकर रक्खे।

### हरसिंहार का गुलक़न्द।

जो मनको बलदायक और पैत्तिक उन्माद के लिये अद्वितीय

औषधि है–हरसिंहार के फूलों की डंडी दूर करके सफ़ेदी उसकी लेकर दूनी शक्कर में मलकर शीशेमें भरकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और प्रभातको एक तोला उनमें से खाया करे।

अन्य–पैत्तिक उन्मादरोग के लिये–रक्तचन्दन आधा तोला, आमला, धनियां पांच-पांच माशे आधपाव जलमें भिगोकर प्रभात को उसका साफ़ जल लेकर दो दाम सफ़ेद शक्कर मिला कर खावे।

काढ़ा–शीतके हौलदिल के लिये–गावज़बां दो टंक, लौंग ४ औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

माजून मन को बलदायक।

आमले का मुरब्बा, हड़ का मुरब्बा सब दो, गावज़बां दो टंक, चन्दन घिसकर एक टंक, गुलाब के फूल दो टंक रामतुलसी, गावज़बां के फूल एक दाम, चम्बेलीका गुलक़न्द चारतोले, क़िसमिस साढ़ेचार माशे, मिश्री तिगुनी।

औषधि–चम्पे के फूल शहद में मिलाकर खावे पित्तके हौल को गुण करे–चार कंघीका रस पानी में मिलाकर मिश्रीसे मीठा करके पिये।

अन्य–पित्त के हौलदिल के लिये अद्वितीय है–नाजबो के बीज एक तोला रात्रिको जलमें भिगो कर वायुमें रक्खे प्रभात को दो दाम शक्कर मिलाकर चमचे से निगल जावे।

अन्य–ईसबग़ोल एक तोला उसका लुआब निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–पित्तके ख़फ़क़ान और मनके नरम करने के लिये गुणदायक है–इमली जलमें भिगोकर पानी उसका लेकर सफ़ेद शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–पानखाना ठण्ढे हौलदिल को गुण करता है और अफ़ीमखाना पैत्तिक उन्मादको श्रेष्ठ है अतरजसादे की जवारिश

पैत्तिकउन्माद को श्रेष्ठ है और कोष्ठकी बीमारी और कै और मतली को भी दूर करती है।

अन्य—चने की दाल चारटंक रात्रिको पांच या छः दाम जलमें भिगोकर प्रभातको खूब मलकर शक्कर मिलाकर खावे और खट्टी और बादी चीज़ों से पथ्य करे।

अन्य—रेवंद चीनी पानीमें पीसकर दोनों कन्धों के बीच में लगावे।

अन्य—खुलासतुल्तिजारब साहब ने अपनी मुजर्रिबात में लिखा है कि चुकन्दरको भूभलमें रक्खे थोड़ी देरके पीछे निकालकर छिलका दूर करके गरम गरम उसके वरक़ छीलकर मिश्री पीसकर सब वरक़ों पर छिड़के उसमें से पानी मीठा निकलेगा उसको पिये इसीप्रकार कई बेर सेवन करे।

खस का अरक़।

खस का अरक़ निकालकर सेवन करे पैत्तिक उन्माद और बद्धकोष्ठ को दूर करता है पुस्तक निर्मापकने कईबेर अरक़ निकालकर सेवन किया है इस अरक़ में जो सफ़ेद शक्कर मिलावे या खमीरा बनावे और खसका इतर उसमें मिलाकर सेवन करे तो उन्माद को गुण करे और ज्वरकी गरमी का नाशकारक है।

धनियें का अरक़।

मन को बल देता है और उन्मादरोग को दूर करता है धनियां छिलके दूर करके गावज़बां दो दो तोले, इलायचीके दाने, चँबेली के फूल, गावज़बांके फूल, गुलाबके फूल, चन्दन बूरा पांच-पांच तोले, ऊद एक तोला, कस्तूरी एक माशा, गाय का दूध पांच सेर, पानी में आवश्यकता के अनुकूल अरक़ खावे।

अब्बासी का खमीरा।

अब्बासी लालरंग का सेरभर लेकर अरक़ खींचे फिर गुलाब मिलावे फिर शक्कर मिलाकर क़वाम करे थोड़ा ज़हरमोहरा और बंशलोचन पीसकर मिलाकर खँमीरा बनावे।

### मूर्च्छा का यत्न।

मूर्च्छा संज्ञाके जाते रहनेको बोलते हैं मूर्च्छा बहुत प्रकारसे होती है जैसे मनकी निर्बलता और मनमें खराब बुखारों और दुर्गंधके पहुँचनेके कारण सो मूर्च्छा में ठण्ढा पानी मुखपर छिड़के और सुगंधद्रव्य सुँघावे जो मूर्च्छा स्वभाव की गरमी से हो मिट्टी गुलाब या पानी से भिगोकर सुँघाना श्रेष्ठ है और जो शीत से हो कस्तूरी सुँघावे और लोबानका धुवां ले और पाँव मलना और बमन कराना मूर्च्छा को गुण करता है और जब मूर्च्छा न हो मूर्च्छा का कारण मालूम करके यत्न करे शेखुलूरईसने लिखा है कि खीरा सुँघाना बिशेष करके मूर्च्छा को दूर करता है।

लाभ—कभी सुपारी खाने से मूर्च्छा आजाती है।

यत्न—उसको शीघ्रही थोड़ा जल पिलावे और छींकें ले और ठण्ढे पानीसे दोनों हाथोंकी उंगलियों के शिर धोवे इसीलिये सुपारी की भूसी खानेसे कि वह हृदयको छीलती है निषेध किया है परन्तु जो सुपारी मुँह में रखकर उसका लुआब निगलजावे और भूसी दूर करे तो मनको बल करे।

### कुचों के रोग का यत्न, लेप।

लटकेहुये कुचोंको कठोर करे—बड़ी कटाई और छोटी कटाई की जड़, अन्दार की छाल, कन्दौरीकी जड़, कच्ची मौल-सिरी बराबर महीन पीसकर लेप करे।

अन्य—जो छातियोंके बढ़नेके पहिले सेवन करे तो छातियों को बढ़ने न दे कुँदुरू और कौड़ी जलाकर बराबर पीसकर प्रति-मास में तीनबेर लगाया करे।

अन्य—चमगादर का रुधिर कभी कभी लगाया करे।

अन्य—गिंजाइ कि बरसात में पैदा होती है चालीस लेकर नोन में डाले जब मिलजावे मुल्तानीमिट्टी मिलाकर लगावे कुचोंको कठोर करता है।

अन्य–बरगद का रेशा अर्थात् जटा जो पृथ्वीपर न लटकी हो उसकी कोमल पीली और लाल नोकें लेकर सुखाकर जल में पीसकर लगावे ।

अन्य–लजालू, असगन्धकी जड़ प्रतिदिन पीसकर लगावे ।

अन्य–दूध को जो खुश्की और गरमीके कारण जमगया हो बहाता है मूंग, साठी के चावल दोनोंको पीसकर कुछ गरम जल में लगावे ।

अन्य–कुचोंके शोथको गुण करे–मकोय, गुलखैरू, गोखुरू, तिरवसी, अफ़ीम, गेरू एक एक माशा पीसकर कुछ गरम करके लेप करे ।

अन्य–अनार की छाल का तेल मलना कुचोंको कठोर और योनिको सङ्कीर्ण करता है–अनार की छाल पक्कासेरभर, छोटा माजूफल अधकुचला आधपाव चौगुने मीठे जल में औटावे जब एक सेर शेष रहे उसके बराबर तिल्ली का तेल मिलाकर फिर औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे सेवन करे ।

अन्य–जव अधकुचले करके अनार की छाल, झाऊ महीन पीसकर दूधमें मिलाकर रात दिनमें दोबेर बराबर लगावे ।

अन्य–अरण्डके पत्ते सिरके में पीसकर लेप करे ।

अन्य–शीशम की पत्तियां पानी में औटाकर सूजन उससे धोवे और पत्ती उसकी गरम करके बांधे ।

चूर्ण–जो दूध अधिक करे–सौंफ, शतावरि बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावे और चने भिगोकर उसके पानीके साथ यह चूर्ण फाँके–कुछदिन में दूध अधिक होगा और बाज़ों ने लिखा है कि चनेको दूध में भिगोवे ।

लेप–जो दूध की अधिकता को कम करे–काहू के बीज, मसूर, ज़ीरा, सिरके में पीसकर लेप करे ।

मेदे अर्थात् पक्काशय का यत्न।

कोष्ठ की पीड़ा जो बोझ और भोजन के उत्पात से कि भोजन पचा न हो।

यत्न—गरम पानी में नोन मिलाकर बमन करे और जबतक भूख मालूम न हो भोजन न करे और भूखके समय नरम आहार जो शीघ्र पचे खावे और जो पीड़ा वायु से हो और बदलती रहे गेहूँ की भूसी नोन या बाजरा या कँगनी कपड़े में बांधकर या गरम रेतसे सेंके और सादी अजवायन के अरक़ का पीना गुण करता है—पीपल बातको दूर करे और भोजनको पचावे और कोष्ठ और वीर्यको बलदे और तरीको कोष्ठ से सुखावे—पांच टंक पीपल को पीसकर पावभर शक्कर में क़वाम करे।

सोंठ की जवारिश।

जो खराब बात और शीत के कोष्ठ की पीड़ा को दूर करे और भोज़न की पचानेवाली और निसियान की दूर करनेवाली है और कोष्ठ और ठण्ढे कलेजे को गरम करती है सोंठ पीसकर पांच मिस्काल पावभर शक्कर में क़वाम करे और बाज़े सोंठ को नीबू के रसमें तीन दिन भिगोकर सुखाकर पीसकर शक्कर में क़वाम करते हैं और बाज़े बीस टंक अदरक पीसकर पावभर शक्कर में क़वाम करते हैं।

मीठे और खट्टे ऊद का पाक।

जो कोष्ठको बल देता है और अग्निको तीक्ष्ण करता है लोबान पीसकर दो टंक, सफ़ेद शक्कर पावभर में क़वाम करके जवारिश बनावे जो खट्टा करना चाहे तो नींबू का रस आवश्यकता के अनुकूल अधिक करे।

कुन्दर का पाक।

कफ़ के अतीसार को गुणकारक है और भोजन को पचाता और शीतके कोष्ठको बलदेता है—कुन्दर, बड़ी इलायची दो दो टंक,

सोंठ, कुलींजन, अजवायन, बालछड़, कलौंजी, छोटी इलायची के दाने, कालीमिरच यह सब एक एक टंक, शक्कर तिगुनी।

सादे आमले का पाक।

जो कोष्ठ को बल देता है—आंवलों का रस पच्चीस टंक जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो जलमें निकालकर आधसेर शक्कर में क़वाम करे और क़वाम के अंत में पांच टंक मस्तगी मिलावे।

सादी अजवायन का पाक।

भोजन का पाचक और भूखको अधिक करे और बातको दूर करे।

औषधि—अजवायन नींबूके रसमें दो बेर भिगोकर सुखाकर दश टंक पीसकर आधपाव शक्कर में क़वाम करे।

सादी कुलींजन का पाक।

बातको दूर करे और भोजनको पचावे और कोष्ठ और कलेजे को गुण करे और मेदेकी तरी और खट्टी डकार और शीतके पार्श्व-शूल को दूर करे पाव भर शक्करको क़वाम में लाकर पांच टंक कुलींजन पीसकर यथाविधि मिलावे।

कलौंजी का पाक।

कफ़ को दूर करे और बात और कोष्ठ के अफरा को पचावे और जानवरों के बिष और दीवाने कुत्तेके काटेको गुण करे और कोष्ठ के कीड़ों को मारे और स्त्री के ऋतु के रुधिर और मूत्र को खोले और गुरदे और मूत्रको गुणदायक और गर्भाशय और पार्श्वशूलको दूर करे और कफ़के और सौदा अर्थात् दग्धित दोष के पुराने ज्वर को गुण करे पांचटंक कलौंजी एक रात सिरके में भिगोकर सुखाकर भूनकर आधसेर शक्कर में क़वाम करे।

अन्य—कोष्ठ पीड़ा को नाश करे—कालाज़ीरा बनाया हुआ पच्चीस टंक, बालछड़ दशटंक, कालीमिरच दशटंक, बूरेअरमनी अढ़ाई टंक, शहद सम्पूर्ण औषधियों का तिगुना।

अन्य—कोष्ठ की बात और स्वभाव की सरदी को गुणकरे और कोष्ठ को गुण करे और कोष्ठ को बल दे और भोजन को शीघ्र पचावे—कालाज़ीरा बना हुआ तीस मिस्काल, सोंठदश मिस्काल, अजवायन, पीपल, बालछड़, तज, बूरैअरमनी दो दो मिस्काल, शहद तिगुना।

मस्तगी का पाक।

जो कोष्ठ की शीत को गुणदायक, बलदायक और पाचक है यह सेलानलुआब से लिखा गया।

वज का पाक।

यह औषध कुचों के रोग में वर्णन हो चुकी।

पुदीने का माजून।

कोष्ठकी पीड़ाको गुण करे पुदीने की पत्तियां छः टंक, साठ, अजवायन, कालाज़ीरा तीन तीन टंक, बड़ी इलायची के दाने, सौंफ़, कालीमिरच दो दो टंक, मिश्री तिगुनी।

अनीसून का पाक।

जो कोष्ठको बलदायक और पाचक है और भूख और कफके अतीसार को गुणकारक और कोष्ठकी पीड़ा और अफरा और गुदाकी पवनको दूर करे—अनीसून सिरके में भिगोकर छाया में सुखावे फिर थोड़ी भूनकर दशटंक कूट छानकर आधसेर शहद में क़वाम करे।

लोहे के मैल का पाक।

जो भूख लावे और कोष्ठको गुणदायक और वीर्य को अधिक करे और रंग को अच्छा करे और बवासीर को गुणदायक है—काबिली हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, मुलहठी, सोंठ, इलायची के दाने, बालछड़, गुलाब के फूल यह सब बराबर ले और सोवा, लोहेका मैल हड़ों को कूट छानकर घी में भिगोकर औषधियों के बराबर मिश्री या शहद में मिलावे और एक टंक से दो मिस्कालपर्यन्त खावे।

बड़ा इतरीफल।

जो कोष्ठको बल दे और अफराको दूर करे और रंगको अच्छा करे–पीले हड़ों की छाल, काले हड़ों की छाल, काबिली हड़ों की छाल, आमला कूट छानकर तेल में भूनकर, पीपल, कालीमिरच छः छः टंक, शैतरज, इन्द्रयव मीठे, छिले हुये तिल, सफ़ेद ख़शख़ाश, मिश्री दो दो टंक तिगुने शहद में मिलावे।

औषध–भोजन को पचावे और भूख लावे–गुलाब के फूल छः टंक, नागरमोथा पांच टंक, बड़ी इलायची के दाने चारटंक, बालछड़, असारों, कुलींजन, साज़िज तीन तीन टंक, तज, ज़रनब मस्तगी, तुरंजकी छाल, नरकचूर दो दो टंक, आमले का रस आधसेर, मिश्री एक सेर, यथा विधि माजून बनावे।

नोन की गोली।

जो कोष्ठ के बातको गुण करे और कोष्ठकी पुष्टिकारक है और हिचकी को दूर करती है और पाचक है–लाहौरीनोन कालानोन तीन तीन मिस्काल, पोदीना, नरकचूर पांच पांच मिस्काल, पीले हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमला, पीपल, कालीमिरच, सोंठ, बच, कालाज़ीरा, सफ़ेद ज़ीरा, लालनोन नव नव मिस्काल, धनियां आठ टंक, सौंफ़, अजवायन बीस बीस टंक कूटछान कर नींबू के रस में ख़मीर करके सुखावे फिर सूखे या हरे आमले के पानी में मिलाकर सुखाकर कूट छानकर नींबू के रस में बेर के बराबर गोलियां बनावे।

अन्य–स्वभाव को नरम करती है और पाचक अग्नि को बढ़ाती है–पीलेहड़ की छाल, सोंठ, पीपल, अनारदाना, सनाय तुरबुद, खोखले मुनक्के दाने निकालकर एक एक भाग क़ंद छः भाग गोलियां बनावे।

सनाय की गोली।

बद्धकोष्ठ, अफ़रा और अजीर्ण को दूर करती है–सनाय, पीले हड़की छाल, कालीमिरच एक एक टंक, बड़े मुनक्के बारह टंक पानी

में कूट छानकर गोलियां बनावे और नवमाशे प्रभात के समय खावे कदाचित् अधिक आवश्यक हो तो दोनों समय खावे।

सुहागे की गोलियां।

भूख लातीं और कोष्ठकी पीड़ा को दूर करती हैं—सुहागा दो टंक, अजवायन साढ़े दश टंक, कालीमिरच बारह टंक, एलुवा सोलह टंक कूट छानकर घीकुवार के रसमें खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावे—वातके लिये तीन गोलियां और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये दो गोली और पेट बढ़जाने के लिये आज़माई हुई है।

गोली पाचक—कालीज़ीरी, राई, गुड़ बराबर लेकर बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पानी से निगलजावे।

अन्य—पीले हड़ों की छाल, सनाय चार चार टंक, सोंठ एक टंक, मुनक्के अढ़ाई टंक, शक्कर पांच टंक कूट छानकर जायफल के बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोलीसोने के समय।

अन्य—गोली जो पाचक है और वात और तिल्ली और कोष्ठ के अफरा को दूर करती है और भूखलाती है—सोंठ दो भाग, भुना सुहागा, पीले हड़की छाल, सेंधानोन, हींग एक एक भाग, सहँजने की जड़का रस या उसके पत्तों के रस में जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावे।

अन्य—भूख लावे और बैद्य को प्रशंसित करे—पीलेहड़ की छाल, बहेड़ा, आमला, कालानोन, सनाय बराबर कूट छानकर नींबू के पानी में गोलियां बनावे एक तोला वा न्यूनाधिक स्वभाव के अनुकूल गरम जल के साथ सोने के समय खावे।

गोली—बद्धकोष्ठ को दूर करे और उदर और पहलू की पीड़ा को श्रेष्ठ है—एलुवा, सातर दो दो टंक, कालीमिरच, हंकूत के फलकी गिरी एक एक दाम कूट छानकर नींबू के रस में चने की बराबर गोलियां बनाये ख़ूराक चार गोलियां गरम पानी से।

गोलियां कि भूख लाती हैं—पीले हड़की छाल, सौंफ़, पोदीना,

लाहौरी नोन, खट्टी चूक एक एक तोला, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, चीत, अजवायन साढ़ेतीन तीन माशे, दो नींबू के जल में पीसकर गोलियां बनावे।

पाचक गोलियां—कालालोन, खट्टी चूक दो दो तोले, अजवायन दो माशे, लौंग, कालीमिरच एक एक माशा यह सम्पूर्ण औषध कूट छानकर चूक में मिलाकर गोलियां बनावे भोजनके उपरान्त एकमाशा खावे अमलबेद हिन्दी दवा है भोजन को पचावे और भूख लावे और कोलंज+ और इस्तस्का अर्थात् जलंधरको श्रेष्ठ है और बातको पचाता है पीपल, हड़ और नमकों आदि को नींबू के रस या तुरंजकी खटाई में ख़मीर करके एक खट्टे को अन्दर से ख़ाली करे उसमें यह दवा भरदे और खट्टा दो प्रकार का है एक तेज़ खट्टा कि जो उसमें सुई रक्खे गलजावे और दूसरे में तेज़ी और खटाई कम होती है।

अन्य—जो बद्धकोष्ठ, कफ और बात और कोष्ठकी सरदी को गुण करे विशेष करके दूध पीनेवाले लड़कोंके लिये श्रेष्ठ है—काली हड़ चारदाम, नरकचूर, सौंफ़ दो दो दाम, भुना सुहागा एकदाम कूटछानकर चने के समान गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली।

नोनकी गोली।

बातको खो देती है और भोजन को पचा देती है और हैज़े को गुण करती है—लाहौरी नोन, इन्दरानी नोन, साँभरनोन, काला नोन, नमक नफ़्ती, पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सौंफ़, अजवायन एक एक टंक, कालाज़ीरा, सफ़ेदज़ीरा, शीतरज, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, सुहागा, नौसादर, सनाय छः छः माशे, भुनीहींग एक माशा सम्पूर्ण औषधियों को बराबर पीसकर चौबीस नींबू के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करे।

अन्य—कोष्ठके बातको दूर करती है—पीले हड़की छाल,

+ यह पीड़ा जो कूलों और अंतड़ी में उत्पन्न हो॥

सोंठ, कालानोन, बायबिड़ंग, शैतरज़, हींग बराबर कूट छानकर तिगुने पुराने गुड़ में मिलाकर छः माशे के अनुमान गोलियां बनाकर गुनगुने पानी से सुबह के वक्त खावे।

चूर्ण-कालानोन भूख लाता है और पाचक है-अजवायन शैतरज सात सात टंक, पीपल दो टंक, पीले हड़की छाल दो टंक, सोंठ बारह टंक, कालानोन पचास टंक कूट छानकर नींबूके रस में तीन बेर पीसकर सुखावे दो टंक के अनुमान खावे।

हरीरा-कोष्ठकी पीड़ा को गुण करे-कुसुम के बीजों की गिरी एकतोला पानी में रस निकालकर दो तोले शक्कर मिलाकर हरीरा पकाकर गुनगुना पिये।

अन्य-भूखके लिये अतिउत्तम है-लाल मिरच नींबूके रस में चालीस दिन खरल करके दो रत्ती की बराबर पान में खावे।

अन्य-सोंठ दो दाम, सौंफ़ एकदाम, हींग तीन दाम कूट छानकर नींबू के रस में टिकिया बनाकर तवा कोयलों की आग से गरम करके टिकियाको उसपर रक्खे जब लाल होजावे पीसकर आवश्यकता के अनुकूल खावे।

अन्य-कोष्ठकी पीड़ा को श्रेष्ठ है सिरसकी पत्तियां, काली मिरच बारह पीसकर पिये।

अन्य-अजवायन, कालानोन, भँगरेके रसमें मिलाकर खावे।

अन्य-भूख के लिये बहुत गुण करे-रासपत्री जो सूरत और स्वादुमें तरी के समान होती है एक तोला खरल में महीन पीसकर उसमें पारा मिलाकर फिर दो पहर पर्यंत खरल करे जब खूब मिलजावे प्रभात को दो चावल के बराबर पान में रखकर खाया करे और सरदी में चालीस दिन पर्यंत खावे कि गुण उसका प्रकट हो और जो पारा दवा में कच्चा है हानि भी नहीं करेगा।

अन्य-भूख के लिये श्रेष्ठ है-अजवायन, घीकुवार के पानी में पहिले भिगोकर सुखावे फिर नींबू के रस में सात बेर भिगो

कर सुखाकर स्वभाव के अनुकूल खावे वातघ्न और पाचक है।

त्रिकटु—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ तीन औषध के हैं—सोंठ, कालीमिरच, पीपल बराबर लेकर कूट छानकर खावे वातघ्न और पाचक है।

चातुर्जातक—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ चार औषधि तज, तेजपात, नागकेसर, इलायची बराबर कूटछानकर चूर्ण बनाकर उसकी बराबर शक्कर मिलावे कोष्ठको गुण करे और बात को नाश करे।

### लालहरताल का रस।

इसको नागकेसर बोलते हैं। भूख लाता है और वीर्य को पुष्ट करता है और कासश्वासको दूर करता है छःटङ्क शीशा गला कर एकदाम लालहरतालकी उसको चुटकी दे अर्थात् गलने में पिसी हुई हरताल थोड़ी थोड़ी उसपर डालकर लोहेके दस्ते से चलावे फिर उतारकर ठंढी करे फिर गलाकर एकदाम हरतालकी चुटकी दे इसी प्रकार चार बेर करके चार दाम हरतालकी चुटकी दे इसके उपरांत दो दाम पारा और एक टंक शोधा तांबा कूटा हुआ चार पहर पर्यन्त तुलसी के पत्तों के रस में खूब पीसकर दो सकोरों में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट आग दे, जब ठण्ढा होजावे निकालकर घीकुवार के रस में चार पहर खरल करके यथाविधि आंचदे, फिर भंगरे के जलमें चारपहर खरल करके उसीप्रकार आंचदे, खूराक आधीरत्ती पान में खावे। गजपुट आग उसे कहते हैं कि एक गढ़ा गोल एक गज का गहरा और उसका मुहँ एक गज का हो खोदकर उसमें कण्डे भरकर दवा को उसके बीच में रखकर आंच दे।

पंचकोल—पांच दवा के अर्थ हैं—पीपल, पीपलामूल, चाव, चीत, सोंठ कूट छानकर फंकी बनावे भूख पैदा करता है और बात और कफको दूर करता है।

वेदअंजीर का तेल।

उस कोष्ठ की पीड़ा को जो बातसे हो गुणकारक है—अरण्ड के पत्तों का रस निकालकर बराबर तेल में जलावे जब पानी जलजावे पेटपर मले।

सोये का तेल।

शीतकी पीड़ाको नाश करता है और बात को गुण करे—सोये के पत्तों का रस और आधा उसका तिलों का तेल लेकर उसमें जलावे बाज़ों के विचार से चौथाई तिलोंका तेल चाहिये।

नकछिकनी का तेल।

भूख पैदा करे—नकछिकनी सूखी चारसेर पीसकर छानकर दस सेर अदरक के रस में खरल कर टिकियां बनाकर दस सेर घी में भूने जब टिकियां जलजावें घी को छान रक्खे और दो माशे उसमें से खाया करे।

चूर्ण—उदर की पीड़ा को श्रेष्ठ है—त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, लाहौरी नोन, छिलाहुआ पीपलामूल, अक़लीलुल्मलक, शैतरज, चाब बराबर कूट छान कर चूर्ण बनावे ख़ूराक एक टंक से दो टंक पर्यन्त खावे।

शुंठ्यादि चूर्ण।

कोष्ठ की तरी को नष्ट करता है और क्षुधा लाता है—सोंठ दश टंक, सौंफ़ पांच टंक, मस्तगी तीनटंक, मिश्री बराबर मिलाकर फकी बनावे।

सनाय का चूर्ण—उदर पीड़ा और कोलंज को गुण करे और पित्त, कफ़ और सौदर को निकालता है—सनाय, पीलेहड़ की छाल, कालानोन बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावे और दो तोले प्रतिदिन गरम पानी के साथ खावे।

अन्य—भूख के लिये—कालानोन, कालीमिरच, पीपल दो दो दाम, भुना सुहागा एकदाम बारह पहर नींबू के रसमें खरल करे और चाररत्ती से एकमाशे पर्यन्त भोजन के उपरान्त खावे।

आमला, काबिली हड़ सात सात टंक, पीपल, शैतरज, लाहौरीनोन बराबर कूट छानकर खूराक एक टंक।

अन्य–कालीमिरच, अजवायन, शैतरज, पीपल नौटंक, हड़ की छाल दशटंक, कालानोन पचास टंक कूट छानकर तीन बेर नींबू के रस में पीसकर सुखावे एक टंक खावे।

अन्य–बद्धकोष्ठ दूर करे–पीली हड़की छाल तीन माशे, लाहौरीनोन दो माशे कूट छानकर चूर्ण बनावे और एक तोले मुनक्के के साथ मिलाकर खावे।

अन्य–लौंग, कालानोन, पीपल, कालीमिरच, सोंठ, गुलाबके फूल, भुना नौसादर बराबर कूट छानकर खूराक एकटंक खावे।

अनारदाने का चूर्ण।

जो भूख लाता, कोष्ठ को बलदेता और अतीसार को गुण करता है–अनारदाना पावभर, सोंठ, सफ़ेद ज़ीरा एकएक दाम, लाहौरी नोन अढ़ाई दाम सबको कूट छानकर एक तोला वा न्यून अधिक खावे और चाहिये कि औषधियों को बहुत महीन पीसे।

भोजन के पाचन का चूर्ण।

जो प्रकृति को नरम करे–पीली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सफ़ेद ज़ीरा, सौंफ़, कालानोन, सनाय एक एक तोला, सोंठ छः माशे चूर्ण बनावे खूराक छः माशे सोने के समय खावे।

चूर्ण–कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे–भुना नोन और उससे दूनी सौंफ़, पुदीना, शातर और थोड़ी सोंठ और हींग और काली मिरच मिलावे।

पान का अरक़

कोष्ठ की पीड़ा को गुणकारक और पाचकाग्नि को बल दे–दो सौ पान, साज़िज आधपाव, बालछड़, अजवायन, सौंफ़ छटांक छटांक भर, छोटी इलायची के दाने आधपाव, पुदीने की

पत्तियां, कुलींजन, नरकचूर दो दो दाम, इलायची के दाने, कुलींजन और नरकचूर अधकुचला करके रात्रि को पांच सेर जल में सब औषधियों के साथ भिगो दे प्रभात को पान मिलाकर अरक़ खींचे ।

टिकिया—कोष्ठ की बलकारक—लोबान चार टंक, कुरंज की छाल तीन टंक, लौंग, मस्तगी, बालछड़, इलायची, जावित्री दो दो टंक कूट छानकर गुलाब में टिकिया बनावे ख़ूराक दो टंक यद्यपि यह टिकिया ग़रीबों के योग्य नहीं परन्तु पुस्तक निर्मापक ने एक मित्र के कोष्ठ के बल के लिये बनाई थी लाभ किया इसलिये लिखा है ।

बालछड़ का शरबत ।

बालछड़ का शरबत शीत कफ़ और कलेजे के रोग को गुण करे—बालछड़ बीसटंक डेढ़सेर जल में औटावे जब आधसेर शेष रहजाय सेरभर शहद में क़वाम करे ।

लेप—उदरपीड़ा और गर्भाशय की पीड़ा को श्रेष्ठ है—चूहेकी मेंगनियां जो पंसारी की दूकान से मिलें उत्तम नहीं तो जहां से मिलें उसके बराबर सौंफ़ पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे ।

अन्य—पेट के दर्द को गुण करे—निर्मली पानी में घिसकर गुनगुनी नाभि के गिर्द लगावे ।

अन्य—कोष्ठकी पीड़ा को गुण करे—बालू सिरके में ख़मीर करके कपड़े में पोटली बांधकर गुनगुनी सेंक करे ।

अन्य—कालेतिल, अजवायन, पीले हड़ की छाल, खारीनोन सिरके में मिलाकर टकोरकी भांति सेंक करे ।

चूर्ण—कोष्ठ की शीत और मंदाग्नि और कलेजे की निर्बलता को गुण करे ।

नाज़बोका शरबत ।

अढ़ाईसेर शहद, आधसेर मिश्री, बालछड़ दो मिस्क़ाल, लौंग दो मिस्क़ाल, बड़ी इलायची, छोटी इलायची के दाने छः छः

मिस्काल, लोबान तीन मिस्काल, दालचीनी तीन मिस्काल, सोंठ, कालीमिरच दो दो मिस्काल, केसर आधा मिस्काल, कस्तूरी चौथाई टंक, अम्बर पांच टंक यह सम्पूर्ण औषधि कुचलकर थैली में बांधकर नाज़बो के शरबत के साथ चांदी या तांबे के क़लई-दार बर्तन में दो दिन भिगोकर शहद और शक्कर में मिलाकर औटाकर क़वाम में लावे और थैली को प्रति समय मलते जावे फिर कस्तूरी और केसर और अम्बर उसमें मिलावे और बाजे कालीमिरच के बदले पीपल मिलाते हैं ।

गुलक़न्दशर्करा–जो पक्वाशय को बलकारक और पाचक और स्वभाव को नरम करनेवाली है–गुलाब के फूल एक भाग, शक्कर दो भाग खूब मिलाकर चालीस दिन धूपमें रक्खे जो शक्कर केबदले शहद मिलावे तो उसको गुलक़न्द असली शहद की कहते हैं ।

विसूचिका अर्थात् हैज़े का यत्न ।

जब भोजन कोष्ठ में उपद्रवकारक होजावे उसको क़ै और दस्तों से निकाले और जब तक वह उपद्रवकारक मल दूर न हो ले शीघ्रही बन्द न करे और जिस जगह प्यास की अधिकता या स्वभाव में गरमी या हरी क़ै हो कभी भी गरम दवायें न दे पानी के बदले गुलाब या सौंफ़ का अरक़ या मकोय का केवल अरक़ दे और इस रोग में उत्तमोत्तम उपाय सोना या भोजन न करना है ।

गोली–हैज़े की गुणकारक–मदार की जड़ बराबर अदरक के जलमें खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर एकगोली हैज़ेवाले रोगीको दे जो मरता भी हो तो गुणदायक हो ।

काढ़ा–हैज़े को गुण करे–सौंफ़ तीन टंक, पोदीना दो टंक, लौंग चार, गुलक़न्द दो तोले औटाकर पिये ।

औषध–चोबहयात घिसकर पिये ।

अन्य–नरकचूर का काढ़ा पीना विसूचिका को गुण करता है ।

अन्य–हैज़े को गुण करे–सफ़ेद छोटी इलायची की छाल एकतोला किन्तु दो तोले तक जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो

आध सेर जल में औटाकर जब आधा पानी शेष रहे तो पिये।

अन्य–पेठे के फूल छः माशे पीसकर हैज़ेवाले को पिलावे शीघ्र ही अच्छा होजाय।

अन्य-सरफोंके की जड़ दो माशे पानी में घिसकर पिये।

अन्य–जो मुख्य करके विसूचिका को गुण करे–नीलाकपड़ा जलाकर मनुष्य के मूत्र में मिलाकर पिये, कहा है कि जब मनुष्य को हैज़े का असर मालूम हो उसी समय अपना मूत्र पिये हैज़े के अवगुण से बचता है और बहुधा मनुष्य यही सेवन करते हैं।

अन्य–हैज़े की गुणकारक–पांच माशे खरैटी की जड़ पानी में घिसकर पिये चोबहयात के बदले है।

अन्य–लाल मिरच का बीज एक मोम में गोली बनाकर खावे बहुत ही गुणकारक है।

अन्य–तितिली वह बृक्ष है कि गेहूं के खेतों में पैदा होताहै वह थोड़े जल में पांच कालीमिरचों के साथ पीसकर पिलावे जो क़ै होजावे फिर पिलावे।

हिचकी का यत्न।

जो भोजन के उपरान्त बराबर हिचकियां आवें बमन कराना चाहिये और हाथों पांवों का बांधना और क्रोध भय और हर्ष का अकस्मात् पैदा करना और अनजान में मुँहपर ठंढा पानी छिड़कना और छींकलाना और हिलना और श्रम करना और श्वास रोंकना और कोष्ठ और कन्धों पर पछने विना सींगी लगाना हिचकी को दूर करता है।

अन्य–हिचकी के लिये आज़माया हुआ है–कलौंजी तीन माशे पीसकर एक टंक मक्खन में मिलाकर खावे।

अन्य–काले उड़द तम्बाकू के बदले हुक्के में रखकर पिये।

अन्य–चने या अरहरका भूसा तम्बाकू के बदले हुक्केमें पिये।

अन्य–खुलासतुत्तिजारब में लिखा है कि जो मूंज हाथसे मलकर हुक्के में पिये गुण करती है।

अन्य–नारियल के बाल जलाकर उसकी भस्म पानी में मिलावे जब राख पानी के नीचे बैठजावे साफ़ पानी उसका लेकर पिये।

अन्य–मोरके पर जलाकर तीनमाशे शहदमें मिलाकर खावे।

अन्य–झाड़ूका ज़ीरा औटाकर पिये।

अन्य–छप्परकी पुरानी रस्सी हुक्के में रखकर पिये।

अन्य--हिचकीको ठहरावे--बबूलके कांटे सूखे हों या हरे लेकर आधसेर पानी में औटावे जब आधपाव शेषरहे साफ़ करके थोड़ा शहद मिलाकर पिये और शहदके बिना भी पीना गुण करता है।

अन्य–टाट जलाकर उसकी चार माशे भस्म पानी में मिलाकर फिर उस जल को साफ़ करके पिये बात की हिचकी को गुण करे जमालगोटा हुक्के में पिये।

अन्य–हींग दो तीन माशे चार बादामों की गिरी मिलाकर पीसकर पिये।

अन्य–ज़ीरा सिरके में औटाकर पीना प्यास और हिचकी को दूर करता है।

अन्य–आंब के सूखे पत्ते चिलम में रखकर पिये।

अन्य–पुदीना शक्कर में मिलाकर चावे।

अन्य–उस हिचकी को गुण करे जो ज्वर से हो–सिकंजबीन पानी में घोलकर पिलावे मल के का दूर होगा या पचजावेगा।

अन्य–कमल के बीज पीसकर पीना हिचकी को दूर करता है।

अन्य–कासनी के बीज, उड़द का आटा, बूदार चमड़ा मिलाकर तम्बाकू की रीति पर पिये।

कुन्दर की टिकिया।

जो हिचकी और बात की पेचिश और भीतर के अंगों के अफरा को गुण करे–कुन्दर दो टंक, तज, पोदीना, अजवाइन, नागरमोथा, छोटी इलायची के दाने, सौंफ़ एक एक टंक लेकर पानी में टिकिया बनावे।

अन्य—लड़कों की हिचकी को गुण करे—नारियल शक्कर में पीसकर दे और कहा है कि जो दूध पिलानेवाले के कपड़े से एक टुकड़ा कपड़े का लेकर पानी में भिगोकर लड़के के माथेपर लगावे तो मुख्यकर हिचकी ठहर जाती है।

अन्य—रीठे को लड़के के गले में लटकावे।

प्यास की अधिकता का यत्न।

बहुधा प्यास गरमी से होती है उसका यत्न—खुरफ़े के बीजों का शीरा या सादी सिकंजबीन पिये या ईसबग़ोल का लुआब, नीलोफ़र के शरबत में मिलाकर दे और नींबू का शरबत और उसका रस प्यास को दूर करता है।

औषध—जो प्यास और बमन को गुण करे—पीपल की छाल जलाकर पानी में डाले जब वह नीचे बैठजावे उसका स्वच्छ रस लेकर पिये।

अन्य—लड़कों की प्यास के लिये जो कि गरमियों में होती है—कमलगट्टा जवकुटकर जिसबर्तन में कि लड़का पानी पीता है डाल दे और वही पानी लड़के को पिलावे और जो सब्ज़ी कमलगट्टे के बीच में होती है पीसकर लड़के को पिलावे।

अन्य—प्यास की अधिकता को गुण करे-नींबकी पत्तियां पिंडोल मिट्टी में मिलाकर गोलियां बनाकर अग्नि में डाले जब खूब गरम होजावे पानी में ठण्ढा करे और वह पानी पिलावे और जो वह प्यास की जिसको वैद्यक में तोंस कहते हैं हो तो जंगली कंडा जलाकर उसकी राख कांसी के बासन में डाले फिर उसमें जल मिलाकर उस बासन को प्यासे की नाभि पर रक्खे रखतेही जलन और गरमी और प्यास दूर हो जावेगी।

अन्य—आंवला और सफ़ेद कत्था मुख में रखना प्यास को शान्त करता है।

पक्काशय में दूध और रुधिर के जमने का यत्न और लक्षण।

उदर का फूलना, मूर्च्छा और ठण्ढा पसीना है कभी कांपनी

आजाती है कभी ज्वर होता है और रोग से पहिले खाना दूध का।

यत्न—अञ्जीर की लकड़ी को राख करके ताज़े पानी में मिलावे जब राख नीचे बैठजावे उसका साफ़ पानी लेकर फिर उसमें राख मिलावे इसीप्रकार सात बेर करके उसका साफ़ पानी लेकर पिलावे इस जगह क़ै कराना अति उत्तम है।

औषध—उस रुधिरको जो कोष्ठ में जमगया हो पिलावे पोदीने का अरक़ शक्कर में मिलाकर या पोदीना सूखा पीसकर खावे।

अन्य—खुश्कदाना पानी में पीसकर खिलावे।

अन्य—कोष्ठ में रुधिर जमजाने के लिये—दो दाम राई पानी में पीसकर पिये।

अन्य—चने भूनकर खारीनोन मिलाकर सेवन करे गुण करे और कबूतर के बच्चे की हड्डी भूनकर चाबना उत्तम है।

स्वभाव जो कोइला और मिट्टी खाने की इच्छा करने का यत्न।

कोष्ठ को साफ़ करे और एक दाम नानख़्वाह हर सुबह को खाना इस रोगके लिये उत्तम है।

जी के मतलाने और उबकाई आने का यत्न।

जी का मतलाना क़ै का मुक़द्दमहै और वह इस तरह पर है कि बमन के वास्ते प्रेरणा हो बमन वह है कि मुँह में से कोष्ठ से कोई वस्तु निकले—जब क़ै बहुत हो और बन्द न हो उसके यत्न और कारण और हरएक के लक्षण बड़ी पुस्तकों में लिखे हैं सुगम रीति यहहै कि—थोड़ा गेरू लेकर आग में गरम करके दो तीन बेर पानी में भिगोकर वह पानी पिलावे।

गोली—जो मतली और क़ै को गुण करे—कपूरकचरी कूट छान कर मूँग की बराबर गोलियां बनाकर दो तीन गोलियां खावे।

अन्य—जो मतली को गुण करे—रीठे की गिरी तीन चार घड़ी पानी में भिगोदे जब नरम होजावे थोड़ा थोड़ा चावे।

अन्य—बमन की अधिकता को गुण करे—मिट्टी का पुराना

चिराग़ आगमें जलावे जब आग उसकी बुझजावे पानी में ठण्ढा करके उस जल से थोड़ा पिये बमन और उबकाई के लिये गुणदायक है।

अन्य–पुराने बमन को गुण करे–झड़बेरी के बीजों की गिरी, तुलसी की पत्तियां, मिश्री एक एक टंक, कालीमिरच आधाटंक कूट छानकर पानी में मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बना कर एक गोली खावे।

अन्य–बमनाधिक्य के लिये उत्तम है–थोड़ी मक्खी की बिष्ठा गुड़में मिलाकर खावे क़ै बन्द होजावे।

अन्य–उस क़ै के लिये गुण करे जो मद्य पीने से होती है–लाल चावल साठी के पानी में भिगोकर वह पानी लेकर पिये।

अन्य–क़ै की गुणकारक शेख़उलरईस ने क़ानून में लिखा है कि–बादाम का रस पानी में निकाल कर पिये बमन के लिये बहुत बड़ा यत्न है।

अन्य–नींब की टहनियां जिसमें पत्तियां भी हों भूभल में रक्खे जब गरम होजावें पीसकर साफ़ करके पिये क़ै और मतली को गुण करे।

अन्य–टाट जलाकर उसकी राख पानी में डाले जब राख पानी में बैठजावे वह पानी साफ़ करके पिये।

अन्य–उस क़ै और मतली को गुण करे कि वह पित्त के कारण से हो इमली मुख में रक्खे।

अन्य–बड़े मुनक्के, खट्टा अनारदाना सात सात माशे, कालाज़ीरा एक माशे पीसकर थोड़ा थोड़ा दे।

अन्य–क़ै को बन्द करे–पीपल की लकड़ी या उसकी सूखी छाल जलाकर उसकी राख एक तोला भर लेकर मिट्टी के बासन में ताज़े पानी में मिलावे जब मिलकर थिराजावे साफ़ पानी लेकर पिये।

अन्य–बिशेषकर कफ़ की क़ै को गुण करे–दो बताशों को घी

में गरम करके उसमें डाले फिर निकाल कर ठंढा करके एक एक बताशा एक घड़ी बाद खावे।

अन्य-बरगद की जटा जलाकर उसकी थोड़ी सी भस्म खावे क़ै बन्द होजावे।

इलायची की जवारिश-क़ै बन्द करती है और पाचक और पकाशयको बलदायक है ऊदगरकी इलायची जो छोटीहो तो उत्तम नहीं तो बड़ी बीस मिस्काल पीसकर पावभर शक्कर में क़वाम करे जो सामर्थ्य हो तो पानी के बदले गुलाब मिलावे सादेतुरंज का शरबत बमन को शांत कर विशेष करके पैत्तिकी बमन को तुरंज का पानी पचास मिस्काल एक सेर शक्कर में क़वाम करे।

इमली का शरबत-पैत्तिक बमन को गुण करे और कोष्ठ को बल दे और गरम पित्तों को नाश करे-इमली के बीज निकाल कर उसकी आधी शक्कर लेकर पानी में भिगो दे फिर साफ़ पानी उसका लेकर दुगुनी शक्कर में क़वाम करे।

अनार का शरबत-क़ै को बन्द करता है-मीठे अनार का रस बराबर की शक्कर में क़वाम करे फालसे का शरबत पैत्तिक बमन और उबकाई को गुण करे और पकाशय का बलकारक है और अनार के शरबत के बदले भी दीजाती है गरम पित्तों और रुधिर के उपद्रवों को गुण करे और स्वादिष्ट है भोजन के साथ भी खावे कालेरंग के काले फालसे को पानी और गुलाब में मलकर साफ़ करके दूनी मिश्री में क़वाम करे।

औषध-एक टंक बालछड़ जल में पीसकर सेवन करना कफ़ की क़ै को गुणकरे।

अन्य-नागरमोथा क़ै को दूर करता है।

अन्य-मतली और उबकाई और हिचकी को गुण करे-हरा पोदीना आधसेर, डेढ़सेर पानी में औटावे जब आधारहे एक सेर शक्कर में क़वाम करे और एक टंक मस्तगी पीसकर मिलावे।

कालीमिरच की गोली।

जिसको मिरचा और गटका बोलते हैं कै और मतली को दूर करे और पाचक और भूख लाती है।

कालीमिरच तीन दाम, पीपल छः टंक, अनारदाना बारह टंक, जवाखार डेढ़ टंक कूटछान कर गुड़ में गोलियां बनावे दो टंक खावे।

कलेजे के रोगों का यत्न इस्तस्का अर्थात् जलंधर।

इसके आरम्भको सूउल्कनियां कहते हैं और उसका कारण यह है कि व्यर्थ ठण्ढामल सम्पूर्ण जोड़ों में आ जाता है इसके तीन प्रकार हैं, लहमीज़ की तवलीलहमी में सम्पूर्ण अंगों पर शोथ होता है उसका कारण कलेजे की निर्बलता है और ज़क्की में पेट बढ़जाता है और त्वचा भारी होजाती है और जब मलें पेट मशक भरी हुई की भांति मालूम हो और तबली में पेट बढ़जाता है और नाभि निकल आती है और जब पेट पर हाथ मारें उससे तबलेका अर्थात् ढोलका शब्द आता है लहमी बहुत होता है और इस्तस्का के बुरे प्रकारों में से है उसका यत्न यूनानी पुस्तकों में लिखा है कि जल न दे और पानी के बदले सौंफ़ का अरक़ और मकोय का अरक़ पिलावे और जो पानी की बहुत इच्छा हो तो जल को औटाकर ठण्ढा करके थोड़ा थोड़ा दे और भोजन शोरवा दे और मुंजिज़ और मुसिलों का सेवन करे और रोगी को गरम रेत में गरदन के नीचे तक गाड़ना गुण करता है और सूर्यकी ओर पीठ करके धूप में बैठना रोगको शांत करे और जब तन्दूर ठंढा होने लगे रोगी को उसमें इतनी देर बैठावे कि पसीना निकल आवे हम्माम से उत्तम है और इतना परिश्रम करना कि अच्छी तरह पसीना बदन से निकले गुण करे।

रेवन्दकी टिकिया—तवली इस्तस्का को गुण करे—रेवन्द चार टंक, धुनीलाख, मँजीठ, सौंफ़, कासनी के बीज़, बालछड़ दो

दो टंक लेकर टिकिया बनावे—खूराक दो टंक, सिकंजबीन और मकोय के अरक़ के साथ खाय ।

रेवन्द का शरबत—इस्तस्का को गुण करे—रेवन्द पांच टंक, कासनी के बीज सात टंक, कासनी की जड़ दश टंक, सौंफ़, धुलीलाख दो दो टंक, मिश्री पावभर लेकर शरबत बनावे खूराक दो टंक खावे ।

औषध—इस्तस्का के लिये आज़माई हुई है—लोहे का मैल पक्के बारहदाम आग में लाल करके तीनबेर उसको गौ के मूत्रमें जो जनी न हो बुझावे और तीनबेर दही और तीनबेर कड़वे तेल में बुझाकर कूट छानकर दशसेर उस गौ के मूत्र में जिसने जुफ़्ती न खाई हो मिलाकर लोहे की कड़ाही में डालकर चूल्हेपर रक्खे जब सब मूत्र सूख जावे नोनकी रीति पर फंकी होगी आधा टंक उससे लेकर खाया करे ।

काढ़ा—लहमी इस्तस्का को जो बिना ज्वरके हो गुण करता है—अजवायन, सौंफ़ औटाकर पिलावे ।

अन्य—सूउल्कनियां को गुण करे—चने तीनदाम पावभर पानी में औटावे जब आधा रहे साफ़ करके पिये ।

गोली—इस्तस्काको गुण करे—मदारके हरेपत्ते पावभर, हल्दी एक दाम दोनों को पीसकर उड़द के बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन चार गोली ताज़े पानी से सेवन करे और एक गोली रोज़ अधिक करे कि सात गोलीतक होजावें और बाज़ पुस्तकों में मदारके पत्तोंका सेवन इस भांति पर लिखा है कि बयालीस मदारके पत्ते, हल्दी दो माशे, बेर की लकड़ी का कोयला पांच माशे, खूब महीन पीसकर घी खूब गरम करके उसमें मिलाकर उड़द की बराबर गोलियां बनावे सफ़ेद दाग़ के लिये एक गोली सुबह और एक सन्ध्या को खावे और कफज्वर के लिये चार गोलियां और हड़फूटन के लिये एक गोली एक सप्ताह पर्यंत खावे और बिसूचिका के लिये दो गोली स्वभाव के बदलने के दूर करने

को और फ़ालिज के लिये एक गोली सुबह को चार दिन तक दे और इस्तस्का के लिये चार गोली से सात गोली पर्यंत सेवन करे।

गुण—जो इस्तस्का के रोगी को स्नान करनेकी आवश्यकता हो चाहिये कि खारी नोन पीसकर पानी में मिलाकर कई दिन वह पानी धूपमें रखकर गरम करके उससे नहावे गुण करे और खारे पानी की नदीमें नहाना गुण करे—

एलुवेकी गोली इस्तस्का को गुणकरे—एलुवा चार टंक, पीले हड़ की छाल, अजवायन, कालीमिरच, विधारा एक एक टंक कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक तीन टंक।

औषध—सिरस की छाल औटाकर पिये अकबरनामे में लिखा है कि एक क़िले में समय के बीतने से अन्न वहां का पुराना होगया और उस अन्न को क़िलेवालों ने खाया उससे शोथ पैदा हुआ फिर जिस मनुष्यने सिरस की छालका सेवन किया आराम होगया अन्तको यह बात हुई कि उस वृक्षकी छाल सोने के मोल की होगई।

औषध—इस्तस्का को गुण करे—हुक्के का पानी जो बहुत गन्दा होगया हो पीना गुण करता है।

लेप—गौ का गोबर नोनमें मिलाकर लगाना इस्तस्का को गुण करता है।

अन्य—गोबर जलाकर उसकी राख साढ़ेतीन मिस्काल प्रतिदिन खावे।

अन्य—इन्द्रायन की जड़ औटाकर पीना मल को दस्तों से दूर करता है।

औषध—ऊंट का मूत्र पीना गुण करता है और उसकी रीति यह है कि सुबह को चार पांच दाम मूत्र में पीले हड़की छाल तीन माशे मिलाकर पिये—और ऊंट का दूध भी बहुत गुण करता है भोजन और जलपान के बदले इसीपर रहे अपूर्व यत्न है।

अन्य–मूली के पत्तों का पानी गुण करता है।

अन्य–लालबकरी का मूत्र छः तोले उसमें एकदाम बालछड़ मिलाकर पीना इस्तस्का को गुण करता है।

अन्य–सूउल्कनियां को गुण करे–हरे करेले से छः टंक पानी निचोड़कर साफ़ करके पिये और जो चाहे थोड़ा शहद में मिलावे दो तीन दस्त लाकर मल को दूर करता है।

अन्य–कुकरौंधे का रस एक तोला प्रातःकाल पिये और प्रतिदिन अधिक करके दश तोले तक पहुँचावे।

जाफ़रान का पाक–सूउल्कनियां को गुण करता है और इस्तस्का और सख्ती और अंगों की पीड़ा को जैसे कि कलेजा और तिल्ली को गुण करे।

केशर, तज, कठ असारों, बालछड़, करफ़्श के बीज, अनीस्तन, गुलाब के फूल, कासनी के बीज दो दो भाग, मुरमक्की, रेवन्द एक एक भाग, शहद तिगुना ख़ूराक एक टंक से एक मिस्काल पर्यन्त सौंफ़ के अरक़ के साथ खाय।

गोली–वैद्यों की सेवन की हुई इस्तस्का को गुण करे–धुली गन्धक, पारा, हड़, बहेरा, आमला, सज्जी, जवाखार, कालानोन, लाहौरीनोन, सोंठ, कालीमिरच, भुनासुहागा बराबर ले जमालगोटा दो भाग यह सम्पूर्ण औषध कूट छानकर इक्कीस बेर नींबू के रस में पीसकर सुखाकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली ऊँट के दूध में खाय।

चूर्ण–लहमी और तबली के इस्तस्का के लिये गुणदायक–सोंठ, नागरमोथा, शतरज, सफ़ेद ज़ीरा, कटाई, हल्दी, गजपीपल, पीपलामूल बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे ख़ूराक तीन टंक गरम पानी के साथ खाय।

चूर्ण–इस्तस्का और सूउल्कनियां को गुण करे–करफ़्श के बीज, बायबिड़ंग, शतरज, कालीमिरच, पीपल, पीपलामूल, सौंफ़, कालानोन एक एक टंक, पांच हड़ की छाल, सोंठ दश टङ्क

कूट छान कर खूराक दो टंक सौंफ़ के अरक़ के साथ खाय।

अन्य–तबली इस्तस्का को गुण करे–करफ़श के बीज, राजियाना, अनीसून, असारों, कड़वीकुठ, रेवन्दचीनी दो दो टंक, नागरमोथा, बालछड़ डेढ़ डेढ़ टंक, कालाज़ीरा तीन टंक कूट छानकर खूराक दो टंक खाय।

अन्य–यह नुस्ख़ा मुजर्रिबात अकबरी से प्रति किया गया मण्डवी का आटा कचनाल के पानी में ख़मीर करके रोटी पका कर नोन के साथ खावे और पानी के बदले कचनालकी पत्तियां औटाकर पिये या उसका अरक़ निकालकर सेवन करे और सिवा कचनाल के पत्तों के काढ़े के और हाथ मुँह धोने और नहाने में दूसरा जल सेवन न करे जो ईश्वर चाहे तो एक सप्ताह में उसका गुण प्रकट होगा।

चूर्ण कंघी का–पहिले दिन एक माशे भर खावे दूसरे दिन दो माशे तीसरे दिन तीन माशे फिर प्रतिदिन तीन माशे खाया करे–भोजन मूँग की खिचड़ी का करे।

औषध–इस्तस्का की गुणदायक–सफ़ेद ज़ीरा अधकुचला तीन भाग कंघी अधकुचली नव भाग उसमें से एक तोला भर लेकर रात्रि को एक प्याले भर जल में भिगोदे प्रभात को औटावे जब आधा पानी शेष रहे साफ़ करके गुनगुना पिये।

अन्य–पेटबढ़जाने को गुण करे–दो दाम शहद, चार दाम पानी में मिलाकर पिये–और थोड़े दिन उसी भांति पिये और यह रोग बहुधा लड़कों को होजाता है।

गुण–इस्तस्कावाले को गेहूं की रोटी से जौ की रोटी खाना उत्तम है और जो गेहूं की रोटी खाना चाहे तो जौ के आटे में गेहूं का आटा मिलाकर रोटी पकाकर खावे।

गोली–उस स्त्री के लिये जिसका जनने के पीछे पेट बढ़ गया हो मिरच, पीपल, पीपलामूल, चाव, शैतरज, अश्ना, नागरमोथा, बायबिड़ंग, देवदारु, त्रिफला, किस्तमुरमकी, सौंफ़,

गजपीपल, इन्द्रयव एक एक टंक, तुरबुद तीन टंक कूट छानकर पुराना गुड़ औषधों की बराबर मिलाकर आधे टंक की बराबर गोलियां बनाकर प्रभात को एक गोली दो सप्ताह पर्यन्त खावे।

लेप—इन्द्रायन को पानी में पीसकर लगावे पेट का बढ़जाना जो सन्तान उत्पन्न होने के उपरांत होता है दूर हो।

लक की माजून—जो इस्तस्का और कोष्ठ की सरदी और कलेजे को गुणदायक है—धुली हुई लाख चारभाग, बालछड़, रेवन्द तीन तीन भाग, आसारों, करफ़्श के बीज दो दो भाग, कड़वीकुट, कड़वे बादाम की गिरी, मिरच, सोंठ, ज़ीरा, साजिज, मस्तगी एक एक भाग, शहद तीन भाग।

औषध—जो इस्तस्का को गुण करे—बारह टीड़ी उनके हाथ पांव तोड़ करके एक दाम हब्बुल्लास के साथ पीसकर खावे।

अन्य—नील अर्थात् वस्मा, अमलतास कूट छानकर ख़ूराक लड़कों के लिये एक किरात से पांच किरात पर्यंत और बड़े के लिये तीनटङ्क पर्यंत खाय।

लक की टिकिया—इस्तस्का के लिये गुणदायक है—लाख चारभाग, रेवन्द, कासनी के बीज, ख़रबूज़े के बीज, खीरे ककड़ी के बीज तीन तीन भाग, मर्जीठ, सौंफ़, मकोय, अजमोद, बालछड़, तज दो दो भाग, अजवायन, कत्था एक एक भाग लेकर टिकिया बनावे ख़ूराक एक टङ्क से दो टङ्क पर्यन्त शरबत बज़ूरी के साथ खाय।

लेप—बकरी की मेंगनियां, गौ का गोबर, गोखुरू सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य—नोन, बालछड़, सिरके में मिलाकर लगावे।

### यरकां अर्थात् कमलवायु का यत्न।

हिन्दी के यरकां को कमलवायु वा कामला बोलते हैं और वह सौदा या पित्त के दोषों के विना दुर्गन्धजारी होने से त्वचा की ओर होता है जो यह रोग पित्तसे हो उसको यरकां असफर

बोलते हैं और जो सौदा अर्थात् किसी दोष के दग्ध होने से हो उसको यरकां असूद बोलते हैं और जिसमें दुर्गन्धि हो उसमें ज्वर हो सुगम यत्न यह है कि इमली का पानी और कासनी का रस, सादी सिकंजबीन सेवन करे सिरके की सिकंजबीन दो भाग मिश्री तीन भाग क़वाम में लावे।

अन्य—कामला को गुण करे—मलयागिरी चन्दन गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो पानी में पांच माशे आंबाहल्दी के साथ पीसकर सात माशे शहद में खावे भोजन एक सप्ताह पर्यन्त दाल चावल करे।

नाक में टपकाने की औषध।

जो कामला को गुण करे—बन्दाल रातको पानी में भिगोकर प्रभात को उसका साफ़ पानी लेकर दो तीन बूंदें नाक में टपकावे तिबफ़रीदी में लिखा है कि बकरी की मेंगनियां बाज़ी औषधों के साथ खाना कामला का नाशक है।

अन्य—कामला को दूर करे—लौंगसब्ज़ तीनपाव रात को पानी में भिगोकर रक्खे प्रभात को उसका स्वच्छ जल लेकर पिये—भोजन दालभात करे।

अन्य—कमलबायु को गुण करे—बबूल की फली, संखाहूली, आमला दो दो टंक, कुचलकर एक सेर शक्कर में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे थोड़ी शक्कर मिलाकर साफ़ करके पिये।

अन्य—कमलबायुको गुण करे—कड़वी तोंबड़ी पानी में पीस-कर नाक में टपकावे।

औषध—कंघी सात माशे पानी में पीसकर शहद में मिला-कर खावे भोजन दाल चावल करे।

अन्य—बिनौले दो दाम रात्रिको जलमें भिगोकर प्रभात को पीसकर उसका साफ़पानी लेकर लाहौरीनोन मिलाकर पिये और खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य—रीठा, गावज़बां दो दाम, पावभर पानी में भिगोकर

प्रभात को उसका साफ़ पानी पिये जो ईश्वर चाहे एक सप्ताह में आराम हो ।

अन्य–दो तीन कसौंधी की पत्तियां दो तीन मिरच के साथ पिये ।

शरबत–निर्मापक का बनाया हुआ कलेजे की गरमी और कामला को दूर करे–चन्दन बूरा, बड़े मुनक्के दो तोले, ज़िरिश्क, कासनी के बीज, खीरे ककड़ी के बीज एक एक तोला, लाल नमक, इलायची के दाने दो दो टंक मिश्री पाव भर शरबत बनावे खूराक एक तोला उचित औषधों के रसों के साथ खाय ।

हिन्दी दवा–कामला को गुण करे–आज़माई हुई है चूना जवान के लिये तीन माशे तक पक्के केले की फली के टुकड़े में रखकर खिलावे ऊपर से बाक़ी फली खिलावे और जो लड़का हो एक माशा चूना चौथाई केले की फली काफ़ी है ।

चूर्ण–बबूल के फूल मिश्री बराबर पीसकर प्रात को एक तोला भर खावे ।

चूर्ण–उस पीलाई के लिये कि कमलवायु के दूर होने के उपरान्त रहती है सातदाने कलौंजी स्त्री के दूध में पीसकर नाक में टपकावे ।

अन्य–नींबू का पानी आंख में टपकावे ।

अन्य–मूली का अचार कि सिरके में बनाया हुआ हो खाना गुण करता है ।

अन्य–क़हरवा लटकाना और पीले कपड़े पहिनना कामला रोग को मुख्य करके गुण करता है ।

अन्य–कामला के लिये गुणदायक है एक सप्ताह पर्यन्त सेवन करे मेहँदी की पत्तियां दो दाम कुचलकर रात्रिको जल में भिगोदे प्रभात को साफ़ जल उसका पिये ।

अन्य–मतबूख का काढ़ा कमलवायु को गुण करे ।

तिल्ली अर्थात् तिल्ली की सख़्ती का यत्न।

तिल्ली की सख़्ती का कारण बहुधा गहरे रुधिर सौदावी का है और तपों में रक्षा बिना जल पीने से होती है यह रोग कठिनता से अच्छा होता है।

यत्न—असलीम रग की फ़स्द का खोलना गुण करे।

गुण—जो तहाल के रोगी के दाहने हाथ की रग असलीम पर कपड़े की बत्ती जलाकर दाग़ दे और एक समय पर्यन्त उसको बहने दे बड़ा गुण देगा।

उपाय—तिल्ली की सख़्ती दूर करने के लिये—चूनेकी कली थोड़े रीठे की गिरी के साथ कूट कर केले की पक्की फली के साथ रख कर दाहने पहुँचे के अंदर की तरफ़ जोड़ पर बीच की उँगली के सामने मोटे कपड़े से एक पहर तक बँधारक्खे जो चूने की तेज़ी से वहां फफोला पड़ जावे फिर खोलडाले गुण देगा।

अफ़तीमून की सिकंजबीन।

तिल्ली को कि गरमी के तप से हो गुण करती है—अफ़तैमून चार तोला, अंजीर सात, कनेर की जड़ की छाल, कासनी की जड़ दो दो तोले, सँभालू के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, परसियावशान, कासनी के बीज, माई, कशूश के बीज, मुलहठी, गुलाब के फूल, असारों दो दो तोले, गुलक़ंद तिगुनी मिलाकर यथाविधि सिकंजबीन बनावे।

गोली—जो तिल्ली की सख़्ती को दूर करे—पीली हड़ की छाल, सोंठ, शैतरज, भुनासुहागा, सज्जी सफ़ेद, क़लमीशोरा, बायबिड़ंग, सफ़ेद ज़ीरा, कालाज़ीरा, सेंधानोन बराबर ले और दुगुना गुड़ मिलाकर दो गोलियां बनाकर दो माशे से चार माशे पर्यन्त गर्म पानी के साथ खावे।

गोली—एलवा, हींग, सुहागा, नौसादर, सफ़ेद सज्जी बराबर लेकर घिकुआर के लुवाब में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली रोज़ खाया करे।

गोली—कालीमिरच, पीपल, भुनी फिटकरी, नौसादर, भुना सुहागा, अजवायन, कटाई, खारीनोन, लाहौरीनोन, आंबाहल्दी, जवाखार बराबर कूट छान कर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे :

तुरबुद की गोली।

पीले हड़की छाल, एलवा, सुहागा, कालीमिरच बराबर लेकर घिकुआर के रस में चार पहर खरल करके गोलियां बनावे खूराक एक टंक खाय।

सँभालू की टिकिया।

उस तिल्ली के लिये जो बहुतही गरमी से हो गुण करे—कासनी के बीज, कनेर के जड़ की छाल, खीरे ककड़ी के बीजों की गिरी, कशूरूके बीज, गुलाब के फूल, माईं दो दो टंक, असारों आधा टंक, मकोय के अरक़ में टिकिया बनावे खूराक दो मिस्काल खाय।

गोली—तिल्ली के वास्ते आज़माई हुई है—क़लमीशोरा, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी, सोंचर नमक, सेंधानोन, पीले हड़ की छाल, आंबाहल्दी, सादी अजवायन बराबर कूट छान कर तीन बेर नींबू के रस में तीन बेर अदरक के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे सुबह और शाम एक गोली खाया करे।

चमगादर की गोली।

गोली—तिल्ली के लिये शेख़उल्‌रईस की मुजर्रिब अर्थात् आज़माई हुई औषधों की पुस्तक में है एक मोटा चमगादर काट के साफ़ करे फिर मिट्टी के बर्तन में रखकर उसपर तेज़ सिरका भी डाल कर कपरोटी करके तंदूर में रखवे जब जल जावे उसकी राख सिरके में मिलाकर गोलियां बना कर हर रोज़ दो टंक खाया करे बहुत गुण करे।

एलवे की गोली।

लौंग, हिन्दी नमक, रेवन्द, खताई, क़लमीशोरा कूट छान कर एक माशे के बराबर गोलियां बनावे सुबह और शाम एक गोली मक्खन में मिलाकर निगल जावे।

अन्य—कनेर की जड़, नौसादर, मुरमक्की बराबर घिकुवारके जल में जंगली बेर की बराबर गोलियां बना कर प्रभात और संध्या एक गोली खावे।

अन्य—सोंठ, भुनासुहागा, सेंधानोन, हींग बराबर सहँजने के रस में जंगली बेर की बराबर गोलियां बना कर संध्या और सुबह एक गोली खाया करे।

अन्य—कौलंज और कोष्ठ और तिल्ली की पीड़ा को दूर करती है और अफरा और बद्ध कोष्ठ को गुण करे—एलवा चार टंक, पीले हड़ की छाल, अजवायन, बिधारा, कालीमिरच दश दश टंक कूट छान कर चने की बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर सेवन करे।

गुण—तिल्लीवाले को उचित है कि लोहे का बुझा हुआ पानी सादे पानी के बदले पिया करे।

अन्य—झाऊ की लकड़ी से प्याले बनाकर उसमें पानी पीना मुख्य करके तिल्ली को गुण करता है।

अन्य—टीड़ी का अचार खाना तिल्ली को गुण करे।

अन्य—जो खांसी न हो आंब का अचार खाना तिल्ली को काटता है चाहिये कि उसको खाया करे।

अन्य—तिल्ली को गुण करे और बातको दूर करे—हालों एक भाग, कलौंजी आधा भाग शहद में मिलाकर प्रतिदिन सिकंजबीन के साथ खाया करे।

अन्य—तिल्ली को गुण करे—और क्षुधा बढ़ावे—पीले हड़ की छाल, अजवायन बीस बीस टंक, लोहे का मैल तीस दाम, गुड़ औषधियों की बराबर घिकुवार के पत्ते छिले हुये आधे दाम,

मिश्री औषधियों को पानी में मिलाकर लोटे में रखकर तीन सप्ताह पर्यन्त घोड़े की लीद में गाड़े फिर निकाल कर साफ़ करके दो दो दाम सुबह और शाम खावे।

अन्य–सँभालू की जड़, कबर के जड़ की छाल बराबर के तेज़ सिरके में भिगोदे और रोज़ नया सिरका एक सप्ताह पर्यन्त बदलते रहे फिर छाया में सुखा कर दो दाम शहद की सिकंजबीन में मिलाकर खावे।

अन्य–बात को दूर करे–कलौंजी एक भाग, हालों दो भाग, शहद में मिलाकर प्रतिदिन दो टंक एक तोले सिकंजबीन के साथ खावे।

अन्य–सरसों का तेल गुनगुना तिल्ली पर मलना उसकी सख्ती को दूर करता है।

अन्य–अजवायन जितनी खा सके प्रभात और सन्ध्या खाया करे।

अन्य–भुना सुहागा एक भाग, राई तीन भाग दोनों को महीन करके एक माशा सुबह और शाम खाया करे।

अन्य–नींबू का रस एक दाम, प्याज़ का रस एक दाम आपस में मिलाकर चौदह दिन तक पिये और सिवाय नरम चीज़ जैसे कि खिचड़ी और दाल और चावल के और कुछ न खावे।

अन्य–नौसादर आधा दाम मूली के पानी में मिलाकर पिये और मूली और तिल बराबर पीसकर तिल्ली पर बांधे।

अन्य–चूने की कली महीन पीसकर शहद में मिलाकर तिल्ली पर मलकर अंजीर के पत्ते उसपर बांधे।

लेप–शैतरज सिरके में पीसकर लगावे तिल्ली के शोथ को गलाता है।

अन्य–मूली के बीज पीसकर सिरके या सिकंजबीन में मिलाकर खाना तिल्ली को दूर करता है।

अन्य–करील की सूखी कोंपल साढ़ेतीन मिस्काल, कालीमिरच उससे आधी कूट छान कर हररोज़ सुबह को पानी के साथ पिये तिल्ली की सख़्ती को दूर करता है।

अन्य–गेहूं की भूसी और छिला हुआ लहसुन जलाकर उसकी राख सिरके में मिलाकर गुनगुना लगावे।

अन्य–प्याज़ और कांदा तिल्लीवाले के गले में लटकाना मुख्य करके शीघ्र गुण करता है।

अन्य–जवारिश बज तिल्ली के लिये गुण करे नुस्ख़ा जिसका निसियान अर्थात् भूल की बीमारी के वर्णन में वर्णन हुआ गुणदायक है।

अन्य–जो तिल्ली वाला अपना या लड़के का मूत्र हररोज़ सुबह को तीन चुल्लू भर लेकर पिये तो तिल्ली दूर हो।

अन्य–यदि मनुष्य युवा हो छः माशे सज्जी और जो लड़का हो दो माशे गुड़ में मिलाकर जो ज्वर न हो इक्कीस दिन खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे।

फंकी–तिल्ली और बायुशूल और स्वभाव के नरम करने को गुण करे–अजवायन आध सेर, हरे घिकुआर के पत्ते बीस, त्रिफला, त्रिकुटा, पांचोनोन, सज्जी, सफ़ेद कटाई, तुरबुद, कालाज़ीरा, बच, सौंफ़, अजमोद, बिधारा एक एक टंक, घिकुआर के रस में भिगोकर छाया में सुखाकर कूट छान कर रक्खे खूराक तीन माशे तक ताज़े पानी के साथ खाय।

अन्य–झाऊ की पत्तियां एक टंक सुखाकर कूट छान कर एक टंक शक्कर में मिलाकर खावे।

अन्य–झाऊ की पत्तियां कूट कर एक अदकिया भर पानी उसका निचोड़ कर दश टंक सिकंजबीन मिलाकर खावे।

अन्य–ऊंट का दूध और मूत्र तिल्ली को दूर करता है।

अन्य–झाऊ के पत्तों का अरक़ तिल्ली को गुण करता है।

अन्य–नमदे का टुकड़ा सिरके में भिगोकर तिल्ली पर बांधे।

माजून—तिल्ली के लिये आज़माई हुई है कबर की जड़ की छाल, अफ़्तमून बराबर शहद में मिलाकर माजून बनाकर प्रतिदिन पांच मिस्काल खावे।

अन्य—तिल्ली की कठोरता को दूर करती है—कबाबा, पुष्कर-मूल, जवाखार, पीलीहड़, हींग, लाहौरीनोन, सोंचरनोन, बाय-बिड़ंग, शैतरज, समन्दरझाग, तुरबुद सफ़ेद, अजवायन बराबर कूट छान कर खूराक एक तोला सुबह और शाम को खाय।

फ़र्राश के पत्तों का शर्बत।

फ़र्राश की पत्तियां पाव भर दो दिन दो सेर जल में औटावे जब तृतीयांश रहे साफ़ करके पाव भर शक्कर में क़वाम करे खूराक दो तोले।

आंतों के रोग और अतीसार का यत्न।

अतीसार कई प्रकार का होता है जो दस्त कोष्ठ अर्थात् मेदे के हों उसको खलफ़ा अर्थात् संग्रहणी कहते हैं और जो कलेजे से हों ज़ूसन्तारिया कहते हैं वह रुधिर का अतीसार है मांस की धोवन के सदृश दस्त आते हैं या क़याम कबदी हैं उसमें पीब निकलती है जो आंतों से हो उसको सहज और जलकुलअमआ और ज़हीर कहते हैं इनका बिस्तार बिस्तृत पुस्तकों में लिखा है इस जगह थोड़ी सुगम औषधि जो अतीसार को गुण करे—लिखी जाती है।

नरकचूर की जवारिश।

बात को दूर करे काट के अतीसार को गुण करती है—शक्कर सफ़ेद पाव भर नरकचूर पीसकर पांच टंक, जवारिश अर्थात् पाक बनावे खूराक दो तोले और आमले सादे की जवारिश जो कोष्ठ के रोगों में वर्णन हुई गुण करती है।

आमले की गोली—दस्तों को रोकती है कोष्ठ के अतीसार और आंतों के अतीसार को गुण करे—एक तोला आमला थोड़ेसे जलमें भिगो दे जब नरम होजावें कजली करके कालानोन पीस

कर मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह शाम खावे।

गोली–अतीसार को गुण करे–राल, पाषाणभेद, बेलगिरी, नरकचूर, आमला, भुनीसम्मग़ऋरबी, भुनीहड़, माईं, भुने मुनक्के, अजवायन, गेहूँ, गुलनार बराबर कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर प्रात और सन्ध्या खावे।

अनार की गोली–कच्चा अनार मिट्टी में लपेटकर भूभल में रक्खे जब पकजावे मिट्टी दूर करके अनार को कूट पीसकर आमला, भुनीसम्मग़ऋरबी, बेलगिरी, अजवायन दो दो माशे, अफ़ीम, नरकचूर एक एक माशा पीसकर उसमें मिलाकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम खाया करे।

अन्य–जो क़ाबिज़ और कोष्ठ के अतीसार और सख़्ती को गुण करे और पाचक शक्ति को बढ़ावे–बालछड़, अजवायन, सौंफ़ भूनकर, सोंठ भूनकर, नागरमोथा पांच पांच टंक, गुल-नार, माईं, बड़ी इलायची के दाने पांच पांच टंक, हुबुल्लास छः टंक शहद या शक्कर में क़वाम करे।

शिंगरफ़ की गोली–दस्तों को रोकती है–सुहागा एक माशा, शिंगरफ़ दो माशे, अफ़ीम चार माशे कूट छानकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे एक गोली खावे और लिखा है कि रात्रि को जो अधिक दस्त आवें यह गोली शहद में मिलाकर खावे और जो दिन को अतीसार ज़ोर करे नींबू के रस में मिलाकर सेवन करे।

अन्य–शिंगरफ़ की गोली–शिंगरफ़, लौंग, अफ़ीम तीनों दवा बराबर ले मिश्री एक माशा कूट छानकर चार माशे की बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली।

अन्य–जो क़ब्ज़ करनेवाली और रुधिर के अतीसार और पित्तके अतीसार को गुण करती है–समाक के दाने दो टंक,

माज़ू, अनार की छाल आधा आधा टंक, हुबुल्लास दश टंक, मुनक्के के दाने तीन टंक, सम्मग़अरबी पांच टंक कूट छानकर गोलियां बनावे खूराक दो गोली पर्यन्त खाय।

गोली–क़ाबिज़ और कफ़ के अतीसार को दूर करती है और पाचक है कालीमिरच, पीपल, सोंठ, लौंग, अक़रक़रा एक एक टंक, अफ़ीम दो टंक अदरक के पानी में पीस कर चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाया करे।

अन्य–गोली क़ाबिज़ अतीसार को दूर करती है–रसौंत, गेरू डेढ़ डेढ़ तोले, मुरदारसंग बराबर पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और एक गोली संध्या को खाया करे।

अन्य–लड़कों के अतीसार को गुण करे जो ज्वर न हो तब भी गुण करती है–कत्था, गुलनार तीन तीन माशे, ज़हरमोहरा पीसकर, आमला, सम्मग़अरबी, भुनी बेलगिरी दो दो माशे, अफ़ीम, माज़ू, भुनी सौंफ़, सफ़ेद ज़ीरा एक एक माशे, कपूर एक रत्ती कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर स्वभाव के अनुकूल दे और कभी ज़हरमोहरा के बदले बंशलोचन मिलाते हैं और बंशलोचन अधिक भी करते हैं और जो कुछ खटका हो तो कपूर न दे।

अन्य–गोली जो बहुत ही क़ाबिज़ है मुनक्के बीजों समेत सात दाने आंब की गुठली एक, अफ़ीम आधा माशा कूट छानकर मिलाकर सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज़ खावे।

माज़ू की गोली–शीघ्र ही गुणदायक है अतीसार को दूर करती है और आंतों के व्रण को गुण करती है माज़ू चार टंक, अफ़ीम दो टंक, अजवायन एक मिस्काल चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाय।

नकछिकनी की गोली–उस अतीसार को गुण करती है जो नाफ़के सरकजाने से हो नकछिकनी जलाकर अजवायन, सोंठ

बराबर कूट छानकर एक माशा गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे और घी के साथ खावे।

लेप—नाफ़ के सरकजाने के लिये—फिटकरी तीन टंक, माजू तीन कूट छान कर सिरके में मिलाकर लगावे ऊपर से ज़ोर से पट्टी बांधे।

गोली—अतीसार को गुण करती है—सोंठ भूनकर, माईं, लोध पठानी, सफ़ेद राल, धवई के फूल, इन्द्रजौ, मीठी, बेलगिरी, मोचरस, आंब की गुठली, भुना खुरमा, कालीमिरच कूट छानकर गोलियां बनावे।

अन्य—भुनी भंग, बेर की पत्तियां, नरकचूर बराबर लेकर चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय खावे।

गोली—आंतों के छिलजाने और रक्तातीसार जो सुद्दे बिना हो उत्तम है—गेरू, कत्था, राल, गोंद, क़तीरा, छिले कौंच के बीज, बेलगिरी कूट छानकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे।

गोली—लड़कों के अतीसार को एक—गुलनार, इलायची, अफ़ीम एक एक माशा, चाकसू, रसौंत, नरकचूर, सफ़ेदज़ीरा, हल्दी, नींब की छाल, बकायन की कोंपल, बबूल की कोंपल दो दो माशे कूट छानकर मूंग की बराबर गोलियां बनावे दो गोली तक खावे।

अन्य—लड़कों के सब्ज़ रंग के दस्त आने को गुण करे—बबूल की पत्तियां, लौंग, मुरदारसंग, गुलनार, केसर, नींब की कोंपल, सौंफ, कालाज़ीरा, सफ़ेद ज़ीरा, सोंचरनोंन, तज, अजवायन, वायबिड़ंग सात सात माशे महीन पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रभात एक संध्या को खावे और कभी मुरदारसंग के बदले ज़हरमोहरा या बंशलोचन और कभी तज के बदले बज मिलाते हैं।

इलायची का चूर्ण—क़ाबिज़ और पाचक है—भुनी सोंठ, भुनी

सौंफ़, बड़ी इलायची की छाल बराबर पीसकर चूर्ण बनावे एक हथेली भर खावे।

वज का चूर्ण–अतीसार और संग्रहणी को गुण करे–वज मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर कपरौटी करके गरम तन्दूर में रक्खे जब ठण्ढा होजावे निकाल कर पीसकर एक टंक लेकर दो टंक शहद और कुछ नोन मिला कर खावे भोजन साठी के चावल दही के साथ खाय।

अन्य–अतीसार और खूनी बवासीर को बन्द करती है और पेचिश और रंग की ज़रदी को गुण करे–मस्तंगी, काली-मिरच, बंशलोचन, अनारदाना, आंब के बीज की गिरी पीस कर मुलहठी, माईं, धवई के फूल, माजू बराबर ले और ख़श-ख़ाश के पोस्ते के पानी में गोलियां बनावे एक दाम खावे साठी के चावलों के पानी के साथ और मूंग और चावल भोजन करे।

कालीहड़ का चूर्ण–पकातीसार और ज़हीर को गुण करे–हड़ घी या बादाम के तेल में भूनकर दो तोले ख़शख़ाश का पोस्ता घी में भूनकर एक तोला कूट छानकर चूर्ण बनाकर उसके बराबर शक्कर मिलावे एक तोला प्रभात को और सातमाशे शाम को खावे निर्मापकने इस नुस्ख़े में सम्मग़अरबी भुनी हुई मिलाई थी बहुत गुण किया।

तज का चूर्ण–अतीसार को गुण करे–तज, गुलनार, सुपारी के फूल बराबर चूर्ण करके स्वभाव के अनुकूल जल के साथ खावे।

सौंफ का चूर्ण–कफ़ के अतीसार को गुण करे और कोष्ठ को बलकारक और गुदा की पवन को दूर करे सौंफ़ घृत में यहां तक भूने कि लाल होजावे फिर कूट छानकर उसके बराबर शक्कर मिलावे और सात माशे ठण्ढे पानी से खावे।

अनार का चूर्ण–पैत्तिक अतीसार के लिये गुण करे–खट्टे अनार के दाने, भुना कालाज़ीरा पांच टंक, आमला एक मि-

स्काल, गूगल, धनियां पिसा हुआ चार टंक, गुलनार, सम्मग़अरबी एक टंक, चूर्ण बनावे दो टंक पर्यन्त खावे।

धनियें का चूर्ण—रुधिर के अतीसार के दूर करने में जो सुद्दे बिना हो आज़माया हुआ है जामुन की गुठली जली हुई, कुनार के बीज जले हुये, बारहसिंगे के सींग जले हुये, भुनी हिलतीत अर्थात् हींग, भुनी ख़शख़ाश, भुने मुनक्के एक एक टंक, कालीहड़, सौंफ़, अनारदाना, धनियां, चूका के बीज, सम्मग़अरबी, निशास्ता, कालाज़ीरा, सफ़ेदज़ीरा, ख़ुरफ़े के बीज, सोंठ, ईसबग़ोल, बारतंग, नाजबो के बीज हर एक टंक लेकर भूनकर ख़ुरफ़े के बीज, ईसबग़ोल और बारतंग को साबुत रक्खे और धवई के फूल, अतीस, माईं, आमला, बेलगिरी, राल; कत्था सफ़ेद, क़तीरा, कोंच के बीज की गिरी, बड़ी इलायची की छाल, नरकचूर, गुलनार आधा आधा टंक कूट छानकर चूर्ण बनावे ख़ूराक स्वभाव के अनुकूल दो मिस्काल पर्यन्त जल के साथ खाय।

चूर्ण—जो अतीसार को गुण करे—सोंठ, सौंफ़, राल, भुना छुहारा, कालीहड़ तेल में भूनकर बेलगिरी बराबर लेकर चूर्ण बनावे।

चूर्ण—जो लड़कों के अतीसार को गुण करे—अनार की कली, बबूर की पत्तियां, भूनी सौंफ़ सब थोड़ी थोड़ी ले और ख़शख़ाश का पोस्ता जला हुआ सब के बराबर मिलावे और थोड़ा सा आयु के प्रमाण दे।

चूर्ण—धवई के फूल, आमला, बेलगिरी, इन्द्रजौ कड़वे बराबर कूट छान कर आयु और प्रकृति के अनुकूल शहद में मिलाकर चाटे।

चूर्ण—लड़कों के दस्त आने को जो दांत निकलने के समय ले आता बेलगिरी, कत्था, आमले की छाल कूट छान कर चूर्ण बनावे अपने स्वभाव के अनुकूल खावे।

चूर्ण—जो अतीसार के सब प्रकारों को गुण करे—शैतरज, नागरमोथा, लोध, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धवई के फूल बराबर कूट छान कर चूर्ण बनावे एक टंक खावे।

चूर्ण—कफ़ के अतीसार को गुण करे—भुनी सोंठ, धवई के फूल, मोचरस, अजमोद बराबर लेकर चूर्ण बनावे एक तोला भर खावे।

अन्य—चूर्ण जो अतीसार को रोकता है और वैद्यों का सेवन किया हुआ है—चने भूनकर छीलकर चूहे की मेंगनियां एक एक टंक कूट छान कर चूर्ण बनावे जो बलवान् अतीसार हो छः माशे नहीं तो चार माशे सेवन करे।

अन्य—बेलगिरी, ख़शख़ाश, सोंठ, धनियां बराबर कूट छान कर साठीके चावल के पानी के साथ सेवन करे।

अन्य—लड़कों के अतीसार को गुण करे—अतीस एक माशा या कम या ज़ियादह पानी में पीसकर दे और युवा मनुष्य को एक तोले तक प्रकृति के अनुकूल दे दस्तों को बन्द करता है और चाहिये कि थोड़ा गुलनार भी मिलावे।

अन्य—संग्रहणी के लिये आज़माया हुआ है—भुना ईसबगोल, बेलगिरी, राल, आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज की गिरी, नमक नफ़ती, नागरमोथा, ख़शख़ाश, सोंठ सिवाय ईसबगोल के सम्पूर्ण औषध कूट छान कर मिलाकर एक हथेली भर प्रभात को खावे।

अन्य—उस ख़ूनी अतीसार के वास्ते जो सुद्दे के कारण से न हो—आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज, कौंच के बीज प्रकृति के अनुकूल साठी के चावल के पानी के साथ खावे।

अन्य—बद्धकोष्ठ और उदरपीड़ा को गुणदायक है और भोजन को भी पचाता है—सौंफ़ दो टंक, कालाज़ीरा एक मिस्क़ाल, सोंठ एक टंक तीनों औषध भूनकर अजमोद, अजवायन एक

एक टंक, सूखा पोदीना, तज एक एक मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बनाकर दो टंक से दो मिस्काल पर्यन्त दे।

बेरों का चूर्ण।

अतीसार का नाशक बेर हांड़ी में भरकर मुख उसका बंद करके कपरौटी करे फिर आगमें रखदे जब बेर जल जावें निकाल कर एक हथेली भर हर प्रातःकाल को खावे भोजन दही चावल या मूंग की दाल।

अन्य–भूनी सौंफ़, पुराने आंब की गुठली की गिरी बराबर ले और इनके बराबर पुरानी शक्कर मिलाकर आधा दाम खावे।

आमले का शरबत–अतीसार को दूर करता है और इसको इलायची के दाने के साथ सेवन करे तो मतली को गुण करे और खरफ़े के बीजों के रस के साथ बुख़ार को गुण करता है–आमला चार दाम कुचला करके आधसेर पानी में भिगोकर औटावे जब आधा शेष रहे साफ़ करके पावभर शक्कर मिलाकर क़वाम में लावे।

बेलगिरी का शर्बत–क़ाबिज़ और कोष्ठ को बल देता है–बेलगिरी आधपाव आधसेर जलमें भिगोकर औटावे जब आधा पानी रह जावे तो आधपाव क़न्द में क़वाम करे और अपने स्वभाव के अनुकूल खावे।

आमले की माजून–कोष्ठ को बल दे और अतीसार को रोंके और नोशदारू के बदले भी सेवन की जाती है–आमले का रस छः टंक, इलायची, नागरमोथा दो दो टंक, नरकचूर, बालछड़, वच, सम्मग़अरबी एक एक टंक, बेलगिरी तीन दाम कूट छान कर तिगुने क़न्द में माजून बनावे।

काढ़ा–अतीसार को गुणदायक है दो दाम नेत्रबाला तीन पाव पानी में औटावे जब आध पाव रहे साफ़ करके पिये और सन्ध्या को उसी काढ़ी हुई दवा को फिर डेढ़ पाव पानी में औटावे जब आधा रहे साफ़ करके पिये एक सप्ताह में संग्रहणी दूर होगी।

बेलगिरी का अर्क़-कोष्ठ को बल देता और अतीसार को गुण करे और ज़हीर और आँतों के दस्तों में बारतंग के बदले है बेल-गिरी सूखी या हरी को पानी में भिगोदे प्रभात को अर्क़ खींचे।

जामुन का शर्बत-क़ै और मतली को बन्द करता है और रक्तातीसार के प्रकारों और कोष्ठ और पेचिश और बवासीर को नाश करता है पक्का जामुन निचोड़कर थोड़े गुलाब में जो हो तो उत्तम नहीं तो पानी में क़वाम करे फिर चौथाई क़न्द मिलाकर शर्बत बनावे और जो क़वाम के अन्त में बाज़ी क़ब्ज़ करनेवाली जैसे कि बंशलोचन और चन्दन गुलाब में घिस कर मिलावे तो बलकारक हो।

काढ़ा-आज़माया हुआ दस्तों को रोंकता है-धनियां, नागर-मोथा, ख़स, सोंठ, बेलगिरी पांच पांच माशे कुचल कर डेढ़ पाव पानी में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ़ करके पिये भोजन चावल मूंग या मसूर की दाल के साथ जो यह दवा दो तीन दिन में गुण न करे दो सप्ताह पर्यन्त दे जो स्वभाव में गरमी न हो सोंठ बढ़ावे।

काढ़ा-अतीसार और वह दस्त जो मेदेसे आवें उसके लिये गुण करे-मसूर, गेहूं एक एक तोला ख़शख़ाश का पोस्ता, बेल-गिरी तीन तीन माशे आध सेर जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ़ करके पिये।

काढ़ा-अतीसार के दूर करने को आज़माया हुआ है-सुगंध-वाला में धवई के फूल, कनेर की छाल, अतीश, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, लोधपठानी, गिलोय डेढ़ डेढ़ माशा लेकर एक सेर पानी में औटावे जब आध पाव रहे साफ़ करके पिये इसी तरह सात दिन सेवन करे।

अन्य-बरगद का दूध नाफ़ में भरदे और नाफ़ के चारों तरफ़ भी लगावे।

टिकिया-अतीसार के लिये गुण करे-जामुन की गिरी, आंब

की गिरी, पीली हड़ घी में भूनें जब फूल जावे बराबर पीसकर ठिकिया बनावे एक मिस्काल खावे।

लेप—आंब की छाल दही के पानी में पीसकर नाभि के चारों ओर लगावे और बाज़ों ने सिरके में पीसकर लेप करना लिखा है।

लेप—अतीसार का गुणदायक—आमला घी में पीसकर नाभि के गिर्द दायरा बनावे और किनारा उस दायरे का ऊँचा रक्खे फिर उसमें अदरक का रस भर दे और इसी प्रकार थोड़ी देर रहने दे जो पानी के दस्त आते हों बन्द होजावें—मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि यह औषध सम्पूर्ण औषधों का राजा है।

औषध—कोष्ठ के अतीसार को गुण करे—हरी बेलगिरी भून कर थोड़ी शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावे बहुत गुण करे।

लाभ—अतीसार में बमन करना दस्तों को बन्द करता है।

अन्य—पुराने अतीसार के लिये कैथे के बीज भून कर खाना अतीसार को दूर करता है।

अन्य—दस्त बन्द करे—मूली के बीज भून कर उसके बराबर नौ माशे शहद मिलाकर खावे।

अन्य—गूलर की कोंपल एक तोला भर पीसकर पिये।

अन्य—आमला घी में भून कर पानी में पीसकर नाभि के गिर्द लगावे और थोड़ी अफ़ीम अदरक के रस में कजली करके दो तीन बूंद नाक में टपकावे।

अन्य—गूलर के वृक्ष का दूध एक माशा बराबर खावे।

अन्य—गेहूं का सत्तू क़ब्ज़ और अतीसार को दूर करता है और कोष्ठ के और पित्त के अतीसार को गुण करता है।

अन्य—पित्त के अतीसार का गुणकारक—चावलों की पीच पिये।

अन्य—दूधी हरी पीस कर एक प्याला पिये।

अन्य—पुराना पनीर लेकर इतना धोवे कि उसमें नोन का कुछ भी गुण शेष न रहे फिर उसको भून कर खावे।

अन्य–छिले हुये मसूर भूनकर सेवन करना अतीसार को दूर करनेवाला है ।

अन्य–जो जमालगोटे के खाने से अतीसार हो आधा टंक क़तीरा पीसकर दही में मिलाकर खावे ।

ज़हीर का यत्न ।

इसको लौकिक में पेचिश भी बोलते हैं वह दो प्रकार का है सादिक़ और क़ाबिज़, सादिक़ वह है कि नाजके बीज या ईसबग़ोल या उसके सदृश कोई वस्तु खावे वैसाही मल निकले इसमें क़ब्ज़ करनेवाली औषधों का सेवन करे और क़ाबिज़ वह है कि दाने विष्ठा में न निकलें सो ज़हीर क़ाबिज़ में जब तक मुसिल न दे और सुद्दे दूर न होलें क़ब्ज़ करनेवाली औषधों का सेवन न करे क्योंकि पहिले क़ब्ज़ की औषधों का देना सुद्दे और पीड़ा और भय का कारण है ।

काढ़ा–क़ाबिज़ ज़हीर को गुण करे–अमलतास पांच टंक, अधकुचली सौंफ़ दो टंक, ख़तमी के बीज़, ख़तमी की जड़ ढेढ़ ढेढ़ टंक, लसोढ़े २५ यह सम्पूर्ण औषध औटाकर साफ़ करके अमलतास मिलाकर थोड़ा घी डालकर एक तोले भर गलक़न्द से मीठा करके पिये जो सामर्थ्य हो तो बनफ़शा, आलूबुख़ारा, मुनक़्के, बड़े भी मिलावे नहीं तो ग़रीबों को उतनाही बहुत है और दूसरे दिन नाजबो के बीज, ईसबग़ोल एक एक मिस्काल सेवन करे–फिर कोष्ठ के क़ब्ज़ करनेवाली चीज़ें और पौष्टिक द्रव्य दें ।

औषध–अतीसार और पेचिश को गुण करे–आंब की छाल लेकर उसके ऊपर की काली छाल दूर करे और अन्दर की उसकी छाल जो पीली होती है लेकर पानी में घिसकर और थोड़ा पानी उस में मिलाकर शीघ्रही पी ले क्योंकि जो एक पल भर भी बिलम्ब होगा तो जम जावेगा फिर पिया न जावेगा इस औषध के सवन से तीन दिन में आराम होगा ।

अन्य-उस पेचिश को गुण करे जो पित्त से हो-ईसबग़ोल भुना दो टंक, सम्मग़अरबी, गेरू एक एक टंक, अजवायन चौथाई टंक और जो गरमी न हो किन्तु अफरा हो-भुना हालों दो टंक, भुनी अलसी, गेरू एक एक टंक, अबहल आधा टंक, अजवायन चौथाई टंक।

अन्य-ज़हीरसाजिक़ के लिये नाजबो के बीज, सम्मग़अरबी बराबर लेकर भूने और पीसकर नाजबो के बीज साबित रख कर एक तोला सफ़ेदज़ीरे के रस में मिलाकर पिये।

अन्य-ज़हीरसादिक़ को दूर करे-बेर की पत्तियां एक टंक, सफ़ेदज़ीरा आधा टंक पीस कर पिये।

चूर्ण-रक्तातीसार और ज़हीरसादिक़ के लिये गुण करे-राल, कत्था, बेलगिरी, कौंच के बीज बराबर लेकर चूर्ण बनावे दो टंक पयन्त खावे।

अन्य-आंतों के व्रण और रक्तातीसार के लिये-क़तीरा, बारासिंगे का सींग जलाकर बराबर लेकर चूर्ण बनावे ख़ूराक एक मिस्क़ाल भर खाय।

अन्य-कफ़ के ज़हीर को गुण करे-सफ़ेदज़ीरा चार माशे, अजवायन पांच माशे, अफ़ीम दो रत्ती महीन कूट छान कर तीन ख़ूराकें बनावे और साठी के चावल के साथ खावे और भोजन खिचड़ी खावे।

काढ़ा-ज़हीरसादिक़ के लिये श्रेष्ठ है धवई के फूल, सेमल का गोंद बराबर पानी में औटा कर साफ़ करके पिये और गुन-गुने मीठे तेल से अमल करने से पेचिश दूर होती है आज़-माया हुआ है।

अन्य-पेचिश और रुधिर और कफ़ातीसार को नाश करे-मरोड़फली एक दाम पानी में भिगोकर हाथ से मलकर साफ़ करके खावे भोजन खिचड़ी दे-और खटाई और सलोनी चीज़ों से पथ्य करे।

अन्य—पेचिश को दूर करे—सांकर की फली पकाकर पके चावल के साथ खावे।

अन्य—ज़हीरसादिक़ को गुण करे—राल सफ़ेद शक्कर एक एक दाम, ख़शख़ाश का पोस्ता भुना एक कूट छानकर हथेली भर खावे।

चूर्ण—ज़हीरसादिक़ के लिये गुणदायक है—भुने नाजबो के बीज, गेरू दोनों साबित रखकर चोका के बीज दो दो टंक, गुलनार, सम्मग़अरबी, निशास्ता एक एक टंक कूट छानकर चूर्ण बनावे।

हड़ का चूर्ण—क़ाबिज़ और ज़हीर को गुण करे और कोष्ठ पीड़ा को लाभदायक है—कालीहड़ कड़ुये तेल में भूनकर भूनी सम्मग़अरबी, कालाज़ीरा भुना, सौंफ़ तेल में भूनकर एक एक टंक, ईसबग़ोल साबित, हालम की जड़ दो दो टंक कूट छान कर चूर्ण बनावे ख़ूराक चार दाम खाय।

चूर्ण—हालों का चूर्ण ज़हीर को गुण करे—हालों, नाजबो के बीज, ईसबग़ोल दो दो टंक तीनों बस्तुओं को साबित रक्खे और सम्मग़अरबी, निशास्ता, ख़तमी के बीज एक एक टंक चूर्ण बनावे और जो ज़हीरसादिक़ हो चाहिये कि तीन प्रकार के बीजों को भूने और चार टंक पर्यन्त खावे।

अन्य—पेचिश को गुण करे—फ़ालसे की जड़ जवकुट करके रात्रि को पानी में भिगो दे उसका लुआब सुबह लेकर एक तोला ईसबग़ोल के साथ खावे।

काढ़ा—पेचिश को बहुत पीड़ा के समय गुण करे—नाजबो के बीज एक तोला पाव भर गुलाब में जो सामर्थ्य हो नहीं तो आध सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे नाजबो के बीजों के साथ पिये।

हालों का पाक—ज़हीर और मड़ोरा और बवासीर को गुण करे—कालाज़ीरा भुना एक भाग, मस्तगी तिहाई हिस्सा यथा-

बिधि मिश्री में क़वाम करे दो टंक खावे जो मस्तगी के लेने की सामर्थ्य न हो कुंदर मिलावे।

चूर्ण–ज़हीर को गुण करे–ख़तमी के बीज भुने, भुनी हुब्बाज़ी पांच पांच टंक, भुना निशास्ता तीन मिस्काल, सम्मग़अ़रबी, गेरू दो दो मिस्काल चूर्ण बनावे ख़ूराक तीन टंक पर्यंत खाय।

अन्य–पेचिश को गुण करे–गेरू, सम्मग़अ़रबी, ईसबग़ोल, नाजबो के बीज, निशास्ता बराबर चूर्ण बनावे तीन टंक के अनुमान खावे।

अन्य–ख़ून आने को गुण करे–राल, सोंठ, सौंफ़, अनार की छाल, ख़शख़ाश आधा आधा टंक शक्कर दो दाम कूट छान कर आधे दाम के बराबर ताज़े पानी से हर सुबह और शाम खाया करे भोजन चावल और मसूर की दाल का करे।

अन्य–बेलगिरी एक तोला, छुकुड़ा की छाल दो तोले, सौंफ़, जंगीहड़ एक एक तोला, ईसबग़ोल छह माशे, मिश्री तीन तोले, हड़ों को घी में भूनकर सिवाय ईसबग़ोल के कूट छान कर सबको मिलावे ख़ूराक़ सात माशे से एक तोले पर्यन्त खाय।

अन्य–ज़हीरसादिक़ के लिये–कालीहड़ भूनकर, सोंठ, भुनी सौंफ़ एक तोला बराबर की शक्कर मिलाकर प्रकृति के अनुकूल खावे।

अन्य–आँतों के छिल जाने को गुण करे–बेलगिरी, कत्था बराबर लेकर चूर्ण बनावे।

अन्य–पित्त के और रक्त के अतीसार और ज़हीर के लिये गुण करे–सम्मग़अ़रबी हर रोज़ तीन मिस्काल तीन दिन या ग्यारह दिन तक खावे और जो अतीसार में अधिकता हो ख़शख़ाश का पोस्ता महीन पीस कर एक मिस्काल से दो मिस्काल पर्यन्त पीना आज़माया हुआ है और सम्मग़अ़रबी मिलावे अधिक गुण करे।

गोली–अतीसार और कफ़ के ज़हीर को गुण करे–सोंठ,

सौंफ़, ख़शख़ाश तीनों भूनकर दो टंक कूट छान कर गुड़ और घी में गोलियां बनाकर खावे।

अन्य–ज़हीरसादिक़ के लिये–माईं, कत्था, अफ़ीम बराबर लेकर कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनाकर साठी के चावल के पानी के साथ सेवन करे।

अन्य–अधिक अतीसार और ज़हीरसादिक़ को नाश करे–साफ़ अफ़ीम, साफ़ चूना बराबर लेकर मोठ या मसूर की बराबर गोलियां बनाकर स्वभाव के अनुकूल एक सुबह और शाम को खावे।

अन्य–आंतों के छिल जाने और ज़हीरसादिक़ के लिये गुण करे–माज़ू, माईं दो दो टंक, सम्मग़अरबी एक टंक, अफ़ीम आधा दाम कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे खूराक जवान के लिये दो गोली और लड़के के लिये एक गोली दे।

अन्य–माज़ू चार भाग, अफ़ीम दो भाग, अजवायन एक भाग कूट छान कर चने या मूँग की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह खाया करे।

अन्य–ज़हीरसादिक़ और अतीसार को दूर करे–नये महुये के वृक्ष की छाल लेकर रस उसका चार टंक के बराबर निकाल कर बर्तन में रख कर आग पर रक्खे और तीन माशे सोंठ पीस कर उसमें मिलावे जब दो तीन उबाल खावे उतार कर गुनगुना पिये खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य–खुरमाहिन्दी अर्थात् खजूर एक टंक पीसकर थोड़े दही में मिलाकर खावे।

अन्य–अनार की पत्तियां एक प्याले भर पानी में पीस कर पिये।

अन्य–कतीरा रात को पानी में भिगो दे सुबह थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—लसोढ़े की कोंपल पीसकर गोलियां बनाकर खावे।

अन्य—सुपारी जलाकर दही में मिलाकर खावे।

अन्य—नाजबो के बीजों को मिट्टी के बर्तन में रखकर ऊपर से दो तीन बूँदें मीठे तेल की डालकर आग पर लाल करके खावे अतीसार की अधिकता को दूर करता है।

अन्य—मुल्तानीमिट्टी पीसकर बिहीदाने और ईसबग़ोल के लुआब में मिलाकर दे।

अन्य—सफ़ेद ज़ीरा दही के साथ खावे।

अन्य—आंतों की छीलन के प्रारम्भ को गुण करे—सम्मग़अरबी चार टंक सरद पानी में मिलाकर पिये छीलन को दूर करता है।

कूलंज का यत्न।

यह रोग सुद्दों के बढ़ जाने से अन्तड़ी कूलों में होजाता है इसमें गुदा की पवन और मल कठिनता से पीड़ा के साथ निकलता है।

यत्न—जो कूलंज बात से हो—सेंक करे जिस तरह कोष्ठ की पीड़ा में उसका बर्णन हुआ है और जो बोझ या कफ़ से हो—तलीन अर्थात् हलका जुलाब आदि देकर मुसिल पिलावे जो पेचिश में बर्णन हुआ है कूलंज के लिये गुण करे—रेंड़ी के तेल से जो कोष्ठ की पीड़ा में बर्णन हुई लेप करे।

गोली—कूलंज को दूर करती है और बैद्यक में लिखी गई है कि भुनी फिटकरी, अजवायन, पीपलामूल, कालीमिरच, करंजुवे की गिरी, बायबिड़ंग बराबर कूट छानकर अदरक के पानी में चार माशे की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पीड़ा के समय खावे।

औषधि—कूलंज के लिये गुण करे—रेंड़ी, सोये के बीज, मकोय, ख़तमी के बीज, बाबूना थोड़ा थोड़ा लेकर पानी में औटावे जब आधा रहे साफ़ करके उसमें बैठे।

जवारिश—प्रकृति को नरम करती है और कफ़ के निकालने

वाली और कोष्ठ की बलदायक और कूलंज को दूर करती है—बड़े मुनक्के पावभर, मस्तगी साढ़े छः टंक, तुरबुद सफ़ेद दश टंक कूट छानकर मुनक्के के बीज निकालकर गुलाब में पीसकर औषधियों में मिलावे ख़ूराक दो टंक और जो सदा सेवन करे तीन टंक तक है ।

गोली—कूलंज की गुणदायक—हिन्द का सेवन है करंजुवे की गिरी, रेंड़ी की गिरी, नकछिकनी, हींग, सोंठ बराबर पीसकर बेर के बराबर गोलियां बनावे एक गोली गुनगुने पानी से खावे ।

गोली—पेट के बोझ के लिये एक गोली गरम पानी से दे और उदर पीड़ा और विसूचिका के लिये सौंफ़ के रस के साथ दो गोली और बद्धकोष्ठ के दूर करने को पांच गोली और दस्त लाने के लिये आठ गोलियां गरम पानी के साथ दे गुण करे कदाचित् गोलियों के सेवन से गरमी मालूम हो तो मिश्री गुलाब में पीसकर पिये ।

अन्य—शोधा जमालगोटा एक टंक, रेंड़ी की गिरी दश टंक, पीले हड़ की छाल दो टंक, पारा, भुना सुहागा, जवाखार, हल्दी, कालीमिरच एक एक टंक कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे ।

गोली—उदर पीड़ा को गुण करे—पीपल के पत्ते अढ़ाई पीस कर गुड़ में मिलाकर गोलियां बना कर खावे ।

अन्य—बायगोला को गुण करे—समन्दरफल की गिरी, समन्दरझाग, लाहौरीनोन, कालानोन, सज्जी, सफ़ेद तुरबुद, जवाखार, सुहागा, पीले हड़ की छाल, पीपल, सोंठ, हींग, बायबिड़ंग ढाई ढाई टंक, अमलबेत दश टंक कूट छान कर गोलियां बनावे ख़ूराक दश टंक ।

अन्य—कूलंज और उसकी पीड़ा को गुणदायक—एलुवा, सुहागा, सेंधानोन, जवाखार, घिकुवार के रस में बेर की बराबर गोलियां बनावे । मुसिल की माज़ून—सनाय पक्की पच्चीस टंक,

बनफ़्शा, शीरख़िस्त या तुरंजबीन, गुलाब के फूल, पीले हड़ की छाल, शाहतरा पांच पांच टंक, बड़े मुनक्के पावभर, नौशहद तिगुना ख़ूराक तीन मिस्काल दे।

चूर्ण—जो दस्त लावे और भोजन का पाचक है—पीले हड़ की छाल, काली हड़, लाहौरीनोन, सनाय, मक्की बराबर पीसकर नौ माशे की बराबर गरम पानी से सोने के समय खावे।

शाफ़ा—जो दस्त लाता है—गुड़ तांबे के बर्तन में आग पर रक्खे कि घुल जावे फिर नोन पीसकर मिलावे जब ख़ूब मिल जावे ठंढा करके शाफ़ा बनाकर रोज़ सेवन करे और केवल नोन का भी शाफ़ा ख़ुलासा दस्त लाता है।

अन्य—कूलंज के खोलने के वास्ते—महुये के बीजों की गिरी पानी में पीसकर शाफ़ा बनावे।

अन्य—मोम दो टंक उसमें आधा टंक नोन मिलाकर तेल में शाफ़ा बनावे और शाफ़ा जब निकल आवे फिर रख दे।

अन्य—मदार की जड़ खरल करके गुदा में रखना ख़ुलासा दस्त लाता है और पानी में पीस कर पेट पर भी गुनगुना लेप करे।

अन्य—चूहे की मेंगनियां सांभरनोन बराबर शक्कर मिलाकर कि मधुरी आंच पर जमाकर छुहारे की गुठली के अनुसार बत्ती बनाकर तेल में भिगोकर गुदा में रक्खे।

अन्य शाफ़ा—साबुन का टुकड़ा ख़ुरमा की गुठली के सदृश बनाकर तेल में भूनकर रक्खे।

काढ़ा—कूलंज को गुण करे—सोये के बीज, मेथी दो दो तोले या कम या ज़ियादह स्वभाव के अनुसार लेकर औटाकर दो तोले घी डाल कर पिये।

अन्य—कूलंज और पेट की पीड़ा को गुण करे—सोंठ, अरंड की जड़ एक एक टंक, हींग, सोंचरनोन एक एक माशे, सोंठ और अरंड की जड़ को तीनपाव जल में औटावे जब आधपाव

शेष रहे साफ़ करके पहिले हींग और नोन को महीन करके गोली बनाकर खा ले फिर काढ़ा पिये।

अन्य-अरंड की जड़ जलाकर उसकी राख हथेली भर खावे वात और पेट की पीड़ा दूर होजाती है मुहम्मदज़करिया ने कहा है कि मैंने देखा बहुत मनुष्यों को कूलंज की बीमारी होती थी उन्होंने भेड़िये की खाल अपने सेवन में खूब की यहां तक कि उसीपर बैठते थे और सोते थे और घोड़े पर डाल कर सवार होते थे सो यह रोग होना बन्द होगया।

अन्य-सुद्दाब का तेल अर्थात् तितली मलना कि उसका नुस्ख़ा पीछे वर्णन होचुका है कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

काढ़ा-उस कूलंज की पीड़ा और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये जो स्वभाव की सरदी के साथ हो-अरण्ड की जड़ दो दाम जो हरी हो तो चार दाम लेकर आध सेर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ़ करके रेंड़ी का तेल दो तोले, हींग तीन माशे मिलाकर गुनगुना पिये।

अन्य-हालों के बीज पांच टंक पानी में औटाकर शक्कर और थोड़ा तिलों का तेल मिलाकर पिये।

औषधि-मुख्य करके कूलंज को दूर करती है-मेहँदी के बीज आधे मिस्काल, सौंफ़ के अरक़ या उसके रस में मिलाकर खावे।

अन्य-बियाज़ में लिखा है कि जो मनुष्य बारासिंगे का सींग जलाकर एक चमचा माउल असल में मिलाकर खावे तो फिर कूलंज न होगा और पीड़ा दूर होगी।

अन्य-आधा टंक मीठा तेल शक्कर में मिलाकर पीना कूलंज को गुणदायक है।

अन्य-गुनगुना जल पीना उस कूलंज को जो निर्बलता से होवे नष्ट करता है।

अन्य-बकरी की मेंगनियां लड़की के मूत्र में औटावे फिर पीसकर कपड़े पर लगाकर गुनगुना मले।

अन्य–साखू के पत्तों का रस निचोड़कर उसमें पारा पीस कर नाक के चौगिर्द मले।

अन्य–चँबेली का तेल गरम करके रुई उसमें भिगोकर पेट पर रक्खे।

अन्य–साबुन गरम पानी में पीसकर पेट पर उसके चौगिर्द लगावे।

अन्य–हुक्का पीना कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

लेप–रेंड़ी की गिरी, एलुवा, महुये के बीजों की गिरी सब को कूटकर सिरके में पकाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–लहसुन का खाना और पीसकर लगाना कूलंज की पीड़ा के लिये आश्चर्यदायक गुण रखता है।

अन्य–बकरी का पित्ता गुनगुना नाभि के नीचे मलना दस्त लाता है और लड़कों के बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये मुख्य करके उत्तम है।

लेप–बैद्यों का सेवित है दस्त बराबर लाता है और लड़कों के डब्बे के लिये अति गुणदायक है–सुहागा तेलिया, तूतिया, जमालगोटे की गिरी एक एक टंक थूहड़ के दूध में पीसकर नाफ़ के गिर्द लेप करे।

टिकिया–कुन्दर आंतों की पीड़ा और पेचिश को गुण करे–कुंदर, सोये के बीज, सौंफ़ पांच पांच टंक, करफ़शा के बीज तीन टंक, अजवायन अढ़ाई टंक कूट छान कर पानी में टिकिया बनावे शरबत एक मिस्काल एक मनुष्य के मेदे में कीड़े पड़ गये थे उसको मैंने मुसिल दिया कीड़े दूर होगये फिर मन्दाग्नि हुई और यह अफरा और भोजन के न पचने के कारण कभी कभी कीड़े पैदा होते थे यह माजून मैंने उसके लिये बिचारी बहुत लाभ दिया–पोदीना, सौंफ़, सातर, अनीसून, ज़ीरा, तुरंज की छाल, दारचीनी एक एक टंक, अजवायन आधा टंक, इलायची, धनियां, चन्दन गुलाब में पीसकर दो दो टंक चार

आमलों का मुरब्बा बीज निकाल कर तिगुने शहद में माजून बनावे ।

पेट के कीड़ों का यत्न ।

यह आंतों में पैदा होते हैं और उनके कई प्रकार हैं एक लम्बे सांपों के सदृश होते हैं दूसरे चौड़े कि उनको हुब्बुलकरा और कद्दूदाना कहते हैं तीसरे छोटे कीड़े शिर के कीड़ों के सदृश स्थिर आंतों में होते हैं यह बहुधा मिथ्या आहार और गुदा के न धोने से लड़कों की आंतों में पैदा होते हैं ।

यत्न—एक दो दिन दूध पीकर यह गोली सेवन करे—सनाय मक्की, गुलक़न्द पांच पांच तोले, पीलेहड़ की छाल, जंगीहड़ दो दो तोले, सोंठ, दाख, मुनक्का एक एक तोला शहद में गोलियां बनावे ख़ूराक एक तोला धनियें की जवारिश खाना जिसका वर्णन कोष्ठ के रोग में हुआ है गुण करे ।

इतरीफल—जो कीड़ोंको निकालता है काबिली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बायबिड़ंग दश टंक, तुरबुद खोखली करके हुब्बुल नील आधा आधा टंक, कमीला, कड़वी कूट, हिन्दीनोन तीन तीन टंक कूट छानकर तिगुने शहद में मिलावे ख़ूराक चार टंक पर्यन्त खाय ।

चूर्ण—पेट के कीड़ों को मारता है और दूर करता है और भोजन को पचाता है—अजमोद, बायबिड़ंग, लाहौरीनोन, जवाखार, पीलेहड़ की छाल, पीपल, सोंठ यह सब औषधि बराबर ले हींग भूनकर एक भाग की आधी कूट छानकर ख़ूराक दो टंक निहार मुँह खाय ।

कमीले की गोली—पेट के कीड़ों को दूर करने के लिये गुण करे—हींग, पोदीना, बायबिड़ंग, हिंदीनोन, पीलीहड़ की छाल बराबर कूट छानकर गोलियां बनावे तीन गोलियां खावे कभी इसमें तुरबुद खोखली की हुई अधिक करते हैं ।

अन्य—बायबिड़ंग, हिन्दीनोन दो दो टंक, बनी हुई तुरबुद

आधीटंक, मिश्री बराबर लेकर गोलियां बनावे खूराक दो मिस्काल गरम पानी के साथ खाय।

चूर्ण—हरप्रकार के कीड़ों को गुण करे—बायबिड़ंग, लाहौरी नोन, कमीला, पीलीहड़ की छाल बराबर कूट छानकर आधादाम गौ के दही के साथ खावे भोजन खिचड़ी खावे।

दूसरी गोली—दस्त लाती है और कीड़ों को दूर करती है—काला ज़ीरा तीनमाशे, बायबिड़ंग दरमनातुर की दो दो माशे, खोखली की हुई तुरबुद, अफ़नैती, सोंठ, क़तीरा, एलुवा एक एक माशा कूट छानकर गोलियां बनाकर खावे खूराक एक गोली है।

काढ़ा—कीड़ों को गुण करे वैद्यक में लिखा है—खट्टे अनार की छाल, तूत की छाल दो दो तोले कुचलकर पानी में औटाकर साफ़ करके पिये बड़े कीड़ों और कद्दू दाने को गुण करे।

अन्य—बकायन की छाल दो तोले आठ सकोरे पानी में औटावे जब एक सकोराभर पानी रहजावे थोड़ा गुड़ मिलाकर खाकर सोरहे इसीप्रकार तीन दिन सेवन करे।

गोली—कोष्ठ के कीड़ों को गुण करे—करंजुवे के बीज, पलाश पापड़ा, अजवायन, कमीला, बायबिड़ंग, गुड़ बराबर लेकर गोलियां बनावे खूराक आधा टंक।

अन्य—छोटे कीड़ों के लिये जो लड़कों की गुदा में पड़जाते हैं गुण करे—रसौत, चाकसू छिली हुई, हींग दो दो माशे, एलुवा एकमाशा, कालीमिरच आधामाशा, नींब की पत्तियां दो, कुकरौंधे के रस में महीन पीसकर ज़ुवार के बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाय।

अन्य—मुलीम, कत्थासफ़ेद, अफ़ीम, बर की पत्तियां, पुराना नारियल बराबर लेकर मूँग की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़के को खिलावे।

अन्य—कीड़ों को गुण करे—दाख मुनक्के में उसके बीज की बराबर बायबिड़ंग भर दे जवान को बीस दाने और लड़के को

पांच दानों से दश दानों तक खिलावे और उत्तम यह है कि मुनक्के निगल ले।

अन्य–बैल का सुम जलाकर उसकी राख शहद में या गुड़ में मिलाकर खाना हुब्बुलक़रा को गुण करता है।

अन्य–बड़े कीड़ोंको गुण करे जो लड़कोंकी गुदामें उत्पन्न होते हैं–शफ़तालूके पत्ते जलाकर कड़ुवे तेल में मिलाकर गुदा पर मले।

अन्य–काले धतूरा के पत्तों का रस, पान का रस निकाल कर प्रतिदिन दो बेर उँगली में लगाकर गुदा के अन्दर फेरे या कपड़े की बत्ती बनाकर औषधि से भरकर गुदा में फेरे सब कीड़े मर जावें।

अन्य शाफ़ा–नोन से शाफ़ा करना लड़कों के कीड़ों को मारता है।

अन्य–कद्दूदाने को दूर करे–पहिली रात दो मुट्ठी तिल थोड़े गुड़ में मिलाकर खावे उसके प्रभात को चार टंक कमीला एक टंक साबुन मिलाकर तीन गोलियां बनाकर गरम पानी से निगल जावे सब कद्दू दाने दस्त से निकल जावें।

अन्य–दरमना तुरकी, अनार के दाने के साथ जवकुट कर प्रति प्रभात को बादाम के बराबर खावे खुलासतुल्तजारब ने इस औषधि को परीक्षा किया हुआ लिखा है।

अन्य–लड़कों के बड़े कीड़ों को गुण करे–अरण्ड के पत्तों का रस या भँगरे के पत्तों का रस या धतूरे की पत्तियों का रस प्रति दिन दो तीन बेर गुदा में मले।

### कांच के निकलआने की औषध।

यह रोग बहुधा लड़कों को अतीसार के उपरान्त होजाता है।

औषध–कांच के निकलने को गुण करे–पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर इसकी राख गुदापर छिड़के।

अन्य–पहिले गुदापर तेल मले फिर लसोढ़ा जलाकर पीस कर उस पर छिड़के।

अन्य–लड़कों के कांच निकल आने को गुण करे–रोगी अपना मूत्र बासन में लेकर जब दिशा से होआवे उस मूत्र से पहिले गुदा को धोवे फिर पानी से इस्तंजा करे तो तीन दिन में गुण करता है।

अन्य–बबूल की फली, पान, धवई के फूल औटाकर उसके काढ़े में बैठे या उसके पानी से इस्तंजा करे।

अन्य–आंब की पत्तियां, जामुन की पत्तियां और उसकी छाल दोनों जवकुट कर औटा कर उस जल से शौच करे।

अन्य–जब गुदाशोथ के कारण अन्दर न जावे कई बेर गरम पानी में बैठना और गुलरोग़न उसपर मलना आराम देता है।

औषध–कांच निकलने को गुण करे–बकरी का सुम जलाकर माज़ू, अनार के फूल, अनार की छाल, भुनी फिटकरी बराबर कूट छानकर छिड़के।

लेप–अण्डे की सफ़ेदी गुदापर बाहर और भीतर से लगाना पीड़ा और सूजन को गुण करता है और बासलीक की फ़स्द खोलना सूजन और पीड़ा को दूर करता है।

लेप–गुदा की सूजन को गुण करे–जौ का आटा, मसूर, अण्डे की सफ़ेदी, रौग़न गुल में मिलाकर लेप करे।

चूर्ण–काँच के निकलने को और उसकी पीड़ा को गुण करता है–सोंठ, आमला एक एक टंक, धनियां, लाहौरीनोन, काला नोन दो दो टंक, कालीमिरच चार टंक, पीपलामूल बारह टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे ख़ूराक दो टंक।

बवासीर का यत्न।

यह रोग दो प्रकार का है एक वह कि गुदा के किनारे मस्सों की अधिकता होवे और उससे रुधिर निकले उसको ख़ूनी बवासीर बोलते हैं दूसरे वह कि गुदा में मस्से न हों और पेटमें करा कर होवे और रुधिर न निकले इसको बादी बवासीर बोलते हैं।

यत्न–चूतड़ की हड्डी पर सींगी लगाना उत्तमोत्तम यत्न है

और बवासीर के रुधिर को पहिले बन्द न करे परंतु जब अधिक निकले और रोगी निर्बल होजावे बन्द करदे—हकीमों ने लिखा है कनिष्ठिका और अनामिका के बीच में दागदेना बवासीर को गुण करता है और हँसली पर दाग़देना बवासीर के लिये गुण करे और दाग़ के उपरान्त रुई पानी में भिगोकर उसपर रक्खे कि जारी रहे हरसिंघार के बीजों की गोली बवासीर के लिये गुणकारक अद्वितीय है हरसिंघार के बीज छीलकर एक तोला भर कालीमिरच तीन माशे कूट छान कर गोलियां बनावे ख़ूराक तीन माशे ठण्ढे जल के साथ खाय।

गोली—बादी बवासीर के लिये गुण करे और क़ब्ज़ नहीं करती और स्वभाव को नरम रखती है सौंफ़, पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला दो दो टंक, गूगल, रसौत चार टंक, गुँदनी के बीज एक टंक, अंजीरें चार, हड़ों को पहिले घी में भूनकर दो भाग किशमिश कूट कर उसमें मिलाकर गोलियां बनावे अनुमान से खावे।

औषध—गाय का दूध आध सेर पिये और जब दूध का प्याला मुँह से लगावे काग़ज़ी नींबू का रस उसमें डाल कर तुरंत पी ले तीन दिन में गुण प्रकट होगा।

कुकरौंधे की गोली—यह नुस्ख़ा वैद्यों का आज़माया हुआ है—एक सेर कुकरौंधे का रस मधुरी अग्नि पर औटावे जब गाढ़ा होजावे एक टंक कालीमिरच पीसकर मिलावे फिर खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह एक गोली शाम को खावे।

कंघी के पत्तों की गोली—ख़ूनी और बादी बवासीर को गुण करे—कंघी की पत्तियां २१ काली मिरचें २१ पानी में पीसकर सात गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम खावे।

गोली—बवासीर के लिये गुण करे—क़लमीशोरा, रसौत बराबर पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली

प्रभात को खाया करे लेप के लिये भी यह गोली उत्तमोत्तम औषध है।

अन्य—खूनी और बादी बवासीर को नींब के बीजों की गिरी, बकायन के बीजों की गिरी, गूगल, रसौत, एलुवा, कालीमिरच, गेरू, मकोय की पत्ती के रस में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह एक सन्ध्या को खावे।

अन्य—बवासीर का रुधिर बन्द करे—रसौत सात माशे, बीजों समेत दाख मुनक़्क़े चौदह माशे, क़तीरा सात माशे, सब को कूट छानकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक हर सुबह को एक गोली उसके ऊपर से दो ग्रास रोटी के घृत के साथ खावे।

अन्य—खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—रसौत दो भाग, अनार की छाल चार भाग, गुड़ आठ भाग कूट छानकर गोलियां बनावे ख़ूराक चार टंक।

अन्य—बवासीर खूनी के लिये सफ़ेद सज्जी, चूना सफ़ेद, चने भूनकर आठ आठ टंक कूट छानकर बत्तीस टंक गुड़ में मिलाकर बत्तीस ही गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली सुबह और शाम।

अन्य—बादी बवासीर को गुण करे—हड़ एक टंक, कालाज़ीरा आधा टंक, दोनों भून कूटकर गन्दने के जल में गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली।

गूगल की गोली—खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला दश दश टंक, सीप और बारहसिंगे का सींग जलाकर एक एक टंक अजवायन तीन टंक, गूगल दुगुना औषधियों को लेकर पानी में गोलियाँ बनावे।

अन्य—नई कालीहड़, बहेड़ा, आमला एक एक भाग, क़न्द बराबर गुलाब या जल में पीसकर गोलियां बनावे ख़ूराक दो टंक खाय।

गोली—खूनीबवासीर को गुण करे—बकायन के पत्ते पाव-भर, खारीनोन एकदाम पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे।

गोली—खूनीबवासीर के लिये अंडे का छिलका जलाकर सन्द रूश शैतरजहिन्दी पांच पांच माशे लाल नौसादर कूट छानकर रीठे की बराबर गोलियां बनावे खूराक छः गोली खाय।

हलवा—बवासीर के रुधिर बहने को गुण करे—मुचुकुन्द के पुष्प महीन कूट छानकर शक्कर और घृत में हलवा बनाकर एक तोला खावे।

इतरीफल—बवासीर खूनी और बादीको गुण करे—पीले हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, धनियां एक एक भाग, गूगल गंदने के जलमें कजली करके तीनभाग पर्यन्त शहद में तैयारकरे।

चूर्ण—बवासीर का रुधिर बन्द करे—एक नारियल के ऊपर की छाल लेकर जलावे और उसकी बराबर शक्कर मिलाकर तीन खूराक करे जारी खून बन्द होजावे और एक वर्ष पर्यन्त मैथुन न करे।

अन्य—बादी बवासीर को गुणदायक—बकायन के बीज की गिरी, सौंफ़ एक एक टंक कूट छानकर उसकी बराबर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे खूराक आधाटंक खाय।

अन्य—बवासीर का रुधिर बन्द करे—जली हुई इस्पन्द, जले हुये गेहूँ बराबर पीसकर खूराक तीनमाशे पर्यन्त दो तोले घृत के साथ खाय।

अन्य—कड़ुवे इन्द्रयव जो सब कामों में मीठों से अति बलवन्त हैं बवासीर और अतीसार के लिये आज़माये हैं प्रतिदिन छः माशे ठंढे पानी के साथ सेवन करे।

अन्य—हंकोल की जड़ कि जिसको अंकोल भी कहते हैं एक माशा कालीमिरच इसके बराबर लेकर चूर्ण बनाकर खावे और उसका बफारा देना भी बवासीर को गुण करता है।

अन्य—कुसुम के फूल खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—कुसुम के फूल तीन माशे पानी में पीसकर दही में मिलाकर खावे।

अन्य—मूली के वरक़ छीलकर छाया में सुखावे फिर कूटछान कर एक हथेली के बराबर बराबर की शक्कर मिलाकर चालीस दिनतक फांके।

कालीज़ीरी का चूर्ण।

खूनी और बादी बवासीरके लिये गुणदायक—कालीज़ीरी तीनटंक आधी कच्ची और आधी पक्की प्रतिदिन साठी के चावल के पानीके साथ एक टंक खावे।

अन्य—जंगीहड़ घी में भूनकर शक्कर मिलाकर प्रतिदिन एक तोला भर खावे।

अख़रोट का चूर्ण।

जो बवासीर के रुधिर को बन्द करता है—अख़रोट की छाल जलाकर बद्ध कोष्ठकारक द्रव्यों के साथ खावे।

हुलहुल का चूर्ण।

जो खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—हुलहुल के बीज एक भाग़ शक्कर दो भाग मिलाकर दो माशे खावे।

चूर्ण—बवासीर के रुधिर को बन्द करता है—निर्मली जलाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य—इमली के चिया की राख एक माशे से दो माशे पर्यन्त दही के साथ खावे।

अन्य—पावभर कण्डे जलाकर उसकी भस्म घड़े में रखकर आधा घड़ा पानी उसमें डालकर आठदिन रक्खे और प्रतिदिन घड़े को हिलाया करे आठवें दिन पानी को हिलाकर कपड़े से छान कर मिट्टी के तग़ार में रक्खे और फोग उसका दूर करके छाया में सुखावे फिर प्रतिदिन छः माशे उसमें से लेकर उसी प्रकार सात दिनपर्यंत खावे और इस समय में मूंग की दाल चावल खिचड़ी भोजन करे और सात दिन के उपरान्त फिर खावे और

पथ्य न करे चौदह दिन में बवासीर बिल्कुल दूर होजावेगी सम्भोग न करे।

करंजुवे का, चूर्ण।

करंजुवे की गिरी एक पीसकर एक तोला शक्कर मिलाकर खाया करे और इस औषध के सेवन में चिकना भोजन करे।

चूर्ण–जंगली कबूतर की बीट बबूल के फूल की ज़रदी बराबर लेकर महीन पीसकर एक माशा प्रभात को गुलाब मिलाकर खावे बादी और खटाई से पथ्य करे तीन दिन में आराम होजावे।

अन्य–बवासीर को गुण करे–बबूल के फूल बराबर शक्कर लेकर प्रतिदिन एक हथेली भर खावे।

अन्य–अंधाहूली छाया में सुखाकर महीन पीसकर उससे आधी कालीमिरच पीसकर मिलाकर आधादाम ताज़े पानी के साथ खावे।

चूर्ण–रुधिर को बन्द करता है–गेरू, खरियामिट्टी बराबर आधादाम लेकर दही और चावल के साथ तीनदिन पर्यंत प्रभात को खावे।

अन्य–ज़मींक़न्द टुकड़े टुकड़े करके छाया में सुखावे फिर छीलकर कूट छानकर प्रतिदिन एक दाम निहार खाना गुण-दायक है।

अन्य–कुड़ा की छाल, गोपीचन्दन, नागकेशर, रसौत बराबर फंकी बनाकर प्रतिदिन दो टंक खावे।

अन्य–बवासीर की पीड़ा को शांत करता है पीले हड़ की छाल घृत में भूनकर सौंफ़ एक एक भाग कूटकर हालों के बीज साबित दो भाग मिलाकर प्रतिदिन नौ माशे एक चमचा शक्कर मिलाकर खावे।

काढ़ा–जो बवासीर को गुणदायक है–करील की जड़ छाया में सुखाकर फिर जवकुटकर तीनसेर जलमें औटावे जब आध-

सेर शेष रहे साफ़ करके पावभर इस जल में से प्रभात को और शेष सन्ध्या को पिये सात दिन हद्द दश दिन में रुधिर बन्द हो जावेगा और बवासीर गल जावेगी।

अन्य–रुधिर को बन्द करे–धवई के फूल एक दाम एक प्याले पानी में भिगोकर ओस में रक्खे प्रभात को बिना मले के छान कर पिये ऊपर से एक दाम शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य–आमला, मेहँदी की पत्तियां दश दश दाम डेढ़पाव जल में रात्रि को भिगो दे प्रभात को साफ़ करके पिये।

औषध–बवासीर को गुण करे–रूसे की पत्तियां छाया में सुखा कर कूट छान कर रक्खे और चार पांच बेर प्रतिदिन गुदापर मले।

अन्य–बवासीर को गुण करे–भंग की पत्तियां, नींब की पत्तियां, बकायन की पत्तियां, इमली की पत्तियां, सँभालू की पत्तियां, नीलकी पत्तियां बराबर कूट छानकर औटाकर बफारा ले।

अन्य–बन्दाल औटाकर बफारा ले।

अन्य–हाथों पांवों के नाखून छीलकर जलाकर बफारा ले।

अन्य–अरहर की पत्तियां, सिरस की पत्तियां, धवई के फूल, भंग की पत्तियां, लोध बराबर एक दाम औटाकर बफारा ले।

अन्य–भंग की पत्तियां गौ के दूध में पकाकर पहिले उसे खावे फिर पीसकर गुदा के छिद्रपर बांधे।

अन्य–गैंड़े का सींग जलाकर बफारा ले।

अन्य–कुचला जलाकर उसका धुआं ले पीड़ा और रुधिर दूर हो।

अन्य–गिलहरी का मांस सुखाकर कूटकर सुबह और शाम थोड़ा जलाकर धुआं ले।

अन्य–अरण्ड के पत्ते जल में औटाकर बफारा ले।

अन्य–सन्दरूस का तेल मलना बवासीर को सुखाता है मुख्य करके गन्दने के बीज मिला कर मलना।

अन्य–जवासे के काढ़े में बैठना बवासीर को गुणदायक है।

अन्य—हुलहुल की पत्तियां औटाकर उससे शौच करे और हुलहुल का साग दही के साथ खाना बवासीर के रुधिर को बन्द करता है।

अन्य—अस्तंजातेल बवासीर को गुणकारक है—सेंदुर चार-माशे, घी एक दाम फूल के कटोरे में डालकर जैतवृक्ष की लकड़ी से कि उसके शिरपर एक दाम सीसा लगाया हो कजली करे कि सीसे का असर भी उसमें आजावे और मरहम की रीतिपर होजावे तब बवासीर पर मले।

वस्मे का तेल—हरेपत्ते नील के कूटकर रस निकालकर मीठे तेल में औटावे जब तेलमात्र शेष रहे बवासीर पर मले।

गन्दने का तेल—गन्दने का रस निचोड़कर उसको एकभाग लेकर अर्धभाग मीठे तेल में औटावे कि पानी जलकर तेल रहजावे थोड़ा यह तेल लेकर थोड़ा उसमें गूगल मिलाकर बवासीर पर लगावे।

अन्य—घी, आलू, जरदआलू के बीज की गिरी को क़ंद के मिलाने के बिना रोग़न बादाम की सदृश तेल निकालकर बवा-सीर पर लगावे।

धतूरे का तेल—मीठे तेल में धतूरे का फल जलावे जब तेल शेष रहे उसमें रुई भिगोकर बवासीर पर बांधे।

बिच्छू का तेल—पथरी और पार्श्वशूल को दूर करता है और बवासीर को गुण करता है—कई बिच्छू मीठे तेल में डालकर एक शीशी में भरकर चालीस दिवसपर्यन्त धूप में रक्खे वह तेल लेकर बवासीर पर लगावे।

अन्य—घीदुबरा बवासीरपर मलना पीड़ा को शांति देता है।

लेप—पांच छः तोले सीसे का एक दस्ता बनावे और एक दाम बिनौले की गिरी उससे पीसे जब एक दामके अनुमान दस्ता भी उनके साथ पीसकर औषध मरहम सदृश हो जावे लेप करे।

अन्य–कचनाल और जामुन और मौलसिरी की छाल को पानी में औट कर इस्तंजा करे बवासीर को दूर करता है।

तेल–तूतिया एक माशा, मुल्तानीमिट्टी पांच माशे, सेंदुर दो माशे, मीठा तेल दो तोले पीसकर तेल में मिलाकर दिशा के उपरान्त अंगुली से बवासीर पर खूब मले।

अन्य–बवासीर का गुणदायक–आधपाव फिटकरी भूनकर घी में खूब हल करे जब मरहम की भांति होजावे फिर सोये के बीज पानी में पकाकर पीसकर पहिले उसको गुदापर बांधे फिर वह मरहम रुई में लगाकर गुदापर रक्खे और प्रभात से सन्ध्या पर्यन्त और सन्ध्या से प्रभाततक सात दिन बराबर लँगोट कसे रहै कि सब मस्से बैठ जावेंगे।

अन्य–बवासीर को गुण करे–नरमें के पत्ते दो दाम महीन पीसे और मेहँदी आधा दाम पीसककर उसमें मिलावे और घृतमें गरम करके कपड़े पर रखकर गुदा पर बांधे बहुत गुण करे।

अन्य–बादीबवासीर को गुण करे–कुकरौंधा के पत्तों का रस बवासीर पर मले और उसके ऊपर उसके पत्ते बांधे।

अन्य–हरी कनेर की जड़ पानी में पीसकर थोड़ा मस्सों पर जो दिशा फिरते समय निकल आते हैं लगावे यदि यह औषध बहुत पीड़ा करती है परन्तु अति गुणदायक है।

अन्य–खटमल बवासीर पर मलना बहुत गुण करता है।

अन्य–आवज़न बवासीर और उसकी पीड़ा को गुण करे–जवासा औटाकर उसमें बैठे जो मूत्र बन्द होगया हो उसको भी खोलता है।

अन्य–ऊँट के चमड़े पर बैठना मुख्य करके बवासीर को गुण करे।

अन्य–उस हुक़्क़े के पानी से जो पीला हो और दुर्गंधित हो शौच करना गुण करे।

अन्य–मदारके पत्तोंसे मिट्टीके बदले गुदाको साफ़ किया करे।

औषधियों की गोली ।

बवासीर को गुणदायक है व मस्सों को तीन दिन में दूर करती है–शोराक़लमी, भुनी फिटकरी पीसकर साबुन के पानी में गोलियां बनावे और दिशा से निश्चिन्त होकर प्रभात और सन्ध्या तीन दिन एक गोली गुदा में रक्खे परंतु इस औषध से कुछ दुःख होता है ।

औषध–हरे अरंड के पत्ते पीसकर गुदा पर बांधे ।

अन्य–बवासीर के खून को बन्द करे–जंगली गोभी का साग पकाकर खावे ।

अन्य–बवासीर की जलन को गुण करे–काई गुदापर मले ।

अन्य–रुधिर बन्द करती है आंब की कोंपल पानी में पीस छान थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य–कसौंधी दो तोले के अनुमान आधपाव जल में पीस छानकर दो तीन माशे गेरू मिलाकर पिये जामुन की कोंपल दो दाम का शीरा निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य–गेंदे की पत्तियां छः माशे से एक तोलेपर्यन्त और कालीमिरच दो माशे से तीन मासेपर्यन्त पीसकर पिये ।

अन्य–फरीश एक वृक्ष है उसकी कोंपल एक टंक थोड़े जल में पीस छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य–बवासीर खूनी और बादी को गुण करे–आंब के पत्ते और जामुन के पत्ते एक एक दाम गाय का दूध पावभर पत्तों से पानी मिलाने बिना रस निकाले जो न निकले थोड़ा दूध मिलाकर निकालकर उसमें थोड़ी शक्कर डालकर आठ दिन पर्यन्त इसी तरह पिये खटाई और बादी से पथ्य करे ।

अन्य–खूनी और बादी बवासीर को गुण करे–छिला हुआ चाकसू तीन टंक पीसकर उँगली से लेप करे ।

अन्य–छिला हुआ चाकसू तीन टंक पीसकर डेढ़ टंक लाल शक्कर के साथ पिये ।

अन्य–खूनी बवासीर को गुण करे–बन्दाल पुराने गुड़ में मिलाकर शाफ़ा करे तीन दिन में गुण करे।

अन्य–हरे आंब के पत्ते मलकर तम्बाकू के बदले हुक्के में पिये।

अन्य–कलौंजी जलाकर पीसकर मलना गुण करता है और शहद में मिलाकर गुदा में रखना भी बवासीर को गुण करे।

अन्य–रेंड़ी का गूदा बवासीर की पीड़ा को जो वह दाह बिना हो ठहराता है।

अन्य–मेथी का काढ़ा बवासीर को गुण करे।

अन्य–सूखे या हरे गूलर पानी में पीसकर मिश्री में मिलाकर पीना खूनी क़ै और खूनी अतीसार और खूनी बवासीर और ऋतु के रुधिर को गुण करता है।

### गुले सदबर्ग का अरक़।

जो बवासीर को गुण करे–पावभर गेंदे की पखुड़ियां दो सेर केले की जड़ के रस में रात को भिगोकर सुबह अरक़ खींचे दो तोले सुबह और दो तोले शाम को पीना बवासीर रोग के दूर करने के लिये अति गुण करे।

अन्य–कांच निकलने को गुणदायक–सन के बीज जलाकर कांच पर छिड़के।

अन्य–कांच निकलने की गुणदायक–अलसी जलाकर गुदा के घाव पर छिड़के।

अन्य–बकरी का सुम या सींग या अंडे का छिलका या काग़ज जलाकर गुदा खुजलाकर छिड़कना घाव को गुण करे।

अन्य–लसोढ़ा जलाकर छिड़के।

अन्य–पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर छिड़के।

अन्य–माजू, अनार की छाल पीसकर छिड़के।

### गुरदे और फुकनी के रोगों का यत्न।

पथरी और मसाने और मूत्र की फुकनी दोनों में की पीड़ा

जगह से अन्तर में मालूम हो सक्ती है रेत और पथरी गुरदे में लालरंग की होती है और फुकनी में श्वेत।

यत्न—गाढ़ी चीज़ों से पथ्य करना अवश्य है और प्रकृति को नरम करना इस रोग में उचित है।

अंगूर के पत्तों का शरवत।

गुरदे की पथरी को गुण करे—मुनक्के पन्द्रह टंक, गोखुरू दश टंक, परशियावसान अर्थात् हंसराज सात टंक, अधकुचले ख़रबूज़े के बीज पांच टंक, सौंफ़ अधकुचली तीन टंक, अंगूर के नरम पत्ते चालीस टंक एक रात दिन जल में भिगोवे सुबह को जोश देकर तिगुनी शक्कर में शरवत का क़वाम करे।

हजरूलयहूद की फंकी।

पथरी और फुकनी को गुण करे—हजरूलयहूद तीन टंक, ख़रबूज़े की गिरी, खीरे ककड़ी के बीज, गोखुरू और कुलथी हर एक दो दो टंक, सौंफ़, अजमोद, सम्मग़अरबी एक एक टंक कूट छान कर फंकी बनावे ख़ूराक दो दाम चने के काढ़े के साथ और जो इन औषधियों को तिगुने शहद के साथ क़वाम करे उसको माजून हजरूलयहूद कहते हैं।

गुलदाउदी की फंकी।

फुकनी को गुण करे संगसाने को गुण करे—गुलदाउदी की पखुड़ियां साफ़ करके कूट छान कर शक्कर बराबर की मिलाकर खावे और औटाकर पीना भी गुण करता है।

अन्य—जवाखार, सुहागा दो दो माशे, गोखुरू के शीरे के साथ पिये।

अन्य—नींब के पत्ते जलाकर उसका खार निकाल कर दो माशे खाया करे।

अन्य—अंगूर की लकड़ी की राख छः माशे गोखुरू के शीरे के साथ खावे।

अन्य–करंजुवे की कोंपल सुखा कर जला कर उसकी दो टंक भस्म दो तोले शहद मिलाकर खावे।

अन्य–तिल की लकड़ी जला कर उसकी दो टंक भस्म एक दाम सिरके के साथ खावे।

अन्य–जंगली कबूतर की बीट दो टंक उसके बराबर शक्कर मिलाकर पानी के साथ फांके मुख्य उस कबूतर की बीट जिसको दाने के बदले अलसी खिलाई हो।

करंजुवे की गोली–फुकनी और पार्श्वशूल को गुण करे–करंजुवे की गिरी कूट छान कर एक माशे के अनुमान तीन माशे शहद के साथ प्रतिदिन खावे और एक माशा प्रतिदिन अधिक करते जावे ग्यारहवें दिन से एक माशा कम करना शुरू करे यहां तक कि तीन माशे पहुँच जावे पार्श्वशूल दूर होजावेगा।

आबज़न–इसके दो अर्थ हैं कि औषधि का पानी या गरम पानी सदा बड़े बर्तन जैसे कि डेग आदि में भरकर उसमें रोगी को बैठावे दूसरे तरेड़ा कि पानी को लोटे या मशक में भरकर दूर से रोगी के अङ्ग पर डाले आबज़न पार्श्वशूल और फुकनी को गुण करे करम्ब के पत्ते, मूली के पत्ते, सलग़म के पत्ते, तिल के पत्ते, ख़तमी के पत्ते छः छः टंक पानी में औटावे जब अर्ध शेष रहे आबज़न करे।

अन्य–कबूतर की बीट, सोये के बीज, करंजुवा, सौंफ़ की जड़, गोखुरू, ख़रबूज़े की छाल, मेथी, ख़तमी के बीज, अशनान अर्थात् छड़ीला हरएक थोड़ासा यथाबिधि आबज़न करे।

काढ़ा–कि संग गुरदे और मसाने को तोड़ता है–मुलहठी, कुलथी हरएक तीन टंक, सौंफ़ दश टङ्क चार प्याले पानी में जोश दे जब एक प्याला पानी रहे साफ़ करके तीन माशे लाहौरी नोन और थोड़ा घी मिलाकर पिये।

अन्य–मुहम्मदज़करियाने लिखा है कि जो अंगूर के बृक्ष की

कोंपल जोश करे और थोड़ी शक्कर मिलाकर हररोज़ पिये सब गुरदे की बीमारियां दूर होजावें।

अन्य–काहू चने के साथ जोश देकर उसका पानी पिये।

अन्य–जवारिश कलौंजी की जिस का नुस्ख़ा मेदे के रोग में वर्णन हुआ संगगुरदा और दर्दगुरदा को दूर करता है।

अन्य–पत्थरफोड़ी एक वृक्ष है उसकी पत्ती एक दाम पीस छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये संगगुरदे को दूर करनेवाली है और सूखे पत्ते हरों से कम गुण रखते हैं।

अन्य–संगगुरदे को दूर करे और मूत्र जारी करे–झाड़ू की सींक के फूल दो तोले लेकर दोपहर जल में भिगोकर उसका साफ़ पानी लेकर उसमें खीरे ककड़ी के बीज, गोखुरू, जवासा छः छः माशे, भंग एक दो माशे पीस छानकर मिलावे और थोड़ी शक्कर डालकर पिये।

अन्य–मूली के पत्तों का रस चार दाम निचोड़ कर, अजमोद तीन माशे फांक कर उसी रससे निगल जावे।

अन्य–संगगुरदे और मसाने को गुणदायक–पूये की पत्ती महीन पीसकर पिये।

अन्य–चौलाई का साग खाना पथरी को गुणकारक है।

अन्य–यदि दर्दगुरदा बायु से हो रेंडी की गिरी पीसकर गुनगुनी लगावे।

आबज़न–पथरी के गुणदायक–तिल की पत्ती पानी में औटाकर रोगी को उसमें बैठावे।

औषध–उस दर्दगुरदे को गुण करे जो सरदीसे हो–पांच दाने इस्पन्द के निगलना शुरू करे और हररोज़ पांच दाने बढ़ावे जब सौ दाने होजावें पांच पांच दाने प्रतिदिन कम करे पार्श्वशूल दूर होजावेगा।

अन्य–यदि तिल के बृक्ष की कोंपल छाया में सुखाकर जला कर दो तीन टंक खाया करे संगगुरदा दूर होजावे।

अन्य—जवासे का अरक़ गुरदे की बीमारी को गुण करे ऋतु के रुधिर की रुकावट को भी दूर करता है।

अन्य—तितली का तेल जो शीत की पथरी और मसाने और गुरदे की पीड़ा के लिये उसका मर्दन करना लाभदायक है उसका नुस्ख़ा फ़ालिज के रोग में वर्णन हुआ।

लाभ—जालीनूस ने कहा है कि लोहे की अँगूठी या छल्ला पहिनना मुख्य करके पथरी के रोग को गुण देता है।

सूज़ाक का यत्न।

उसमें ऐसी ठंढी औषधियों का सेवन करे कि मूत्र लावे और सब लुआब मूत्र की चिनग को गुण करते हैं।

बीजों की गोलियां—मूत्र की चिनग को गुण करती हैं—खुरफ़े के बीज, सफ़ेद ख़शख़ाश के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, ख़र-बूज़े के बीज, तरबूज़ के बीजों की गिरी पांच पांच टंक, छोटा गोखुरू, सम्मग़अरबी, क़तीरा दो दो टंक, ईसबगोल के लुआब में गोलियां बनावे ख़ूराक तीन माशे।

गोली—पेशाब की चिनग के लिये वह रोज़े को गलाकर पानी में डाले और उसके बराबर क़तीरा और भूने छिले चने पीसकर मिलावे और चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली गोखुरू के शीरे के साथ खावे।

गोली—सूज़ाक को गुण करे—पियाबांसा का छोटा वृक्ष जला-कर उसकी राख क़तीरे के पानी में मिलाकर चने की बराबर गोलियां बनावे हर सुबह एक गोली गुलख़ैरू के जल से जो रात को भिगोया हो पिये नये और पुराने सूज़ाक को गुण करती है।

चूर्ण—सूज़ाक को गुणकारक—संगजराहत, राल, मिश्री दो दो तोले, तालमखाना, गोखुरू, सरयाली एक एक तोला कूट छानकर चौदह भाग करे प्रतिदिन एक भाग बकरी के दूध की लस्सी के साथ फांके।

अन्य–सूज़ाक को गुण करे और पीप बन्द करे–भुनी फिटकरी, गेरू एक एक टंक, शक्कर बराबर लेकर चूर्ण बनावे और प्रतिदिन सात माशे गाय के दूध के साथ खावे।

औषध आज़माई हुई–ठण्ठे स्वभाव के सूज़ाक को गुण करे–सहँजने का गोंद हरसुबह एक तोला पीसकर सात दिन दही के साथ खावे।

चूर्ण–सूज़ाक को नाश करे–तालमखाना, खुरफ़े के बीज, सरयाली, गोखुरू, काहू के बीज, संगजराहत बराबर लेकर चूर्ण बनावे–खूराक एक तोले गाय के दूध के साथ खाय।

अन्य–सूज़ाक की पीप को बन्द करने के लिये–क़तीरा, भंग के बीज, सरयाली, राल सफ़ेद, कालीबीजबन्द, लालबीजबन्द बराबर लेकर चूर्ण बनावे खूराक दो टंक।

अन्य–सूज़ाक को लाभ करे–हल्दी, आमला बराबर कूट छानकर उसकी बराबर शक्कर मिलावे खूराक एक तोला पानी के साथ नवीन सूज़ाक को एक सप्ताह में दूर करता है और जो रहजावे तो दो महीने तक सेवन करे।

अन्य–सूज़ाक की पीप को जो चिनग के रहजाने के उपरांत बाक़ी रहे गुण करे–राल पीसकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर तीन टंक अठारह दिन तक रोज़ खावे।

अन्य–सूज़ाक को गुण करता है और पीप को नाश करता है–ढाक की कोंपल सुखाकर ढाक का गोंद, ढाक की छाल, ढाक के फूल, कूट छानकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो मिस्काल हर रोज़ दूध के साथ खावे आज़माया हुआ है।

अन्य–सूज़ाक के लिये आज़माया हुआ है–शोराक़लमी, लालइलायची एक एक दाम कूट छानकर छः भाग करे एक हिस्सा सुबह और एक शाम खाया करे और चौथे दिन से इसी तरह खावे कि दो तीन दाम साठी के चावल के जल में भिगोवे और सुबह को उसके पानी के साथ तीन दिन पर्यन्त खावे।

अन्य-ताजखरूस एक वृक्ष है उसे हिन्दी में मुरग़ का केश कहते हैं उसके बीज एक तोला दो तोले क़न्द में चूर्ण बनावे और हर सुबह बीस दिन पर्यन्त खावे।

अन्य-बरगद की कोंपल छाया में सुखाकर पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर दूध की लस्सी के साथ सुबह को सात दिन तक खावे।

औषध-दो तोले निशास्ता एक प्याले पानी में रात को घोल दे सुबह निहार पिये।

औषध-मेहँदी के पत्ते, आमला, सफ़ेदज़ीरा, धनियां, गोखुरू एक एक तोला जवकुट करके रात्रि को भिगो दे सुबह साफ़ करके एक तोलाभर शक्कर मिलावे पहिले तीन माशे क़तीरा कूट छानकर खावे उसके ऊपर यह कल्क पिये।

अन्य-छिले चने पावभर, टेसू के फूल, ज़ीरासफ़ेद दो दो दाम सबको एक सेर जल में आठ पहर भिगोवे आधपाव उसका पानी सुबह को और उतना ही सन्ध्या को पिये जब पानी कम होवे और डालदे।

अन्य-फालसे की जड़ एक दाम जवकुट करके पानी में भिगो दे सुबह मलकर साफ़ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य-अधकुचली आंब की छाल दो दाम रात को पावभर जल में भिगो दे सुबह को मलकर छानकर एक सप्ताह पर्यंत पिये।

अन्य-नये सूज़ाक को गुणकारक-फनीशफली दो तोले रात को पानी में भिगो दे सुबह छानकर थोड़ी शक्कर मिला कर पिये।

अन्य-नये सूज़ाक के लिये-सदासुहागन वृक्ष के पत्ते एक तोला रात्रि को जल में भिगो दे सुबह मलकर छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य-कुहलतल्ख़ एक दाम जवकुट करके रात को जल में

भिगो रक्खे सुबह को उसका स्वच्छ जल लेकर आठदाम मुरमकी रात को पानी में भिगो रक्खे सुवह को उसका साफ़ पानी लेकर थोड़ी मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य-रीठा एक तोले भर रात को भिगो रक्खे सुबह को उसका साफ़ पानी लेकर पिये।

काकुंज की कुरस अर्थात् टिकिया।

सूज़ाक गुरदे और मसाने के घाव को गुण देती है और मूत्र को जारी करती है-काकुंज चारटंक, खीरे ककड़ी के बीज, ख़ुरफ़ा, मुलहठी छिली हुई अधकुचली, ख़शख़ाश सफ़ेद, हर एक तीन टंक, क़तीरा, सम्मग़अ़रबी, गेरू दो दो टंक, अजमोद एक टंक, अफ़ीम आधी टंक, कूट छानकर ईसबग़ोल के लुआब से टिकिया बनावे ख़ूराक एक दाम की करे।

काढ़ा-सूज़ाक को गुणदायक-सांबाहूली जोश देकर पिये।

अन्य-सूज़ाक और मुश्किल से पेशाव उतरने को गुणकारक-कांड़र के बीज सात प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला शेष रहे साफ़ करके इसी तरह तीन दिन पिये।

अन्य-सूज़ाक को लाभदायक-गुड़हल के फूल पहिले दिन एक बताशे के साथ खावे इसी प्रकार चार दिन पर्यन्त एक एक अधिक करे पांचवें दिन से एक एक कम करे जब एकही रहे जो ईश्वर चाहे तो सूज़ाक दूर हो जावेगा।

अन्य-सूज़ाक के लिये गुणकारक है-नींब के पत्ते, चँबेली के पत्ते औटाकर उस गुनगुने जल में लिंग को रक्खे और उसका बफ़ाराले आधघड़ी के उपरांत उसमें मूत्र करे इसीतरह हररोज़ तीन बेर करे।

अन्य-सूज़ाक को गुणदायक-सदयारा अर्थात् तुख़्म ताजख़रूस जिसे हिंदी में कलगा कहते हैं तीन टंक महीन कूटकर आधसेर दूध में रात को चांदनी में रक्खे सुबह को पिये सूज़ाक

और प्रमेह को गुण करे और वीर्य को पुष्ट करता है परंतु थोड़ी शक्कर मिला लेना उचित है कि शक्कर सदयारा की जुज़ है।

अन्य–चिनग को गुण करे–केले के बृक्ष का रस निचोड़ कर पिये।

अन्य–सूज़ाक को दूर करे–जोंक एक हिंदी वृक्ष है जो बहुधा बरसात में उगता है उसकी पत्तियां और फल एक तोला लेकर पानी में पीस छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–सूज़ाक को गुण करे–दो बताशे लेकर उसमें बरगद का दूध भरकर तीनदिन प्रभात के समय खावे।

अन्य–सात माशे जवाखार गाय के दही में पिये।

अन्य–गंदाबिरोजा दो रत्ती थोड़े गुड़ में लपेटकर खावे और उसके ऊपर दही पानी में घोलकर पिये।

अन्य–सूज़ाक को गुणकारक–सिरस बृक्ष के पत्ते पानी में पीसकर अपने स्वभाव के अनुकूल थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–बबूल की कोंपल एक तोला, गोखुरू एक तोला, दोनों का रस निकालकर थोड़ी शक्कर के साथ पिये।

औषध–गौ का दूध थोड़ी शक्कर और क़तीरे के साथ सदा पीना पुराने सूज़ाक को अच्छा करता है अमल स्त्री के सूज़ाक को दूर करता है स्त्री एक लत्ता अपनी भग के मलसे भिगोकर बच्चेदार कुतियाको तीन दिनपर्यन्त खिलावे सूज़ाक को दूर करे।

पिचकारी–सूज़ाक के उस घाव को गुण करे कि लिङ्ग के भीतर हो।

काढ़ा–तूतिया तीन माशे, फिटकरी छः माशे, आधसेर पानी में औटावे जब आधा रहजावे शीशे में रखकर पिचकारी ले यदि इस औषध से रुधिर आनेलगे तो कुछ चिन्ता नहीं जो पीड़ा अधिक होजावे तो स्त्री के दूध की पिचकारी लेले बाज़े इस दवा में एक तोला शफ़ेद कत्था भी अधिक करते हैं।

पिचकारी–मूत्र की चिनग को गुण करे–देकामाली एक

तोला, तीन तोले कड़ुवे तेल में पकावे जब खूब जलजावे साफ़ करके तेल से पिचकारी ले ।

अन्य–सूज़ाकको गुण करे–कत्था, मुरदारसंग, रसौत आधा आधा दाम, भुनी तूतिया चार रत्ती यथाविधि पिचकारी ले ।

अन्य–सूज़ाक को गुण करे–पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला एक एक टंक, सब्ज़तूतिया आधा दाम सबको कूट कर रात्रि को जल में भिगोकर सुबह पिचकारी दे ।

शाफ़ा–सूज़ाक को गुणकारक–कत्था सफ़ेद, मुरदारसंग, राल, सम्मग़अरबी, गेरू बराबर महीन करके शाफ़ा बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे और कभी इसमें पीड़ा की अधिकता से अफ़ीम अधिक करते हैं और दाह की अधिकतामें कपूर बढ़ाया जाता है लिंग के व्रण को गुणकारक–सम्मग़अरबी, निशास्ता स्त्री के दूध में घोल कर और ईसबग़ोल का लुआब यह सब लिंग के घाव को गुण करते हैं ।

अन्य–तालाब की काई निचोड़ कर उसका थोड़ा जल लिंग के छिद्र में टपकावे ।

मूत्र के अधिक आने का यत्न ।

जो मशाने की सुस्ती और सरदी की अधिकता से हो गरमी और क़ब्ज़ करनेवाली औषध दे ।

जवारिश–जो मूत्र के रोकनेवाली है पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल तेल में भून कर गुलनार, नागरमोथा दो दो मिस्काल, कुंदर, अजवायन एक एक मिस्काल शहद में जवारिश बनाये ।

जवारिश–साद को भी मूत्रकी अधिकता और निर्बलता और मसाने की सरदी और गर्भाशय को गुण करे और कोष्ठ और कलेजे को गरम और बात को दूर करती है–नागरमोथा पांच मिस्काल पीसकर सिरके में मिलाकर तीन दिन शहद में भिगो दे और सुखा कर कूट छान कर पाव भर शक्कर में क़वाम करे ।

जवारिश–कुंदर मूत्र की अधिकता को गुण करे–कुंदर, गुलनार एक मिस्काल, मस्तगी एक टंक कूट छान कर शहद में मिलावे खूराक तीन मिस्काल।

कुलींजन की जवारिश–मूत्र की अधिकता को गुण करे–इसका नुस्खा कोष्ठकी बीमारियों में वर्णन होचुका है।

फंकी मूत्र को रोकती है–कुन्दन, नागरमोथा, कालाकुलींजन, ज़ीरा, बलूतहुबुल्लास, धनियां सिरके में भिगोकर सुखावे और पीसकर चूर्ण बनावे खूराक डेढ़ मिस्काल।

अन्य–तिल दो भाग अजवायन एक भाग लेकर चूर्ण बना कर एक हथेली भर खावे या गुड़ में गोलियां बनावे खूराक आधा दाम।

औषध–मूत्र की अधिकता को गुण करे–लसोड़े के नरम पत्ते एक तोला भर लेकर उसका रस निकालकर एक तोला भर शक्कर मिलाकर पिये।

तिला–अधिक मूत्र को नाश करे–इमली के बीज की गिरी, सहँजने के पत्ते दोनों पीसकर प्रतिदिन नाभि के नीचे लगावे।

चूर्ण–अधिक मूत्र आने को गुण करे–सूखा सिंघाड़ा कूट छान कर शक्कर मिला कर एक तोला भर खावे।

अन्य–बबूल की कच्ची फली छाया में सुखाकर कूट छान कर घी में भूने और शक्कर मिलाकर सुबह और शाम धेला भर खाया करे।

औषध–सोते में मूत्र होजाने को गुण करे–माजू एक तुख़्मरैहां थोड़ी कूट छानकर खाले।

अन्य–कुलींजन ठण्ढे पानी के साथ खाना उत्तमोत्तम गुण रखता है।

अन्य–सोते में पेशाब होजाने को गुण करे–कबूतर की बीट आटे में गूंध कर रोटी पकाकर खावे।

अन्य–नर बकरे का सींग जला कर शहद में मिलाकर खाना

अधिक मूत्र के दूर करने को उत्तम गुण रखता है खूराक दो दाम पर्यन्त।

मूत्र बन्द होजाने का यत्न।

इस रोगके उत्पन्न होने के कारण बहुत हैं यदि मूत्र का बंद होना मसाने या गुरदे की सूजन से हो पहले बासलीकफ़स्द खोले उसके उपरांत वह औषध जिससे मूत्र जारी हो सेवन करे।

औषध–मूत्र बन्द होजाने को गुण करे–राई, क़लमीशोरा एक एक माशे शक्कर बराबर मिलावे यह दो खूराक है सुबह को खावे पेशाब जारी होजावे।

अन्य–गेंदे की पत्तियां दो तोले पानी में रस निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–चूहे की मेंगनी दो दाम पानी में पीसकर गुनगुनी नाभि के नीचे लगावे।

अन्य–थोड़ा कपूर जलाकर लिंग के छिद्र में रक्खे मूत्र खुल जावे।

अन्य–शोराक़लमी कपड़े में भिगोकर नाभि के नीचे रक्खे।

अन्य–मूत्र खोले–पारा दो माशे पिचकारी में रख कर छिद्र के अन्दर पहुँचावे तुरन्त मूत्र खुल जावे यदि बेशाब बन्द होजाने का कारण शोथ न हो थोड़ा शोरा लिंग के छिद्र में रक्खे मूत्र खुल जावे।

अन्य–पांच रत्ती कनूचा पीसकर पानी के साथ फाँके मूत्र खुल जावे।

अन्य–भैंसके कान का मैल रोगी की नाभि के नीचे मले।

अन्य–टेसू जोश देकर नाभि के नीचे तरेड़ा दे।

लेप–तिपतिया पेडू पर लेप करे।

औषध–पथरचटा अर्थात् बिषखपरे के पत्तों का रस निचोड़ कर दूध में मिलाकर खावे।

अन्य–एक जूं लिंग के छिद्र में छोड़े।

अन्य–खटमल पीसकर लिंग के छिद्र में छोड़े।

अन्य–रोगी को गरम पामी में बैठावे।

अन्य–गोखुरू, खीरे ककड़ी के बीज, सौंफ़, ख़रबूज़े के बीज पानी में पीसकर पिये।

अन्य–बकरी के गुनगुने दूध में लिंग को रक्खे।

अन्य–रेवन्दचीनी सौंफ़ के रस में पीसकर नाभि के चारों ओर लगावे।

अन्य–सीप पीसकर नाभि के नीचे लगावे।

अन्य–रियाज़ुलूअदविया में लिखा है कि अण्डे के छिलके को अंदर के परदे से साफ़ करके पीसकर उसकी बराबर शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य–मूंग का दाना पानी में एक रत्ती रगड़ कर पिये।

अन्य–लाहौरीनोन गुदा में रखने से मूत्र खुलता है और स्वभाव नरम करता है पेठे के बीज पीसकर नाभि के ऊपर लगावे और कौड़ी भर कपूर खावे।

अन्य–शहतूत के रस में शोराक़लमी पीसकर नाभि के नीचे लगावे।

अन्य–एक दाम इन्द्रायण की जड़ औटा कर पिये।

### मूत्र के रुधिर के आने का यत्न।

फिटकरी की कुर्स अर्थात् टिकिया बनावे उसका नुस्ख़ा यह है भुनी फिटकरी, बारासिंगे का सींग जलाया हुआ, क़तीरा, गेरू, गुलनार, सम्मग़अरबी एक एक टंक कूट छानकर टिकिया बनावे ख़ूराक एक मिस्काल ख़ुरफ़े के बीज के शीरे के साथ और यह टिकिया सूज़ाक को भी गुण करती है।

औषध–रुधिर के मूत्र के लिये आज़माई हुई है इक्कीस दाने चाकसू के महीन कूटकर खावे उसके ऊपर चन्दन बूरे का पानी कि उसमें भिगोया हो पिये।

अन्य–जवासा पीसकर पिये गुण करेगा आबज़न रुधिर के

मूत्र को गुणदायक है और मूत्र की अधिकता को बन्द करता है—अनार की छाल, छिले मसूर, बबूल की पक्की फली, अलतीस, बाजरा, चन्दन हरएक थोड़ा थोड़ा लेकर पानी में औटावे जब आधा रहे उसमें बैठे।

नपुंसकता का यत्न।

अर्थात् बीर्य का कम हो जाना अधिक बीर्य आजाय रईसा अर्थात् मन ब्रह्माण्ड और कलेजे की आरोग्यता और कोष्ठ और गुरदे के बल से होता है इस जगह कई सुगम औषध इस रोग की गुणदायक वर्णन की जाती हैं।

माजून—जो बैद्यों की बनाई हुई है बीर्य को बल देती और मनी को गाढ़ा करती है और बीर्य को गर्भ के लायक करती है और स्तम्भन करती है और हर्ष करती है निंबौले कड़की गिरी, खरबूजे के बीज, चिरौंजी, तिल, ख़शख़ाश सफ़ेद, सेमल का मूसला, मूसली सफ़ेद, शतावर, असगंध, सिंघाड़े का आटा, इमली के बीज छिले हुये, लसोढ़ा एक एक तोला, केवड़े के बीज, प्याज़ के बीज, शलग़म के बीज, मूली के बीज, बहुफली, तालमखाना भूना हुआ, समुद्रशोष, मेदालकड़ी नौ नौ माशे, कुलींजन, चीनियां गोंद, नागरमोथा, तज, कोंच के बीज, छोटा गोखुरू, इन्द्रयव मीठे, बबूल की फली, कँवल की गिरी, धवई के फूल, सेमल का गोंद, बीजबन्द, मोचरस छः छः माशे, भुनी इस्पंद गुजराती, उटंगन के बीज, अक़रकरा, सोंठ, पीपल, ख़ुरासानी अजवायन तीन-तीन माशे कूट छानकर तिगुने क़न्द में क़वाम करे और जो बादाम की गिरी, पिस्ता, चिलग़ोजा और अख़रोट की गिरी तोला तोला भर, भंग दो तोले इस औषध में डाले तो उत्तम है नहीं तो ग़रीबों के वास्ते इतना ही बहुत है ख़ूराक एक तोला उस दूध के साथ जिससे ख़ुरमा जोश दी हो।

किशमिश की माजून—बीर्य को बल देती और बीर्य को पैदा और गाढ़ा करती है—मोचरस, सालिम मिश्री, समुद्रशोष, काली

मूसली, सफ़ेदमूसली, बादाम की गिरी पांच पांच टंक, शतावर दशदाम, सोंठ, कुलींजन आधा आधा दाम, किशमिश आधसेर, क़न्द एक सेर यथाबिधि क़वाम करे खूराक दो तोले से तीन तोले गो के दूध के साथ जिसमें खुरमा जोश दिया हो खाय।

मालकँगनी की माजून–बीर्य को बल देती है–मालकँगनी, अक़रकरा, केवड़े के बीज, लौंग, केसर एक एक दाम इस्पन्द सफ़ेद आधा दाम, खशखाश सफ़ेद पांच टंक, तिल चार दाम, मुर्ग़ के अण्डे की ज़र्दी पांच, शहद और चौगुने क़न्द में यथाबिधि माजून बनावे।

दूसरा नुस्खा–मालकँगनी की माजून जो हिन्द की रीतिपर है–मालकँगनी भँगरे के रस में भिगोकर गाय के दूध और जल में औटावे जब दूध सूख जावे पीसकर बराबर शक्कर लेकर माजून बनावे आधा टंक पहिले दिन खावे और प्रतिदिन आधा टंक अधिक करके आठ टंक पर्यंत पहुँचावे और चालीस दिनपर्यंत खाया करे बूढ़े को जवान करती है।

माजून जो बल करती है–अक़रक़रा, लौंग, सोंठ दो दो तोले पचीस मुर्ग़ों के अण्डे की ज़र्दी एक सौ बीस टंक शहद में क़वाम करे खूराक चार दाम भोजन के पहिले खाय।

माजून–सफ़ेद पियाज़ का रस एक सेर, शहद एक सेर अग्नि पर रक्खे जब क़वाम होजावे तो दरी सुर्ख़ और सफ़ेद सालिम मिश्री, बहमन सुर्ख़ और सफ़ेद, सोंठ, पियाज़ के बीज, मूली के बीज, गंदना, शलग़म के बीज, तालमखाना, सफ़ेद और काली मूसली, एक एक सेर शाही कूट छानकर यथाबिधि माजून बनावे।

पेठे की माजून–तत्काल बीर्य गिरने के वास्ते अद्वितीय है और बीर्य को भी पुष्ट करती है–खरबूज़े के बीज, सफ़ेद मूसली, पेठे की मिठाई आध आध पाव, घीकुवार के पट्टे दो, कबाबचीनी छः माशे सबको महीन पीसकर आधसेर सफ़ेद क़न्द में क़वाम करे खूराक एक तोला।

लहसुन की माजून–शीतल स्वभाववालों के वीर्य को बल देती है और फ़ालिज और लकवे को गुण करती है–लहसुन को दूध में ऐसा औटावे कि दूध सूख जावे फिर उसको घी में भूने और शहद के साथ माजून बनावें।

माजून–तत्काल बीर्य गिरने को गुण करती और पतले बीर्य को गाढ़ा करती है और पौष्टिक है–पीले हड़ की छाल, बहेड़ा, आमला, भुना खुरमा, सालिम मिश्री, मैदालकड़ी, गोखुरू, सफ़ेद मूसली और काली मूसली, बालछड़, कोंच के बीज; सूखा सिंघाड़ा, कँवलगट्टे की गिरी, लसोढ़ा, मीठे इन्द्रयव, इमली के बीज की गिरी दो दो टंक, गुलनार, शहदाना, काली अजवायन, हबुल्लास का ज़ीरा, धनियां, बंशलोचन, बरगद की कोंपल, मस्तगी, शाहबलूत, बीजबन्द, सरयाली, लोध, इस्पन्द भुनी एक एक टंक, तज, असगन्ध, भुना तालमखाना, समुद्रशोष, चीनियांगोंद. नागरमोथा, धवई के फूल, मोचरस, शतावर, लबूल की फली, केवड़े के बीज एक एक मिस्काल, क़न्द तिगुना।

कड़ का चूर्ण–बीर्य को पौष्टिक और गर्भ देनेवाला है–कड़ दो टंक, कालेतिल सात टंक, ख़शख़ाश सफ़ेद पांच टंक, निंबौले की गिरी, तज, इन्द्रयव मीठे चार चार दाम, मिश्री सम्पूर्ण औषधियों की बराबर खूराक एक तोला गौ के दूध में खाय।

पीपल का चूर्ण–जो बीर्य को बल देता है–एक सेर पीपल को दो सेर दूध में औटावे जब दूध सूख जावे पीपल को सुखा कर पीसकर प्रतिदिन एक दाम में छः दाम मिश्री मिलाकर दूध के साथ खावे।

चूर्ण–बीर्य को बल देता है और उसको पैदा करता है–सेमल का मूसला महीन पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर प्रतिदिन एक तोले भर गौ के दुग्ध के साथ खावे।

अन्य–प्रमेह के लिये अद्भुत है–गोखुरू पांच टंक, सिंघाड़ा, साठी के चावल, कँवलगट्टे की गिरी हरएक तीन टंक, तालम-

खाना दो टंक, मोचरस, समुद्रशोष, सरयाली, बीजबन्द एक एक टंक सम्पूर्ण औषधियों की बराबर मिलाकर चूर्ण बनावे खूराक एक तोला।

अन्य--मनी को गाढ़ा करती है—कच्ची बबूल की फली, मोलसिरी की छाल, शतावर, मोचरस बराबर लेकर बराबर की शक्कर मिलाकर हथेली भर खावे।

अन्य—पतली मनी को जमाती है—बरगद की कोंपल, गूलर की छाल बराबर ले और सफ़ेद शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले भर दूध के साथ खावे।

अन्य—बीर्य को पौष्टिक—पिस्ता दो तोले, मिश्री दो तोले, पिसी हुई सोंठ छः माशे सबको मिलाकर प्रतिदिन एक तोला भर शहद में मिलाकर एक रत्ती भंग महीन पीसकर उस पर छिड़क कर तीन दिन खावे।

अन्य—तत्काल बीर्य गिरने को गुण करे—बबूल की कच्ची फली छाया में सुखाकर तालमखाना, चीनियां गोंद, छिले हुए भुनेचने बराबर लेकर बराबर मिश्री मिलाकर हररोज़ एक हथेली भर खावे।

अन्य—मनी को गाढ़ा करे और शीघ्र बीर्यपात को गुणदायक है—खिरनी के दरख़्त की छाल, तज, मैदालकड़ी, सबके बराबर शक्कर मिलाकर एक तोला भर गाय के दूध से खावे।

अन्य—चीनिंयांगोंद, बहुफली बराबर पीसकर एक तोला भर हररोज़ दूधके साथ चालीस दिन तक खावे।

अन्य—बीर्य के शीघ्र गिरने को गुणकारक है सिरस के बीज, पलाश के बीज बराबर कूट छानकर बराबर की मिश्री मिलाकर एक तोलाभर आधसेर गाय के दूध के साथ खावे अत्यन्त गुण-दायक है।

अन्य—बन्दकुशाद को गुण करे और मनीको गाढ़ा करता है—तालमखाना, सरयारा, असबन्धगौरी, समुद्रशोष, मोचरस

बराबर कूट छानकर बराबर की शक्कर मिलाकर एक हथेली-भर खावे।

गोली–पतली मनी को गाढ़ी करे और शीघ्र बीर्यपात को गुण करे–इमली के बीज तीन चार दिन पानी में भिगोदे फिर उसकी कालीछाल दूर करके पीसकर बराबर की सफ़ेद शक्कर मिलाकर चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक दो गोली खाया करे।

चूर्ण–प्रमेह और शीघ्र बीर्यपात को गुणकारक–बबूल की छाल, बबूल की फली, बबूल का गोंद, बबूल की कोंपल बराबर कूट छानकर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे खूराक एक तोला भर खाय।

दूसरा चूर्ण पतली मनी को गुणदायक–गूलर के उस बृक्षकी छाल कि जिसके रेसे पृथ्वी के अन्दर हों गोखुरू, तालमखाना, कमलगट्टे की गिरी हरएक पांच तोले भर, बहुफली, मखाना, बीजबन्द, सरयाली, चीनियांगोंद हरएक तीन तीन तोले कूट छानकर चूर्ण बनाकर एक हथेलीभर गाय के दूध के साथ खावे।

अन्य–बीर्य के पतलेपन और जल्दी मनी गिरने को गुण-कारक–कच्चे कोंच के बीज छाया में सुखाकर महीन पीसकर तीन टंक पावभर गाय के दूध के साथ औटाकर खावें।

अन्य–लिंग के छिद्र को गुण करे–समुद्रशोष, अजवायन पांच पांच दाम, जलानेवाली इस्पन्द तीन दाम कूट छानकर सुबह और शाम एक दाम भर पानी के साथ फांके खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य–प्रमेह को गुणदायक है–हुलहुल के बीज तीन दाम, बीजबन्द तीन दाम, तालमखाना, इन्द्रयव मीठे, छोटा गोखरू हरएक छः दाम, लसोढ़ा चोबीस दाम, शक्कर औषधियों की बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावे।

अन्य–स्तंभन के वास्ते गेंदे के बीज एक दाम उसके बरा-बर शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य—पतली मनी को गुणदायक है—समुद्रशोष, तालमखाना, तुख़मरैहां हरएक पांच टंक कूट छानकर चूर्ण बनाकर आधादाम निहार खाया करे। खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य—बीर्यके शीघ्र गिरनेको आंबका गोंद दो दाम, कालीमूसली और सफ़ेद मूसली, मोचरस हरएक आधादाम, कोकिनार एक, भंग दोमाशे ख़ूराक एक तोलाभर गायके दूधके साथ खाय।

अन्य—मनीको गाढ़ा करती है और मनी के बहाव और प्रमेह को गुण करे—सूखा सिंघाड़ा, चीनियांगोंद, समुद्रशोष हर एक दो दो भाग बीजबन्द, मोचरस, तालमखाना, गोखुरू, कोंचके बीज, धनियां, मैदालकड़ी एक भाग, काहूके बीज आधा भाग, बराबर शक्कर मिलाकर एक तोलाभर खावे।

अन्य—शीघ्र वीर्यपात को गुणदायक—बरगदकी कोंपल, चीनियांगोंद, खिरनी की जड़ की छाल, लसोढ़ा, बहुफली, शतावर बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावे ख़ूराक एक तोलाभर गायके दूधके साथ खाय।

दूसरा चूर्ण—प्रमेह और मनी के बहाव को गुणदायक है—बबूलकी कच्चीफली ३ दाम, छोटी दुद्धी जड़ और पत्तोंसमेत छाया में सुखाकर पीसकर उसकी बराबर क़न्द मिलाकर चूर्ण बनावे।

अन्य—पतली मनी को गुणदायक और बीर्यको बलदे—ढाक के दरख़्त की छाल और गोंद, गूलर के बृक्ष की छाल और गोंद, सेंभल के बृक्ष का मूसला और गोंद, मोलसिरी की छाल, भुने चने, बबूल का गोंद बराबर लेकर चूर्ण बनावे ख़ूराक चार टंक।

अन्य—प्रमेह को गुणकारक और बीर्य को पुष्ट करे—काली और सफ़ेद मूसली, तालमखाना, कोंच के बीज, उटंगन के बीज, मोचरस, ऊंटकटारू के जड़ की छाल, लाल और काला बीजबंद, बहुफली, कमरकस, साठी के चावल, शतावर, समुद्रशोष, मीठे इन्द्रयव एक एक टंक, सिंघाड़ा डेढ़ टंक, सफ़ेद शक्कर बराबर लेकर दो टंक गायके दूधके साथ खावे।

हलवा—पतली मनी को गाढ़ा करे—आमलेके बीज छिलेहुये, ढाक का गोंद, निशास्ता एक एक तोलाभर, लालशक्कर तीन तोलेभर, घी चार तोला गरम करके निशास्ता भून कर इमली के बीज और गोंद पीसकर मिलाकर हलवा बनावे खूराक एक तोला से दो तोलेपर्यन्त खाय।

चूर्ण—मनी के बहने को गुणदायक—तालाब की काई फिटकरी पर रखकर आग पर चढ़ाकर जलावे और उसकी राख में बराबर शक्कर मिलाकर चार माशे हररोज़ खाया करे।

अन्य—बरगद का फल सुखाकर गायके दूध के साथ खावे पतली मनी गाढ़ी होती है।

गोली—बीर्य के स्तम्भन के वास्ते ख़शख़ाश, भुनी इस्पन्द, शिंगरफ़, गोखुरू, कुचला जलाकर बराबर कूट छानकर उस पानी से जिसमें ख़शख़ाश का पोस्ता भिगोया हो गोलियां बनावे और चार घड़ी भोग के पहिले एक गोली खावे और ऊपर से एक प्यालाभर दूध पिये।

गोली—अजवायन पांच माशे, कद्दू के बीजों की गिरी छः माशे, इस्पन्द नौ माशे, भंग के बीज आठ माशे, भुने चने सात माशे, अफ़ीम तीन माशे, केशर चार रत्ती, इलायची के दाने एक माशा, ख़शख़ाश के पोस्ते दो यह सब औषध कूट छानकर उस पानी में जिसमें पोस्ते भिगोये हों गूँदकर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनावे समयपर एक गोली खावे जो अधिक गरमी करे कद्दूके बीजों और तरबूजों और खुरफ़ेके बीजों का रस पिये।

गोली—स्तम्भन की हकीम उलवीख़ां का नुसख़ा—इसमें यह उत्तमता है कि अफ़ीम नहीं है अक़रक़रहा एक दाम, रैहां के बीज आठ दिरम, सफ़ेद क़न्द नौ दिरम कूट छानकर गोलियां बनाकर एक दिरम खावे लिखा है कि जब तक नींबू का पानी न पिये बीर्यपात न होगा।

गोली—बीर्य को रोकती है—भुनी इस्पन्द, कपूर, मुरमक्की,

अजवायन बराबर कूट छानकर अदरक के जल में चने की बराबर गोलियाँ बनाकर मैथुन से पहिले एक गोली गाय के दूध के साथ खावे।

गोली—जो रेज़े की बराबर बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे स्तम्भन करे—खूबकलाँ सफ़ेद, साफ़ की हुई मिश्री, कपूर, कालीमिरच और मेंडक के शिर को खूब निचोड़े जो कुछ निकले सीप से खुरचकर उठाले।

गोली—वैद्यक की आज़माई हुई है वीर्य को बलदेती है और भोग करने के उपरान्त तकान नहीं लाती और बीर्य को रोकती है जलाने का इस्बन्द पांच टंक आधा कच्चा आधा पक्का, पोस्ता, कालेतिल दो दो दिरम, गुड़ २० दिरम तीनों औषधि कूट छानकर पुराने गुड़ के साथ कूटे जब मिल जावे सात भाग करके हर भाग की एक गोली बनाकर रक्खे और सम्भोग के समय एक गोली खावे।

गोली—बीर्य के शीघ्र गिरने और प्रमेह को गुणकारी है—छिले इमली के बीज, छिले बबूल के बीज, तालमखाना, सेमल की बौंड़ी, छिले सिरस के बीज, उटंगन, भंग के बीज बराबर लेकर भँगरे के रस में खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे खूराक छः माशे दूध के साथ खाय।

गोली—प्रमेह को गुण करती है—धतूरे के बीज छः माशे, कालीमिरच छः माशे कूटछानकर कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनाकर हरसुबह एक गोली एक तोले भर सौंफ़ के रस के साथ खावे जो बीमारी पुरानी हो एक दिन में आराम होता है।

गोली—बीर्य को बल करे—ताजा केंचुवा साफ़ और सुखाकर छः दाम, अजवायन दो दाम कूट छानकर चार दाम गुड़ मिलाकर एक एक तोले की बरावर गोलियां बनाकर इक्कीस दिन खावे खूराक एक गोली।

गोली—पौष्टिक—कसौंधी की छाल महीन पीसकर शहद में

मिलाकर गोलियां बनावे और दो दाम खाकर ऊपर से एक प्याला भर दूध पिये।

गोली–वीर्य को बल करे–काले धतूर के फूल सुखाकर चने की बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली।

गोली–मनी को गाढ़ा करती है और वीर्य को बल देती है–छोटी दुद्धी छाया में सुखाकर पीसकर जंगलीबेर के बराबर गोलियां बनावे और सुबह को एक गोली गाय के दूध में खावे।

गोली पौष्टिक–नकछिकनी, कालीमूसली, शतावर, कोंच के बीज, उटंगन के बीज, ऊँटकटारे की जड़, मालकांगनी, गुड़ बराबर कूट छानकर अदरक के रस में जंगलीबेर की बराबर गोलियां बनाकर हर रोज़ एक गोली गाय के दूधके साथ खावे।

गोली–सुगम उपाय–वीर्य को बल दे–गुड़, कालेतिल दो दाम, असगन्ध नागौरी चार दाम, दो दाम कच्चे दो दाम भूने कूट छानकर चौदह गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खावे।

चूर्ण–जो प्रमेह को गुणदायक है–त्रिफला, बबूल के फूल, हल्दी बराबर लेकर मिश्री सबसे आधी संयुक्त करके कूट छानकर चूर्ण बनावे तीन दिरम गाय के दूध में खावे।

चूर्ण–वीर्य को बल दे–अजवायन की भूसी आध सेर, मूली के बीज, भुने चने, ज़रदक के बीज, कालेतिल पाव पाव भर कूट छानकर चूर्ण बनावे और हर रोज़ एक तोला भर खावे।

औषध–नकछिकनी, काली मूसली, सफ़ेद मूसली, सोंठ बराबर लेकर चूर्ण बनाकर हर दिन आधा दिरम गाय के दूध के साथ खावे।

अण्डे का हलवा–वीर्य को ताकत दे–मुरगे का अण्डा, बताशा और दो दिरम घी लेकर ख़ूब तल करके कोयलों की आग पर रक्खे और चमचे से हिलाते रहे जब पकजावे ठण्ढा करके खावे।

शकरक़ंद का हलवा–मनी को पैदा और गाढ़ा करता है–हरी शकरक़ंद ख़ुश्क करके कूट छानकर घी और शक्कर

मिलाकर हलवा बनावे बाज़े भुनी शकरक़ंद को घी में मिलाकर हलवा बनाते हैं।

सिंघाड़े का हलवा—मनी को गाढ़ा और पैदा करता है—सूखा सिंघाड़ा पीसकर शक्कर और घी में बनावे।

औषध—लिंगछिद्र के तंग होने के वास्ते ढाक के वृक्ष की कोंपल जो खुली न हो वह पतझाड़ के पीछे मिलती है जितनी नरम हो कूटकर छः बर्ष के पुराने गुड़ में या जितना पुराना हो उत्तम है पीसकर अख़रोट के बराबर चार दिन खावे।

अन्य—बीर्य की पौष्टिक—भुने चने की दाल उसके बराबर छिले बादाम लेकर हर सुबह और शाम खाना अति पौष्टिक है।

अन्य—जो ठण्ढे मिज़ाजवाला शीतऋतु में इसको खावे बीर्य में बल और आरोग्यता की रक्षा और पाचन को हरप्रकार से गुणदायक है—पारा हरदिन एक कौड़ी भर खाना शुरूअ करके एक दांग तक पहुँचावे और निगलकर ऊपर से यख़नी पिये।

अन्य—बीर्य का बलकारक—चिलग़ोज़े की गिरी मीठे मुनक्के उत्तमोत्तम औषधि है इन दोनों को जल में एक रातदिन भिगो कर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य—अधिक पौष्टिक है—ऊंटकटारे के जड़ की छाल एक दाम के बराबर लेकर कुचलकर पोटली बांधकर आधसेर दूध और आधपाव पानी में उबाले जब पानी सूखकर दूध रह जावे साफ़ करके मिठाई मिलाकर पिये और जो उसमें दो तीन छुहारे डाले तो अधिक बलकारक हो जावे।

अन्य—शहद उबाले और कफ़ उसका निकालकर मूली के बीज पीसकर उसमें मिलाकर सुबह और सोते वक़्त खाया करे।

अन्य—बीर्य को बल करे ढाक की जड़ एक पाव लेकर दो तीन सेर पानी में उबाले जब आधा पानी जलकर शेष गाढ़ा हो जावे उसमें से थोड़ा लेकर पान के साथ खाया करे।

अन्य—कफ़ की प्रकृतिवालों के बीर्य को बल दे—शहद,

भिलावां, गाय का घी बराबर क़वाम करके ख़ूराक प्रकृति के अनुकूल दे।

अन्य–वीर्य की पुष्टि के लिये जो छः महीने खावे सब तरह से प्रभाव करे–जंगली सहँजने का वृक्ष जो नर्म और छोटा हो उसकी जड़ लेकर टुकड़े टुकड़े करके छाया में सुखावे और अजवायन की भूसी और छिले उर्द तीनों को बराबर लेकर उसके बराबर गुड़ मिलावे और अख़रोट के बराबर गोलियां बनाकर हर सुबह एक गोली खावे।

अन्य–गुड़हलके फूल सुखाकर कूटकर क़न्द में मीठा करके चालीस दिवसपर्यन्त दो मिस्काल रोज़ खाया करे।

अन्य–चार दाम असगन्ध कूट छानकर एक सेर दूध में औटावे और दश दिरम मिश्री मिला कर दोनों समय खावे बदन का रंग लाल हो जावे और तैयारी और बीर्य अधिक हो।

अन्य–जो मैथुन के उपरान्त खाय कम ताक़ती न होवे–खैरुलूतिजारब में लिखा है कि जो मैथुन के अनन्तर चार दाम गुड़ खावे निर्बलता न होवे।

अन्य–बीर्यको बल करे–सिंघाड़ा हर दिन गायके दूधमें खावे।

अन्य–बीर्य को पुष्ट करे–अरण्ड की कोंपल आधपाव, मांस आधसेर दो प्याला पकाकर तीन दिन तक खावे।

अन्य–ख़शख़ाश दो तोले, शहद चार तोले, सोंठ आधा दिरम कूट छानकर मिलाकर चालीस दिन खावे।

अन्य–गोखुरू, शक्कर, गाय का घृत सबको कूट कर मिला कर खाय और उसके ऊपर गाय का दूध पिये।

अन्य–भूख और बीर्य को बलदे–आमलासार गन्धक लेकर बिसखपरे के रस में इतना खरल करे कि गाढ़ा हो जावे सो हर दिन एक चांवल के बराबर पन्द्रह दिवसपर्यन्त खावे।

अन्य–दूध चांवल खाना बीर्य को पैदा करता है और चने का होला खाना उसको पुष्ट करता है।

अन्य-मनी और अधिक खुले छिद्र को गुणदायक-एक बताशा में थोड़ी बूंदें बरगद का दूध डालकर खाया करे।

अन्य-दो तोले बिनौले आधसेर गाय के दूध में पकाकर खावे।

अन्य-बेर की गुठली की गिरी पुराने गुड़ में मिला कर पीसकर खावे।

अन्य-सर्व प्रकार के प्रमेह को गुणदायक-ईंट पुरानी कच्ची कूट छानकर एक भाग शक्कर दो भाग चूर्ण करके हर रोज़ एक दिरम खावे।

अन्य-मनी के बहने को गुणदायक और शीघ्र बीर्यपात को लाभ दे यदि स्त्री को खिलावे योनि संकीर्ण हो जावे-अण्डे का छिलका जितना चाहे जल में डालकर उसके अन्दर के महीन परदे को दूर करके छिलकों को बर्तन में रखकर उसमें नींबू का रस इतना डाले कि एक उंगल छिलकों के ऊपर आजावे फिर उस पर कुछ कुछ छिपाकर रखदे यहां तक कि रस छिड़कों में पचजावे तीन बेर इसी तरह करे फिर उसके छिलकों को मट्टी की कुल्हिया में रखकर कपड़मिट्टी करके जंगली कण्डे की गजपुट अग्नि दे जब ठण्ढा हो जावे फिर उतनी ही आग में रक्खे इस तरह तीन बेर आग देने में छिलके जलकर सफ़ेद हो जावेंगे सो निकाल कर दो रत्ती शहद में मिला कर खावे खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य-दूब का बौंड़ा हर सुबह को बासी जल में पीस छानकर एक सप्ताह पिये।

चूर्ण-लिंग के छिद्र के बढ़ जाने को गुण करे-खिरनी की छाल, गोंदी की छाल, लसोढ़े की छाल, आंब की छाल हर एक बराबर लेकर शक्कर बराबर मिलाकर निहार एक बहलोली पर्यंत पानी के साथ खाय।

अन्य-बीर्य को रोंके-आक के फूल, धतूरे के फूल, काली-

मूसली, इस्पंद पांच पांच टंक पीस कर घी में भून कर पंद्रह टंक शहद में मिलाकर बराबर एक टंक के शहद में मिलाकर खावे और उसके ऊपर दूध पिये।

अन्य—बीर्य को पुष्ट करे—सोंठ, पीपल, ज़रदक के बीज बराबर लेकर अण्डे की ज़रदी के साथ खावे।

अन्य—अजवायन,कालेतिल एक एक भाग, ख़शख़ाश आधा भाग, गुड़ में मिलाकर चूर्ण बनावे ख़ूराक एक तोला।

अन्य—खिरनी के बीज की गिरी सुखाकर तीसरा हिस्सा उसका शक्कर मिलाकर गाय के दूध के साथ खावे बीर्य को बल देता है।

अन्य—चाहिये कि हर सुबह को मीठा आंब खाये ऊपर से गौका दूध जिसमें दो तीन खुरगें और कुछ सोंठ में जोश दिया हो पिये बीर्य को अधिक और शरीर को पुष्ट करता है और दिमाग़ को बल देता है और पका हुआ शरीफ़ा खाना मनी को पैदा करता है और कटहल भी बीर्य को बल देता है इसी तरह कटहल के बीज भूनकर खाना गुण करता है।

आंबों का हलवा—जो बीर्य को बलकारक और मनी को पैदा करता है—मीठे आंबों का रस तीन सेर, शक्कर सफ़ेद एक सेर, गौ का घी आध सेर, शहद पाव भर, सोंठ एक तोला, पीपल छः माशे, शतावर एक तोला, सालिबमिसरी, बादाम की गिरी चार चार तोले, कुलींजन छः माशे लाल बहमन और सफ़ेद बहमन एक एक तोला, सेमर का मूसला एक तोला, सूखा सिंघाड़ा चार तोले, सुरमे की तरह कूटकर चार तोले पहिले आंब का रस और शक्कर मिलाकर दूध डालकर शरबत बनावे फिर गिरियां पीसकर घी में भूनकर शरबत में मिलावे और ओषधियां बनाकर हलवा बनावे।

लहसुन का तेल।

लिंग की सुस्ती को गुण करे—लहसुन को अलसी के तेल में औटा कर साफ़ करके राई, अक़रक़रा, नींबू के बीज, माल-

कंगनी हर एक थोड़ा कूट छान कर तेल में जला कर उस तेल से कई दिन मर्दन करे सुस्ती दूर हो जावे।

गुलशब्बो का तेल—बीर्य को बल देता है—गुलशब्बो लेकर तेल में मिलावे जब फूल कर कुम्हिला जावे और बदल दे इसी प्रकार तीन बेर बदले फिर साफ़ करके थोड़ा अक़रक़रा पीस कर मिला कर लगावे और उस पर पान बांधे।

तेल—बीर्य को बल दे—भटकटैये की पत्तियां, कड़ुवा तेल चार चार दाम, बड़ा काला बिच्छू जो मिल जावे तो अच्छा नहीं तो जिस तरह का हो पहिले तेल को गरम करके पत्तियों की टिकिया बनाकर बिच्छू और टिकिया को उसमें डाल कर जलावे जब खूब जल जावे कपड़ेसे छानकर रक्खे और एक रत्ती भर पान में लगा कर लिंग पर बांधे।

अन्य तेल—कहवा जोकि एक जीव टीड़ी के सदृश है और उसके पर नहीं होते उसको दबान और रसूल भी बोलते हैं और उससे बुलबुल को पकड़ते हैं पांच छः लेकर चार पांच दाम गाय का घी और एक दाम केसर मिला कर बर्तन में रख कर जलावे फिर हल करके लिंग पर मले।

ऊंटकटारे का तेल—लिंग की सुस्ती को गुण करे—ऊंटकटारे का वृक्ष जड़ टहनी और पत्तों समेत बकरी के दूध में भिगो कर पातालयन्त्र से तेल खींच कर लिंग पर मले।

चींटियों का तेल—सौ बड़ी चींटियाँ जो बड़ी क़बरों और आंब के दरख्तों पर होती हैं लेकर चमेली के तेल में डाल कर शीशे में भर कर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर तेल लेकर मर्दन करे।

चमेली की पत्तियों का तेल।

स्तम्भन करनेवाला और बीर्य को बल देता है—सफ़ेद चमेली की पत्तियां पीस कर उसका रस निकाल कर मीठे तेल में जलावे जब पानी जल जावे तेल लेकर शीशे में रक्खे भोग के दो घड़ी पहिले लिंग पर मल कर पान बांधे—तेल जो हथरस

वाले को गुण करे और वीर्य को बलदे—कपड़े को मदार के दूध में एक दिन रात भिगो रक्खे फिर निकाल कर सुखा कर उस में घी लगा कर दो बत्तियां बना कर जलावे और उसके नीचे कांसे की थाली रक्खे जो तेल बत्ती से थाली में टपके लिंग का शिर छोड़ कर मले ऊपर से पान या अरण्ड के पत्ते बांधे।

अन्य—चमेली की पत्तियां एक पाव, मीठा तेल एक पाव, दोनों को कड़ाही में डालकर औटावे जब पत्तियां जलकर तेल-मात्र रहजावे कड़वीकूठ, कच्चा सुहागा, आधी आधी बहलोली थोड़े तेल में डाले जब मिला कर ओषधियों का रंग लाल हो जावे उसी समय कड़ाही उतार कर ज़हरतेलिया आधी बह-लोली मिलाकर तेल को फूल के बर्तन में डालकर नींव की लकड़ी दो पहर हल करके शीशे में रक्खे और एक माशा लेकर लिंग का शिर छोड़कर लेप करे और उसके ऊपर पान बांधे इसी प्रकार एक सप्ताहपर्यंत एकदिन बीच देकर लगावे इस अवसर में मैथुन न करे।

चमेली का तेल—वीर्य को बल देता है—चमेली की पत्तियों का रस, धतूरे की पत्तियों का रस, हरएक दो दाम, मीठातेलिया, कड़वीकूठ एक दाम, मैनसिल आधा दाम, सुहागा एक दाम, तिलों का तेल सात दाम, ओषधियाँ पीस कर टिकिया बनाकर तेल में पानी मिलाकर उसमें जलावे जब पानी जलजावे दवायें पीसकर रक्खे और एक सप्ताहपर्यंत मर्दन करे।

जोंक का तेल—वीर्य को बल दे सात बड़ी जोंकें आधपाव मीठे तेल में जलाकर साफ़ करके लिंग पर मले।

तेल—जो वीर्य को बल दे—मालकांगनी और कुचले का बुरादा, पलाश के बीज, जंगली कबूतर की बीट, चार चार दाम सफ़ेद कौड़ी दो टंक, रात को बकरी के दूध में भिगोकर सुबह आतशी शीशे में तेल निकाल कर मर्दन करे और दूसरे नुसख़े में सफ़ेद कौड़ी के बराबर अक़रक़रा भी लिखा है।

अन्य–एक बालिश्त कपड़ा महीन लेकर आधसेर धतूरे के रसमें इक्कीस दिन तक रक्खे कि रस कपड़े में सूखजावे फिर पांच टंक तिलों के तेल में मधुरी आंच पर पकावे उसके उपरान्त निकाल कर कपड़े को लोहे की सींक में लटका कर उसके नीचे थाली रक्खे और एकओर से कपड़े में आग लगा दे जो कपड़े से तेल उस थाली में टपके उसको लेकर रक्खे और दो बूँदें प्रतिदिन चार दिनपर्यंत मले।

अन्य–सुगम बीर्य का बलकारक और हथरस लगानेवाले को गुण करे–मीठा तेलिया दो दाम, मूली के बीज आध दाम, जमालगोटे की गिरी सम्पूर्ण औषध महीन पीस कर आधपाव तिलों के तेल में खरलकरके उसमें से थोड़ासा लेकर सेवन करे।

अन्य–सुगम और बलकारक–छः टंक मीठा तेल मधुरी आंच पर जोशदे और आधा टंक लाल हरताल पीस कर उसमें मिलावे उसके उपरान्त सुहागा फिर कड़वीकूठ एक एक टंक उसमें मिलावे फिर चमेली की पत्तियों का रस डालकर अग्नि पर रक्खे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे लिंगपर मले और ऊपर से पान बांधे।

अन्य–बीर्य को बल देता है और लिंग की सुस्ती को दूर करता है–लोध, फिटकरी, अरण्ड के जड़ की छाल, नख, असगंध एक एक टंक दो टंक कूट कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ़ करके मले।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लाल मिरच एक टंक यह सम्पूर्ण औषध पीसकर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक लिंग के छिद्र में टपकावे जो छिद्र बहुत तंग हो नींब का तेल टपकावे और बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे।

अन्य—मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ोंको मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले वहुत ही बल देता है।

लाभ—बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और वह हिंदू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीजें बीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती हैं।

तैल—बीर्य का बलदायक—लाल और सफ़ेद घुंघुची की दाल हरताल एकएक दाम बकरी के दूध में खरलकरके चने की बराबर गोलियां बना कर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रख कर तेल निकाल कर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे।

पट्टी—बीर्य को बल करे—महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगो कर सुखावे और तीन बेर प्याज़ के रस में भिगो कर सुखावे फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे फिर लिंग का शिर छोड़ कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को प्रति समय अलसी के तेल में भिगो रक्खे।

पट्टी—कपड़ा आंबा हल्दी में रँग कर सुखावे फिर धतूरे के रस में तीन बेर फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे फिर भैंस के घृत में मधुरी आंचपर भूनकर आवश्यकता पर पट्टी पर शहद लगा कर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीस कर उस पर छिड़क कर तीन दिन बांधे।

अन्य—बीर्य का बलकारक—मदार का दूध आधपाव, साफ़ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डाल कर लोहे के दंस्ते से इतना घोटे कि क़वाम बँध जावे और कड़ाही लसके कारण दस्ते के साथ ज़मीन से उठ आने लगे फिर चार माशे अफ़ीम डाल कर हल करे जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंगको शिर छोड़

यह तेल मले और उस पर पान लपेट कर गजी की पट्टी से लपेट कर एक पहर बैठे रहे फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवसपर्यंत यही क्रिया करे ।

लेप–बीर्य की निर्बलता का गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है–मदार का दूध उसकी बराबर गौ का घी मिला कर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाज़े इसमें शहद भी डालते हैं और बाज़ों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जल कर तेलमात्र आ रहे छान कर दो आतशी शराब मिला कर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़ कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले ।

अन्य–हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे–काले जवान मुर्ग़ का जिसने जुफ्ती न की हो काट कर उसका रुधिर लेकर उसकी बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे ।

लेप–जो बीर्यको बल देता है–मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अक़रक़रा, कड़वीकूठ एक एक भाग महीन पीस कर लगावे ।

लेप–कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज़ और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और बीर्य को पुष्ट करता है । एक मारू बैंगन जो दरख्त में पक कर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़ कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचवे तेल में

मिलावे जब केंचवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज़ एक माशा भर लिंग पर मलकर बरगद या लसोढ़े के पत्ते उस पर बांधे जो ईश्वर चाहे तो आराम होगा।

अन्य-बीर्य का बलदायक-सफ़ेद घुंघची, अक़रक़रा, बीर-बहूटी सवातीन २ माशे, संखिया एक माशे, दो आतशी शराब में तीन दिन खरल करके रात्रि को लिंग पर लगा कर उस पर पान कच्चे तागे से बांधकर सो रहे। इसी प्रकार एक सप्ताहपर्यन्त बांध इस अवसर में सम्भोग न करे।

अन्य-बीर्य को बल करे-मनुष्य के कान का मैल, सुवर की चरबी मिलाकर तीन दिन खरल करके सात दिन लेप करे।

अन्य-बीर्य को बल दे-सफ़ेद कनेर के जड़की छाल बराबर गधे के मूत्रमें पीसकर लिंग पर मले और बाज़े इसमें थोड़ा शिंग-रफ़ भी डालते हैं उसके ऊपर अरण्डके पत्ते बांधे कि सूख जावे।

लेप-बीर्य को बलदे-ज़हर तेलिया, आंबाहल्दी, मैदालकड़ी आधा आधा दाम अलग अलग कूट छानकर तीन पुड़िया बना कर एक पुड़िया ताज़े पानी में खूब मिलाकर सुपारी और सीवन छोड़कर लिंगपर लगावे ऊपर से पान लपेटकर सारे दिन बांधा रक्खे दूसरे और तीसरे दिन भी इसीतरह करे चौथे दिन घी धोकर लिंग पर लेप करे।

अन्य-एक बड़ी जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव-भर पहिले घृत को लोहे के बर्तन में गरम करके जीती जोंक उसमें डालदे जब जोंक का पेट फट जावे और इसके फटने का शब्द कान में पहुँचे उतार कर सेंभल का गोंद एक टंक मैदे की सदृश महीन पीसकर उसमें मिलावे और नींब की लकड़ी से चार पहर रगड़ कर लिंग पर लगावे और जो बड़ी जोंक न मिले सात छोटी जोंकें तेल में जलावे।

अन्य-बीर्य को बलदे-कनेर की जड़, धतूरे के जड़ की छाल,

धतूरे की जड़, भंग के जड़की छाल, मदार की छाल बराबर लेकर छाया में सुखाकर कूटकर धतूरे के पत्ते के रसमें बेर की बराबर गोलियां बनावे और समय पर एक गोली अपने मूत्र में पीसकर लिंग पर लगा कर सुखाकर भोग करे।

अन्य–सफ़ेद सरसों, कड़वीकूठ, बड़ी कटाई का फल, असगंध की जड़ बराबरले और कूट छानकर पानी में मिलाकर लिंग पर मले जब सूखने लगे छुड़ा डाले तीन चार दिन इसीतरह करे लिंग बढ़ जावे जो सरसों सफ़ेद न मिलें तो पीले काफ़ी हैं।

अन्य–केंचुवा एक तोला, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहरपर्यंत खरल करके थोड़ा लेकर मले उसके ऊपर कनेर के पत्ते या अरण्ड के पत्ते बांधे।

अन्य–इस्पन्द, रेंड़ी की गिरी, पीले सरसों तीन तीन दाम कूट छानकर चमेली के तेल में खरल करके दोनों समय इसतरह पर लिंग पर मले कि सुबह को धूप में और शाम को निर्बात बन्द मकान में बैठकर लगावे जो जाड़ों के दिन हों तो अँगीठी जला कर आगे रखले और हरबेर अँगीठी से हाथ सेंक कर नाभि के नीचे से रानतक मर्दन करे मर्दनका कमसेकम अवसर पांच घड़ी है यह रीति साहब ज़ादुलग़रीबकी आज़माई हुई पुस्तक से है।

लेप–जोकि बहुत मज़ा देताहै-ताज़ीबीरबहूटी उसकी बराबर भिड़ का छत्ता लेकर तिलों के तेल में कजली करके लेप करे।

अन्य–पारा तीन दाम, गायके बारह पित्ते आधसेर भँगरे के रसमें लोहेकी कड़ाही में लोहेके दस्तेसे एक पैसा उसपर लगाकर छःदिवसपर्यंत कजली करे जब गाढ़ा होजावे जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर थूक में घोल कर लगावे।

लेप–स्तम्भन करता है–खुश्की में रहनेवाले मेंढक को साये में सुखाकर उसके शिर और पांव काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियां बनावे समय पर लिंगपर सुपारी छोड़ कर लेप करे।

अन्य–जो लिंगकी सुस्ती को दूर करे–असगंध, गजपीपल, कड़वीकूठ महीन पीसकर गौ के मक्खन में मिलाकर पन्द्रहदिन पर्यंत हररोज़ दो बेर मले और गरम पानी से धोवे और दूसरे नुस्खे में गजपीपल के बदले दालचीनी लिखा है और एक पुस्तक में लिखा है कि एक बड़ामेंढक जो कुयेंमें रहता हो लेकर उसकी गुदा सींदे और दो तीन टंक पारा उसके मुख में डालकर रक्खे जब सूख जावे मेंढक का पेट फाड़कर पारे को कि गोली बँध जावेगी निकाल ले और मैथुनके समय मुखमें रक्खे बीर्यपात न होगा।

अन्य–गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम पानी से धोवे पन्द्रह दिवस इसी प्रकार सेवन करे।

अन्य–मज़ा देता है–जंगली कबूतर की बीट और उसकी चरबी और लहौरीनोन और शहद यह चारों बस्तु बराबर लेकर पीसकर लिंग पर मले और भोग करे बड़ा मज़ा पावेंगे।

लेप–बहुत मज़ादे–मारूबैंगन मिट्टी में लपेट कर भूभल में रक्खे फिर मिट्टी दूर करके बैंगन का पानी निचोड़ कर छान कर कई पीपलें तीन दिनपर्यंत उसी पानी में भिगोवे चौथे दिन निकाल कर सुखा कर महीन पीस कर शहद में मिलाकर लेप करके मैथुन करे।

अन्य–बीर्य को बलदायक–कनेर के जड़ की छाल महीन पीस कर भटकटैये के रस में खरल करके कई दिन लेप करे।

अन्य–टेढ़े लिंग के वास्ते जो हथरस लगाने से होवे गुण करे–पहिले तिलों का तेल लिंग में मले फिर हालो पीस कर गुनगुना लेप करे फिर ऊपर पान या अरण्ड का पत्ता लपेट कर उसके गिर्द गिर्द खपाचे रखकर पट्टी से दृढ़ बांधे और एक पहर के पीछे खोल कर गुनगुने पानी से धोवे सात दिन के सेवन से टेढ़ापन दूर हो जावेगा।

अन्य–लिंग के स्थूल होने के वास्ते हर रात को ताज़े दूध से लिंगको मल कर सूखे केंचुवें पीस कर उस पर मला करे।

अन्य–कायफल भैंसके दूध में पीसकर लेप करके सारी रात बांधरक्खे सुबह गरम जलसे धोवे कईदिन यही क्रिया करे।

अन्य–रीठे की छाल अक़रक़रा बराबर तेज़ शराब में खरल करके सिवाय लिंग के शिरके मले और उसके ऊपर पान लपेटे इस प्रकार कई दिन सेवन करने से गुण मालूम होगा।

अन्य–बीर्यका बलकारक–कमलगट्टेका ज़ीरा, उत्तम शहद खूब महीन पीसकर मिलाकर सुपारे के सिवाय लिंगपर मले ऊपर से कपड़ा लपेटे और दोपहर के पीछे दूर करके गरम-पानी से धोवे और फिर इसीतरह करे।

अन्य–लिंग को बड़ा करता है–दो टंक इन्द्रजव भैंस के ताज़े दूध में भिगोकर चार पहर उसको पीसकर गुनगुना लिंग पर मले ऊपरसे कपड़ा लपेटकर सो रहे सुबह गरमपानीसे धोवे कई दिन बराबर यही क्रिया करे।

अन्य–लिंग को सख़्त करे–उटंगनके बीज कूट छानकर लिंग पर हररोज़ दो बेर लेप करे कईबेर यही सेवन करे।

लेप–स्तंभन और लिंगके सख़्त होने को गुण करे–असगन्ध की जड़ जवकुटकर कालेधतूरे के रसमें बीसबेर भिगोकर सुखावे फिर पीसकर रक्खे समय पर थूकमें हल करके लिंगपर मले और एक पहर के पीछे मैथुन करे और भोग के उपरांत गौ का घी लिंगपर मले।

अन्य–चम्बेली के तेलमें राई पीसकर लिंगपर लगावे।

अन्य–अक़रक़रा दो भाग जंगली प्याज़ का रस दश भाग पीसकर लिंग पर लगावे।

अन्य–गांजा रेंड़ी के तेलमें खरल करके फिर लत्ते पर लपेटकर बांधे थोड़ा छीलता है परंतु बीर्य को बल देता है और हथरसवाले को गुण करता है।

अन्य–हलहल के बीज दो भाग उसकी छाल एक भाग महीन कूट छानकर मीठेतेल में चार पहर खरल करके लगावे।

अन्य–लौंग, समन्दर फलकी गिरी एक एक शहद में पीस कर लगावे।

रेंड़ी का तेल–हथरसवाले के वास्ते मीठातेल, रेंड़ीकी गिरी, पाव भर दोनोंको औटाकर हल करके शीशे में रक्खे और रोज़ मला करे हथरसवाले को बहुत गुण करे।

अन्य–जंगली कबूतर की बीट की सफ़ेदी, चम्बेली के तेलमें पीसकर लेप करे।

अन्य–लिंगके खड़े होने और सख़्ती होने के लिये गुण करे–इस्पन्द चम्बेली के तेलमें पीसकर लगावे।

अन्य–चमगादरका लहू लिंगपर मले बीर्य में अधिक बल होवे।

अन्य–सूसमार अर्थात् गोहका गूह लगाना बीर्यको बल देता है।

अन्य–सर्पकी चरबी और मछली और जंगली सुवरकी चरबी बकरी के मूत्र में तीन दिन खरल करके लेप करे।

अन्य–रोहू मछलीकी चरबी मलना गुण करता है।

अन्य–चूहे की मेंगनियां शहदमें मिलाकर लिंगपर लगाना बीर्यको बल देता है।

अन्य–छोटी कटाईका फल बीज दूर करके पीस कर लिंग-पर लगावे और उसपर अरंड के पत्ते बांधे।

अन्य–पारा एक दाम, शहद दो दाम दोनों को लोहेके पात्र में लोहेके दस्ते से हल करे जब एकजात होजावे कपड़े पर लपेट कर लिंगपर लपेटे जब खड़ा होजावे दवाको दूर करके सम्भोग करे और एक रोहू का मगज़ इसमें डाले उत्तम है और लेप करने के उपरांत बँगला पान गरम करके कच्चे तागे से उसपर लपेटे इसका सात दिन सेवन करना उचित है।

अन्य–असारों, बकरी के ताज़े दूध में पीसकर सदा लिंगपर लगाना बीर्य को बल देता है।

अन्य–लिंगकी सख़्तीके वास्ते मूली के बीज दशटंक मीठे-तेल में औटाकर दोनों समय लिंग पर मले सुस्ती दूर करता है।

अन्य–मुरदारसंग, मुरग़ी के पित्ते में पीसकर लिंगपर लगाकर स्त्री के पास जावे परन्तु बीर्यपात न हो स्त्री बँधजावेगी।

अन्य–हींग गौके पित्ते में हलकरके गोली बनाकर आतशी शीशेमें तेल निकाले वह तेल मले।

अन्य–मज़े के वास्ते स्त्री के शिरके केश जलाकर उसकी राख चम्बेलीके तेलमें मिलाकर लिंगपर लगावे और मैथुन करे और जो कबूतर की बीटकी सफ़ेदी भी मिलावे बहुत गुण करेगा।

अन्य–बीर्यके स्तम्भन के वास्ते गुण करे–थूहर का दूध गौ का दूध दोनों बराबर लेकर सारेदिन धूप में रक्खे रातको तेल में मले जब सूखजावे दो घड़ी के पीछे मैथुन करे।

अन्य–काले धतूरेकी पत्तियों का रस निकाल कर दोनों टख़-नोंपर लगावे जब सूखजावे भोग करे।

अन्य स्तम्भन–कपूर, कटाई के ज़ीरे के साथ शहदमें पीस-कर छोटे ज़ीरे की बराबर शाफ़ा बनाकर लिंगके छिद्रमें रक्खे एकसाइतके पीछे मैथुन करे स्तम्भन करता है और लिंग के छिद्र बढ़जाने को गुण करता है।

अन्य–हींग ख़ाली शहद में पीसकर ज़ीरे के सदृश बत्तियां बनाकर एक बत्ती लिंगके छिद्रमें रक्खे एक घण्टेके पीछे मैथुन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में देखा है कि कौंच की जड़ उँगली के शिर पोरके बराबर भोगके समय मुख में रक्खे जबतक मुख में रहेगी बीर्यपात न होगा।

अन्य–स्तम्भन को गुण करे–ऊंटके बालकी रस्सी बनाकर रानपर बांधे।

अन्य–लिखा है कि फिटकरी कमर में बांधना स्तम्भन को गुण करता है।

अन्य–लिखाहै कि इतवार को घोड़े और ख़च्चरकी पूँछका एक

एक बाल लेकर पीली कौड़ी में छिद्रकरके इन दोनों बालोंमें पिरोवे और दहनेबाज़ू पर बाँधकर सम्भोग करे बीर्यपात न होगा।

अन्य—लिखा है कि छछूंदरका खुसिया चमड़ेमें रखकर यन्त्र बनाकर कमर में बांधे जबतक कमर में रहेगा बीर्यपात न होगा जब उसको पेटकी तरफ़ लावेंगे बीर्य गिरजावेगा।

अन्य—कुचला दो आतशी शराबमें पीसे और नखपर गाढ़ा गाढ़ा लेपकरे सूखजाने के उपरांत भोग करे स्तम्भन करता है।

अन्य—करंजुवे की पत्तियों का रस निकालकर हथेलियों और तलवों में मलकर चारघड़ी के पीछे भोग करे एक पुस्तक में लिखा है कि स्तम्भन करता है।

यन्त्र—मुख्य करके बीर्यको रोकता है कुत्ता जिस मादासे जुफ़्ती करे और कुकरघएट होजावे नरकुत्ते की दुम काट कर चालीसदिन ज़मीनमें गाड़दे जब दुम गलकर हड्डियां शेष रहें उसको तागेमें पिरोकर अपने बालों में बांधकर भोग करे।

लाभ—भोगकरनेमें चाहिये कि मज़ेकी तरफ़ मन न लगावे किन्तु और बातोंका बिचार रक्खे जब जाने कि बीर्यपात हुआ चाहता है ठहरजावे एक पलके पीछे फिर आरम्भ करे इसीतरह बीर्यपातके समय क्रिया करताजावे और उत्तम यह है कि एक नियत संख्यासे जैसे पांच या सातसे प्रारम्भ करके हर दफ़ा एक बिषमसंख्या बढ़ता जावे दूसरी बात यह कि जाने कि मनी निकलती है छिंगुनिया और बीचकी उँगलीसे वह रग कि अंडकोष के नीचे और गुदाके बीचमें है ज़ोर से पकड़ले मनी फिर जावेगी इसी तरह हरबेर करे और उत्तम यह है कि जब भोगकरने बैठे एड़ी से वह रग दबाये रक्खे।

स्तम्भन की गोली—शिंगरफ़, मोचरस, अफ़ीम चार माशे, सुहागा एक माशे पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे एक गोली भोगके पहिले खावे।

यन्त्र—लिखा है कि ऊंटकी हड्डीमें छिद्र करके जिसके शिर-हाने रखदे बीर्यपात न हो।

अण्डवृद्धि का यत्न—जो दहिने अंड में शोथ हो बायें हाथकी रग असलीम को दागे और जो बायें अंड में शोथ हो दहने हाथकी रग असलीम को दागदे अंडकोष की सूजन और पीड़ा दूर होगी असलीम एक रग है छिंगुनियां और उसके पासकी उंगली के बीच में उसको रेशमी कपड़ा जलाकर दागे और दागनेकी रीति बहुधा लोग जानते हैं कि अपने हाथ पाँव दागा करते हैं।

औषध—वैद्यक की—अंडों के बढ़ जाने को गुणदायक—ढाक के जड़की छाल छाया में सुखाकर महीन पीस छानकर सात माशे ताज़े पानी से फांके नाभिकी पीड़ा को भी गुण करे।

चूर्ण अंड के लिये—कुन्दर, बायबिडंग, पुरानी ईंट बराबर कूटछानकर दो दाम घी के साथ खावे जो पहिले दिन क़ै हो-जावे अंडे अपनी दशापर आजावेंगे।

काढ़ा—अंडवृद्धि का गुणकारक—पांचटंक हबुल्लास, तीस-टंक जलमें औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ़ करके दशटंक घृत मिलाकर गुनगुना खड़े होकर पिये।

औषध—अंडवृद्धि को गुणकारक—भुना सुहागा छः रत्ती पीसकर पुरानेगुड़ में मिलाकर तीन गोलियां बनावे एक गोली हर सुबह खावे उसके ऊपर थोड़ा घृत पिये भोजन मलीदा बेनमक।

लेप—अंड के शोथ को गुणकारक—ऊंटकी मेंगनी और थोड़ी हल्दी औटावे जब गाढ़ी होजावे पीसकर गुनगुना पोतेपर लगावे।

अन्य—ठण्ढे पोते की सूजन को गुणदायक—खुरमे की गुठली का आटा खतमीके बीज सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य—पोते की सूजन और उसकी खुजली को गुण करे—

आधपाव भंग, आधपाव जलमें औटावे जब आधा शेष रहे उस जलमें पोतेको धोवे और उसकी वस्तु का लेप करे ।

अन्य–बकरी की मेंगनी जलाकर अजवाइन खुरासानी उसकी बराबर लेकर पानी में पीसकर गुनगुना लगावे ।

लेप–मैनफल के बीज, नाजवो के पत्ते के रस में पीसकर लेप करे ।

अन्य–अरंड की जड़ सिरके में पीसकर गुनगुनी लगावे ।

अन्य–कोयल्ट के वृक्ष कूटछानकर गुनगुने लगावे ।

अन्य–सूजन और पोते की पीड़ा को गुण करे–भँगरा, चूहे की मेंगनी, नकछिकनी बराबर ले और खासन के बीज दुगुने ले अरंड के पत्ते के रस में पीसकर लेप करे ।

अन्य–लड़कों के पोते बढ़नेके लिये गुण करे–अरहर पानीमें पीसकर गुनगुना लगावे ।

औषध–गरम पोते की सूजन को गुणदायक–भंग को पानी में भिगोकर पोतों को जबतक हो सके उसमें रक्खे दो बेर इसी तरह करे और उसकी वस्तु पोते पर बांधे ।

लेप–पोते की गरम सूजन को गुण करे–छिले मसूर, अनार की छाल बराबर पानी में पकावे जब गलजावे पीसकर लेप करे ।

अन्य–पोते की ठण्ढी सूजन को गुण करता है–रेंड़ी का गूदा पीसकर गरम करके रोज़ दो तीन बेर लगावे पोते का बड़ा होना दूर होजावेगा ।

लेप–माज़ूफल, असगंध पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे ।

अन्य–नरकचूर पीसकर गुनगुना लेप करके उसके ऊपर पानके पत्ते बांधे ।

औषध–पोते की ठण्ढी सूजन को गुण करे–मरवावृक्ष के पत्ते और टहनी को कूटकर रोटी बनाकर पोते पर बांधे सूजन दूर हो जावेगी और पीड़ा को भी गुण करे ।

लाभ–पोते की गरमसूजन का यत्न साफ़नकी फ़स्द है और खुरासानी अजवाइन और जव का आटा और कद्दू की लकड़ी और धनियें की पत्तियों का रस और काई और लाल चंदन का लेप करना और जो शीत से सूजन हो मेथी, अलसी के बीज शहद में लेप करे।

तरेड़ा–गरम और पोते की पीड़ा को गुण करे–टेसू के फूल औटाकर उसके पानी से तरेड़ा करे और उसका फ़ोग गुनगुना बांधे।

लेप–पोते की चोट को गुण करे–थोड़ी हल्दी पीसकर अण्डे की ज़रदी में मिलाकर गुनगुनी लगावे।

अन्य–पोते की सख़्ती को गुण करे–सफ़ेदज़ीरा, कालीमिरच पानी में पीसकर पकावे और लेप करे।

अन्य–पोते की सख़्ती को गुण करे–पित्ता, ज़ीरा, शहद में मिलाकर लगावे।

लेप–पोते की खुजली को गुण करे–सिरसवृक्ष की छाल पीस कर लेप करे।

अन्य–पोते की सूजन को गुणदायक–नाज़बो जल में पीसकर लेप करे।

अन्य–पोते और लिंग के व्रणको गुण करे–जलाया हुआ गेंगटा, अंगूरकी लकड़ी की राख, व्रणको थूकसे भिगोकर उस पर छिड़के।

अन्य–पोतेके घावको गुण करे–कीकरकी छाल ज़वकुटकर पानी में औटाकर व्रण को उससे धोया करे।

अन्य–लिंग के व्रणको गुण करे–कमीला तिलों के तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य–चाकसू महीन पीसकर व्रणोंपर छिड़के।

लेप–नाभिके ऊँचे होनेके लिये–जो नाभि ऊँची होजावे इस ओषधि से मुख्य दशापर आंजावे और वह ऊँचान कृत्रिम

होती है जाता रहता है—अजवाइन कूटछानकर मुरग़े के अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर लेप करे और उसके ऊपर शीशे का टुकड़ा बांधे।

उन रोगों का यत्न जो मुख्य स्त्रियों के होते हैं स्त्री के बांझ न होने का यत्न।

जिस स्त्री को यह रोग हो उसको अरबी में अकीया और उर्दू में बांझ कहते हैं और बांझ होना उन्हीं कारणों से होता है कि गर्भ को दूर करते हैं इस प्रकार के बांझ होने को मजाज़ी अर्थात् कृत्रिम बोलते हैं यह साध्य है और कभी यह रोग किसी कारण विना होता है बाज़े दरख़्तों के सदृश कि वे नहीं फलते यह मुख्य बांझपन है इसका यत्न नहीं और बांझपन के कारण कभी मर्दों से होते हैं और कभी स्त्रियों में इसकी परीक्षा की रीति यों लिखी है कि बाकले या गेहूं या जौ के सात दाने अलग अलग मिट्टी के नये बर्तन में रक्खे एक बर्तन में मर्द दूसरे में स्त्री सात दिन पर्यंत मूत्र करे जिसके मूत्रसे वह दाने उगें वह बांझ होनेका कारण नहीं है और जिसके मूत्र से दाने न उगें उसीमें बांझ होने का विकार मौजूद है या स्त्री पुरुष अलग अलग प्याले में पानी भरकर अपना अपना वीर्य उसमें डालें जिसका वीर्य पानीमें बैठजावे उसकी ओर बांझपना नहीं है या स्त्री पुरुष अलग अलग काहू या कद्दूकी जड़ में मूत्र करें सो जिसके मूत्र में वृक्ष सूखजावे बांझपन उसीकी ओर होगा अब थोड़ी औषधि बांझपने की लिखी जाती हैं।

चूर्ण—गर्भ होनेके वास्ते गुण करे—हाथीदांत का बुरादा कूट छानकर मिश्री बराबर मिलाकर रक्खे जब स्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो नौ माशे सात दिन पर्यन्त खावे सात दिवसके उपरांत पुरुष से मैथुन करे तीन दिनमें गर्भ स्थिर होजावे।

अन्य—गर्भ के लिये कायफल कूटछानकर बराबर शक्कर

मिलाकर ऋतु के उपरांत तीनदिन पर्यन्त एक हथेलीभर खावे भोजन दूध चावल फिर मैथुन करावे।

अन्य-असगन्ध कूट छानकर ऋतु के प्रारम्भ के पहिले एक टंक से दो टंक पर्यंत खावे भोजन दूध चावल और निश्चिन्त होने के उपरान्त भोग करावे।

गोली-गर्भको गुण करे-मुरमकी, नौसादर बराबर पीसकर चार चार तोलोंके अनुमान गोलियां बनावे स्त्री ऋतु में एक गोली रोज़ खावे निश्चिन्त होने के उपरान्त भोग करे।

औषध-गर्भपर नियत है-हाथी का मूत्र भोग के पहिले या भोगके समय स्त्रीको पिलावे बांझपने को गुण करे।

अन्य-पियाबांसे की जड़ आधाटंक पानी में पीसकर थोड़ा गाय के दूध के साथ पुरुष खावे और स्त्री को तीन दिन पर्यन्त खिलावे उसके पीछे भोग करे-बांझपने को गुण करे।

अन्य-काले धतूरे के फूल पीसकर शहद और घी में मिलाकर खिलाये।

अन्य-एक समुद्रफल थोड़े दही के साथ निगल ले मुख्य गुण करता है।

अन्य-करंजुवेकी गिरी स्त्री के दूधमें पीसकर बत्ती रक्खे।

शाफ़ा-थोड़े सरसों पीसकर तीन दिन पीछे ऋतु के शाफ़ा करे गर्भवती होजावे।

अन्य-अजवाइन एक हथेलीभर कई दिन पर्यंत खावे।

अन्य-गर्भ रहने को सहायता देताहै-बाज़की बीट कपड़े में लगाकर बत्ती करके जब स्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो भग में रक्खे और लिखा है कि थोड़ा शहद मिलाकर खिलावे मुख्य करके गर्भ स्थिर करे।

अन्य-कबूतर की बीट ऋतु के उपरान्त भग में रक्खे।

गर्भवती के यत्न का वर्णन।

गर्भवती स्त्री को फ़स्द औरमुसिल से मुख्य चौथे महीने के

पहिले और सातवें महीनेके पीछे पथ्य करना उचित है और पछने और ऋतु के रुधिर निकलवाने और भय की बातों और भयानक शब्दसे प्रति समय पथ्य करना चाहिये और दो महीनेके पीछे भोग न करना चाहिये और उचित है कि भोजन बहुत न करे और अजीर्णसे डराकरे और गर्भवती अति प्रसन्न चित्तहो और उसकी क्षुधा शुद्ध हो और उसको कोई रोग दौरान और शिरपीड़ा और मतली के सदृश न हो और उसको दाहने तरफ़ बोझ मालूम हो और दहिनीछाती बड़ी हो और कुचों पर सुरख़ी मालूमहो अवश्य करके लड़का जनेगी—और जिस स्त्रीको बेटीका गर्भ होगा उसमें उसके बिपरीत चिह्न पाये जावेंगे और उसका शिर भारी और मुखका पीलारंग और तेजरहित मुख होगा और भूख कम और आलस्य अधिक और कुच पतले और दूध भी पतला होगा और निद्रा बहुत आवेगी और चलने में पहिले दहिनापांव उठावेगी और खड़े होने के समय दहिना हाथ टेककर उठेगी और हकीमों ने यह भी लिखाहै कि गर्भवती हाथपर जूं रखकर उसपर अपना दूध दुहे जो जूं उस दूध में हिले उदर में लड़का होनेका चिह्न है और जो न हिले और मरजावे लड़की होनेकी निशानी है और यहभी लिखाहै कि चुक़न्दरके पत्ते सुखाकर गर्भवती स्त्रीकी नाक में फूंके जो छींक आवे तो लड़की जो न आवे तो लड़का जनेगी।

वह ओषधियाँ जो गर्भ को गिरने न दें।

बाज़ी स्त्रियों की आदत है कि उनका गर्भ शुरूमें गिर पड़ता है लाल कपड़े में लाल तागे से जो कुसुम में रँगा हो एक करंजुवा बांधकर नौ महीने पर्यन्त कमरपर बांधे रक्खे और क़हरबाशमई और दरूनज अकरबी भी कमर पर बांधना गुण करता है।

अन्य—वह सूत कि कुँवारी लड़कीने काता हो स्त्री के शिर से पांव के नख पर्यन्त नापकर उसको इक्कीस तारका बनावे और काले धतूरे की जड़ लेकर इसको सात टुकड़े करके उस तागे में जुदा जुदा बांधकर स्त्री की कमर में बांधे।

अन्य–ज़मुर्रद की अंगूठी बायें हाथ में पहिनना गर्भवती के ऋतु के रुधिर के बहने को बन्द करता है।

लेप–गर्भवती स्त्री के भगकी खुजली और दाह के लिये खतमी के बीज, मुल्तानी मिट्टी, मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अन्य–भीमसेनी कपूर, गुलाब में पीसकर भगमें मले।

लाभ–क़हरबा कमरपर बांधना गर्भ के गिरने को रक्षा करता है और मेदे पर लटकाना तुख़में को गुण करे और गर्दन पर कमलवायु को गुण करता है और छाती पर रखना मन को गुण करता है और + ताऊन को दूर करता है यह सब गुण इन और ओषधियों में मुख्य करके है।

ओषधि–गर्भवती स्त्रियों को क्षुधा के उपद्रव के दूरकरने को गुण करे–बड़ी इलायची दश टंक छः मिस्काल क़न्द के साथ पीसकर तीन माशे रोज़ खिलावे।

कठिनता से प्रसूति होने का यत्न।

गर्भवती स्त्रीके निकट जननेके समय सुगन्धित वस्तु न जानेदे और चार मिस्काल अमलतासके छिलके पानी में औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना कठिनता से प्रसूति को आश्चर्यदायक गुण रखता है और घोड़े के सुम की धूनी गुण करे बाज़े हकीमों ने लिखाहै कि थोड़ी घोड़े की लीद कबूतर की बीट के साथ पानी में घोलकर स्त्री को खिलाना प्रसूति की कठिनताको गुण करता है।

सर्पकी केंचुलका बफारा मुर्दा लड़के को तुरन्त निकालता है।

गाजर के बीजों का बफारा भी सुगमता से प्रसूति करता है।

बाबूने के पुष्प नौ माशे थोड़े पानी में औटाकर शहद आवश्यकता के अनुकूल मिलाकर पिलावे गुण करे।

ओषधि–यदि गर्भ की दशा में रुधिर ऋतु का जारी होजावे गूलर की जड़ जवकुटकर औटाकर पिलावे।

+ वह फोड़ा है जो अंडों या छातियों या बग़ल के नीचे निकला करता है।

चूर्ण–प्रसूति के लिये गुण करे–नीलोफ़र, मुलहठी, रगड़ा हुआ चन्दन, घिसी हुई मिश्री बराबर चूर्ण बनावे और साठी के चावल भिगोकर उसके जल से एक हथेली भर खावे।

क्रिया–मुख्य करके प्रसूति को गुण करे–मक़नातीस पत्थर बायें हाथमें लेना आज़माया हुआ है।

अन्य–सुगमता से प्रसूति के लिये–करंजुवा चमड़े में रखकर बाईं पिंडली पर बांधे, थोड़ी हींग खाना प्रसूति को गुण करता है और प्रसूति की पीड़ा के समय मनुष्य के शिर के बालों की धूनी लेना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

मनुष्य के केश जलाकर उसकी राख गुलाब में मिलाकर स्त्री के शिर पर मलना मुख्य करके प्रसूतिको गुण करे।

लाल कपड़े में नोन बांधकर स्त्री की बाईं ओर लटकावे मुख्य करके प्रसूतिकी कठिनता को दूर करे।

सर्पकी केंचुल स्त्रीके चूतड़पर बांधना और उसकी धूनी देना प्रसूतिकी सुगमताको गुण देता है।

चकमाक का पत्थर लत्ते में लपेट कर स्त्री के रानपर बांधना मुख्य करके प्रसूतिकी कठिनता को गुण करे और इसी प्रकार बारहसिंगे का सींग बांधना सुगमतासे प्रसूति करता है।

गिद्धका पर स्त्री के पांव के नीचे रखना प्रसूति को गुण करे और जो सरफ़ोंकाकी जड़ स्त्रीकी कमरमें बांधे शीघ्रही निकालदे।

जीते सर्पके दांत स्त्री के गले में लटकाना प्रसूति की सुगमताको गुण करता है।

अन्य–प्रसूतिकी सुगमताको गुणदायक–इन्द्रायणकी जड़ पीसकर गौ के घी में मिलाकर भग में दे।

औषध–उस मुरुल को ठहराती है कि प्रसूति के उपरान्त गर्भाशय में ठहराती है जो प्रसूति के उपरान्त गर्भाशय में होता है दो दाम खरबूज़े की छाल सुखाकर सौंफ़ के अरक़ में पीस कर पिये।

अन्य—पुराना खापरा खाना गुणकारी है।

अन्य—सातर औटाकर पिये।

अन्य—माजून बरशाशा एक हिबा भर मीठे जल में पीना गुण करता है।

अन्य—असूलका शरबत गुण करता है।

अन्य—वचका काढ़ा गुणदायक है।

अन्य—खशखाश का पोस्ता पिलाना गुण करता है।

उन औषधियों का वर्णन कि स्त्री को बांझ करें।

हाथी का ताज़ालेंड़ निचोड़कर एक तोला शहद में मिला कर तीन दिन पर्यंत ऋतु के होने के पीछे पिये और हाथी के लेंड़ से बत्ती को भिगोकर भग में रखना स्त्री को बांझ करता है।

औषधि—स्त्री को बांझ करे—नौसादर फिटकरी पानी में पीसकर ऋतुके पीछे भग में रखले।

अन्य—यदि प्रतिदिन सुबहको एक लौंग निगले गर्भ न रहे।

अन्य—इस्पंदनागौरी जलाकर ऋतुके दिनोंके उपरान्त खावे।

अन्य—यदि लिंगके शिर में मीठातेल और नोनमलकर सम्भोगकरे बीर्यको गर्भाशय न लेगा।

अन्य—शाफ़ा जो स्त्रीको बांझ करदे—बावची मीठे तेल में पीसकर ऋतु के पीछे शाफ़ा करे।

औषध—हल्दी पीसकर ऋतु के समय खावे और ऋतु के दिन हो चुके पर तीन दिवस पर्यन्त खावे गर्भ न रहेगा।

अन्य—स्त्रीको बांझ करदे—चँबेलीकी जड़ और गुलेचीनियां का ज़ीरा बराबर पीसकर छाया में सुखाकर ऋतु के प्रारम्भ में तीन दिन तक खावे और उसके ऊपर एक घूंट जल पिये।

काढ़ा—जो गर्भ को न रहनेदे—फ़राश बृक्षकी छाल और गुड़ औटाकर पिये।

अन्य—कालीमिरच सम्भोग के उपरांत भग में रखना गर्भ न रहने दे।

औषध–जो एक मिस्काल नील स्त्री खावे तो गर्भ न रहेगा।

अन्य–कालीज़ीरी, काबिली हड़ के बीज, नागेसर, नरकचूर, कलौंजी, कायफल हरएक पांच टंक कूटछानकर गोलियां बनावे, ऋतुके समयसे स्त्री सातदिनपर्यंत एक एक गोली खावे।

अन्य–लिखा है कि चँबेली की एक कली जो स्त्री निगले एक वर्ष पर्यंत गर्भ न रहे।

अन्य–रेंड़ी की एक गूदी निगलजावे एक वर्ष पर्यन्त गर्भ न रहे और दो निगले तो दो वर्ष पर्यन्त न रहे।

अन्य–खाने का नोन भग में रखना गर्भ न रहने दे।

अन्य–चूहे की मेंगनी शहद में मिलाकर भग में रखना गर्भ को न रहने दे।

दूसरा उपाय जो गर्भ न रहने दे–स्त्री अपनी रान सम्भोग के समय ऊँची न करे और पुरुष बीर्यपात होने के समय अपना लिंग बाहर निकाल ले और इस बात का ध्यान रक्खे कि अपने बीर्यपात होने के साथ स्त्री की रज न छूटे और स्त्री बीर्यपात होने के पीछे शीघ्र उठखड़ी होकर छींके।

अन्य–मुख्य करके गर्भ न रहने दे–लड़के का जो दांत पहिले गिरे और ज़मीनपर न गिरने पावे उसको लेकर इतवार के दिन चांदी से मढ़कर स्त्री भुजा पर बांधे।

अन्य–चूके के बीज बाईं भुजा पर बांधे गर्भ न रहने दे।

अन्य–जो मेंडक की हड्डी स्त्री अपने निकट रक्खे गर्भ न रहे।

अन्य–जो स्त्री सर्प का दांत अपने पास रक्खे गर्भ न रहे।

अन्य–काकुंज के सातदाने ऋतु के दिनों के पीछे स्त्री निगल ले।

अन्य–थूहर की लकड़ी छाया में सुखाकर जलाकर उसकी एक माशाभर राख लेकर बराबर की शक्कर मिलाकर इक्कीस दिन तक हर रोज़ खावे।

अन्य–मनुष्य के कान का मैल एक दाना बाकले का लेकर

बराबर कालेरंग के पशमीने में बांधकर स्त्री की गर्दन में लटकावे जबतक गले में रहे गर्भ न रहने दे।

शाफ़ा--सहँजने के बीज महीन पीसकर गौ के घी और शहद में मिलाकर ऋतु के उपरांत शाफ़ा करे।

लाभ--लिखा है कि स्त्री अपने पुत्र के मूत्रपर मूत्र करे कभी गर्भ न रहे मुख्य गुण रखता है।

ओषधि--यदि स्त्री हरमहीने में थोड़ा ख़च्चर का मूत्र पिये कभी गर्भ न रहे।

अन्य--गर्भ न रहने दे और गर्भाशयकी पीड़ाको जो भोग के उपरान्त रहे दूर करे--माजू महीन पीसकर उसमें रुई भिगोकर गोला बनाकर भोग से पहिले गर्भाशय के मुख पर्यन्त पहुँचावे।

गर्भ गिराने की ओषधि।

इन्द्रायण निचोड़कर उसमें रुई डुबोकर भग में रक्खे।

शाफ़ा--जो गर्भ को गिरावे कड़ुई तोरई बीजों समेत पीस कर शाफ़ा करे।

शाफ़ा--साबुन शाफ़े के सदृश बनाकर गर्भाशय के मुख में रक्खे या उसको कड़ुवे तेल में पीसकर उसमें रुई भिगोकर गर्भाशय के मुख में रक्खे।

अन्य--मुरमक्की गुड़ में लपेटकर खावे और पटोल पीसकर शाफ़ा करे।

काढ़ा--जो पेट से लड़का निकालने के वास्ते अद्भुत औषध है--वथुवे के बीज डेढ़ तोला आधसेर जल में औंटावे जब आधा पानी शेष रहे छान कर पिये।

चूर्ण--जो गर्भ को गिरावे--अशनान एक टंक चूर्ण करके फांके।

शाफ़ा--जो गर्भ को गिरावे और ऋतु के रुधिर को जारी करे--एलवा, बन्दाल, मुर बराबर लेकर तेज शराब में खरल करके शाफ़ा करे।

काढ़ा–जो लड़के का नाल, झिल्ली गर्भाशय से निकालता है–सहँजने के वृक्ष की छाल गुड़ के साथ औटाकर पिये।

अन्य–गर्भ को गिराता है–जंगली कबूतर की बीट और गाजर के बीज बराबर लेकर बफारा दे।

दूसरा शाफ़ा–गर्भ को गिरावे–मुनमुन कि गेहूँ में होता है और एलवा बराबर लेकर शाफ़ा करे।

लेप–गर्भ गिराने में सहायता करता है–ऊंटकटारे की जड़ पानी में पीसकर स्त्री के उदरपर लेप करे।

अन्य–गुड़हलका फूल पानी में पीसकर नाभि पर उसके चहुँओर लगावे।

अन्य–बफारा जो गर्भ को गिराता है–गन्धक, मुरमक्की, हींग, गूगल पीसकर बफाराले जो इसमें गायका पित्ता भी मिलावे अधिक बलवान् होजावे।

बफारा–जीते और मुर्दे लड़के को उदरसे निकाले और गर्भ को गिरावे–घोड़ेकी लीद स्त्री अपने आगे जलाये और बफाराले।

अन्य–अनार की छाल का बफारा भी गुण करता है।

औषध–जो लड़का गिरावे–बिसखपरे की जड़ छः उंगल काटकर उसका एक तरफ़ महीन बनावे और एलुवा गाय के पित्ते में पीसकर इसको महीन तरफ़ में खूब लगाकर सुखाकर गर्भके मुख पर्यंत पहुँचावे और उसकी दूसरी ओर एक तागे से दृढ़ बांध दे इसी तरह दो चार दिन रक्खे कि बच्चा गिरजावे।

ओषधि–शोरा आधा दाम निहार मुँह खावे गर्भ गिरजावे।

शाफ़ा–अरण्ड की नरम टहनी रेंडी के तेल में भिगोकर शाफ़ा करे।

बफारा–गधे के सुम और गूह का बफारा ले।

ओषधि–गर्भ को गिरावे–मेथी, हल्दी, फिटकरी एक एक दाम, तूतिया, भड़भूंजे के छप्परका धुवां आधा आधा दाम कूट छान कर पानी में मिलाकर शाफ़ा बनाकर सुखावे पहिले चिकनी

और नरम करनेवाली चीज़ें जैसे कि घी और पुदीने की पट्टी गर्भाशय में लगावे फिर सुबह और शाम वही शाफ़ा रक्खे और गर्भ के गिरने के उपरांत घी में एक लत्ता भिगोकर भग में रखना उचित है कि पीड़ा दूर होजावे और गर्भ के गिरजाने के उपरांत भी गोखुरू छःमाशे, ख़रबूज़े के बीज, सौंफ़ एक एक तोला औटा-कर छानकर मिश्री मिलाकर पिये और भोजन कुछ न करे और पानी के बदले कपास की हरी कलियां और बांस की हरी गांठें चार चार दाम पानी में औटाकर पिलाया करे।

अन्य काढ़ा—गाजरके बीज, सोयेके बीज, मेथी छः छः टंक दो सेर जलमें औटावे जब एक सेर शेषरहै मलकर छानकर दो सप्ताह पर्यंत इसी प्रकार पिये गर्भ गिरजावे।

अन्य—आज़माया हुआ—एलुवा, बिसख़परे की जड़, तूतिया, खिरनी के बीज, महुवेके बीज बराबर कूटछानकर बत्ती करके रक्खे।

शाफ़ा—गर्भके गिरने को आज़माया हुआहै—अरण्ड की कली एक दाम, एलुवा चारमाशे, खिरनी के बीज की गिरी चार माशे महीन पीसकर शाफ़ा बनाकर सुबह और शाम गर्भाशय के मुख में रक्खा करे।

अन्य—गर्भ गिराने के वास्ते—चूके की लकड़ी कि मशहूर लकड़ी है उसे बहुधा ऊंटोंकी ख़ारिश के वास्ते लगाते हैं एक भाग उसमें से लेकर पानीमें घिसे और तीन भाग रसौत मिला-कर छुहारे की गुठली के बराबर शाफ़ा बनावे और शाफ़ा करके गर्भाशय केमुख में रक्खे दो या तीन दिन में गर्भ गिरजावेगा और जो गर्भाशय कें मुखके गिर्दागिर्द दाने पड़जावें उसमें घृत लगावे।

काढ़ा—अख़रोट की छाल, बिनौला, मूलीके बीज, गाजर के बीज, सोये के बीज, कलौंजी बराबर लेकर जवकुटकर दुगुना गुड़ मिलाकर स्वभावके अनुसार लेकर जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे पिलावे।

भग के संकीर्ण करने का यत्न।

बैंगन सुखाकर पीसकर भग में रक्खे।

चूर्ण–भग की तंगी के लिये–ढाक की कलियां छाया में सुखाकर बराबर की शक्कर मिलाकर तीन टंक रोज़ खायाकरे चौदह दिनमें तंग होजावेगी।

शाफ़ा–मदार की जड़ स्त्री अपने मूत्र में पीसकर शाफ़ा करे चार घड़ीके पीछे पुरुषके पास जावे पुरुष उस पर मोहित होजावे।

अन्य–केंचुवे सुखाकर स्त्री अपनी भगमें मले कोई मनुष्य उससे जीत न पावे।

अन्य–तंगी के लिये–बबूल की छाल, झड़बेरी की छाल, मौलसिरी की छाल, कचनार की छाल, अनार की छाल बराबर लेकर थोड़े जल में औटाकर उस जल से शौच करे और औटाते समय एक सफ़ेद कपड़ा उसमें डालदे जब रंगीन होजावे थोड़ा कपड़ा भग में रक्खे।

चूर्ण–ढाक की कोंपल छाया में सुखावे और कूटछानकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर आधे टंक से दो टंक पर्यन्त खावे सात दिन में तंगी का गुण प्रकट होगा।

अन्य–सूखी बीरबहूटी घी में पीसकर मले।

अन्य–भग को तंग करे–गेंदे की छाल जलाकर उसकी राख मले।

अन्य–जाहीजूही के फूल कूटछानकर भग में रक्खे।

अन्य–बकायन के वृक्ष की छाल सुखाकर पीस छानकर भग में रक्खे बहुत गुण करे।

अन्य–खट्टी पालक के बीज कूट छानकर भग में रक्खे।

चूर्ण–उस तरी को दूर करे जो गर्भाशय से बहती है–मौलसिरी की छाल सुखाकर कूट छानकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर हरसुबह एक हथेली भर ताज़े पानी से फांके।

अन्य–इमली के बीज की गिरी कूट छानकर सुबह और शाम भग में मला करे।

अन्य–समन्दरझाग, हड़ के बीज की गिरी बराबर लेकर पीसकर भग में रक्खे तंग होजावे।

अन्य–भग के संकीर्ण होने के वास्ते आज़माई हुई है और इससे उत्तम कोई औषध नहीं है–चीनियां गोंद छः माशे महीन पीसे और दो तोले फिटकरी भूने और भूनते वक्त पानी में वही चीनियां गोंद मिलाकर उस पर छिड़के ठण्ढा होने के पीछे पीसे फिर थोड़ा गुलधावा मिलाकर दूसरी बेर पीसकर भग में रक्खे–आश्चर्यदायक लाभ देवे।

अन्य–तंगी के वास्ते गुणकरे–कचनाल की कली एकदाम, अनार की छाल, मोचरस पांच पांच माशे, बबूल की फली कच्ची सुखाकर चार, माजू एक महीन पीसकर कपड़े में छानकर सेवन करे।

### सुहाग सोंठि।

यह वैद्यों का नुस्ख़ा है स्त्रियों की कमर की ताक़त के वास्ते–सोंठ आधपाव, घी तीनपाव, गौ के दूध में औटावे जब गाढ़ा होजावे तब ख़रबूज़े के बीज की गिरी, चिरौंजी, निशास्ता, सिंघाड़ा दो दो तोले, असगन्ध, सफ़ेद मूसली, मोचरस, गोंद नागौरी, इलायची के दाने, शतावर दो दो तोले, तेजपात, चन्दन पीसकर तज, गुलधावा नौ नौ माशे, गोखरू, पीपल, कालीमिरच, बालछड़, नागरमोथा, कौंच के बीजों की गिरी, चीनियांगोंद छः छः माशे कूट छानकर शक्कर में माजून बनावे।

### स्त्री के ऋतु के रुधिर के अधिक बहने का यत्न।

यदि नियत दिवसों में न हो उसको इस्तख़ासा बोलते हैं इस रोग में छातियों के नीचे सिंगी लगाना बहुत गुणदायक है।

औषध–जो ऋतु के रुधिर को बन्द करदे–बकायन की कोंपल एक तोला भङ्ग की तरह घोटकर रस निकालकर पिये।

अन्य-जो रुधिर को बन्द करदे-कपास के फूल जलाकर उसकी राख एक हथेली भर पानी के साथ फांके।

अन्य-सरयाला जलाकर उसकी राख एक हथेली भर फांके।

अन्य-कुड़ाकी छाल सात माशे कूटछानकर थोड़ी शक्करके साथ पानीसे फांके।

चूर्ण-ऋतुके अधिक रुधिरको बन्द करताहै-मसूर, अरहर, उड़द दो तोले, साठी के चावल एक तोले सबको जलाकर महीन पीसकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर खावे।

चूर्ण-जो रुधिरको बन्दकरे-चने जलाये हुये, तज, लोध बराबर पीसकर शक्कर मिलाकर एक हथेली भर फांके।

अन्य-ऋतु के रुधिरके बन्द करनेके लिये-मालतीके फूल, शक्करतरी छः छः माशे मिलाकर खावे।

अन्य-राल पीसकर शक्कर के साथ चूर्ण बनाकर खावे।

अन्य-संगजराहत, गेरू बराबर लेकर चूर्ण बनावे खूराक छः माशे सुबहको ठण्ढे जल से फांके।

अन्य-छोटी दुद्धी छायामें सुखाकर कूट छानकर हर सुबह एक हथेलीभर खावे।

अन्य-इस्तरखासा दूर करने के लिये-लाखके दानेशक्कर बराबर पीसकर एक हथेली भर जल से खावे।

अन्य-असगन्ध कूट छानकर मिश्री बराबर मिलाकर एक तोला भर पानी से फांके।

अन्य-बबूल का गोंद भूनकर गेरू बराबर पीसकर हर सुबह दो मिस्काल खावे।

अन्य-ऋतुके रुधिरकी अधिकता को गुणदायक-हरसिंघार की कोंपलें सात पानी में पीस छानकर पिये।

अन्य-मुलतानी मिट्टी पानी में भिगोकर उसका साफ़ जल पिये।

काढ़ा-जो ऋतुके अधिक रुधिरको गुण करे-सूखी धनियां एक हथेली भर औटाकर छानकर कई दिन खावे।

अन्य–कचनालकी कलियां, हरागूलर, खुरफ़े का साग, मसूर की दाल और पटसन के फूल पकाकर लाल चावल के भातके साथ खाना ऋतुके रुधिर को रोकता है।

सुपारी पाक।

जो ऋतुके रुधिर और भगकी तरीके दूर करने के वास्ते गुण करे–गौ का दूध पांचसेर सुपारी चिकनी पावभर कूटछान कर दूधमें मधुरी अग्निपर औटावे जब पकजावें तब आधसेर शक्कर डालकर क़वामकरे फिर छोटी बड़ी माई पक्के अढ़ाई अढ़ाई दाम, पक्की सुपारी के फूल, धवई के फूल, पक्के पांच पांच दाम, ढाक का गोंद आध पाव सबको सुरमें की भांति महीन कूटछानकर जब क़वाम ठण्ढा होनेलगे औषध उसमें मिलावे और साफ़ बर्तन में रखकर आवश्यकता के अनुकूल एकदामसे तीनदाम पर्यंत खावे।

टिकिया–जो रुधिरकी अधिकता को बन्द करदे–रसौत, बबूल का गोंद, राल एक एक माशा, सुपारी अढ़ाई माशे पीस छानकर पानी में एक माशे की बराबर टिकिया बनावे दो तीन टिकिया खावे।

अन्य–जो रुधिर को बन्दकरे–गधेकीलीद सुखाकर पोटलीमें बांधकर भगमें रक्खे।

अन्य–बकरीकी मेंगनी सूखी पीसकर पोटली बनाकर गर्भाशय के मुख के निकट रक्खे जो उसमें थोड़ा कुन्दर मिलावे अधिक गुण करेगा।

अन्य–रुधिरको रोके-अनारकी छाल औटाकर एकतोला पिये।

अन्य–ऋतु के अधिक रुधिर आने के लिये आज़माया हुआ है–ज़ीरा भुना और कच्चा लाल चावलों की पीच में पीसकर भग में रक्खे।

ऋतु के रुधिर के बन्द होजाने का यत्न।

यदि शरीर में रुधिर के कम होने के कारण होजावे कोई

हानि नहीं और जो किसी और कारण से बन्द हो तो यत्न करना चाहिये—साफ़न की फ़स्द ऋतु के दिनों के पहिले खोलना रुधिर को खोलता है।

काढ़ा—जो रुधिर को जारी करे—तांबा सुर्ख़, मंजीठ, मेथी, गाजर के बीज, सोये के बीज, मूली के बीज, अजवाइन, सौंफ़, तितली की पत्तियां, गुड़ बराबर मिलाकर औटाकर पिये।

अन्य—रुधिर को खोलने के वास्ते नरमें अर्थात् कपास के पत्ते और फूल आधपाव सेरभर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ़ करके चार दाम गुड़ मिलाकर पिये।

काढ़ा—जो गर्भ को गिरादे और रुधिर जारी करे— अख़रोट की छाल, मूली के बीज, अमलतास की छाल, परसियावसान, बायबिडंग, जवकुटकर हरएक नौ माशे ले और गुड़ औषधियों से दुगुना ले सबको मिलाकर औटाकर पिये और बाज़े कलौंजी और नरमें की छाल भी अधिक करते हैं।

काढ़ा—रुधिर जारी करने के वास्ते—अधकुचली नींब की छाल दो तोले, अधकुचली सोंठ चारमाशे, गुड़ दो तोले, डेढ़पाव जल में औटावे जब आधपाव जल शेष रहे छानकर पिये।

काढ़ा—कमर की पीड़ा के लिये जो ऋतु में स्त्री को होती है गुण करे—सोंठ, बायबिडंग आधादाम, गुड़ दो दाम औटाकर पिये।

कल्क—जो रुधिर को जारी करे—कालेतिल, गोखुरू एक एक तोला रात को जल में भिगोदे सुबह को रस निकाल कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

चूर्ण—रुधिर जारी करे—मूली के बीज, गाजर के बीज, मेथी कूट छानकर एक हथेली भर गुनगुने पानी से फांके।

अन्य—मँजीठ पीसकर एक हथेली भर फांके।

अन्य—कलौंजी की जवारिश स्त्री के ऋतु का रुधिर और मूत्र लाती है और गर्भाशय की पीड़ा को दूर करती है।

बत्ती—ऋतु के रुधिर को आराम से जारी करे—गुड़ थोड़े घृत में मिलाकर किसी बर्तन में आग पर रक्खे जब बत्ती बनाने के योग्य होजावे थोड़ा बिरोज़ा सूखा पीस मिलाकर बत्ती बनाकर गर्भाशय के मुख में पहुँचावे।

अन्य—जो नख का धुवां स्त्री कई बेर ले रुधिर जारी होजावे।

अन्य—गंदेबिरोज़े का धुवां भी रुधिर जारी करता है।

लेप—गर्भवती स्त्रियों के नले की पीड़ा को गुण करे—कालीज़ीरी दो दाम, रेंड़ी का गूदा आधपाव, सोंठ एक दाम सबको औटाकर पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—गर्भाशय को तरी से साफ़ करे—मुरमक्की, लौंग बराबर कूट छानकर लत्ते में बांधकर सुबह और शाम गर्भाशय के मुख में पहुँचावे तीन दिन में साफ़ करे।

अन्य—गर्भाशय की तरी को सुखावे—अजमोद, बायबिड़ंग, सूखा गंदाबिरोज़ा एक एक भाग, सोये के बीज, लाहौरीनोन आधा आधा हिस्सा, शहद मिलाकर उसमें रुई भिगोकर गर्भाशय पर्यंत पहुँचावे।

अन्य—बायबिड़ंग, समुद्रझाग एक एक भाग, गंदाबिरोज़ा सूखा, लाहौरीनोन दो दो भाग, कूट छानकर कपड़े में बांधकर भग में रक्खे।

अन्य—उस गर्भाशय की पीड़ा को जो शीत से हो गुण करे—तिल मीठे तेल में पीसकर गुनगुना नाभि के नीचे लेप करे।

अन्य—गंदाबिरोज़ा, लौंग, बायबिड़ंग, लाहौरीनोन, नरकचूर थोड़ा थोड़ा लेकर मीठे तेल में पीसकर उसमें रुई भिगोकर रक्खे गर्भाशय को तरी से साफ़ करता है।

अन्य—गर्भाशय के व्रण को गुण करे—पहिले शहद से शाफ़ा करे कि पीब और मैल दूर होजावे फिर माजू जल में औटाकर उस जल से भिगोकर शाफ़ा करे कि सूखजावे और कुछ भी तरी भग में न रहे।

अन्य–हल्दी महीन पीसकर घृत में मिलाकर उसमें रुई भिगोकर शाफ़ा बनावे और गर्भाशय पर्यंत पहुँचावे गर्भाशय के शोथ को बिल्कुल नष्ट करे और बहुत गुण करे।

केसर का तेल–गर्भाशय की सख़्ती को गलावे–पञ्चास मिस्काल केसर साढ़े तीन रत्ती ले मीठे तेल में डालकर पांच दिवस पर्यंत रहने दे और हर रोज़ हिलाया मिलाया करे फिर सेवन करे।

शूलरोग का यत्न।

वजे मुफ़ासिल जोड़ों की पीड़ा को कहते हैं और नकरस पांव की उँगलियों की पीड़ा का नाम है और वजे उज़्ज़हर पीठ और कमर के दर्द को कहते हैं और अरकुन्निसा को हिन्दी में रांघन कहते हैं और वह पीड़ा है कि चूतड़ से शुरू होती है और पांव की उँगलियों पर्यंत पहुँचती है यद्यपि यह सब रोग बराबर मुंजिज़ और मुसिल के विना नहीं जाते हैं परन्तु थोड़ी औषध सुगम कि जो गुणदायक है ग़रीबों के वास्ते लिखी जाती है–फ़स्द जो सब रोगों को नाश करे इन रोगों में बहुत गुण करे फ़स्द के पीछे जो दवा सेवन करे शीघ्र गुण करेगी काढ़ा मुंजिज़ वजह वजे मुफ़ासिल को गुण करे–सौंफ़, कासनी के बीज, मकोय, परसियावसान दो दो टंक, सौंफ़ की जड़, कासनी की जड़, मुलहठी, कबर की जड़ दो दो मिस्काल, बाबूने के फूल, गुलक़न्द तीन तोले औटाकर पिये।

चूर्ण–सोरंजान का चूर्ण जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और दोषों को निकाले मलके पकाने के उपरांत पांच दिन पर्यंत सेवन करे–मीठा सोरंजान दश टंक, सनाय सात टंक, पीले हड़ की छाल चार टंक, तुरबुद सफ़ेद खोखली की हुई तीन टंक, बादाम की गिरी तीन टंक, मेंहदी के पत्ते दो टंक, केसर एक दाम कूट छान कर चूर्ण बनावे क़ंद औषधियों के तोल से आधी ले खूराक पांच टंक पर्यंत।

चीते की गोली—जो मुसिल है और जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—एलुवा दश टंक, पीले हड़ की छाल पांच टंक, बनाई हुई तुरबुद, सोरंजान, गूगल दो दो टंक, सोंठ, चीत, राई, हिन्दी-नोन, इन्द्रायन का परदा, मँजीठ एक एक दाम, अजवाइन, पीपल, कालीमिरच हर एक आधा टंक, क़ंद तीन टंक कूट छान कर गोलियां बनावे खूराक तीन टंक स्वभाव के अनुकूल यह गोलियाँ ठण्ढे स्वभाववालों के योग्य हैं।

गूगल की गोली—जो जोड़ों के दर्द और घुटने और पीठ की पीड़ा को गुण करे—गूगल एक भाग, गुड़ दो भाग, बेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली थोड़े घृत के साथ निगल लिया करे इसका सेवन मुसिल लेने के पीछे चाहिये।

गोली—मुसिल के उपरांत सेवन की जाती है जोड़ों की पीड़ा और कमर के दर्द और पीठ को गुण करे—काली और सफ़ेद मूसली, पीपल, अजवाइन, पीपलामूल एक एक दाम, शतावर, बिधारा, सोंठ, असगंध दो दो टंक कूट छानकर गुड़ में मिलाकर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनावे खूराकस्वभावके अनुकूल।

गोली—सम्पूर्ण शरीर की पीड़ा को जिसको हड़फूटन बोलते हैं गुणकरे—पीले हड़की छाल, कालीहड़, सौंफ, कालीमिरच, पीपल, करंजुवे की गिरी, कालीज़ीरी एक एक भाग, दाख मुनक्के पांच भाग, कूट छानकर गोलियां बनावे खूराक दो टंक।

शिंगरफ़ की गोली—जोड़ों की पीड़ा और आतशक को गुण करे—शिंगरफ़, हल्दी, अजमोद, अकरक़रा, नींब के पत्ते, अजवाइन, सम्भालू के पत्ते, इन्द्रायन की जड़, सरफोंका, असगन्ध, पाढ़ी, कालीमिरच, बकायन की जड़, मदार की जड़, भिलावाँ बराबर कूट छानकर बराबर गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे खूराक एक टंक।

अन्य—शिंगरफ़, पारा, अफ़ीम दो दो दांग, अजवाइन पांच दांग, भिलावें की टोपी दूर करके सात दांग, पुराना गुड़

पाच दांग, पारा और शिंगरफ़ मिलाकर पीसकर ओषधियों को कूट छानकर अदरक के रस में खरल करके गोलियां बनावे और एक गोली खावे इस बातका विचार रखना चाहिये कि शिंगरफ़की गोली और पारेकी गोली और सम्मुलफ़ार के खाने के दिनों में खटाई, बादी, मांस और नोन से पथ्य करे और चावल, दूध या चटनी या गेहूं की रोटी बिना नोन के बहुत घी डालकर या चावल और दही खाया करे ।

काढ़ा—बैद्य की रीति से कमर की पीड़ा को गुण करे—अंजीर की जड़ की छाल, सोंठ, धनियां बराबर लेकर जवकुट कर दश दाम लेकर एक रत्ती ले जल में रात को भिगोकर सुबह को औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर पिये ।

हलुआ—कमर की पीड़ा को गुण करे—सोंठ, रेंड़ी की गिरी छः छः दाम, घी और शक्कर बारह बारह दाम गाय का दूध आध सेर पहिले रेंड़ीकी गिरी पीसकर घी में भूने फिर दूध में मिलाकर औटावे जब गाढ़ा होजावे शक्कर डालकर हलुआ बनावे खूराक स्वभाव के अनुकूल खावे । चारदाना—जोड़ों की पीड़ा और कफ़ बात के रोगों को गुण करे—हालों, अजवाइन, कलौंजी, मेथी बराबर लेकर सुबह को एक चुटकीभर अर्थात् तीन उँगलियों से जितनी उठे फांककर पानी के घूंट से निगलजावे इस नुस्ख़े को हातिमबदन कहते हैं ।

माजून—जोड़ोंकी पीड़ा को सोरंजान दशटंक, सना पांच टंक, सोंठ, असारों, सफ़ेद ज़ीरा दो दो टंक, शहद सबके बराबर लेकर माजून बनावे खूराक दो मिस्काल गरम जल से खाय ।

औषध—कमर और जोड़ों की पीड़ा को जो गरमी से हो गुण करे—धनियां एक टंक, क़न्द तीन टंक मिलाकर खावे और तीन टंक ख़शख़ाश, तीन टंक क़न्द के साथ भी गुण करे ।

चारदाना—जो ठंढी बीमारियों में सेवन करतेहैं—मालकंगनी, पँवार के बीज, बावची, हालों बराबर मिलाकर रक्खे तीन माशे,

सुबह को पानी के साथ निगलजावे यह औषध सफ़ेद दाग़ को भी गुण करती है।

औषध—जोड़ोंकी पीड़ा और बाई की पीड़ा को गुणकरे और कफ़ की निवृत्तिकारक और आरोग्यताकी देनेवाली है—मालकंगनी लेकर पहिले दिन एक दाना निगले और हररोज़ एक दाना बढ़ाया करे जब सौ दाने तक पहुंचे एक एक कम करे इस अवसर कमी और ज़ियादती में यह रोग नाश हो जावेगा और क्षुधा अधिक होगी जो ज़ियादा करने के दिनों में गरमी मालूम हो अधिक न करे किन्तु उसी समय से एक एक कम करे।

अन्य—कमरकी पीड़ाको गुणकरे—करीलकी लकड़ी जलाकर दो माशे थोड़े घृत के साथ खावे।

अन्य—हाथ पांव के रहजाने को गुणकरे और सदा के क़ब्ज़ को दूर करता है और जिस मनुष्य को कौलंजी हो उसको बहुत गुण करे—रेंड़ी छीलकर निगल जावे पहिले दिन एकदाना दूसरे दिन दो दाने इसीतरह एकएक अधिक करते रहें जब सात दाने तक पहुँचे एक एक दाना हररोज़ कम करें।

अन्य—बाई की पीड़ा को गुण करे—हररोज़ एक माशा भर रवासन के बीज खावे।

अन्य—जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे—ख़शख़ाशका पोस्ता अपने स्वभाव और बल के बराबर पानी में भिगोदे और इतना पिये कि नशा न हो।

अन्य—क़लमीशोरा दो माशे, क़तीरा छः रत्ती, एकदाम शहद में मिलाकर तीन दिन खावे और दो माशे मीठेतेल में मिलाकर कमर पर लगावे।

अन्य—शक्कर और खोपरा खाना कमर की पीड़ा को गुणदायक है।

अन्य—महुवे के बीज का तेल जो कोल्हू में निकालते हैं और घी की तरह पीला निकलता है जोड़ों पर मलना बाई की पीड़ा

और जोड़ों की पीड़ा आदि को और शीत के रोगों को गुण करे।

अन्य—कमर की पीड़ा को गुण करे—रेंड़ी, लाहौरीनोन, मैदा लकड़ी एक एक तोला, हींग छः माशे, गेहूं का आटा आधपाव सबको साथ पीसकर रोटी पकावे जब एक तरफ़ रोटी पकजावे पीड़ा की जगह पर बांधे।

फलवे का तेल—क़न्द के वृक्ष के सदृश ज़रदी माइल होता है जो पहाड़ से लाते हैं उसको मुसिलके उपरांत मलना जोड़ोंकी पीड़ा और वादी और कफ़ और शीतकी पीड़ाको गुण करता है।

सम्भालू का तेल—उसका मलना जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे—सम्भालू कूटकर उसका रस निचोड़कर उसकी बराबर मीठातेल मिलाकर औटावे जब पानी जलजावे और तेलमात्र रहे छानकर गुनगुना पीड़ा पर मले और सम्भालू के पत्ते गरम करके उस पर बांधे।

बेदअंजीर का तेल—जोड़ोंकी पीड़ा को गुण करे—अरण्डकी जड़ दो सेर आठसेर जलमें औटावे जब दो सेर रहै रेंड़ी के तेल में डालकर इतना औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे मर्दनकरे।

अन्य—जोड़ों की पीड़ा को गुणदायक—अलसी का तेल, सरसों का तेल, तिलों का तेल आध आध पाव धतूरे के वृक्षका रस कि पत्ती फल और जड़ समेत निकाला हो इन सब तेलों में डाल कर मधुरी अग्निपर जोश दे जब रस जलकर तेल शेष रहे छानकर पीड़ापर मले उसपर अरण्ड या मदार के पत्ते बांधे।

मदार का तेल—बातको पचाताहै और उसका मर्दन जोड़ों की पीड़ाको गुणकरे—अधकुचली मदारकी जड़ कडुवे तेल में जलावे जब जलकर नीचे बैठजावे तेल छानकर मले और केवल मदार के पत्ते गरम करके घुटनोंकी पीड़ापर बाँधना भी गुण करता है।

तेल—जोड़ों की पीड़ा और फ़ालिजको जिसे बाई ने पकड़ा हो गुणदायक है—मीठातेल पावभर, लहसुन आधपाव, भिलावें चार, लहसुन छिला हुआ और भिलावां मीठे तेल में जलावे जब

राख होजावे फिर छान कर सेवन करे और हवा से पथ्य करे।

इस्पन्द का तेल—कमर और पिंडली और पहलू की पीड़ा और रांघन को गुण करे—इस्पन्द मीठे तेल में जलावे और छान कर सेवन करे और बाज़ों के बिचार में इस्पन्द के तेल की यह रीति है—इस्पन्द आठ दाम, सोंठ दो दाम रात को पानी में भिगोदे सुबह को आध सेर तिलों के तेल में औटावे जब पानी इस्पन्द और सोंठ जलकर तेलमात्र रहे छानकर मर्दन करे और बाज़े इसमें कड़वी कठ मिलाकर मलते हैं और बावची के तेल का मर्दन जो फ़ालिज में वर्णन हुआ रांघन को गुण करे।

गोली—जोड़ों और पांवकी उँगलियों की और रांघन की अधिक पीड़ा को गुण करे—चीत, अफ़ीम दो दो टंक, काहूके बीज, अजवाइन दश दश टंक कूट छान कर चिलग़ोज़े की गिरी के बराबर गोलियां बनावे और एक गोली खावे।

अजवाइन का तेल—जो गठिया को गुण करता है—अजवाइन पीसकर मीठे तेल में मिलाकर मले।

तम्बाकू का तेल—जोड़ों के दर्द के वास्ते—तम्बाकू आध सेर, तिलों का तेल पाव भर, तम्बाकू तोड़कर आध सेर पानी में रातको भिगोवे सुबह तम्बाकू का पानी तिलों के तेल में मिलाकर मधुरी अग्नि पर औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे साफ़ करके मले।

नाजबो का तेल—घुटने की पीड़ा को गुण करे—नाजबो की पत्तियों का पानी दो भाग, मीठा तेल एक भाग लेकर औटावे जब तेल रहजावे एक तोलाभर चने का पानी उसमें ज़ीरा पकाया हो मिलाकर पिये और जोड़ पर भी मले।

चोबचीनी का तेल—जोड़ों की पीड़ा और पीठ की पीड़ा और उस पीड़ाको जो आतशक से पैदा हो गुण करे—अधकुचली चोबचीनी, मीठातेल दश दश मिस्काल पांच सेर जल में औटावे जब पानी जलजावे साफ़ करके सेवन करे।

चमगादर का तेल—जोड़ों की पीड़ा और वदन की ऐंठन और फ़ालिज और कांपनी को गुण करे—चमगादर बड़ा मोटा मीठे तेलमें औटावे जब चमगादर गलजावे साफ़करके सेवनकरे और इस तेलको लिंगके छिद्रमें टपकाना मूत्र को भी जारी करता है।

मेहँदी का तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुणकरे—मेहँदी की पत्तियां चारदांग पानी में औटावे जब आधा शेष रहे साफ़ करके आध सेर मेहँदी के तेल के साथ जलाकर सेवन करे।

तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—निर्मापक का बनाया हुआ है मेहँदी के पत्ते, सम्हालू, नाजवो के पत्ते, धतूरे के पत्ते, मदार के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, मकोय के पत्ते बराबर लेकर उनका रस निकालकर और पत्तों की बराबर तिलों का तेल डालकर औटावे और इस्पन्द एक तोला, सोये के बीज एक तोला, अजवाइन छः माशे मिलावे जब यह औषध जलकर तेलमात्र रहे साफ़ करके पहिले अफ़ीम दो माशे तेल में मिलावे फिर सोरंजान कड़वी एक तोला भर मिलाकर सेवन करे।

सोंठ का तेल—जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे और हवाको पचावे—अदरक का पानी चार भाग, मीठा तेल आधा भाग मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल रहे साफ़करके गुनगुना मर्दन करे।

केवड़े का तेल—पीठ और जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और ढीले जोड़ को सख़्त करे—केवड़े का फूल मीठे तेल में डालकर चालीस दिन धूप में रखकर मर्दन करे।

तितलीका तेल—मलना पीठ और जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे।

बफारा—कंधेकी पीड़ाके वास्ते—करंजुवा औटाकर बफारा ले और पत्ते बांधे और हवा से बचा रहे जिसको सर्दी पकड़ले यह बफारा गुणकरता है सिरस के पत्ते, सम्हालूके पत्ते, सहँजने के पत्ते पानी में औटाकर बफारा ले और ओषधियों को पानी से निकालकर जोड़पर बांधे और हवा से बचा रहे।

बफारा—जोड़ों में गांठ पड़जाने में और हर जोड़की पीड़ाको

गुण करे–सम्हालू की पत्तियां, सोये के बीज, इस्पन्द औटाकर बफारा ले।

औषध–जोड़ोंकीपीड़ाको गुणकरे-धतूरेकेपत्ते गरमकरके बांधे।

लप–पीठ और घुटने की पीड़ा को गुण करे–मैदा लकड़ी पीस कर गुनगुनी बांधे।

अन्य–घुटनेकी पीड़ा के वास्ते नींबकी कोंपल और उसके अन्दरकी छाल पीसकर उसका गहरा पानी लेकर गुनगुना लेप करे।

लेप–जोड़ोंकीपीड़ा और घुटनेकी पीड़ा और पांवकी उँगलियों की पीड़ाको गुणकरे–नरमेंकी पत्तियां मीठेतेलमें पीसकर लगावे।

अन्य–घुटने और जोड़ और कमर की पीड़ा को गुणकरे–बिनौला कूटकर थोड़े पानी में औटावे जब गलजावे पीसकर टिकिया बनाकर एक दिन में दो बेर जोड़पर गुनगुना बांधे कई दिनमें पीड़ा दूर होजावे।

लेप–जोड़की पीड़ाको गुणकरे–गाय का ताज़ा गोबर सिरके में पकाकर पीड़ाकी जगह और सूजनपर बांधे।

लेप–घुटने की पीड़ा को गुण करे–कनेर की पत्तियां औटाकर कूटकर मीठे तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य–बकरीकी मेंगनियां दो भाग, जौ का आटा एक भाग, सिरके और अरण्ड के तेल में मिलाकर लेप करे।

लेप–पांवकी उँगलियों की गरम पीड़ाको गुणदायक–बज़रकुतूना सिरकेमें पकाकर लेपकरे।

अन्य–गरमपांवकी उँगलियों को गुणदायक है–काई लगावे और इसीप्रकार जौ का आटा और ख़तमी कूटछानकर लेपकरना और शहद में मिलाकर लगाना ठंढे पांवकी उँगलियों की पीड़ा को लाभ देता है।

अन्य–घुटने की पीड़ा को गुण करता है–सहँजने के बीज पीस कर गुनगुने लेपकरे जो पुरानी घुटने की पीड़ाहो दूरहोजावे।

अन्य–कांटेदार थूहर को फाड़कर पीड़ा की जगह पर

एक रात दिन बांधे रक्खे और कई दिन इसीप्रकार सेवनकरे।

लेप–जोड़ोंकी पीड़ाके लिये छिलेतिल, बाबूना एक एक तोला, रेंड़ीकी गिरी छः माशे पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–सरकण्डेकी जड़, सोंठ पीसकर मीठेतेल में मिलाकर गुनगुना मले और जो सरकण्डे की जड़ न हो तो नरकुल की जड़ काफ़ी है।

लेप–पांव की उँगलियों की पीड़ा को गुणकारक–अरण्ड के पत्ते औटाकर पीसकर लेप करे।

अन्य–शिरपीड़ा को ठहरावे–लोबान पीसकर लगाकर सेंक करे पीड़ा दूर हो जावे।

लेप–घुटनेकी पीड़ा और रांघनको गुणदायक–साबुन मेहँदी में मिलाकर पानी में पीसकर लेप करे और बाज़ों ने इन्द्रायन मिलाना भी लिखा है।

लेप–घुटने की पीड़ा को गुणकरे–मेहँदी की पत्तियाँ अरण्ड की पत्ती पीस कर गुनगुने घुटने पर बांधे।

औषध–जो कमर और पीठकी पीड़ा को गुणकरे–हुलहुल की छाल उसके ऊपर की स्याही दूर करके अन्दर की छाल लेकर छाया में सुखाकर कूटकर पकावे और उसकी बराबर शक्कर मिलाकर निहार पांच टंक सौंफ़ के रस के साथ खावे।

अन्य–पांव की उँगलियों की पीड़ा को गुण करे–बकरी की मेंगनियां शहद में मिलाकर लगावे।

औषध–रांघन को गुण करे–सोंठ पावभर महीन कूट छान कर एक तोला पारा खूब उसमें दोनों मिलाकर उससे थोड़ा लेकर मर्दन करे।

लेप–बाई की पीड़ा को गुण करे–सहँजने की पत्तियां पानी में पीस कर गुनगुनी लेप करे।

औषध–जोड़ की पीड़ाको जो शीत से होवे गुण करे–सोंठ, कायफल, असगन्ध बराबर पीसकर मर्दन करे।

अन्य—उस कमर की पीड़ा को गुण करे—जो कफ़ और बात से हो—रेंड़ी, लाहौरीनोन, मेंदा लकड़ी एक एक तोला, हींग छः माशे, गेहूँ का आटा आध पाव सबको कूट छान मिलाकर रोटी बनावे एक तरफ़ रोटी को तवे पर सेंककर गुनगुनी पीड़ा की जगह पर बांधे।

लेप—पीड़ा और सूजन को गुण करे—अजवाइन कूट छान शहद में मिलाकर लेप करे।

लेप—एँड़ी और तलुवे की पीड़ा को गुण करे—मसूर सिरके में पकाकर गुनगुना लेप करे।

शरीर के प्रकट रोगों का वर्णन और आतशक का यत्न।

यह रोग जले हुये मलसे पैदा होता है चाहिये कि मुंजिज के उपरांत शरीर को कई बेर जले हुये दोषों से साफ़ करे और इस रोग का बहुधा यत्न बिषैली बस्तु हैं ठंढाई बहुत हानि करती है उससे गठिया हो जाता है और इलाज की रीति से रोगी मरजाता है चाहिये कि पहिले मुसिल ले फिर और औषध का सेवन करे।

मुसिल—जो बिना खेद के मल को निकाले और आतशक को गुण करे—पारा, गन्धक आमलासार एक एक माशे, गेरू आधा माशा, जमालगोटे की गिरी सब्ज़ी निकालकर तीन माशे पहिले पारे और गन्धक को मिलाकर खरल करे फिर सम्पूर्ण औषध डालकर पानी में खरल करके टिकिया बनाकर बर्तन में रखकर उसमें जल भरकर अग्नि पर रखदे जब सूखजावे निकाल कर तीन रत्ती भर आध सेर दूध के साथ खावे।

दूसरा मुसिल—कफ़ और पित्तके मलको अच्छी तरह निकाले—पारा, आमलासार गन्धक एक एक टंक, सुहागा, चीत काली मिरच, सोंठ तीन तीन टंक, जमालगोटे की गिरी सब्ज़ी दूर करके ग्यारह टंक, बासी पानी में एक पहर खरल करे खूराक एक रत्ती से दो रत्तीपर्यन्त मिश्री के शरबत के साथ खाय।

गोली–मुसिल आतशक के लिये बनी हुई–जमालगोटा एक टंक, आमला चार टंक कूट छानकर नींबू के पानी में सात पहर खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक कौड़ी से तीन कौड़ीपर्यन्त रोगी के स्वभावानुकूल और बाज़े नुस्ख़ों में बना जमालगोटा और कालीहड़ एक एक भाग, आटा दो भाग, नींबू के पानी में खरल करके बंदूक़ की गोली के बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली खाय।

अन्य–शोधीगंधक, शोधापारा, सुहागा, सोंठ, कालीमिरच, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर कूट छानकर गाय के दूध में पीसकर दो रत्ती की बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली जल के साथ और गोली खाकर जितना जल पिये उतना ही मल गिरे भोजन दही चावल या दूध चावल का करे।

### इन्द्रायण का शरबत।

जो सौदावी मल को निकाले और आतशकवालों को गुणकारक है–इन्द्रायण की छाल टुकड़े टुकड़े करके दो भाग दशहिस्से जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ़ करके औषध की तोलके बराबर शक्कर मिलाकर क़वाम करे ख़ूराक बारह टंक से बीस टंकपर्यन्त करे।

औषध–आतशकके लिये चाहिये कि पहिले तीन दिन मुंज़िज पिलाकर मुसिल दे शहतरेके पत्तोंका शीरा दो टंक, सौंफ़ डेढ़ टंक, गुलक़ंद दो तोले मिलाकर पिये चौथे दिन हब्बुलनील भूनकर कूट छानकर बराबरकी शक्कर मिलाकर तीन दिन खावे फिर यह हुक़ा पिलावे आधा दाम शिंगरफ़ महीन पीसकर एक दाम अफ़ीम में मिलाकर नौ टिकियां बनावे और तीन दिन एक टिकिया सुबह एक दोपहर एक शामको तम्बाकूकी रीति पर बेर के कोयलों से मिट्टी के हुक़्क़े में नरकुल के नेचे से पिये जब टिकिया ख़ूब जलजावे उसको कोयले सहित उसी हुक़्क़ेके अन्दर डालदे और तीन दिन हुक़्क़े से न निकाले और उसी हुक़्क़े में

पिया करे भोजन केवल भूने चने या चनेकी अलोनी रोटी तीन दिन तक फिर चौथे दिन नरम खिचड़ी एक दो दिन खावे उसके पीछे इख़्तियार है कदाचित् मुँह आये कचनाल की छाल औटा कर कुल्ली करे।

तेल—आतशक के वास्ते इन्द्रायन की जड़ आधपाव कूटकर दो सेर जल में औटावे जब आधसेर शेषरहे मलकर साफ़ करके आधसेर रेंड़ी के तेल में मिलाकर मधुरी अग्नि में औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेषरहे शीशे में रक्खे और प्रभातको एक दामके बराबर लेकर गौके दूध में मिलाकर पिये भोजन मूँग की खिचड़ी दो तीन दिन में रोग दूर होजावे और यह दवा अतीसार के मलको निकालती है।

कल्क—आतशक को गुण करे—बन्दाल के फल दो आध पाव जल में भिगोदे सुबह उसका साफ़ पानी पिये।

औषध—आतशक की गुणकारक—दश टंक कोंच की पत्ती, पचास टंक जल में पीसकर निहार सात दिनपर्यंत खावे।

चूर्ण—आतशक के वास्ते आज़माया हुआ है—कटीला कूट छानकर पहिले दिन एक माशा दूसरे दिन दो माशे इसी प्रकार हररोज़ एक माशा अधिक करके सात दिनपर्यंत खावे फिर छोड़दे इसके असर से एक बेर क़ै और दस्त आवेंगे और सिवाय खटाई के और कुछ इसमें पथ्य नहीं है।

अन्य—आतशक को गुणकरे—मदारकी लकड़ी का कोयला पीसकर साफ़ करके उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो दाम घृत में मिलाकर सात दिन खावे भोजन क़लिया।

अन्य—आतशक को गुणदायक—अब्बासी के बीज जिसका पुष्प लाल हो जितना चाहें भूनकर उसकी छाल दूर करके उसकी गिरी कूट छानकर बराबर की शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे और हररोज़ एक दाम ठण्ढे जल से खावे।

अन्य—रसकपूर नौ माशे, इक्कीस कालीमिरचें कूट छानकर

चूर्णबनाकर सात भाग करे एक भाग निकाल कर छःभाग एक सुबह एक शाम बकरी या गाय के दूध के साथ खावे भोजन सात दिनपर्यंथ दूध चावल फीके फिर कचनालकी छाल, माजू, चमेली की पत्तियां, इस्पन्द के काढ़े से ग़रग़रा अर्थात् कुल्ली करे फिर बकरे का शिर और पांव औटाकर कुल्ली करे।

अन्य-पीले हड़ की छाल, काबिलीहड़ की छाल, काबिली हड़, लाल मिरच दो दो मिस्काल, पारा सात मिस्काल, शक्कर सोलह मिस्काल कूट छान कर खूराक बनाकर सेवन करे।

अन्य-आतशक दूर करे-पीले हड़ की छाल, कालीहड़ की छाल, भुनातूतिया, जली पीली कौड़ी बराबर लेकर नींबू के रस के साथ लोहे के बर्तन में सोलह पहर खरल करके कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनाकर हररोज़ एक गोली पानमें पंद्रह दिवस पर्यंत खावे और थोड़ी गोली को पीस कर काग़ज़ पर रख घाव पर लगावे जो मुँह आवे कचनाल की छाल औटाकर कुल्ली करे।

गोली-आतशक को नाश करे-हरीतुलसी की पत्तियां चार टंक, सब्ज़ तूतिया एक दाम पीसकर बेर की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली सुबह को गरम पानी के साथ भोजन बे घी की खिचड़ी खाय।

संखिये की गोली-आतशक के लिये-कत्था, संखिया, इलायची के दाने, खड़ियामिट्टी बराबर ले जो होसके तो गुलाब नहीं तो पानी में खूब पीसकर जुवार के बराबर गोलियां बना कर बारह दिन तक रोज़ एक गोली खावे जो निर्बलता सूचित हो एक दिन बीच देकर खावे भोजन गहरी चीज़ और बादी और चौपायों के मांस और खटाई से बिल्कुल पथ्य रक्खे और नोन भी कम खावे और गेहूँ की रोटी और गाय का घी और मूँग की दाल खावे।

गोली-आतशक की नाशकारक-मदार की जड़ पांच टंक, कालीमिरच अढ़ाई दाम कूट छानकर गुड़ में मिलाकर जुवार

की बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम खावे खटाई और बादी से पथ्य करे।

दूसरी गोली—कालीहड़ चार दाम, कालीमिरच एक दाम, सब्ज़ तूतिया चौथाई दाम, काग़ज़ी नींबू के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम काग़ज़ी नींबू के रस के साथ चालीस दिन निगल जाया करे भोजन मूंग की दाल और जो गोली खाने के समय कण्ठ में जलन मालूम हो थोड़ा दही खाले और बाज़े नुस्ख़ों में जंगी हड़ बीस तोला, तूतिया एक तोला भर लिखा है और काली-मिरच नहीं है।

संखिये की गोली—संखिया एक टंक, कत्था पांच टंक भँगरे के पानी में चने की बराबर गोलियां बनाकर पहिले दिन एक गोली सुबह और एक शाम खावे और जो हवा ठण्ढी और रोगी बलवन्त हो तीसरे दिन दो गोली सुबह और दो शाम चौदह दिनपर्यन्त इसी तरह खावे और यदि सम्भव हो इक्कीस दिन पर्यन्त सेवन करे और जो रोगी निर्बल और बायु गरम हो तो एक गोली सुबह और एक शाम खावे और जो गोलियों के खाने से मतली और क़ै होवे पान बहुत खावे और खूब परहेज़ करे।

पारे की गोली—गुदा के व्रण और आतशक को गुण करे—पारा अढ़ाई टंक, मस्तगी, लाल शक्कर तीन तीन टंक, कुन्दर पांच टंक, शिंगरफ़ दो टंक, पहले पारे को थूक में मिलाकर उँगली से खूब साने कि टुकड़े उसके अलग होजावें फिर आधी शक्कर उसमें डालकर मले जब पारा शक्कर में मिलकर खूब मिलजावे थोड़ा थूक और बाक़ी शक्कर डालकर खूब मले इसी तरह से हर दवा अलग कूट छानकर गुड़ ओषधियों की बराबर लेकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक टंक हर रोज़ एक सप्ताहपर्यन्त खावे।

दूसरी गोली—पारे की, आतशक के वास्ते—पारा, कत्था, बाय-

बिड़ंग, अजवाइन, कालीमिरच, महुवे के फूल एक एक भाग कूट छान कर ओषधियों की बराबर लेकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और एक शाम को जल के साथ खावे भोजन गेहूं की रोटी।

अन्य—पारा, अक़रक़रा, अजवाइन, मोचरस छः छः माशे मिलावे सात माशे गुड़, ओषधियों की बराबर तिल मिलावे कि तौलके बराबर कूट छानकर गुड़में मिलाकर चौदह गोलियां बनावे एक गोली सुबह और एक गोली शाम दही के साथ खावे।

अन्य—जोड़ों की पीड़ा के वास्ते जो आतशक के कारण होवे गुणदायक और आतशक को भी गुण करे—पारा, खुरासानी अजवाइन, भिलावांकी टोपी दूर करके, अजमोद, इस्पन्द तीन तीन माशे, गुड़ दो दाम कूट छानकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर हररोज़ एक सुबह एक शाम कंठ में रखकर पानी से इस तरहसे निगलजावे कि दांतों पर न पहुँचे भोजन ख़िचड़ी और दाल पके चावल और गेहूं की रोटी खटाई और बादीसे पथ्य करे पांच दिनमें रोग दूर होजावे और मुँह आवे कुल्ली करे मुसिलके पीछे खाना अधिक गुण करे।

अन्य—आतशकको गुण करे—हरे रूसेकी जड़की छाल पीस कर जंगलीबेरकी बराबर गोलियां बनाकर घृतके साथ खावे।

अन्य—आतशक दूर करे अजवाइन की भूसी, सरसों, कालीमिरच एक एक दाम कूटछानकर गोलियां बनाकर खावे इस औषध में कुछ पथ्य नहीं है।

गोली—आतशक को गुण करे—सादी अजवाइन खुरासानी, भिलावां बराबर एक दाम लेकर भँगरे के रस में कजली करके सुखावे और उसके बराबर गुड़ मिलाकर एक दामकी बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज़ एक सप्ताह बहुत दो सप्ताह तक खावे और जो मुँह आवे कचनारकी छाल से कुल्ली करे।

शिंगरफ़ की गोली—आतशक और जोड़ों की पीड़ा को जो

आतशक के कारण हो गुण करे–शिंगरफ़, अफ़ीम, पारा दो दो दांग, अजवाइन पांच दांग, भिलावां टोपी दूर करके सात दांग, पुराना गुड़ पांच दांग, पारा और शिंगरफ़ मिलाकर सम्पूर्ण औषध कूट छानकर मिलावे और सम्पूर्ण ओषधियोंको अदरकके रसमें खरल करके सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज़ खावे।

पारे की गोली–आतशक को गुणकारक–पापड़िया कत्था एक एक बहलोलीभर, पारा चारमाशे, तीन बरसका पुराना गुड़ तीन बहलोली, तीनों औषध पीस मिलाकर सात गोलियां बनाकर सेवन करे।

अन्य–आतशक को गुण करे और वीर्यकी बलकारक भी है–पारा, गन्धक, हरताल, सुहागा एक एक टंक, कालीमिरच दो टंक, कूट छानकर नींबू के रस में मिलाकर गोलियां बनावे खूराक एक गोली सुबह एक शाम खाय।

अन्य–आतशकको गुण करे–पारा, अजवाइन, कालीमूसली दो दो टंक, भिलावां एक टंक, गुड़ सोलह टंक, ग्यारह गोलियां बनाकर हररोज़ एक गोली दहीके साथ खावे।

काढ़ा–आतशकके वास्ते अज़माया हुआ है मुँह नहीं लाता और परहेज़ भी इसमें नहीं है जो परहेज़ करे तो क़लिया भात खावे शीघ्रही आतशक को खोदेता है–कचनार की छाल, इन्द्रायनकी जड़, बबूल की फली, छोटी कटाई जड़ और पत्तों समेत, पुराना गुड़ आध आध पाव, तीन सेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश रहे साफ़ करके शीशे में रक्खे और सात ख़ुराक करे ईश्वर चाहे शीघ्रही रोग नाश होजावेगा।

अन्य–सिरसकी छाल, बबूलकी छाल, नींबकी छाल सवा सेर सबको सात लोटे जल में औटावे जब लोटाभर शेष रहे साफ़ करके शीशे में रक्खे और हररोज़ आध पाव पिये और एक सप्ताहपर्यन्त चने की रोटी भोजन करे।

औषध–आतशक को गुणदायक–बरगद के पत्ते जलाकर

उसकी राख दो कौड़ी के बराबर पान में खावे आतशक जो शेष रही हो दूर होजावे ।

अन्य—हुलहुलकी पत्तियाँ पीसकर भंगकी तरह पिये और उसका फोग ब्रणपर बाँधे ।

अन्य—आतशक को गुण करे—बरगद की छाल, हरफारेवड़ी की छाल पांच टंक, कालीमिरच तीन टंक, पचास दाम पानी में पीसकर चौदह दिनतक खावे ।

अन्य—हंस जो एक घास है पत्ते, बीज, डाली और जड़ समेत जलाकर उसकी छः माशे भर राख हररोज़ एक तोला भर शहद या गुड़ मिलाकर सात दिन पर्यन्त खावे ।

अन्य—आतशक को गुणदायक—कसौंधी की पत्तियां पांच टंक, कालीमिरच एक टंक दोनों को पीसकर पिये और बिना नोन भोजन करे ।

अन्य—आतशक को गुणदायक—रोग के प्रारम्भ में बड़ी कंघी के बृक्षकी पत्तियां एक दाम लेकर पानीमें भिगोकर उसका जल बीस दिनपर्यन्त पिये ।

बफ़ारा—आतशक को गुण करे—खुरासानी अजवाइन अढ़ाई माशे, शिंगरफ़ पांच माशे, तूतिया दो रत्ती, अकरकरा पांच माशे, मदारकी छाल दश माशे कूट छानकर बेर की लकड़ी की आग पर रखकर उसका धुवां ले ।

बफ़ारा—आतशक—खुरासानी अजवाइन; भूंभरकी फली, अक़रक़रा, मुरदारसंग एक माशा पीसकर बेर की लकड़ी से जलाकर धुवां ले ।

हुक़्क़ा—आतशक दूर करे—शिंगरफ़, सब्ज़तूतिया अढ़ाई अढ़ाई दाम, वायबिड़ंग पांच माशे, मदार की जड़की छाल दश माशे, जो स्वभाव बलवान् हो बीस माशे कूट पीसकर छः टिकियां बनावे और पानी बिना हुक़्के में बेरकी लकड़ीकी आगसे तम्बाकूकी सदृश पिये और उसका धुवां ब्रण पर ले और उसका

गुल कि राख के सदृश होजावे थूक में मिलाकर तीन दिन सुबह शाम घाव पर मले भोजन रोटी घृत शक्कर के साथ चाहिये कि इस औषध के सेवन के पहिले जुलाब ले।

अन्य–शिंगरफ़, अक़्क़रक़रा, नींब का गोंद, माजू, सुहागा एक एक दाम सम्पूर्ण औषध जवकुटकर सात पुड़ियां बनाकर एक पुड़िया चिलम में रखकर बेर की अग्निसे पिये जब उसका एक तरफ़ जलजावे दूसरी तरफ़ उसकी जलाकर पिये यदि इस अवसर में क़ै आवे कुछ हानि नहीं इस तरह एक दिन में दो तीन पुड़ियां सुबह, दोपहर, शाम को सेवन करे और उसकी राख घाव पर छिड़के भोजन मोहनभोग करे शक्करतरी के साथ तीन रोज़ यह क्रिया करे बहुत है जो मुँह आये चमेलीकी पात्तियां औटाकर कुल्ली करे।

औषध–आतशक को गुणकारक–करंजुवे की हरी पत्तियां, नींब की पत्तियां पन्द्रह पन्द्रह माशे, कालीमिरचें साढ़े सात माशे, पत्तियों का रस निकालकर चोबचीनी चार माशे पीसकर छिड़के इसी तरह सात दिन पिये भोजन में नोन न खावे।

अन्य–गरमी को गुण करे–शिंगरफ़, फिटकरी, इस्पन्द, अजवाइन एक एक टंक सबको पीसकर आधा आधा टंक दोनों समय चिलम में रखकर तम्बाकू की सदृश बेर की अग्नि से पिये और बन्द मकान में जहां बदन को हवा न पहुँचे रहे तेल और नोन से पथ्य करे और सूखी रोटी खावे।

अन्य–आतशकको दूर करे–स्त्री की ऋतु के रुधिर का कपड़ा जलाकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर बेर की बराबर गोलियां बनावे हररोज़ सुबहको एक गोली खावे भोजन चावल या रोटी-नोन खटाई से पथ्य करे।

अन्य–आतशक के लिय–रसकपूर, शिंगरफ़ छः छः माशे, सब्ज़ तूतिया साढ़े तीन माशे, सफ़ेद मोम दो दाम, गाय का घी चार दाम, कपड़ा चार गिरह, नींब की पत्तियों की टिकिया–

पहिले टिकिया को तेल में पकाकर दूर करे फिर मोम डाले जब वह गलजावे बर्तन को नीचे उतार कर रसकपूर डालकर हल करे फिर शिंगरफ़ पीसकर मिलावे फिर तूतिया डालकर मोमजामा करके छः बत्तियां बनावे और अपने को चादर से छिपाकर एक बत्ती लेकर बेर की लकड़ी की आग से धुवां ले भोजन तीन दिवस पर्यन्त दूध चावल खावे।

मरहम–आतशक को गुणकरे–रसकपूर, काशगरी सफ़ेदा हर एक सात माशे, छोटी इलायची के दाने साढ़े तीन माशे घृत में हल करके मरहम बनावे।

मरहम–कत्था दो माशे, संगजराहत एकमाशा, तूतिया एक चने के बराबर, जलीछालिया एक, घी आवश्यकताके अनुकूल लेकर एकसौ एक बेर धोवे फिर ओषधियों में मिलाकर मरहम बनाकर घाव में रक्खे जो पीली कौड़ी जलाकर मिलावे उत्तम है।

अन्य–इक्कीस मदार के पत्ते, सरसों का तेल आधपाव, सात सात पत्ते तीन बेर तेल में जलाकर राख करे फिर मोम छः टंक मिलाकर मरहम बनावे।

अन्य–आतशक को गुणकारक–कीमुख़्त जलाकर, तूतिया, पीली कौड़ी जलाकर, बराबर कूट छानकर छिड़के।

अन्य–कत्था सफ़ेद, पुरानी सुपारी अढ़ाई अढ़ाई दाम, ज़ंगार एक दाम सम्पूर्ण ओषधियों को एक दाम जल में पीस-कर काग़ज़ पर लगाकर जलावे और उसकी राख लेकर घाव पर छिड़के।

अन्य–पुराने जूते का चमड़ा, मसूर, चने जलाकर पीस-कर छिड़के।

अन्य–पीलीहड़, सुहागा, आमला सबको जलाकर पीसकर घाव पर बांधे।

कोढ़ का यत्न।

यह रोग सौदावी है जब दृढ़ होजाता है आराम नहीं होता

आरम्भ में फ़स्द और मुसिल लेना उचित हैं चाहिए कि हर महीने में मुसिल ले और खेद चिन्ता और जागने से पथ्य करे और जो खुश्की अधिक हो तो चीज़ें कि असली रतूबत को पचाती हैं उनसे पथ्य करे और कोढ़ी के लिये उत्तमोत्तम भोजन बकरी का दूध है बच्छनाग की माजूम यह नुस्ख़ा कोढ़ी के लिये वैद्यों का जारी किया हुआ है—कालीहड़, चीता दश दश टंक, कालीमिरच पांच टंक, बच्छनाग अढ़ाई टंक कूट छानकर गाय के घी में भूनकर दुगुना शहद मिलाकर माजूम बनावे खुराक एक मिस्काल है दो टंक पर्यन्त या एक मिस्काल खाय।

लाभ—हिन्दुओं का आज़माया हुआ है जो हरतालका कुश्ता चालीसदिन खाना कोढ़को गुण करता है—हरतालके मारनेकी यह रीति है—हरताल एकदाम, करंजुवा, फिटकरी दो दो दाम पहिले आधे करंजुवे की गिरी अधकुचली करके सकोरे में रक्खे उसपर आधी फिटकरी कूटकर बिछावे फिर उसपर हरताल डाले बाक़ी आधी करंजुवे की गिरी और फिटकरी कूटकर हरतालपर बिछा दे और कपरौटी करके सातसेर जंगलीकंडे में रखकर आग दे जब ठण्ढा होजावे निकालकर आधीरत्ती हररोज़ पान में खाय पचासदिन में रोग नाश होजावे।

दूसरी रीति—एकदाम हरताल अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर-गोली बनाकर सकोरे में रक्खे ऊपर से एक सकोरा ढांपकर कपरौटी करके सुखावे और चार पहर आग में रक्खे कुश्ता होजावेगा।

नींब का चूर्ण—कोढ़ को गुण करे—पुरानी नींबके फूल, पत्तियां, फल, छाल, जड़ आध आध सेर, कालीमिरच, पीले हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमला, बावची पाव पाव भर कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक दो टंक से चार टंक पर्यंत मंजीठ के काढ़े के साथ चार महीने पर्यंत सेवन करे मांस, नोन और गरम चीज़ों से पथ्य करे।

पारे की गोली—कोढ़ को गुणकारक और आज़माई हुई है—

पारा दो टंक, संखिया एक टंक, कुन्दर छः टंक, रेवन्दचीनी तीन टंक, बबूल का गोंद दो टंक पारे को कुश्ता करके सम्पूर्ण औष-धियों को नींबू के रस में खरल करे फिर कुश्ता और सात बहेड़े के पत्ते उसमें मिलाकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बना कर सुबह और शाम एक गोली खावे खटाई से पथ्य करे ।

काढ़ा—कोढ़ को गुणदायक—शाहतरा, असगन्ध, ब्रह्मदण्डी, पीलीहड़की छाल बराबर लेकर दो तोले के बराबर रातको पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ़ करके पिये ।

चूर्ण—कोढ़ और रुधिर के वेग को गुण करे—हिंगोट की छाल कूट छानकर हर सुबह एक तोला पानी के साथ खावे खटाई बादी और नोन से पथ्य करे दो सप्ताह में अच्छीतरह गुण करेगा ।

काढ़ा—कोढ़को गुण करे—चनेकी भूसी आधपाव सेरभर जल में भिगो कर सुबह मलकर छानकर इसी रीति से एक महीना उन्नीस दिन पर्यंत पिये चावल दूध दही और जो चीज़ सफ़ेद हो और खटाई से भी पथ्य करे मांस और गुड़ और शक्कर जो इनमेंसे मिलजावे खावे जो कुछ रोग बाक़ी रहजावे और थोड़े दिन पिये ।

औषध—कोढ़ को गुण करे—पानी कि मस्ती के वक्त नींब के वृक्ष से टपकता है लेकर शरीर में मले ।

अन्य—सरफोंकेके अरक़ का सेवन करना कोढ़को गुण करे ।

अन्य—नींबू के फूलों का अरक़ कोढ़ को गुण करे ।

अन्य—कोढ़ को गुण करे—बिजयसारकी लकड़ी एक दाम कूट कर पानी में भिगोकर हररोज़ इसीतरह से चालीसदिन पिये ।

अन्य—मेहँदी की पत्तियां तीन मिस्काल रात को पानी में भिगो दे सुबह मलकर साफ़ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर इसी तरह से चालीस दिन तक पिये ।

औषध—कोढ़को गुण करे—सिरसकी पत्तियां पक्की एकदाम, कालीमिरचें दो माशे हररोज़ पानी में पीसकर चालीसदिन पिये ।

अन्य—कोढ़को गुण करे—बबूल की छाल दो दाम अधकुचली

करके पानी में भिगो दे सुबह मलकर साफ़ करके हररोज़ इसी तरह से पिये।

शीशम का शरबत।

रुधिर के उपद्रव के सम्पूर्ण रोगों, कोढ़ और गरमी को गुण करे—शीशम का बुरादा पावभर नदी के तीन सेर जल में आठ पहर भिगोकर सुबह औटावे जब आधा शेषरहे तीनपाव शक्कर में क़वाम करे खूराक छः तोले हरसुबह और शाम इस रीति से कि शीशम की लाल लकड़ी का बुरादा आधा दाम लेकर आध पाव जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ़ करके वही शरबत मिलाकर पिलावे चालीस दिन इसी प्रकार सेवन करे खटाई दूध दही और तरकारी आदि से पथ्य करे।

औषध—कोढ़ को गुण करे—समन्दरफल दरख़्तकी छाल कूट छानकर हर सुबह एक तोला भर पानी के साथ तीन दिन खावे और तीन दिन नाग़ा करे इसी प्रकार इक्कीस दिवस पर्यन्त खावे और इस अवसर में मूंग की दाल और खिचड़ी भोजन करे पहिले दिनों में क़ै होगी कई दिनों के पीछे क़ै आना बन्द हो जावेगा।

औषध—नींबकी पत्तियों का नोन कोढ़ खुजली और दाद को गुण करे।

लाभ—बहुत कोढ़वालों को देखा है कि रोग के शुरू में उन्होंने अफ़ीम और पोस्ता खाने की आदत डाली रोग शान्त होगया।

शरबत—झाऊ की जड़ का काढ़ा इस रोगके दूर करने में लाल गंधक का काम करता है और साहब तज़किरै दाऊदीने आज़मा कर लिखा है कि यह औषध कोढ़ और सफ़ेद दाग़ को गुण करे—नींबकी पत्तियां और उसके बराबर काले तिल, लाहौरी नोन लेकर पुराना गुड़ सब औषधियों की बराबर मिला कर हररोज़ पांच टंक खावे।

शिर के गंज का यत्न।

वह शिर का व्रण है जो पीब और खुरंट के साथ होताहै इस

रोग की उत्पत्ति सौदा से है लड़कपन में जो तरी अधिक होती है जवानी के शुरू पर्यंत अपना बल करती है।

यत्न—जोंकें लगाना गुणकारी है।

औषध आज़माई हुई—आमला जलाकर पावभर, ख़शख़ाश का पोस्ता जलाहुआ आधपाव, मेहँदी, कमीला चार चार दाम, तूतिया, भुनासुहागा, भुजवे के छप्पर का धुवां, भट्टी की राख एक एक दाम कूट छानकर सरसों के तेलमें मिलाकर लेप करे—पत्तों का तेल, गंजको गुणदायक—बिसखपरे के पत्ते, फ़रीश के पत्ते, नींबके पत्ते, चमेली के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, बकायन के पत्ते और फल दो दो तोले पीसकर टिकिया बनाकर पावभर मीठे तेल में जलावे फिर एक माशा तूतिया, मेहँदी की पत्तियां, मुरदारसंग, भुनासुहागा, जली हल्दी, कत्था, बावची, आमला जला हुआ, कालीमिरच छः माशे पीसकर तेल में जलाकर नींब की लकड़ी से हल करके सेवन करे।

गधे के लीद का तेल।

शिर के गंजको गुण करे—गधेकी लीद आधीसूखी गढ़े में रख कर थोड़े थोड़े कोयले डालकर जलावे और उसके ऊपर कांसे की ऐसी थाली जिसके कि किनारे उलटेहुये हों इस तरह इस गढ़े पर रक्खे कि किनारे उसके दो उंगल उठे रहें कि लीद का बुख़ार उस थाली में जमाहो उसको लेकर मले।

अन्य—गंज को गुण करे—सररानी आधीभुनी आधी कच्ची पीसकर कड़ुवे तेल में मिलाकर लगावे।

औषध—शिर के गंज को गुण करे—मेहँदी की पत्तियां चार तोला, बावची, मुरदारसंग, कमीला, कत्था, सुहागा दो दो तोले, तूतिया तीन माशे कूट छानकर कड़ुवे तेल में मिलाकर मले।

लेप—शिर के गंज को गुण करे—हल्दी छः दाम, तूतिया सब्ज़ तीन दाम, आधपाव मीठे तेल में जलाकर पीसकर लेपकरे।

लेप—काबिली हड़ की छाल, कत्था, ज़ीरा, कायफल, एक

एक टंक, तूतिया सब्ज़ आधा टंक कूट छान कर लेप करे।

औषध—लड़कों के शिर के गंज और उन फोड़े और फुन्सियों को जो लड़कों के शिर पर पैदा होते हैं गुण करे—कमीला, कत्था, गेरू, शोरा, तूतिया एक एक भाग, मुरदारसंग, कालीमिरच दो भाग, मेहँदी की पत्तियां चार भाग, सरसों के तेल को गरम करके उसमें मिलाकर सेवन करे।

लेप—शिर के गंज को गुण करे—अरण्ड की कोंपल कूटकर थोड़ा नोन मिलाकर लेप करे।

औषध—शिर के गंज को गुण करे—पुराने जूते का तला जला कर कड़वा तेल मिलाकर सेवन करे।

अन्य—तम्बाकू का गुल पीसकर कड़ुवे तेल में मिलाकर लगावे।

आंब के अचार का तेल।

जो एक वर्ष भर का हो लेकर शिर के गंज पर लगावे।

अन्य—घोड़े का सुम जलाकर मीठे तेल में मिलाकर शिर पर मले।

वकायन के फल का तेल।

बकायन के फल की गिरी जवकुट कर कड़ुवे तेल में जला कर साफ़ करके शिर के गंज पर सेवन करे।

फ़राश का तेल।

शिर के गंज को गुण करे—फ़राश के पत्ते पीसकर टिकिया करके कड़ुवे तेल में जलाकर साफ़ करके मले।

लेप—धनियां सिरके में पीसकर लगाना शिर के गंज को गुण करता है।

अन्य—चुक़न्दर के पत्ते पीसकर लगाना गुण करे।

अन्य—बकरी की मेंगनियां लगाना शिर के गंज फलनेवाले और पीबवाले घाव को गुण करे।

बरस व वहकअबैस अर्थात् सफ़ेद दाग का यत्न।

इन दोनों में अन्तर यह है कि बरस उन सफ़ेद दागों को

कहते हैं जो प्रकट में त्वचा में पैदा होते हैं और मांस और त्वचा के भीतर घुसे होते हैं और बहकअबैस सफ़ेदी पतली गोल है—बरस से आरोग्यता नहीं होती है और बहक में जो शुरू में यत्न किया जावे नष्ट हो जाता है।

यत्न—मुंज़िज के उपरांत कफ़ के मल का जुलाब दे और दूध इत्यादि और ठण्ढी चीज़ों से परहेज़ करना चाहिये।

गोली—जंगली अंजीर की छाल तेंतीस टंक, चीत सोलह टंक, गन्धक पन्द्रह टंक, कालीहड़, धनियां छः टंक, कूट छान कर गाय के बच्चे के मूत्र में मिलाकर औटावे जब गाढ़ा होजावे पीसकर ज़ंगलीबेरकी बराबर गोलियां बनाकर एक महीना बीस दिन तक हररोज़ एक सुबह एक शाम खावे।

गोली—सफ़ेद दाग़ को गुणदायक और बालों को सफ़ेद नहीं होनेदेती है—छिली बावची बनाईहुई, कठूमर की जड़ की छाल, नींमके जड़की छाल, नींब की डाली की छाल बराबर लेकर कूट छानकर रक्खे और कत्थे की लकड़ी के टुकड़े टुकड़े करके एक हिस्सा अष्टगुण जलमें औटावे जब आधा शेष रहे साफ़ करके उक्त औषध उसमें ख़मीर करे और गोलियां बनाकर एक टंक से डेढ़ टंक पर्यन्त खावे बावची के बनानेकी यह रीति है—कि बावचीको लालरंग गाय के मूत्र में जो जनी न हो इक्कीस दिन भिगो रक्खे फिर निकाल करउसकी छाल दूर करके छाया में सुखावे।

गोली—सफ़ेद दाग़को गुण करे—बनीहुई बावची, कालेतिल बराबर लेकर शहद में मिलावे और तीन तीन माशेकी गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खाया करे।

गोली—सफ़ेद दाग़को गुण करे—अजमोद, बावची, पवांड़ के बीज, कमलगट्टा बराबर लेकर शहद या गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे खूराक दो टंक।

गोली—सफ़ेद दाग़को गुणदायक—गेरू, गंधक, बावची बराबर महीन पीसकर अदरक के रस में रीठे के बराबर गोलियां

बनावे और एक गोली जवकुट कर आधपाव जल में रात्रि को भिगो दे सुबह को उसका साफ़ पानी पिये और फोग उसका शरीरपर मलकर धूप में बैठे खटाई और बादी से पथ्यकरे और इसी प्रकार सदा सेवन करते रहैं।

औषध—बरस और बहक को गुण करे—काले धतूरे के बीज दो टंक आधे कच्चे आधे पक्के भुने, चीता दो टंक, कालीमिरच दो टंक कूट छानकर हररोज़ दो रत्ती भर खावे भोजन एक समय दूध चावल का करे।

घूंस का तेल।

बरसको गुणकरे—एक घूंस पकड़कर पेट चीरकर उसका मैल दूर करे और सौ वहलोली मीठे तेल में औटावे जब तृतीयांश रहे उसमें लत्ता भिगोकर रात्रिको दाग़की जगहपर रखकर बांध दे और सुबह को धोडाले इसी प्रकार पचास दिन पर्यंत सेवन करें लाभ होगा।

गोली—कसीस काली पांचटंक, तेल पन्द्रह टंक, बावची तीन सेर, नींबकी सूखी पत्तियां आधसेर, कुन्दर काली डेढ़सेर कूट छानकर गोलियां बनाकर हररोज़ एक गोली खावे।

नींबका चूर्ण—बरस को गुण करे—नींब के फल, फूल और पत्तियां बराबर पीसकर दो माशे खाना शुरूअ करके छः माशे तक पहुँचाकर चालीस दिन सेवनकरे।

अन्य—बरसको गुणकरे—मुंडी एक भाग,समुद्रशोष आधाभाग कूट छानकर चूर्ण बनावे खूराक एक माशेसे नौमाशेपर्यन्त खाय।

अन्य—सफ़ेद दाग़ को गुणदायक—बावची आधसेर, नोन तीन पाव कूट छानकर एक हथेली भर खावे भोजन सिवाय चने की रोटी के और कुछ न खावे।

अन्य—सफ़ेद दाग़को गुण करे—सफ़ेद गूलरकी छाल, लालाके बीज दोनों बराबर कूट छानकर पानीसे चालीस दिनपर्यंत फांके।

औषध—बरस को गुण करे—अजमोद पहिले दिन चार माशे

फिर एक एक माशा रोज़ अधिक करके सुबहको ठंढेपानी से फांके यहांतक कि आठ माशेतक पहुँचे जो दो महीने में गुण न मालूमहो तीसरेमहीने वायविड़ंग एक माशाभर मिलाकरखावे और खटाई और वादी से पथ्यकरे लिखा है कि चनेकी रोटी या चने भूनकर खाना आज़माया हुआ है सिवाय इसके और कुछ न खावे।

अन्य—अजमोद दो भाग, गेरू एक भाग कूट छानकर दो माशे भर खावे भोजन बेनमक और घी के रोटी खावे।

लेप—बरस को गुण करे—बावची, पँवार, गेरू बराबर लेकर कूट छानकर अदरकके रस में गोलियां बनाकर दो सप्ताहपर्यन्त मलकर धूप में बैठाकरे।

अन्य—पलाशपापड़ा तीन टंक, कच्चा तूतिया तीन माशे, कत्था सफ़ेद एक तोला महीन कूट छानकर नींबू के रसमें खरल करके गोलियां बनाकर लगाया करे और यह गोली दादको भी गुणदायक है।

लेप—कलौंजी सिरके में पीसकर लगाना बहक और बरसको गुणकरे—तरातेजे के बीज सिरके में पीसकर लेप करना बहक और बरस को गुण करे।

अन्य—कुन्दश शहद में मिलाकर लगाना बहक, बरस और दाद को गुण करता है।

अन्य—मालकंगनी गौ के मूत्रमें इक्कीस दिन भिगोकर उसका तेल निकाल कर बरस पर लगावे।

अन्य—नौसादर शहद में मिलाकर बरस और बहक पर मलना गुणकारी है।

अन्य—बरस को गुणकरे—कलौंजी नौ टंक, बावची तीन टंक, धतूरे के बीज डेढ़ टंक, मदार के पत्ते आठ पीसकर सफ़ेद दाग़ पर लगावे।

अन्य—बहक को गुण करे—कुन्दश, मूली के बीज सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य–बकरी के गुरदे को टुकड़े टुकड़े करके उसपर गन्धक छिड़क कर कबाबकरे जो पानी उससे टपके उसको बहक सफ़ेद और बरस पर मले।

बरसको गुणकरे–इमली के बीज छिलेहुये, बावची दोनों बराबर खूब पीसकर आठ दिनतक लकड़ी से दाग़की जगहपर मले।

अन्य–जंगली अंजीरकी जड़, बावची, सुहागा, इमली ताज़े पानी में पीसकर चालीस दिनतक लेपकरे।

लेप–हरताल, सज्जी आधा आधा दाम कूट छानकर मूत्र में मिलाकर दाग़ पर लगावे।

अन्य–सफ़ेद बहकको गुणकरे–हल्दी, आंबाहल्दी, आमला, लाख, गंधक आमलासार, पवाँर के बीज बराबर गन्धक छाछ कूट छानकर निर्मल पानी में मिलाकर बहक पर लगावे।

अन्य–सफ़ेद दाग़ को गुण करे–मँजीठ, चीत, तेल, गेरू बराबर कूट छानकर सिरके में मिलाकर लगावे।

लेप–मूली के बीज दश भाग, कुंदश कठ दो दो भाग पुराने सिरके में मिलाकर लेप करे।

लेप–बरसको गुणकरे–मूली के बीज, चीत, कुलींजन, आमला बराबर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–बरस को गुणकरे–यह नुस्ख़ा किताब गंजआबाद-आवर्द से नक़ल कियागया है–सज्जी, चूने की कली बराबर पीस कर जिस जगह कि सफ़ेद दाग़ हो लेपकरे जब सूखजावे सख़्त कपड़े से छीलकर दूरकरे और फिर लगावे इसतरह थोड़े दिनोंके सेवनमें उस जगह की खाल दूर होकर एक दाग़ पड़ जावेगा फिर उस जगह पर मीठा तेल मले कि उसका असली रंग होजावे।

लेप–बरसको गुण करे–बावची दही में तीन दिन पर्यंत भिगो दे फिर सुखाकर आतशी शीशे में तेल निकाले और थोड़ा नौ-सादर पीसकर तेल में मिलाकर दाग़ को छीलकर उस पर मले।

अन्य–केंचुवा एक बर्तन में बन्दकरके एक महीने तक रक्खे

इस अवसर में राख होजावेगा उसको लेकर बरस पर लगावे।

अन्य–बरस को गुण करे–काला बिच्छू मारकर सुखाकर सिरके में पीसकर बरस पर लगावे।

अन्य–होठोंकी सफ़ेदी को गुणकरे–अंधाहूली की जड़ पानी में घिसकर लेपकरे।

अन्य–तम्बाकू के बीजोंका कोल्हू में तेल निकालकर मर्दन करे थोड़े दिनों में दाग़ असली रंगपर आजावे।

अन्य–बरसको गुणकरे–केलेके पीले पत्ते कड़ुवे तेलमें जला कर मुरदारसंग मिलाकर मले।

अन्य–सिरस के बीजों का तेल निकालकर बरस पर मले।

अन्य–बैंगन सादे का तेल बरस को गुण करे–बैंगन पानी में पकाकर जब गलजावे उसका साफ़ पानी लेकर मीठे तेल में मिलाकर फिर औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे सेवनकरे।

अन्य–छुहारे का तेल बरस को गुण करे–एक छुहारा सरसों के तेल में जलाकर हल करके रक्खे रात को दाग़ पर मल कर कोयलों की आग से सेंके जब गरम होजावे इसी तरह से थोड़े दिन सेवन करे बाज़ी पुस्तकों में लिखा है कि खुरमें की गुठली निकालकर साफ़ करके तेल में जलाकर थोड़ा सिंगरफ़ मिलावे इस तेलको छाजन की जगह और नासूर पर भी मलना गुणकरे।

### नारू का यत्न।

वह एक दाना है जब फूट जावे तो उसके अंदर से तागा निकलता है।

अन्य–मल को शरीर से साफ़ करे और नारू के गिर्द जोंकें लगावे और गरम पानी में तेल डालकर जोश किया हो तरेड़ा करे कि तागा सुगमता से निकले और रक्षा करे कि टूट न जावे।

औषध–नारू को गुण करे–पहिले नारू और सूजनको गुन-गुना तेल मलकर मदार के पत्तों से सेंक करे और वही गुनगुने पत्ते सूजन पर बांधे।

औषध–नारू के लिये गुणदायक है–सफ़ेद बिसखपरेकी जड़ उसके पत्तों के रसमें पीसकर नारू पर बांधे बाज़े और थोड़ी सोंठ भी अधिक करते हैं।

लेप–नारू को गुण करे–जमालगोटा पीसकर लेप करे या कलौंजी दही में पकाकर लेप करे।

औषध–जो केंचुवा सूखा नारूवाले को खिलावे शीघ्र ही सुखाता है।

अन्य–आधादाम सुहागा गुलरोग़न में हल करके तीन दिन खावे और इस अवसर में चिकना भोजन खावे।

अन्य–नारू को गुण करे–प्याज़ एक गिरह, लहसुन एक गिरह, थोड़ा साबुन, भिलावां एक, राई आधा दाम, कूट छान कर टिकिया बनाकर नारू पर एक दिन रात बांधे तीन दिन में तागा बिल्कुल निकल आवेगा।

औषध–नारू को गुण करे–राल एक दाम, साबुन दो दाम अफ़ीम दश माशे कूट पीसकर आठ दाम तिलों के तेल में पका कर मरहम की सदृश करके पान पर लगाकर बांधे और सुबह और शाम मरहम बदल दिया करे तीन दिन में आराम होजावे।

लेप–नारू को गुण करे–मोठ का आटा चार दाम थोड़ी हींग मिलाकर पीसकर ख़मीर करके नारू पर बांधे।

अन्य–चौलाई की जड़ पीसकर नारू पर बांधे।

गोली–नारू के लिये गुण करे–जंगली कबूतर की बीट दो दाम, गुड़ दो दाम, कूट पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर रक्खे रोज़ एक गोली खावे।

औषध–नारू को गुण करती है–कबूतर का पर दो चावल के बराबर गुड़ में मिलाकर खावे।

अन्य–सात दाने बकायन के हररोज़ निगल जावे।

अन्य–एलुआ पहिले दिन आधादाम, दूसरे दिन एक दाम, तीसरे दिन एक मिस्काल भर खावे और ऊपर से भी लगावे।

औषध—पीले हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सोंठ, केला बराबर हररोज़ दो टंक, छः टंक शहद मिलाकर खावे और दूध भी बहुत खाना गुण करता है।

रक्तपित्त का यत्न उसको सुर्खबादा भी बोलते हैं।

यह रोग बहुधा लड़कों को होता है इसका कारण बहुत गर्मी और रुधिर का जोश है।

यत्न—धायको साफ़करनेवाली और रक्तशोधक औषधपिलावे।

गोली—लड़कों के रक्तपित्त को गुण करे—धमासा, रक्तचन्दन, ब्रह्मदण्डी, नीलकण्ठी तीन तीन माशे, बकायनकी पत्तियां, नींब की पत्तियां पांच पांच, मेहँदी की पत्तियां पांच माशे, धनियां तीन माशे, कालीमिरच, मुल्तानी मिट्टी एक एक माशा, मेहँदी की पत्तियां और धनियां पानी में भिगोकर सुबह उसके पानी में सब औषध पीसकर चनेकी बराबर गोलियां बनावे भोजन मूंगकी दाल और चावल बे नोन खावे खटाई और बादीसेपथ्यकरे।

अन्य—लड़कों के रक्तपित्त को गुणकरे—रसौत, कालीमिरच, अफ़ीम, नींब की पत्तियां, चाकसू की गिरी, पेठे के बीज बराबर कूट छानकर बाजरे के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़के को उसकी धाय के दूध में मिलाकर दे।

औषध—लड़कों के रक्तपित्त को गुणकरे—मिकन कि एक बूटी है दो दाम लेकर पानी में पीसकर पावभर आटे में मिलाकर रोटी पकावे फिर उसमें घी मलकर दूध पिलानेवाली को खिलावे आश्चर्यदायक गुणकरे।

अन्य—सरफोंका औटाकर लड़के को पिलावे।

अन्य—रसौत एक चने की बराबर लड़के को खिलावे।

काढ़ा—लड़कों के खून के उपद्रव और रक्तपित्तको गुणकरे—रक्तचन्दन, मेहँदी, धनियां चार चार टंक, गुलमोसफ़र दो टंक जवकुटकर सात खूराक करे और खूराक आधपाव जलमें भिगोकर सुबह जोश देकर पिये और एक फोग उसका रातको औटाकर

पिये और उसका फोग शरीर में मल कर गरम पानी से धोडाले सात दिन इसी तरह सेवन करे भोजन गेहूं की रोटी और घी नमक न खावे।

दाद का इलाज।

यह रोग सौदावी रोगहै त्वचापर फैलताहै रुधिरसे भी उत्पन्न होता है प्रारम्भ में उसका यत्न कि जबतक मांस के अन्दर न घुसे सुगम है और जब मांस में घुसजावे तो जबतक जोंक और पछने और तेज़ ओषधियों का सेवन न करे दूर नहीं होता है।

औषध—राल, गन्धक, सुहागा, खुरासानी अजवाइन कूट छान कर पानीसे गोलियां बनाकर दादको खुजलाकर उसपर लगावे।

लेप—दादको गुणकरे—मुरदारसंग, गन्धक, नौसादर, सुहागा, माजू, कालीमिरच, सफ़ेद कत्था, अफ़ीम, चीनियांगोंद कूट छानकर गोलियां बनावे और नींबू के रसमें पीसकर लेपकरे।

अन्य—माजू एकभाग, चूना डेढ़ भाग, माजू महीन चूने में हल करके थोड़े पानी में मिलावे जब थिराजावे पानी लेकर दाद को खुजलाकर उसपर मले।

लेप—दाद को खुजलाकर उसपर घी मलकर चूना उस पर लगावे।

औषध—दाद को गुणदायक—मदार के फूल, पवाँर के बीज कूट छानकर खट्टे दही में मिलाकर मर्दन करे और जो खट्टादही न मिले पानी काफ़ी है।

लेप—इमली के बीज नींबू के रस में पीस कर मले।

अन्य—सूखा सिंघाड़ा नींबू के रस में पीसकर लगावे।

अन्य—हरसिंघार की पत्तियां पीसकर लगावे।

अन्य—अडूबासी की पत्तियां नोन के साथ पीसकर मले।

अन्य—हल्दी जलाकर पीसकर चूने और पान में मिलावे फिर पानी में हलकरके दादको खुजलाकर लगावे।

अन्य—नींबूकारस हररोज़ दोबेर दादको खुजला करके मले।

अन्य—पालकजूही की जड़ नींबू के रस में घिसकर मले और उसकी पत्ती भी मलना गुणकरे।

अन्य—कलौंजी सिरके में पीसकर मले।

लेप—पलासपापड़ा, कत्था पीसकर लगावे।

अन्य—कसौंधी की जड़ नींबू के रस में घिसकर लेप करे।

अन्य—गेहूं का चोया गुनगुना मले और चोये के निकालने की यह रीति है कि गेहूं धोकर रात्रि को हवा में रक्खे सुबह गेहूं को साफ़ पत्थर पर रखकर एक लोहे का टुकड़ा आग में लाल करके गेहूं के ऊपर रखकर दबावे जो कुछ उसमें से कालारंग निकले उसको गरम लेकर दाद पर मले।

अन्य—आज़माई हुई है दाद को गुणकरे—आमला, लालचन्दन, चीनियांगोंद, राल, सुहागा, कत्था बराबर पानी में पीस कर दाद को खुजला कर मले।

अन्य—दाद और खुश्क खुजली और तर खुजली को गुण करे—पवाँर के बीज पानी में भिगो दे जब सड़जावें पीसकर मले फिर गरम पानी से नहावे।

लेप—दाद को गुणकरे—रियह को कपड़े में छानकर पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—अमलतास की पत्तियां दादपर मले या उसकी कच्ची फली की गिरी निकालकर पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—दाद को गुणदायक—मूली के बीज नींबू के रस में खरल करके गोलियां बनाकर लगाया करे।

अन्य—मूली के बीज शरीफ़े की पत्तियों के रस में पीसकर गोलियां बनाकर लगावे।

लेप—कुचला सिरके में पीसकर लगावे।

लेप—दाद और खुजलीको गुण करे—सज्जी एक दाम कूटछान कर दो दाम गाय का घी सौ बेर धोकर उसमें मिलाकर लेपकरे।

औषध—दाद और खुजली को गुणकरे—हराममग्ज़ मले।

अन्य–दाद को गुणकरे–अंजीर का दूध मले।

लेप–दादको गुणकरे–चन्दन, सुहागा, अफ़ीम तीनों औषध बराबर लेकर नींबू के रस में पीसकर दादको किसी खरखरी चीज़ से खुजलाकर मले।

अन्य–मैनसिल पानी में पीसकर लगावे।

लेप–सरेश मले लिखा है कि जबतक दाद अच्छा नहीं हो सरेश नहीं छूटता है।

अन्य–पारा सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य–मेहँदी सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य–मुरमक्की सिरके में पीसकर लेपकरे।

लेप–नींब की पत्तियां दही में पीसकर लगावे।

लेप–पवांर के बीज एक भाग, सज्जी दो भाग, जवाखार चार भाग, कांजीके पानी में पीसकर अरना भैंसेके गोबर के उपले से दाद को खुजलाकर उसपर इतनी देर लगाये रहे कि सूखजावे दो तीन दिनमें दूर होवे।

अन्य–सिंदूर, गंधक, हल्दी, कालीमिरच, सुहागा बराबर लेकर घृत में मिलाकर हररोज़ चार पांच बेर लेपकरे।

अन्य–पवांर के बीज, आमला, कत्था, दहीके पानी में पीस कर दाद को खुजलाकर लेप करे।

अन्य–पारा, गंधक, आमलासार, तूतिया, सुहागा, नींबू के रस में हल करके दाद को खुजलाकर लगावे।

तर और खुश्क खुजली का यत्न।

जोकि यह रोग प्रकट त्वचा पर उत्पन्न होता है त्वचा के रोगों में गिना जाता है और तर खुजली का मल बहुधा कफ़कारी है और सूखी खुजली में सौदा की अधिकता है।

यत्न–हफ़्तअन्दाम की फ़स्द ले और भोग और गरम चीज़ें जैसे कि बैंगन और मिरच और कड़ुवेतेल और नोनवाली चीज़ों आदि से पथ्य करे और हररोज़ शाहतरा का इतरीफल खावे।

औषध–पीलीहड़ की छाल, काबिलीहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, जंगीहड़, सरफ़ोंके की पत्तियां, अफ़ीम दो दो टंक, शाहतरे के पत्ते दश टंक कूट छानकर गाय के घी में भून कर तिगुनी शक्कर मिलावे खूराक दो तोले।

अन्य–ख़ारिश को गुण करे–नींब की कोंपल दो तोले भर लेकर पानी में पीसकर पन्द्रह दिन पर्यंत पिये इसी प्रकार सरफोंका का पानी गुण रखता है।

अन्य–तर खुजलीको गुण करे–कड़ुवा चिरायता, शाहतरा, जंगीहड़ तीनों औषध तोला भर लेकर रात को पानी में भिगोदे सुबह को पीसकर साफ़ करके पिये।

अन्य–खुजली को गुणकरे–गन्धक, आंबाहल्दी, बावची हरएक आधादाम शाहतरा एक दाम सबको तीन भाग करके एकभाग उसमें से रातको पानी में भिगोवे सुबह उसका साफ़ पानी पिये और उसका फोग कड़ुवे तेल में मिलाकर बदन पर मलकर गरम पानी से धोवे।

अन्य–इमली को भिगोकर कईदिन सेवन करना तर खुजली और खुश्क खुजली को गुण करे उसका नुसख़ा मतली के रोग में वर्णन हो चुका।

अन्य–ख़ारिश को गुण करे–अधकुचली कालीहड़ बीसटंक, अफ़तैमून पांच टंक आधसेर गरम जल में भिगो दे सुबह साफ़ करके दश टंक शक्कर मिलाकर दो बेर करके पिये।

अन्य–मोजिज में खुश्क खुजली के लिये लिखाहै कि हररोज़ एक सौ तीन टंक दूध और आधी उसकी सिकंजबीन मिलाकर पीना गुण करे और यह औषध शेखुलरईस के विचार में भी आज़माई हुई है परन्तु इतनी औषध देहातियों के योग्य है और लोगों के लिये इतनी खूराक बहुत भूख लानेवाली और अग्नि मन्दकारक है।

गंधक का तेल–तर और खुश्क खुजली और दाद को गुण

करे-गंधक मदारके दूध में दो दिन खरल करके टिकिया बनाकर छाया में सुखावे फिर बर्तन में डालकर पानी भरकर चार पहर मधुरी आंचपर जोश दे जितना तेल पानीपर आवे उसको लेकर सेवन करे और बाज़े गंधक को पीलीटंक के मदार के दूध में पकाकर दो दिन खरल करते हैं।

औषध-खुजली को गुण करे-सब्ज़ तूतिया, तम्बाकू सूखी एक एक टंक, कमीला दो टंक, सफ़ेद चीनी चार टंक, कड़ुवे तेल में मिलाकर तीन दिन लगावे।

मुरमक्की की गोली-तर खुजली को गुण करे-और कफ़ और पित्त को निकालती है पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बायबिडंग छिलाहुआ एक एक भाग, तुरबुद, खोखली दोभाग, कूट छानकर पानी में मिलाकर गोलियाँ बनावे खूराक तीन टंक और कदाचित् अधिक दस्त चलाने स्वीकार हों दश टंक खावे।

तेल-तर खुजली को गुण करे-तीन तोले मैनशिल महीन पीसकर एकसेर गाय के घी में मिलाकर औटावे जब धुवां बंद होजावे एक तग़ार में जल भरकर औषधों को तेल समेत उसमें डाले जब ठण्ढा होजावे पानी के ऊपर से तेल लेकर मले।

औषध-खुजली को गुण करे-पावभर कड़ुवे तेल को खूब जोश करे और मदार के हरे पत्ते इक्कीस लेकर एक एक पत्ता उसमें डाले जब सब पत्ते जलकर राख होजावें उतार कर थोड़ा मैनशिल पीसकर उसमें मिलावे और शीशे में रखकर खुजली पर मले दो तीन दिन में दूर होजावे खुजलीको गुण करे-कटहल का मूसला, जौ पुराना जो कीड़ों का खाया हुआ न हो, कोयलों की आग पर जलाकर महीन पीसे फिर कड़ुवे तेल में मिलाकर मले और तीन चार घड़ी के पीछे ठण्ढे पानी से धोवे और जाड़ों में यह दवा लगाकर गुनगुने पानी से नहावे।

औषध-ख़ारिश को गुणदायक-तूतिया, पारा, कालीमिरच तीन तीन माशे, बन्दूक़ की बारूद एक दाम, चार दाम घी में

मिलाकर मले और एक पहर के पीछे गरम पानी और बेसनसे धोवे।

ओषधि–खुजली को गुणकरे–मदार का दूध जमाकर सुखावे फिर जलाकर कड़ुवातेल मिलाकर शरीर पर मले और चार घड़ी के पीछे नहावे।

ओषधि–खुजली को गुणकरे–सहँजने की जड़ कड़ुवे तेल में जलाकर साफ़ करके बदन पर मले–पीली हरताल का तेल दाद और खुजली को गुणकरे–पीली हरताल एक भाग, मीठातेल दो भाग पहिले तेल को औटावे जब लाल होजावे हरताल पीसकर थोड़ा थोड़ा उसमें डालकर लकड़ी के चिमटे से हिलावे और आग नरम करे जब तेल की रंगत मोर के सदृश होजावे और तेल में आग लग लग जावे उससमय डेगची को बन्द करदे कि शोला तेलसे बुझजावे इसी तरह से डेगची को पांचबेर खोले बन्दकरदे फिर ठण्ढाकरके शीशे में रक्खे और आवश्यकता पर मलकर धूप में बैठे और गरम पानी से नहावे।

तेल–खुजली के लिये–पवाँर के बीज एक सेर, गन्धक एक दाम, एक सेर गाय का दूध और पावभर घी मिलाकर औटावे जब दूध जलकर तेलमात्र आय रहे साफ़ करके मले।

कालीदवा–दानों के लिये–घुंघची, आमला, कालीमिरच एक तोला, तूतिया एकभाग, कड़ुवातेल आवश्यकता के अनुकूल पहिले घुंघची को तेल में जलावे फिर हड़, आमला, तूतिया जुदा जुदा जलाकर कालीमिरच को कूट छानकर तेल में मिला कर दानों पर मले।

ओषधि–तर और खुश्क खुजली को गुण करे–कनेरकी बीस पत्तियां. पावभर तिलों के तेल में जलाकर मले।

पवांर का तेल–खुजली को गुण करे–पवांर के बीज एकसेर, गन्धपक्की एक दाम, जवकुट कर दो सेर गाय के दूध और पाव भर घी में पकावे जब दूध जलकर तेल रहजावे साफ़ करके मले।

ओषधि–खुजलीको गुण करे–पालक के बीज, ख़श्ख़ाश के

बीज बराबर लेकर पानी में पीसकर बदनपर मले फिर गरम पानी से नहावे दो तीन दिन में आराम होजावे।

ओषधि–खुजलीको गुणकरे–बन्दूककी बारूद कड़वे तेल में मिलाकर बदन में मलकर धूप में बैठे फिर नहावे।

अन्य–बरगदके पत्ते और थूहर की लकड़ी सूखी जो ज़मीन में पड़ीहो और ख़शख़ाश का पोस्ता बराबर लेकर जला कर उसकी राख कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरमपानी से नहावे।

अन्य–शोराक़लमी कड़वे तेल में मिलाकर मले।

अन्य–मेहँदी और गुलरोग़न सिरकेमें मिलाकर बदनपरमले।

अन्य–साबुन पानी में पीसकर लगावे फिर नहावे।

अन्य–तर खुजली और खुश्क को गुणकरे–सुहागा, चम्बेली का तेल, गुलाब और नींबू के रस में मिलाकर मले और बाज़े इसमें थोड़ा कपूर भी डालते हैं।

अन्य–गन्धक दो टंक, पारा, भुना तूतिया आधा आधा टंक, गौ के घी में जो इक्कीसबेर धोया गयाहो मिलाकर मले और दो घड़ी के पीछे ठण्ढे पानी से नहावे।

अन्य–अफ़ीम तिलों के तेलमें जलाकर मले।

अन्य-सेंदुर, आमलासार गंधक, मुरदारसंग, तूतिया, एक एक दाम सबको महीन पीसकर चार तोले गायके घी में मिलाके मले।

अन्य–गुनगुने पानी से रोज़ नहाना तर और खुश्क ख़ारिश को नाश करे।

अन्य–खुजलीको गुणकरे–सब्ज़ तूतिया, आमलासार गंधक, कपूर एकएक दाम, गायका घी धोकर तीन तोले ओषधि महीन कूटकर हररोज़ मलकर दो घड़ी धूप में बैठे फिर नहावे।

### बग़ल की दुर्गन्धि का यत्न।

शरीर को मल से शुद्ध करे।

ओषधि–बग़लकी बासदूरकरे–चूना पानीमें पीसकर लगावे।

अन्य—जामुनकी छाल और पत्ती पानी में औटाकर उससे बग़ल को धोवे।

अन्य—झाडू की पत्ती पीसकर मले फिर गरम पानी से धोवे।

अन्य—मुरदारसंग पीसकर मले गुणकरे।

हाथ पांव में अधिक पसीना निकलने का यत्न जिसको शीत बोलते हैं।

यत्न—मूंग जलाकर पीसकर मले।

ओषधि—बैंगन, ख़श्ख़ाश का पोस्ता अधकुचला पानी में औटाकर उससे हाथ पाँव धोवे।

अन्य—शीत को गुणकरे—कुल्थी, पीली कौड़ी जलाकर जुदा जुदा महीन पीसकर मले।

अन्य—काले धतूरे के बीज जलाकर महीन पीसकर एक माशा भर हररोज़ एक सप्ताह पर्यन्त खावे।

अन्य—बेर की पत्तियां पीसकर मले।

अन्य—बबूल की सूखी पत्तियां पीसकर हाथ पाँव पर मले।

अन्य—नीलकी छाल पानी में औटाकर उसका बुख़ार लेकर उसके गुनगुने पानीसे धोवे इसीप्रकार एक सप्ताहपर्यंत सेवनकरे।

अन्य—बालछड़ लगाना शीतको गुणकरे।

अन्य—ऊंटकटारे की जड़ सुखाकर पीसकर एक तोलाभर शहद मिलाकर सात दिन खावे।

अन्य—फिटकरी पानी में हल करके मले।

अन्य—पुष्करमूल पीसकर हथेली और तलवे पर मले।

गोली—शीतको गुणकरे—शिंगरफ़, पेठेकेबीजों की गिरी एक एक टंक, पीली कौड़ी जलीहुई तीन टंक, कालीमिरच पांच टंक, कूट छानकर दो टंक खट्टा चूक मिलाकर कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली सुबह एक शाम खाय।

उँगलियों के फूलने और उनकी खुजली का यत्न।

यह रोग हवा की सरदी से होजाता है।

यत्न—गेहूँकी भूसी और नोन औटाकर धोवे।

अन्य–शलग़म या चुक़न्दर के काढ़े या उस जल से जिसमें मसूर और मटर औटाया हो धोये।

व्रण का यत्न–जिस ज़ख़ममें पीब निकले उसको क़रा बोलते हैं और जिसव्रणपर चालीस दिन बीत जावें वह नासूर कहलाता है।

औषधि–घावको सुखावे पैरा कि एक घास है नदी के किनारे उगती है उससे चटाई बनाते हैं उसको जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के जो सिरके में भिगोकर नासूर पर रक्खे गुण करती है।

अन्य–पीब के घाव को सुखावे–कनेर की पत्तियां सूखी पीस कर छिड़के या संगजराहत पीसकर छिड़के–स्त्री के ऋतु का कपड़ा जलाकर घावपर छिड़के।

अन्य–गधे का मांस खाल सहित जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के दो दिन में मांस भर आवे।

अन्य–सिरस की छाल सूखी पीसकर छिड़के।

अन्य–मुरग़ी का पर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–घाव को गुण करे–कछुवे का शिर जलाकर उसकी राख लेकर पहिले घाव में मीठातेल लगावे फिर वह राख छिड़के तीन दिन में आराम होवे।

औषधि–घाव को साफ़ करे–साबुन पानी में पीसकर थोड़ा गेरू मिलाकर मरहम की रीति पर बनाकर सेवन करे कभी गेरू के बदले चावल मिलाते हैं।

अन्य–घाव से भरा हुआ मांस दूर करे और खेद न दे–भुनी फिटकरी महीन पीसकर छिड़के।

औषधि–घाव को भर दे–असगन्धनागौरी महीन पीसकर घाव पर छिड़के–घाव की गुणकारक–घियातोरई की पत्ती घाव पर बांधना लाभ करे।

अन्य–कंघी की पत्ती पीसकर घावपर बांधना शीघ्र गुण करे परन्तु साबत बांधना बहुत गुणदायक है।

अन्य–सरू की पत्तियां जलाकर उसकी राख घावपर छिड़के।

अन्य–हल्दी महीन पीसकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य–माजू जलाकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य–कुन्दर पीसकर छिड़कना बुरे घाव को दूर करता है।

अन्य–फैलनेवाले घाव को गुणकारक–कमल और बरगद के पत्ते बराबर जलाकर उसकी राख तेलमें मिलाकर घावपर टपकावे।

अन्य–फफोले और घाव के सुखाने में अद्वितीय है–कपूर चौथाई भाग, भुनेरेंहां अर्थात् नाजबो के बीज आधाभाग, प्याज़ का छिलका जलाकर एक भाग, बाल जलाकर दो भाग सबको पीसकर छिड़के गोली और गज़ेबी घाव को जिसमें छिद्र होते हैं गुण करे–बेलगिरी, कत्था, सब्ज़ तूतिया बराबर लेकर गोलियां बनाकर लगावे।

ओषधि–गुड़ घावपर बांधना शीघ्र पीब को साफ़ करता है।

अन्य–मसूर जलाकर भैंस के दूध में मिलाकर सुबह और शाम लगावे।

तेलों के नुस्खे–तेल घाव के भरलाने के लिये आश्चर्यदायक प्रभाव रखता है–सँभालू के पत्ते फ़राश के पत्ते, चम्बेली के पत्ते, धतूरे के पत्ते एक एक टंक, मीठा तेल आधसेर, पत्तों को पीसकर तेल में मिलाकर जलावे और चिमटे से खूब हल करके आग से उतारकर फिर चिमटे से हिलावे जब थिराजावे साफ़ तेल लेकर सेवन करे।

अन्य–घाव के भरने के लिये करंजुवे के पत्ते, नींब के पत्ते एक एक दाम, टिकिया बनाकर मीठे तेल में भूने जब काली होजावे तूतिया एक माशा भर पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य–घावको शीघ्र भरकर अच्छाकरे–गूलर एक दाम, हल्दी एक गांठ, सिन्दूर चार माशे, पहिले तेल में नींब की पत्तियों की टिकिया बनाकर जलावे फिर हल्दी जलावे फिर गूगल, सिन्दूर मिलाकर सेवन करे।

पत्तों का तेल–हरप्रकार के घाव को गुणदायक–मीठा तेल

एक सेर कड़ाही में डालकर जोश दे फिर नींब की पत्तियों की टिकिया आधपाव, कनेर की पत्तियों की टिकिया पावभर, मोम आठ दाम, बकायन की पत्तियों की टिकिया पांच टंक, तेल में डालकर जलावे जब जलकर काली होजावे तेल को साफ़ करके घाव पर टपकावे।

नींब का तेल–घाव को गुण करे नींबकी पत्तियां पीसकर टिकिया बनाकर तेलमें जलावे जब काली होजावे साफ़ करके रक्खे और यह तेल सादा है कानकी पीड़ाको भी गुण करता है और जो घावपर टपकावे कमीला, कत्था एक एक तोला महीन पीस कर मिलावे कि घावको भरे और पीब निकालनेकी इच्छा हो तो थोड़ा तूतिया डाले कमीले का तेल घाव भरने में अद्वितीयहै थोड़े दिनों में अच्छा करता है कमीला दश टङ्क तीनबेर महीन खरल करके दश टङ्क कड़ुवे तेल में मिलाकर कपड़े में छानकर आवश्यकतापर उसमें रुई भिगोके घावपर रक्खे और कई बूंदें टपकावे।

भिलावें का तेल–बहुत घावों को गुण करे–यहांतक कि चौपायों के ज़ख़्मों को भी गुण करे–सात भिलावें आधपाव तिलों के तेल में जलाकर–साफ़ करके दो टंक संगजराहत पीसकर मिलाकर मुरग़ी के पर से लेकर ज़ख़्म पर लगावे–कोंच के बीजों का तेल घाव और नासूरको गुणदायक है छिलेहुये कोंचके बीज दो दाम महीन पीसकर टिकिया करके आधपाव मीठे तेल में जलाकर साफ़ करके घाव पर टपकावे और बाजोंने लिखा है कि मीठे तेल के बदले कड़ुवा तेल मिलावे।

कुचले का तेल–नासूर को भरता है और घावको गुण करता है–कालीमिरच साढ़े तीन माशे, तूतिया एक चनेके बराबर, पांच कुचले, कड़ुवा तेल पांच टंक पक्का–थोड़ी नींब की पत्तियां, अजवाइन एक दाम, कमीला दो दाम पहिले तेलको कड़ाही में औटावे और नींबकी पत्तियोंकी टिकिया बनाकर उसमें जलावे जब काली होजावे निकालकर साफ़ करके सम्पूर्ण औषधि जुदा जुदा पीस

छान तोलकर तेल में जलावे फिर छानकर चीनी या शीशे के वर्तन में रक्खे और रुई उसमें भरकर घाव या नासूर पर रक्खे जब सूख जावे फिर भिगो दे।

तेल–घाव के भरने के वास्ते–मुलहठी छीलकर पानी और तेल में औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजावे साफ़ करे और हूहजूह के साथ लाल करके सेवन करे।

अन्य–सब घावोंको गुणकरे–यहांतक कि चौपायेके घावको भी गुणकरे–मीठातेल पावभर, नींबकी कोंपल, अरण्डकी कोंपल दो दो दाम, पत्तों को तेल में जलाकर साफ़ करके राल दो दाम, कमीला एक दाम महीन पीस मिलाकर घावपर टपकावे कदाचित् मरा हुआ मांस अधिक होवे एकमाशा भर तूतिया मिलावे।

अन्य–घाव के भरने के लिये अद्वितीय है और आतशक के घावको दूर करे–भिलावां, कोंचके बीज एक एक दाम, खुरासानी अजवाइन, मुरदारसंग तीन तीन माशे, तूतिया दो माशे, तिलों का तेल आधपाव, पहिले तेलको आगपर रक्खे जब औटे उसमें भिलावां डालकर जलावे फिर कोंच के बीज और अजवाइन एक एक बेर करके डाले फिर तूतिया फिर मुरदारसंग पीसकर मिलावे और आग से उतारकर खूब हल करे जब दूध के सदृश होजावे जो घाव नाज़ुक जगह में हो तेल छानकर टपकावे नहीं तो बे छाने सेवन करे और यह तेल नासूर को भी गुण करता है।

कुचले का तेल–उकौता और शिरके गंज आदि को लाभदे–आठ कुचले मीठे तेल में जलाकर सेवन करे।

हर प्रकार के व्रणों के मरहमों का वर्णन।

मरहम–प्याज़, साबुन, सफ़ेद कत्था चार चार दाम, नींबकी पत्तियां ग्यारह, मीठा तेल चारदाम, पहिले प्याज़ और साबुन को टुकड़े टुकड़े करके तेलमें जलावे फिर नींबकी पत्तियां जला कर मिलावे फिर कत्था पीसकर डाले और थोड़ा कपड़ा जलाकर मिलावे फिर खरल करके सेवन करे।

कौंच का मरहम—यह वैद्यों का नुस्खा है जो घावको जल्दी भरता है—मीठातेल पावभर लोहेके बर्तनमें गरम करके उतारले फिर कौंचकी गिरी पीसकर मिलावे और नींबके पत्ते और नरमे के पत्तों की टिकिया बनाकर चार दाम मोम गरम करके तेल में मिलाकर सेवन करे—मरहम जो पानी से बनता है और चिकनई उसमें नहीं है और जलका संसर्ग मरहम के सेवन के समय कुछ खराबी नहीं लाता और सर्व प्रकारके पीब के व्रणों को गुणकरे यहां तक कि नासूर को अच्छा करे—गूगल, पारा एक एक टंक, रसौत दो टंक, पहिले गूगल और रसौत को पानी में हल करे फिर पारा मिलाकर पीस कर सेवनकरे।

दूसरा मरहम—जो पानी से तय्यार होता है ज़ख़्मों और नासूर को गुणकरे—राल, घी आध आध पाव, कत्था, फिटकरी, सब्ज़ तूतिया छः छः मिस्काल, राल और तेलको थोड़े पानी से दो घड़ी हाथों से मलकर औषधि कूट छानकर मिलावे।

अमरती की गोली—मुरदारसंग, अमरत एक एक दाम, कत्था, राल, मोम सात सात माशे, घी आधपाव, घी को खूब दाग़ करके मुरदारसंग पीसकर उसमें डाले जब जलजावे उतारकर राल और मोम मिलावे फिर अमरत और कत्था पीस मिलाकर सेवन करे सब ज़ख़्मों और फोड़ों को गुणकरे।

अमरत की गोली—संगमरमरकी गर्द, तूतिया, कत्था सफ़ेद, पीलीकौड़ी कूट छानकर घृतमें मिलावे और सुरख़ी के लिये थोड़ा महावर मिलाकर गोलियां बनावे।

मरहम—सब प्रकार के घावको गुणकरे और घावको जल्दी भरलाता है राल साढ़ेतीन माशे, शिंगरफ़ एक माशे, मुरदारसंग एक माशे, छिले कौंच साढ़े तीन माशे, सरसोंका तेल दो दाम, पहिले कौंच को तेलमें जलावे फिर नींबकी पत्तियोंकी टिकिया उसमें जलाकर साफ़ करके दवायें हलकरे।

मरहम—बिवाई को गुणकरे—राल एकदाम, घी एक दाम, मोम

पाव दाम, घी दाग़ करके मोम उसमें मिलावे फिर राल डाल पाँवों को खूब धोकर मरहम घाव में भरदे और दो चार बेर सेवन करे।

अन्य-सब प्रकार के घाव को गुणकरे-कीमुख़्त जलाहुआ, सुपारी जली हुई, हड़के बीज जले हुये, मदार की कोंपल जली हुई, मुरदारसंग, कत्था आधा आधा दाम, घी गरम करके दवायें मिलाकर मरहम बनावे ।

मरहम-सब प्रकारके ज़ख़्मों को गुणकरे-जाड़ों के मौसिम में घी दो दाम गरमियों में एक दाम लेकर तूतिया एक माशे, मोम सफ़ेद एक दाम, सिंदूर पाव दाम मिलाकर यथाविधि मरहम बनावे ।

मरहम-आतशक, नासूर और घावको गुण करे-सरसों का तेल एक दाम, ज़ँगार चार माशे, संगजराहत एक दाम, मोम एक दाम लेकर मरहम बनावे ।

मरहम-सब ज़ख़्मों को गुणकारक और आज़माया हुआ है-राल, हिरमिजी मिट्टी छः छः माशे, तूतिया सब्ज़ दो रत्ती, मीठे तेल में खरल करके मरहम तय्यार करे ।

मरहम-सब ज़ख़्मों और आतशक के घाव को गुणदायक है-मोम, राल, कत्था एक तोला, मोम को थोड़े तेल में टिघला कर पहिले राल को पीसकर मिलावे और तीन जोश देकर कत्था डालकर हलकरके चार माशे कपूर पीसकर मिलावे फिर औटा कर उतार ले और जो पुराने पीबवाले घावपर सेवन करे थोड़ी सुपारी जलाकर मिलावे ।

मरहम-राल एक भाग, मोम आधा भाग, तेल चार भाग, औषधि लेकर यथाबिधि मरहम बनावे ।

मरहम-हड्डी के टूटजाने के लिये-पक्की ईंट महीन पीसकर थोड़े दूध में मिलावे और चावलों को उसमें पकाकर तीन सप्ताह पर्यंत खावे हड्डी उसी तरह दुरुस्त होजावे ।

मरहम-बहुत से ज़ख़्मों को गुण करे-जंगीहड़, कमीला एक

एक मिस्काल, सब्ज़ तूतिया आधा मिस्काल कूट छानकर थोड़े तेल में पीसकर मरहम बनावे।

मरहम—घाव को गुण करे, यह नुस्ख़ा अँगरेज़ों का है—मोम एक दाम, भुनी फिटकरी दो माशे, सिंदूर दो माशे, मुरदारसंग चार माशे, तूतिया दो रत्ती, घी दो दाम, तेल और मोम को दाग़ करके आग से उतार कर औषधि उसमें हल करे।

तेल—घाव के भरने को गुण करे—रेंड़ी का तेल पावभर, अरण्ड की कोंपल का रस पावभर दोनों को औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे एक दाम पत्थर का चूना मिलाकर घाव में लगावे और चूना चार प्रकार का होता है एक पत्थर का, दूसरा घोंघे का, तीसरा सीप का. चौथा कंकर का।

मरहम—घाव के भरने के वास्ते अतिश्रेष्ठ है—पुरानी रुई जला कर उसकी राख छः बहलोली भर लेकर तीन बहलोली मोम और उसकी बराबर बच खुरासानी और गाय का घी पांच बहलोली, तूतिया दो रत्ती पहिले घी और मोम को एक बर्तन मे गरम करे और उसमें रुई की राख डाले फिर बच मिलावे फिर तूतिया भूनकर पीसकर मिलावे और मरहम बनाकर सेवनकरे।

मरहम—ज़ख़्म के भरने के लिये—कत्था सफ़ेद, मुरदारसंग, संगजराहत एक एक दाम, राल छः दाम, कम्मल का टुकड़ा चौथाई गज़ जलाकर, घी सात दाम यह सम्पूर्ण औषधि महीन करके घी में मिलाकर बरहम बनावे।

मरहम—भगंदर को गुणकरे अर्थात् वह फोड़ा जो फ़ोते और गुदा के बीच में हो—जला हुआ कीमुरूत, पपड़िया कत्था, संगजराहत, मोम हर एक एक दामभर गौ का घी कि सौ बेर पानी से धोया हुआ हो, मोम घी में पिघलाकर ठण्ढा करके औषधियों को मिलावे।

मरहम—फोड़े के ज़ख़्म को गुण करे—तूतिया एक माशा, मुरदारसंग दो माशे, कत्था सफ़ेद चार माशे, राल आठ माशे,

कमीला सोलह माशे, मोम काफ़ूरी ग्यारह माशे, गाय का घी बत्तीस माशे पहिले घी धोकर हाथ से मले फिर ओषधियाँ मिला कर हाथ से मलकर मरहम बनावे ।

मरहम सफ़ेद–घाव सुखाने के वास्ते–कपूर साढ़े तीन माशे, सफ़ेद मोम एक दाम, मीठा तेल एक दाम, सफ़ेदा दो दाम पहिले तेल को गरम करके मोम डाले और साफ़ करके मधुरी अग्नि पर रक्खे फिर उतारकर ठण्ढा करके सेवन करे ।

उन दानों का यत्न जो बरसात में पैदा होते हैं ।

मसूर के छिलके और आमला जलाकर उसके बराबर मेहँदी, कमीला, थोड़ा तूतिया भूना थोड़े तेल में मिलाकर पीसकर दानों पर मले ।

अन्य–आतशक के चटके पीबवाले घावके लिये–फिटकरी, तूतिया, मुरदारसंग, सुहागा एक एक माशे, कमीला, बावची, पँवाड़ के बीज, पारा, गेरू हरएक आधा माशा, जली कालीमिरच तीन माशे, पांच जले हुये कुचले सम्पूर्ण ओषधि महीन कूट छानकर आधपाव घृत में खरल करके सेवन करे ।

ओषधि–उकौते के वास्ते–जली कौड़ी, जला हुआ तूतिया, जली हुई हल्दी, बराबर नींबू के रस में खरल करके लेप करे ।

ओषधि–उकौते को गुणदायक–जली हुई सुपारी, जली हुई हल्दी, जलीहुई बावची एक एक दाम, मेहँदी, कत्था, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी हर एक आधा दाम, मसूर की दाल जली हुई, खशखाश का पोस्ता जला हुआ तीन तीन दाम, कालीमिरच चौथाई दाम सब महीन कूट छानकर सरसों के तेल में मिलावे और पहिले तीन दिन बराबर ढाक के पत्ते गरम करके उकौते पर बांधे तीन दिन के पश्चात् यह तेल लगावे गुणकारक और आज़माया हुआ है ।

ओषधि–उकौते को गुण करे–बावची कूट छान कर पहिले उकौते में सरसों का तेल मले उसपर यह ओषधि उकौते को

गुणदायक–घास दूब, चिरौंजी महीन पीसकर उकौते पर लगावे।

औषधि–उकौते को गुणदायक–कटहलकी पत्ती घी में भिगोकर उकौते को पीठकी तरफ़ से बांधे।

अन्य–महुवे के पत्ते मीठे तेल में भिगोकर गुनगुने उकौते पर बांधे और चार घड़ी के उपरान्त खोलकर दूसरे पत्ते बांधे।

अन्य–गेरू, भुना सुहागा बराबर चँवेली के तेलमें हल करके चार चार बेर लेप करे।

अन्य–करील की लकड़ी का कोयला सरसों के तेल में मिलाकर मले।

अन्य–भिलावां मीठे तेलमें मिलाकर खूब हलकरे और थोड़ा तूतिया भूनकर महीन पीसकर उसमें मिलाकर लेप करे।

अन्य–उकौते के लिये–तूतिया, कालीमिरच, चूने की बरी, सुहागा एक एक दाम मेहँदी की पत्तियां दो दाम, कड़वा तेल चार दाम औषधि महीन पीसकर तेलमें औटाकर मिलाकर कई दिन लेप करे।

अन्य–सिंदूर, कालीमिरच, सुपारी, तूतिया, सफ़ेद कत्था, सफ़ेद कौड़ी जलाकर कुचला बराबर लेकर दुगुने तेल में मिलाकर सेवन करे।

अन्य–साबुन, चूना इकट्ठा पीसकर लगावे।

अन्य–उकौतेके लिये सिंदूर महीन पीसकर रात को नींबू के रस में भिगो दे सुबह मलकर उकौते को कंडे से छीलकर उस पर लगावे।

अन्य–उकौते को गुण करे–कुचला साढ़ेसात दाम, फिटकरी साढ़ेतीन दाम घृत में हल करके लेप करे।

अन्य–उस उकौते के घाव को गुण करे जो पांव में होताहै–अलसी की खली, तालाब की मिट्टी दोनों बराबर पानी में पीसकर लेप करे जब सूखने लगे कमीला तेल में हल करके मले।

अन्य–खली और नदीकी रेत बराबर लेकर पानी में मिलावे

और उससे एक टुकड़ा मोटा बनाकर सुबह से शाम तक बांधे तीन चार दिन में आराम होजावे।

नासूर का यत्न।

प्योटन की जड़ पानी में घिसकर नासूर पर रक्खे या उससे बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे कई दिन में अच्छा होजावे।

औषध—नासूर के लिये—पुराना कम्मल जलाकर सब्ज़ तूतिया कूट छानकर बराबर नासूर पर छिड़के।

अन्य—नासूर को गुण करे—कनखजूरा जलाकर उसकी राख नासूर पर रक्खे।

औषध—पुराने नासूर को गुण करे—सर्प की केंचुल जलाकर उसकी राख बरगद के दूध में मिलाकर उससे रुई भिगोकर नासूर पर रक्खे दश दिन के पीछे उठाले।

औषध—नासूर को गुण करे—गाय के सुम की राख, जूती के तले की राख बराबर लेकर एक छिपकली सरसों के तेल में जला कर उसमें राख हल करके कई बूंद नासूर पर टपकावे।

औषध—नासूर को गुण करे—इमली के बीज पानी में भिगो-कर छील डाले फिर उसको पानी में पीसकर उससे बत्ती भरके नासूर पर रक्खे चाहे इससे पीड़ा होती है परन्तु जल्दी अच्छा हो जाता है और बाज़े कौड़ी भी जलाकर पीसकर मिलाते हैं।

औषध—नासूर और भगन्दर को गुणकरे—गूलरके दूधसे फाया भिगोकर घावपर रक्खे और एक समय तक यही क्रिया करे।

अन्य—नासूर को गुणदायक है—समुद्रशोष जलाकर उसकी राख नासूर में भरे।

अन्य—नासूर की पीड़ा को दूर करता है रुई मदार के दूध में भिगोकर छाया में सुखावे फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलावे और उससे काजल पारकर नासूर पर लगावे।

अन्य—अरण्ड की कोंपल जो कच्ची और नरम हो पानी में हल करके मेंहँदी के सदृश मले।

अन्य–चिड़िया की बीट महीन पीसकर नासूर पर लेपकरे।

अन्य–नासूर को गुण करे–कण्डे की राख महीन पीस छान कर हथेली पर रखकर नासूर पर बांधे।

अन्य–मकड़ी का जाला कपड़े में साफ़ करके शराब में भिगोकर नासूर पर रक्खे।

अन्य–नासूर को गुण करे–गिलोय, हल्दी कूटकर तेल में औटावे जब जलजावे पीसकर लेपकरे।

अन्य–नासूर को लाभ करे–करील की कोंपल एक माशे, मुरदारसंग एक रत्ती, बरगद का दूध एक बूंद पानी के साथ पत्थर पर पीसकर लेप करके ऊपर से एक बूंद बरगद के दूध का टपकावे।

औषध–नासूर के लिये छोटी कटाई का फल कूट छानकर पानी में मिलाकर उससे फाया भिगोकर नासूर पर बांधे।

अन्य–नासूर और अकला को गुण करे–घोड़े का सुम जलाकर अलसी के तेल में मिलाकर नासूर में लगावे कदाचित् नासूर अंग के भीतर होवे दही में मिलाकर नासूर के भीतर रक्खे।

अन्य–जिस हुक्के में सुलफा पीते हैं उसका पानी तीन दिन न बदले जब पानी पर जाला पड़जावे उस जाले को लेकर नासूर पर लगावे।

अन्य–नासूर को गुण करे–बिषखपड़े की जड़, मेहँदी के पत्ते, फराश के पत्ते, नरमे के पत्ते, नींब के पत्ते, जैत के पत्ते, बेर के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, राल दो दो दाम, मीठा तेल एकसेर पहिले बिषखपड़े की जड़ टुकड़े करके तेलमें जलावे फिर पत्तों की टिकिया बनाकर तेल में जलावे और छान के मिलाकर हल करे।

अन्य–नासूर के वास्ते–सफ़ेद मोम, बच खुरासानी एक एक दाम, मीठा तेल पावभर पहिले तेल को गरम करके उसमें बच जलावे और साफ़ करके मोम मिलाकर मरहम बनावे।

अन्य–नासूर को गुण करे–चरचटे की पत्तियां पीसकर उसमें

कपड़ा भिगोकर बत्ती बनाकर नासूर में रक्खे और उसका थोड़ा सा रस नासूर में टपकावे शीघ्र गुण करे।

अन्य–अखरोट की गिरी, मोम, मीठा तेल बराबर लेकर मरहम बनावे।

अन्य–नासूरको गुणकरे–गूगल भैंस या गायके मूत्र में हल करके बत्ती बनाकर नासूर में रक्खे।

उन औषधियों का वर्णन जो रुधिर को बन्द करती हैं।

बलगार का कपड़ा जलाहुआ, दराई जलीहुई, भूनाहुआ सुहागा, हल्दी महीन पीसकर कण्डे की राख इन औषधियों से एक जिस जगह कि रुधिर जारी हो बांधे रुधिर बन्द करे।

अन्य–घोड़े की लीद बांधे और अण्डे का छिलका लेकर अन्दरका परदा उसका निकालकर सुखाकर महीन पीसकर छिड़के।

अन्य–संगमरमर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–फेफड़ा जिस जानवर का चाहे सुखाकर जलाकर उसकी राख घाव पर बांधे।

अन्य–भुना तूतिया महीन पीसकर घाव में भरदे।

अन्य–माज़ू जलाकर घावपर छिड़के।

अन्य–मूंगा महीन पीसकर छिड़के।

अन्य–ताज़ी काई का लेप करे।

अन्य–कुंदर पीसकर छिड़के।

अन्य–रुई जलाकर छिड़के।

आग से जलजाने का यत्न।

इमली की छाल पीसकर गाय के घृत में मिलाकर मले।

अन्य–बरगद की कोंपल गाय के दही में पीसकर मले।

अन्य–अरण्ड के पत्तों का रस मले।

अन्य–धवई के फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य–अण्डे की सफ़ेदी मीठे तेल में मिलाकर लगाना गुणकरे।

अन्य–दवातकी सियाही लगावे।

अन्य–अनार की पत्तियां पीसकर लगावे।

अन्य–सीप घिसकर अण्डेकी सफ़ेदी में मिलाकर लगाना गुण करे।

अन्य–जो शरीर जलकर सफ़ेद होगया हो हड़, बहेड़ा, आमला पानी में पीसकर लगाना असली रंग पर लाता है।

पुराने छप्परकी घास पीसकर सरसोंके तेलमें मिलाकर लगावे।

अन्य–गेहूँ या जौंका आटा पानीमें हल करके लगावे।

अन्य–जलजाने के पीछे जब दाग़ रहजावे जामुन की पत्ती पीसकर लेप करे।

अन्य–बेर की कोंपल दही में मिलाकर कई बेर मले गुणदे।

अन्य–हींग पानी में हल करके लगाना मुख्य करके गुणदायक है।

अन्य–झड़बेरी की पत्तियां मीठे तेल में लगाकर मले।

अन्य–माज़ू जलेहुये को गुणकरे–जो सब चमड़ा जलकर गिरपड़ा हो उसी समय आराम देता है–राल महीन पीसकर मीठे गरम तेल में डाले जब पिघलजावे मिलाकर लेप करे।

अन्य–मेहँदी की पत्तियां पानी में पीसकर लेप करे और मक्खन के साथ लगाना दूसरा गुण रखता है।

लेप करने की दवाइयां।

जब कोई वस्तु किसी अंगपर गिर पड़े उसको जरबा बोलते हैं और सकता वह है कि आपही अंग किसी वस्तु पर गिरे–कदाचित् उसके कारण शोथ या ज्वरहो पहिले शोथ या ज्वरका यत्न फ़स्द, पछने और नरम करनेवाली वस्तुओं से करे।

गोली–चोट को गुण करती है–पीपल की पत्तियां इक्कीस पीसकर गुड़ में मिलावे और गोलियां बनाकर सातदिन खावे।

औषध–चोट को गुणकरे–बारहसिंगे का सींग पानी में घिसकर पिये।

अन्य–कच्चा बैंगन शक्कर के साथ खावे और थोड़ी सौंफकी जड़ पीसकर पिये।

अन्य–खरियामिट्टी एक टंक आधपाव पानीमें हल करे जब मिट्टी बैठजावे पानी साफ़ करके पिये।

चूर्ण–चोटको बहुत गुण करे और पीड़ा बिल्कुल खोदे–नोन छः माशे, शक्कर सफ़ेद छः माशे चूर्ण बनाकर खावे।

औषध–हज़रतयहूद आधे माशे से एक माशे पर्यन्त खाना मोमियाई के बराबर प्रभाव रखता है।

गोली–चोटके वास्ते बहुत गुण करे--यहांतक कि चौपाये की चोटको गुण करे--गेहूँ जलाकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर खूब पीसकर थोड़ा थोड़ा घीमें मिलावे खूराक डेढ़ तोले तक तीन दिन खाने से चोट और पीड़ा बिल्कुल नष्ट हो और इस औषध को मोमियाई हिन्दी बोलते हैं।

दवा--चोट और शरीर में रुधिर जमजाने को गुण करे--एक माशा फिटकरी पीसकर चार तोले घी में भूने जब फिटकरी घी में जम जावे ऊपरके घी को लेकर उसमें शक्कर और मैदा मिलाकर हलवा बनाकर खावे और उसी हलवे की एक गोली बनाकर वह फिटकरी उसमें रखकर तीन दिन लगावे मोमियाई से उत्तमहै।

लेप–बचियार की लकड़ी पानी में घिसकर गुनगुनी लगावे।

अन्य–चोट और मोच को गुण करे–सहँजन की पत्तियां बराबर मीठे तेल में पीसकर लेप करके धूप में बैठे।

औषध–माँदगी को गुण करे–जिस तेल को चाहे गुनगुना करके नाखूनों पर मले।

अन्य–चोटको गुणदायक और टूटेहुये जोड़को असली हालत पर लाता है–रेंडीकी गिरी, कालेतिल जुदा जुदा कूटकर मीठे तेल में मिलाकर लेप करे।

औषध–चोट और मोच को गुण करे–तिल की खली कूट-कर गरम पानी में डाले जब घुल जावे महीन कपड़े में लेप करके जोड़ पर रक्खे।

अन्य–माँदगी को गुणदायक मीठातेल गरम तलुओं पर मले और जङ्गली कण्डों की आगसे सेंक करे और पाँव ऊँचे रक्खे।

औषध–चोट को गुण करे–साबुन पानी में पीसकर गरम करके मले और जिस जोड़में हवा लगी हो उसको भी गुणदायक है और जो साबुन में हल्दी मिलाकर लेप करे गुण करे।

औषध–चोट और उस गांठको जो चोट के कारण पड़ गई हो गुण करे–पुराने नारियल की गिरी जो कड़वी न हो कूटकर चार भाग हल्दी महीन करके मिलावे और थोड़ा पोटली बांध कर गरम करके दो तीन घड़ी सेंककरे फिर चोट और वरमकी जगह पर बांध दे दो तीन दिन में आराम होजावे।

औषध–चोट को गुण करे–हल्दी, मैदालकड़ी, गेहूं का मैदा आध आध पाव, सज्जी लोटन एक दाम, मीठा तेल पावभर पहिले तेल को गरम करे और मैदा उसमें भूने फिर औषध जुदी जुदी महीन करके पहिले सज्जी फिर मैदालकड़ी फिर हल्दी मिलाकर थोड़ा पानी डालकर पकावे जब पानी जलजावे गरम गरम लेकर सेंक करे इसको लिपड़ी बोलते हैं।

औषध–चोट और मोच को चाहे ताज़ी हो या पुरानी अद्वितीय गुणदायक है–अशना दो दाम, सोंठ और कुचला टुकड़े टुकड़े करके हांडी में एक सेर पानी के साथ डाल कर सरपोश बन्द करके औटावे जब तृतीयांश जल शेष रहे पहिले बफारा ले फिर जोड़ को इस पानी से धोकर दवा का फोग पीसकर गुनगुना बांधे तीन दिन में बिल्कुल आराम होजावे।

औषध–मोच को जल्दी आराम देती है–पहिले जोड़ को गुनगुने पानी से धोवे फिर अंडे की ज़रदी और थोड़ा गेरू मिलाकर गुनगुना लेप करे–और जोड़ को आग से सेंके कि दवा सूख जावे।

बहुत मोटाई का इलाज।

यह रोग कई कारणों से पैदा होता है, स्त्रियोंके स्वभाव में अधिक है और मर्दों के स्वभाव में कम है।

यत्न—शरीरमें रुधिरकी अधिकताहो तो फ़स्द ले नहीं तो कफ़के मुस्हिल दे और वह औषधियां जो शरीरको सुखाती और दुबला करती हैं सेवन करे।

चूर्ण—शरीरको दुबला करने के लिये घुलीहुई लाख दो टंक, कालाज़ीरा, अजवाइन हर एक चार टंक, खूराक एक टंक, दो तोले सिकंजबीन सादी के साथ।

अन्य—चन्दरस एक माशा, दो तोले सिकंजबीन और पानी के साथ मिलाकर पिये भोजन में सिरका और मसूर और जौकी रोटी खावे शरीर को दुबला करदे और बबूल की छाया में बैठना मुख्य करके शरीर को दुबला करता है राँगेकी अंगूठी पहिनना मुख्य करके शरीर को क्षीण करता है और चीजें कड़वी और खट्टी और दवायें गरम और ख़ुश्क खाना और भूखा रहना और मोटे कपड़े पहिनना और पृथ्वी पर सोना और सरदी में नंगा होना शरीर को दुबला करता है।

शरीर के अधिक क्षीण होने का यत्न।

जो कि अधिक दुबला होना भी एक रोग है इस वास्ते थोड़ी सुगम औषधियां मोटा करने के लिये लिखीज़ाती हैं।

औषध जो मुख्य करके स्त्रीके शरीर को मोटा करे—असगंध, कालीमूसली, सफ़ेदमूसली बराबर लेकर गोदुग्धमें पकावे जब दूध सूखजावे सुखाकर पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर हररोज़ सातटंक गायके दूधके साथ खावे।

अन्य—रोटी दूधके साथ खाना बदन को मोटा करता है।

औषध—बदन को मोटा करने के लिये मीठे बदाम की गिरी, निशास्ता, कतीरा, शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले भर दूधके साथ खावे।

जवारिश-बदन की तय्यारी के वास्ते यह सुगम औषध हरबी सग़ीरसे प्रति कीगई है-कालीमिरच, सोंठ हरएक दश टंक, पीपल तीस टंक, छिले तिल, अख़रोट की गिरी हरएक पचास टंक, शक्कर दो सेर, शहद आवश्यकता के अनुसार यथाबिधि माजून बनावे ख़ूराक एक मिस्काल की करे।

मुहासों का यत्न।

यदि बहुत निकलें और मुँह को दुःखदें सरेरू की फ़स्द खोले और जुलाब के उपरान्त ठंढी ओषधियों के लेपको सेवन करे।

यत्न-अमलतास के वृक्षकी छाल, अनार, लोध, आंबाहल्दी, नागरमोथा बराबर पीसकर उबटनके सदृश मुँहपर मले और सूखने के पीछे धोडाले।

औषध-मुहासे को गुणकारक-बेर की गुठली की गिरी, मुलहठी, कठ बराबर पानी में पीसकर मुँहपर मले।

अन्य-जवासा पानी में औटाकर उससे मुँह धोवे।

अन्य-खुरफ़ेके बीज पीसकर गायके दूध में उबटना बनाकर सेवन करे।

अन्य-नरकचूर, समुद्रझाग पानी में पीसकर उबटना बनावे।

अन्य-सफ़ेद घुंघची की गिरी, लाहौरी नोन पीसकर कुचला भिगोकर उसके जलमें मिलाकर लेप करे।

अन्य-नरकचूर पानी में पीसकर लगावे।

अन्य-पीली कौड़ी पीसकर नींबू के रस में भिगोदे जब रस सूख जावे और डाले जब वह भी सूख जावे पीसकर सुबह और शाम मले मुख को साफ़ करता है।

मुख का रंग बराबर हो जाने का यत्न।

जो कलेजे और तिल्ली और कोष्ठ के उपद्रव से हो उन अंगों का यत्न न करे और जो चीज़ें रंग को ख़राब करती हैं जैसे कि बैंगन और ज़ीरा और सिरका न खावे और अधिक भोग, चिन्ता, खेद, गरम हवा और धूप से पथ्य करे।

औषध–चेहरे को चमकावे और झाईं दूर करे–हरे कलमली के बीज दूध में पीसकर उबटने की तरह मले।

अन्य–चिड़िया की बिष्ठा सुखाकर पीसकर मुख पर मले।

अन्य–मुहासे को गुण करे–सिरस की छाल, काले तिल बराबर सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य–कलौंजी सिरके में पीसकर रात को लेपकरे सुबह धोडाले मुहासे और मस्से दूर होजावें इसीप्रकार अजवाइन का लगाना गुण करता है।

लेप–मुहासे को गुणकारक–झरबेरी के बेर जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर लेपकरे।

अन्य–मुँह चमकावे–पीली सरसों आधपाव दूध में औटावे जब दूध सूखजावे सरसों सुखाकर पीसकर उबटना बनाकर मले।

अन्य–मुहासे को गुणकारक–मँजीठ, रक्तचन्दन, मसूर, लोध, लहसुन की कोंपल कूट छानकर महीन करके रात को मुहासे पर लगाकर सुबह धोडाले।

अन्य–मुख को चमकावे और साफ़ करे–चावल, जौ, चने, मसूर और मटर का आटा हरएक इनमें से मुँह को साफ़ कर देता है उबटना बनाकर सेवन करे।

औषध–स्त्री के रंग की सफ़ाई के लिये उत्तमोत्तम है और मुख्य खाने में गुण करती है–खोपड़े की बट्टी लेकर उसमें छिद्र करके एक दाम केशर, एक दाम जवासा पानी में पीसकर उसमें डालकर उसके टुकड़े से छिद्र बन्दकरके आठसेर गाय के दूध में मधुरी अग्निपर औटावे जब सब दूध सूखजावे औषधको खोपड़ेसे निकाल पीसकर चनेकी बराबर गोलियां बनावे सुबहके वक्त एक गोली पान में खावे एक मित्र ने इसे बहुत आज़माई हुई कहा है।

औषध–अगर सम्मग़अरबी, क़तीरा, निशास्ता, ईसबग़ोल के लुआब या खुरफ़े के पानी में मिलाकर सफ़र में मुँह पर मले तो धूप से रंग काला न हो।

कालेदाग़ का यत्न ।

अर्थात् वह काला दाग़ जो मुँह पर होजावे उसे झाईं कहतेहैं ।

औषध—झाईं को गुणकारक—तरबूज़ में छिद्र करके उसमें चावल भरकर सात दिन रक्खे फिर चावल निकालकर सुखाकर उबटना बनावे ।

अन्य—आंब की बिजली, जामुन की गुठली पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य—झाईं को गुणदायक है—नाजबो की पत्तियां, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुँह पर मले ।

अन्य—कुलींजन पानी में पीसकर कई दिन लगाना त्वचा के भीतर से स्याही सुखाकर दूर करता है चाहिये कि थोड़े दिन लगाकर फिर चावल पीसकर लेपकरे कि त्वचाका रंग बराबर होजावे ।

झाईं को गुण करे—चौलाई की जड़ और डाल जलाकर पानी में पीसकर झाईं पर मले और एक घड़ी धूप में बैठे सूखने के पीछे गरम पानी से धोवे और लाहौरीनोन पीसकर मुँह पर मले ।

अन्य—झाईं को गुण करे—तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर फिर मुँह पर मले ।

अन्य—क़लमीशोरा, हरताल एक एक टंक तीन भाग करके एक भाग पानी में मिलाकर मुँह पर मलकर एक घड़ी धूप में बैठे और गरम पानी से धोवे तीन दिनमें दूर होवे ।

अन्य—काग़ज़ीनींबू काटकर हल्दी टुकड़े टुकड़े करके उसमें फिर नींबू के दोनों टुकड़े एक सप्ताहपर्यंत रक्खे फिर निकालकर नरकुलकी पुरानी जड़ के साथ पीसकर रात को लगाकर सुबह गरम पानी से धोडाले ।

अन्य—झाईं को गुणकरे—करंजुवे की गिरी गाय के दूधमें पीसकर लेप करे—चेहरेको बुर्राक और प्रकाशवान् करता है ।

अन्य—झाईं को गुणकारक—शहद, सिरके और नोन में मिलाकर मला करे ।

अन्य–झाईं को गुण करे–नींब के बीज सिरके में पीसकर मले।

अन्य–झाईं को गुणकारक–अंजरूत दो भाग, कत्था एक भाग कूट छानकर गायके ताज़े दूध में मिलाकर हररोज़ कई बेर मुख पर मले शीघ्र आराम होजावे।

अन्य–झाईंको गुणदायक–कबूतरकी बीट पानीमें पीसकर हर रोज़ कई बेर लगावे।

अन्य–झाईं को गुणदायक–मसूर नींबूके रसमें पीसकर लगावे।

अन्य–भुनी फिटकरी, हराममग़ज़ एक एक दाम, चूना आधा दाम कर यह सम्पूर्ण औषध नींबू के रसमें खूब पीसकर मरहम के सदृश करके झाईं पर मले दो एक सप्ताह में दूर हो जावे और जब नींबू का रस सूख जावे और डालदे।

छीप की दवायें।

छीप को गुणदायक--हल्दी, कालेतिल भैंस के दूध में पीसकर लेप करे।

अन्य–चीनियां के फूल, छाल और उसकी पत्तियां पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–चीनियां के फूल नींबू के रस में पीसकर लगावे छीप और झाईं दूर होवे।

अन्य–छीप को गुणदायक–चौलाई की जड़ और डालें जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर छीप पर लगावे और एक घड़ी धूप में बैठकर गरम पानी से धोडाले।

अन्य--छीप को गुणदायक--पवाँर के बीज अधकुचले दही के तोड़ में मिलाकर दो तीन दिन रक्खे फिर बदन में मलकर नहा डाले।

अन्य–छीप को गुणदायक–सुहागा, चंदन पानी में पीसकर लगावे।

मस्से और तिलकी दवायें।

मस्सों को गुणदायक–मोर की बीट सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–चूना, सज्जी पानी में घोलकर मस्से को जंगली कंडे से खुजलाकर मले दो तीन दिन में आराम होजावे।

अन्य–धनियां पीसकर लगाना मस्सों और तिल को दूर करता है।

अन्य–चुक़न्दर के पत्ते शहद में मिलाकर लेप करना मस्सों को दूर करता है।

अन्य–ख़ुरफ़े की पत्ती मस्सों पर मलना गुणदायक है।

अन्य–सीप जलाकर सिरके में मिलाकर लेप करना मस्सों को गुणकारक है।

अन्य–पीली हरताल, चूने की कली, मांस कूटने की बट्टी से कूटकर लेप करे।

अन्य–तोहफ़उलमोमनीन पुस्तक के निर्मापक ने लिखा है कि जो सूखे चने चांदकी पहिली तारीख़ से मस्सों की संख्या से एक एक चना एक एक मस्से में छुलाकर सबको एक लत्ते में बांधकर उस लत्ते को हाथ में लेकर दोनों पांव के बीचसे हाथ निकाल कर उस पोटली को इस तरह फेंके कि कंधे के ऊपर से पीठ की तरफ़ गिरजावे एक महीने में सब मस्से दूर होजावेंगे एक मित्र का आज़माया हुआ है।

बद का यत्न।

चाहिये कि आरम्भ में उसके गल जाने का यत्न करे क्योंकि जब पककर फूट जाती है बहुत दुःख देती है और कभी कभी उस के चीरने की आवश्यकता हो जाती है उस समय बहुत दुःख होता है।

औषध–बद को गुणकारक–केले की जड़ मनुष्य के मूत्र में पीसकर गुनगुना कपड़े पर रखकर लगावे।

अन्य–पीपल के पत्ते सीधे तरफ़ गरम करके बांधे।

अन्य–लसोड़े के पत्ते गुनगुने बांधे।

अन्य–नरमें के पत्ते बांधे।

अन्य–संभालू की पत्ती गुनगुनी बांधे।

अन्य–मेथी हालों में पीसकर लेप करे।

अन्य–आमला, लसोड़े की छाल, इमली की छाल पानी में पीसकर बांधे।

अन्य–बिनौले इतना कूटे कि टिकिया की तरह होजावें गुनगुना करके बांधे।

अन्य–घिकुवार का पट्ठा दो टुकड़े करके थोड़ा रसौत और हल्दी पीसकर उसपर रखकर गुनगुना करके बांधे।

अन्य–आरम्भ में चूना और शहद मिलाकर कपड़े पर मरहम की तरह लगाकर बद पर बांधे और बाज़ोंने चूनेमें अण्डे की सफ़ेदी मिलाकर लगाना लिखा है।

अन्य–बद को गुणकारक–हड़की छाल रेंड़ीके तेलमें भून पीसकर सिरके में ख़मीर करके लेप करे।

अन्य–बदके तोड़नेके वास्ते शीघ्र गुणकरे–तूतिया आधाभाग, हालों, हल्दी, राल, एक एक भाग, गूगुल दो भाग, गुड़ अढ़ाई भाग पीसकर लेप करे।

अन्य–बद को गुणदायक–चने का आटा गूगुल में मिलाकर टिकिया बनाकर बांधे ऊपरसे नींबकी पत्तियां गरम करके बांधे और केवल नींबके पत्तेही बांधना काफ़ी है।

लेप–कुचला चन्दनकी तरह घिसकर कालीमिरच मिलाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–राई गरम पानीमें पीसकर लेप करे।

अन्य–बदके लिये आज़माया हुआ है–जो बद बड़ी हो चार दिन में पचादे–प्याज़को छूरी से क़ीमा करके असमर्थ लड़के के मूत्र में पकावे जब खूब गलजावे टिकिया बनाकर बांधे।

औषध–बग़लकी सूजन को जिसे हिन्दीमें कखुआरी कहते हैं गुणकारक–राई गरम पानीमें पीसकर लेप करे।

अन्य–कानके पीछे की सूजन और कखुआरी शीघ्र पचावे–तुलसी की पत्तियां उसके बराबर अरण्डकी कोंपल पीस कर थोड़ा नोन मिलाकर गुनगुना लेप करे।

शोथ का यत्न।

फूलने और अंग के मोटे होनेका नाम सूजन है कि अंगपर मल गिरने से पैदा हो और यह सूजन चारों दोष या बात से होता है, इसका यत्न माद्दे अर्थात् बिकारकी रोकनेवाली, गलानेवाली, पकानेवाली और बहानेवाली चीज़ों का सेवन करना है।

जदवार की गोली–जो सूजन के गलाने में तंज़बी ख़ताई के बदले काम देती है–जदवार, रसौंत, गेरू, ख़तमी के बीज, लालचन्दन, रेवंदचीनी, मकोय, सफ़ेद कत्था, कालीज़ीरी बराबर कूट छानकर गोलियां बनावे मकोय के हरे पत्ते या हरे धनिये के रसमें या सिरके या गुलाब या पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य–मुख की सूजन को गुणदायक है–हल्दी, गेरू, सोंठ, बिस्मार बराबर कूट छानकर गोलियां बनावे और मकोय के पत्तों के रस में पीसकर लेप करे।

औषध–जो पीड़ा को ठहरावे और सूजन को गुणकारक और पीड़ा को शान्तकरे–अजवाइन महीन कूट छानकर नींबू के रसमें पकाकर गुनगुना सूजन पर बांधे और जो नींबू का रस न हो सिरके में सेवन करे।

लेप–सूजन और जोश को गुणकरे–आंब की बिजली पानी में पीसकर गुनगुना लगावे ख़ैरुलतिजारबमें लिखा है कि गलाने में जदवार के सदृश है।

अन्य–वरम को पचावे अरंड की छाल, बिषखपरेकी छाल, सोंठ पीसकर गुनगुना लेप करे।

औषध–धतूरे के पत्ते गुनगुने शोथपर बांधना गलाता है।

अन्य—बकरी की मेंगनी लेपकरना पुरानी सूजनको गलाताहै।

औषध—कान के नीचे की सूजन और बग़ल की सूजन जल्दी गलावे—मिस्सी जो मशहूर दरख़्त है जिसे चकसौनीभी बोलते हैं उसकी पत्ती लेकर उसकी बराबर अरण्डकी कोंपल पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर गुनगुना बग़लपर बांधे।

अन्य—बग़ल के वरम को गुणकरे और इस औषध को लालदारू कहते हैं—कत्था, मुरदारसंग, तज, रक्तचन्दन, कबाबा, तूतिया सब्ज़ ये कूट छानकर पानी में मिलाकर लेप करे।

लेप—पीड़ा के ठहराने और मलके पकाने को गुणकरे—मूंग, जौ, लोबिया और मसूर का आटा बराबर लेकर सिरके और पानीमें घोलकर लपटी की तरह पकाकर लेप करे।

अन्य—पीड़ा और सूजन को गुणकरे—सिरस के पत्ते हर-रोज़ कईबेर गरम करके बांधे।

अन्य—सूजन और सख़्ती को गुणकरे—बरगद के पत्ते घी में तर करके गुनगुने बांधे।

अन्य—गूलर के पत्तोंका रस निचोड़कर जौ के आटे में मिलाकर बांधे सख़्त वरम को गलावे।

अन्य—वरम को गलावे—पियोटन के पत्ते गरम करके बांधे।

अन्य—गायका गोबर वरम पर बांधे।

अन्य—धनियां मनुष्य के मूत्र में पीसकर लेप करे।

लेप—जायफल एक दाम, सोंठि दो दाम, कंघी दो दाम सिरके में पीसकर गरम करके लगावे वरम को गुणकारक—इन्द्रायनकी जड़ सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—ईसबग़ोल जवकुट करके लेप करे।

अन्य—वरम को पका कर पीब निकाले—पीपल की छाल पीसकर लेप करे।

अन्य—अब्बासी के पत्ते गरम करके बांधे।

लेप--वरम को पकाय तोड़कर मल निकाले–खासन के बीज पीसकर गुनगुना लेपकरे।

अन्य–कंघीके पत्ते, इमली के पत्ते, चावल थोड़े थोड़े लेकर औटावे और पीसकर फोड़े पर लगावे एक दिन में पकावे।

अन्य–इमली के बीज पकाकर बांधे फोड़ा के तोड़ने और पकाने को गुणदायक है।

अन्य–फोड़े के तोड़ने को गुणदायक है–सरू के पत्ते, मूंग की दाल, कबूतर की बीट पीसकर गुनगुना फोड़े पर बांधे।

लेप–फोड़े को गुणदायक है और मल को पकाकर निकालता है–थोड़ी खाने की तम्बाकू पानी में पकाकर लेप करे।

लेप–फोड़े को गुणदायक–जिस दिन फोड़ा निकले चूना और तेल मिलाकर लगावे बढ़ने न देगा।

औषध–उस फोड़े के वास्ते जो पीड़ा अधिक करे और फूटा न हो इससे अधिक कोई औषध फोड़ने में बलवान् नहीं है सिरस के बीज, मैनफल, ज़ंगार नौ नौ माशे, रेवन्दचीनी एक तोलाभर, प्याज़, नींबके पत्ते एक एक तोला, एलुवा छः छः माशे, नाखुना, गूगल, अलसी के बीज सात सात माशे, मेथी छः माशे पीसकर तेज़ शराब में मिलाकर गुनगुना लगावे।

अन्य–फोड़े को गुणदायक–कबूतर के पर जलाकर उसकी राख तेल में मिलाकर लेप करे फोड़े को पकाकर तोड़ डाले।

पट्टी–मैदा लकड़ी दो टंक कूटकर लड़के के मूत्र में पकाय पीसकर कपड़े पर रखकर पट्टी की सदृश बांधे।

औषध–घाव को खोलने के लिये हल्दी जलाकर उसकी राख कड़ुवे तेल में मिलाकर घावपर रक्खे।

लेप–फोड़े के तोड़ने के वास्ते साबुन, रेवन्दचीनी, गूगल, मैनफल पीसकर कपड़े में रखकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–घाव को गुणदायक है–लसोड़े की पत्ती, गोंदी जलाकर उसकी राख घी में मिलाकर घावपर रक्खे।

अन्य–बग़ल के फोड़ों के वास्ते गुण करे–सोंठि, रेंड़ी दोनों पानी में महीन पीसकर गुनगुना लेप करे और ऊपर से अरंड के पत्ते बांधे।

औषध–पांव के छालों को जो राह चलने से पड़जाते हैं गुणदायकहै–चावल पकाकर दही में मिलाकर लेपकरे तुरन्त आराम होजावे।

अन्य–भगन्दर को गुणकारक–अडूसे की पत्ती पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर भगन्दर पर बांधे।

अन्य–भगन्दर की सूजन को गुण करे–करील के पत्ते और अरंड गरम करके बांधे वरम को पचावे।

अन्य–बात की पीड़ा को गुणदायक–अक़रक़रा, कायफल, खुरासानी अजवाइन, सोंठि, नरकचूर बराबर लेकर तिल और रेंड़ी के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य–बात की पीड़ा को गुणदायक–रेंड़ी के तेल या मीठे तेल में मर्दन करके महुवे के पत्तों पर वह तेल लगाकर गुनगुना बांधे।

अन्य–उस सूजन के वास्ते जो भिलावें के धुयें से पैदा हो गुण करे।

अन्य–आंबाहल्दी, सांठी के चावल, घासदूब पानी में पीस कर वरम पर लेपकरे।

अन्य–चिरौंजी खाना भिलावें की सूजन को गुणदायक है।

अन्य–गूलर की छाल पानी में पीसकर लेपकरे भिलावें के धुवें के वरम को गुण करे।

अन्य–मुरदारसंग पीसकर लगावे।

अन्य–मीठा तेल मले उसी समय सूजन दूर होजावेगी।

अन्य–उस सूजन के वास्ते जो भिलावें के धुवें से हो–तेंदू की लकड़ी पीसकर लेपकरे।

अन्य—रसूली सूजन के वास्ते गुण करे—कुकरौंधे के पत्ते घी में भिगोकर शुरूअ में एक सप्ताह पर्यन्त रसूली पर बांधे।

छोटे दानों को जिन्हें फुन्सियां बोलते हैं उनका यत्न।

सिरस के दरख़्त की छाल पानी में पीसकर लगावे।

गोली—फुन्सी और बदन के जोश को गुण करे—गेरू, रसौत, जंगी हड़, मुरदारसंग, कत्था, लालचन्दन बराबर कूट छानकर गोलियां बनावे और मकोय के रस में लेपकरे।

गोली—हरप्रकार की फुन्सियों को गुणदायक है—मुरदारसंग, पीले हड़ की छाल, भंग, चूने की कली, सफ़ेद कत्था एक एक भाग, तूतिया आधाभाग पानी में गोलियां बनाकर आवश्यकता पर घी में रगड़कर लेपकरे।

गोली—फुन्सी को गुणदायक—कत्था, मुरदारसंग, भुना तूतिया, बेलगिरी बराबर पीसकर गोलियां बनावे और समय पर पानी में पीसकर लगावे ये गोलियां उस फोड़े को भी गुण करती हैं जिसे औरंगज़ेबी कहते हैं अर्थात् वह फोड़ा जिसमें चलनी के सदृश छिद्र होते हैं।

लेप—उन फुन्सियों को गुणकारक जिनमें दाह हो—गेरू, माज़ू, कत्था सिरके में पीसकर लेपकरे।

गोली—फुन्सी को गुणकारक—सफ़ेद कत्था, भुना तूतिया, जली सुपारी, मुरदारसंग, पीले हड़की छाल, रेवन्द ख़ताई बराबर पानी में पीसकर गोलियां बनावे और आवश्यकता पर लगावे।

लेप—कंठमाला को जो गरदन के नीचे होता है गुणदायक है—सन के बीज, मूली के बीज, सहँजने के बीज, जौ, सरसों, अलसी बराबर कूट छानकर गौ के दूध में पीसकर लेपकरे।

अन्य—चट्टों और दाद को गुणदायक—अमचूर पानी में पीसकर थोड़ा खारीनोन मिलाकर लेपकरे।

अन्य—उस फुन्सी के लिये जो मकड़ी मलनेसे होजावे गुणदायक है—मड़ुवा पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–सफ़ेद ज़ीरा, सोंठ पानी में पीसकर लेपकरे।

अन्य–मकड़ी के बिष और उसके दानों को गुणदायक है–केंचुवा पीसकर मले जो केंचुवा न मिले उसकी मिट्टीका लेपकरे।

अन्य–मकड़ी के दानों को गुणकारक–चूना नींबू के रस में खरल करके लेपकरे जो नींबू न मिले मीठे तेल और चिरौंजी में पीसकर लेपकरे।

अन्य–मकड़ी के बिष को–रक्त चन्दन, श्वेत चन्दन, मुरदारसंग पीसकर लगावे।

अन्य–खली और हल्दी पानी में पीसकर लेपकरे–मकड़ी का बिष दूर होजावे।

हाथ पांव के फटजाने का यत्न।

इस रोग का कारण खुश्की है।

औषध–हाथ पांव के फटजाने के लिये मेहँदी पानी में पीसकर लगावे–चार घड़ीके पीछे दूर करके रेंड़ी का तेल मले।

अन्य–एँड़ी फट जाने के लिये बरगद का दूध घाव में भरदे।

अन्य–बबूल का गोंद पीसकर उसमें भरदे।

अन्य–गाय की कलम या बकरी की कलम की मींगी भरदे।

अन्य–साबुन लाहोरी पानी में पीसकर रात को सोने के समय घाव में भरदे सुबह को धोडाले।

लाभ–जानना चाहिये कि जो खुरदरापन हथेली में पैदाहो उसको छाजन कहते हैं और जो दाना कि पांवके घावपर होजावे उसको उकौता बोलते हैं उकौते की दवायें बर्णन होचुकी हैं।

बफारा–छाजन को गुणकारक–बबूलकी छाल, आंबकी छाल औटावे और हांड़ी पर सरपोश मज़बूत छिपाये कि बुख़ार बाहर न जावे फिर हांड़ी को उतारकर हथेली और तलुओं को बफारा दे और बफारे के उपरांत घी या मक्खन मले।

अन्य–छोटी कटाई जड़ पत्ते और डाली के रेज़ा रेज़ा करके पानीके साथ हांड़ी में डालकर मज़बूत सरपोशसे छिपाकर औटावे

कि उसका बुख़ार बाहर न जावे फिर रोगी के हाथ पांवों में घी मलकर उसका बुख़ार ले और जब ठंढा होनेलगे पानी से हाथ पांव धोवे।

औषध–छाजन को गुणदायक–थोड़ा नौसादर मीठे तेल में पीसकर मले।

यत्न–हाथ पांव के बिगड़ जाने के लिये कि सरदी से काले होजावें पहिले हाथ पांव को गरम पानी में रक्खे फिर तेल गुनगुना मले।

जूं के अधिक होने का यत्न।

इसका कारण शरीर में मलका अधिक होना है शरीर को मुसिलों से साफ़ करे किताबुलख़वासमें लिखा है कि चांदनी में बैठकर बालों में कङ्घी करना मुख्य जूं को पैदा करताहै।

औषध–पारा मूलीकी पत्तियों के रस या पान के रस में हल करके उसमें तागा भिगोकर शिरमें रक्खे दो तीन दिन में सब जूं मरजावेंगे।

सिरका जिसे हिन्दी में बफा बोलते हैं उसका यत्न।

इस रोगका यत्न शिरमें तेल डालना है।

अन्य–जवासा कलोरि के मूत्र में पीसकर शिरमें डाले।

अन्य–चनेके आटेको एक घड़ी सिरके में डालदे फिर वह सिरका लेकर शहद में मिलाकर शिरपर मले।

अन्य–नींबू का रस शक्कर में मिलाकर मले और दोपहर के पीछे शिर धोडाले।

अन्य–साबुन से शिर धोना जूं को मारता है और बफाको शिरसे दूर करता है।

अन्य–चुक़न्दरकी जड़ और पत्तोंका काढ़ा थोड़े नोनके साथ तरेड़ा देना बफा और जूं के दूर करने के वास्ते गुणकारक है।

नाख़ूनों की दवायें।

नाख़ून के टूटजाने को गुणदायक–अनारकी पत्ती पीसकर

बांधे कदाचित् हाथ या पांव टूटगयाहो उसपर नीलाकपड़ा बांधकर मूत्र किया करे।

यत्न—नाखून के फटजाने का—एक भाग सिरका, दोभाग तिलों के तेल में औटावे और उसमें थोड़ा सरेश डालकर लगावे जब मरहम के सदृश होजावे लेपकरे।

चेचक का यत्न।

चेचक कई प्रकारकी है एक छोटी चेचक जिसको खसरा बोलते हैं और एक वह है कि जिसके दाने बड़े हों उसके उत्तम प्रकार को मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध के बिकार या तरी के बिकार का जोश करना है—चाहिये कि जब शीतलाकी ऋतु, जो हिन्दुस्तान में बहुधा चैत का महीना है शुरू हो दूध पीनेवाले लड़के और उसकी दूध पिलानेवाली को वह दवायें जो रुधिर कोसाफ़करनेवाली हैं जैसे शाहतरेका अरक़, सरफ़ोंके का अरक़, ख़ूबकला, सादीउन्नाब का शरबत, काहू के बीज का शीरा और ईसबग़ोल का लुआब कभी कभी पिलाया करे और जिस लड़के की आयु दो वर्ष से कम हो शीतला के दिनों में निकलने के पहिले जोंकें लगानी चाहिये और उस ऋतु में चिकनाई मांस और मिठाई से पथ्य करे और जब शीतला निकल आवें गरम और ठण्ढी चीज़ें न दे।

हिन्दुस्तान में जब लड़कों के शीतला निकलती हैं गरम चीज़ों का सेवन करते हैं और भोजन में चने और गुड़ खिलाते हैं ऐसे उपाय से ईश्वर बचावे ज्वर और चेचक में केवल खिचड़ी या मूंग की दाल खिलावे और मसूर की दाल भी गुणदायक है कई प्रकार चेचक के बड़े हैं उनमें आरोग्यता कम होती है उनमें से काली और ऊदी हैं उत्तमोत्तम सफ़ेद और कम वह है कि जिसमें कम दाने हैं अब थोड़ी दवायें सुगम लिखता हूं जो चेचक के कम निकलने के पहिले दे निश्चय है कि न निकले और कदाचित् निकले तो ईश्वर की कृपा से कम निकले।

शकायक का शरबत लड़के को पिलाना चेचक निकलने को गुणकारक है उसका नुस्ख़ा मिरगी में वर्णन होचुका है।

अन्य—चेचक के दूर करने और कम निकलने के वास्ते—जब चेचक का संदेह हो अगर लड़का दूध पीता हो चार तोले खोपड़ा उसके दूध पिलानेवाली को एक सप्ताह पर्यंत खिलावे यदि दो बर्ष का लड़का हो दो तोले भर खोपड़ा और अगर तीन बर्ष का हो तीन तोले इसी तरह एक सप्ताह पर्यन्त उस लड़के की धाय को खिलावे ईश्वर की कृपा से चेचक कम निकलेगी यह नुस्ख़ा एक फिरंगी ने बताया है।

अन्य—जो चेचक के दिनों में खिलावे चेचक न निकले और जो निकले कम निकले ऊदराज कि हिन्दू उसकी माला बनाते हैं पीसकर लड़के को पिलावे।

अन्य—चेचक के दिनों में निकलने के पहिले घोड़ी का दूध पिलावे।

अन्य--तीन या चार समलके बीज निगलजावे चेचक बहुत कम निकलेगी।

अन्य--आसारों, तुरंज के अरक़ के साथ चेचक निकलने के पहिले खिलाने से चेचक बहुत कम निकलेगी।

अन्य--हिन्दी लड़के की चेचक के वास्ते गुणदायकहै--छिली मुलहठी अधकुचली, अनारदाना बराबर अपने स्वभावके अनुकूल पानी में औटाकर शहतरे अरक़के साथ पिलावे।

अन्य--चेचक के दानोंको अच्छा करदे--सिरसके दरख़्त की छाल, पीपल के दरख़्त की छाल, लसोड़े के दरख़्त की छाल, गूलर के दरख़्त की छाल, कूट छानकर गाय के घी में मिलाकर दानों पर लगावे अगर चेचक दाह संयुक्त हो बहुत गुणदायक है--उबटना चेचक के दानों को गुणदायक है--आंबाहल्दी, सरकंडे की जड़, जलाई हुई कौड़ी बराबर कूटछानकर भैंस के

दूध में मिलाकर रात को मुँह पर लगाकर सुबह भूसी पानी में भिगोकर उस पानी से धोवे ।

उबटना--रंग को लाल करे और साफ़ करदे--छिलेमसूर, खरबूज़ों की गिरी दोनों बराबर पीसकर उबटना बनावे ।

अन्य--नागरमोथा औटाकर सुबह को उससे मुख धोयाकरे ।

बालों की दवायें ।

बालों का बढ़ना और काला होना ।

औषध--बालों को बढ़ावे--नींब के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर नहाने के समय शिर में लगावे और चार घड़ी के पीछे धोडाले ।

औषध--बालों के लम्बे होने की--शीशम के बीज, बेरके पत्ते बराबर पीसकर दो दाम बालों की जड़में मले चार घड़ी के पीछे गुनगुने पानी से धोडाले ।

औषध--बालों के लम्बे होने के लिये--कलौंजी पानी में पीसकर उससे बाल धोवे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त धोयाकरे ।

अन्य--आमला नींबू के रस में पीसकर बालों की जड़ों में मले ।

अन्य--करील की जड़ पीसकर बालों की जड़ों में मले बाल लम्बे होजावेंगे और बफा दूर होगी ।

तेल--जो बालों को काला करे--एक सेर मीठे तेल में गेंदेकी पखुड़ियां काटकर डेगची में डालकर औटावे फिर उसे ज़मीन में गाड़े एक महीने के पीछे निकालकर वह तेल बालों में मले ।

तेल--बालोंको काला रक्खे और सफ़ेद न होने दे--हरीझाऊकी जड़ खूब कूटकर उतनेही तिल के तेल में और दोनों के बराबर पानी में औटावे जब सब पानी और आधा तेल जलजावे लेकर गाढ़ा गाढ़ा शिरपर लगावे थोड़े दिनों में सफ़ेद बाल भी काले होजातें और सफ़ेद कभी न निकलें ।

मक्खी का तेल--जो बालों को काला रक्खे--सौ मक्खियां

तिलों के तेल में डालकर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर साफ़ करके बालों में लगाया करे।

तेल—बालों के बढ़ाने और काला होने के लिये—सरो के पत्ते एक भाग, आमला दो भाग पानी में औटावे जब गल जावे तिलका तेल मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे ओषधियों समेत हलकरके बालोंमें मले—तेल बालोंके बढ़ने के लिये—भंगरे का अरक़ मीठे तेल में औटावे जब पानी जल कर तेलमात्र शेष रहे हर रोज़ बालों में मले।

औषध—नहाने के समय काले तिल की पत्तियों से बालों को धोवे बाल लम्बे और नरम करता है।

अन्य—बालों के लम्बे होने के वास्ते कड़ अर्थात् कुसुम के बीज कुसुम के बृक्ष की छाल दोनों बराबर जलाकर राख करे और चँबेली के तेल में मिलाकर मरहम के सदृश बालों की जड़ों में मले लम्बे और नरम होजावेंगे।

अन्य—परसियावशान जलाकर शिर पर लगावे बालों के गिरने से रक्षाकरे।

औषध—जो बालख़ोरे को गुणकारक है—हाथीदांत जलाकर उसकी बराबर रसौत मिलाकर लगावे।

अन्य--बालख़ोरे को गुणकारक--कदीर की कोंपल बिना पानी के पीसकर मले दो तीन दिन में बाल निकल आवें।

अन्य—भँगरा पीसकर मलना बालख़ोरे को गुणकारक है।

अन्य--बालख़ोरे को गुणदायक--चुक़न्दर के पत्तों का रस चार दाम कड़ुवे तेल में जलाकर लेपकरे।

अन्य--बालख़ोरे को गुणदायक है--घोड़े या गधे का सुम जलाकर उसकी राख मीठे तेल में मिलाकर मले और सींग जलाकर मलना भी गुणदायक है।

अन्य--बालख़ोरे को गुणदायक है--गन्धक पानी में पीसकर शहद में मिलाकर लगावे।

अन्य--बालखोरे को गुणदायक--आमला चुक़न्दर के रस में पीसकर लेपकरे पांच छः दिनों में बाल निकल आवें।

अन्य--बालखोरे के लिये-थोड़ा दही बेक़लई तांबे के वर्तन में डालकर पैसे से इतना हल करे जब सब्ज़ होजावे फिर लेपकरे।

अन्य--बालखोरे को गुणकारक--पहिले आमले के पानी से जहां बालखोरा हो धोकर हलके कई घावों पर उस जगह पर लगावे कि रुधिर निकल आवे फिर नौसादर महीन पीसकर मक्खन में मिलाकर मर्दन करे एक सप्ताह में बाल निकल आवेंगे।

अन्य--बड़ों का निश्चय है कि कुन्दश और हाथी दांत का बुरादा मुर्ग़ की चरबी में मिलाकर जिस जगह पर लगावे यहां तक कि हथेली में भी बाल निकल आते हैं।

वह ओषधियां जो बाल निकलने न दें।

जो बैल का पित्ता मुर्ग़ के अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर बाल उखाड़कर लेपकरे बाल कभी न जमें।

अन्य--जोंक को नोन में लथेड़कर सुखाकर बकरी के मूत में पीसकर जिस जगह बालहों उखाड़कर लगावे फिर वहां बाल न जमें।

अन्य--ईसबग़ोल का लुआब सिरके में मिलाकर बाल उखाड़ कर मले अगर थोड़ा समन्दरझाग मिलावे बहुत गुण रखता है।

अन्य--बकरी की मेंगनी और राई महीन पीसकर बाल उखाड़ कर मले।

अन्य--रेंड़ी की गूदी पीसकर बाल उखाड़ कर मले।

अन्य--समन्दरझाग, अजवाइन, साफ़अफ़ीम, सिरके में पीसकर ईसबग़ोल का लुआब मिलाकर बाल उखाड़कर लेपकरे।

अन्य--कुचला पानी में पीसकर बाल उखाड़कर लगावे।

अन्य--जोंक सिरके में जलाकर बालों के उखाड़ने के पीछे लेपकरे।

अन्य--बाल उखाड़कर चींवटी के अण्डे लेपकरे।

अन्य-बाल उखाड़कर सर्प की केंचुल लगावे।

अन्य-चमगादर का रुधिर और मुर्ग़का पित्ता और ख़रगोश का रुधिर और कछुए का पित्ता और तीतर की चरबी हरएक बालों को उखाड़कर लगाना बाल निकलने नहीं देता।

अन्य-नौसादर गाय के पित्ते में हल करके बाल उखाड़कर लगावे।

अन्य-अंजीर का दूध और सूखे मेंढककी राख और मेंढकका रुधिर जो बाल उखाड़कर लगावे यही गुण रखता है।

अन्य-बकरी का भेजा चूने में मिलाकर बाल उखाड़ने के पश्चात् लगावे।

अन्य-प्याज़का रस, कालानोन सिरकेमें मिलाकर बाल उखाड़कर मले।

बाल गिरकर फिर न निकलें उसका यत्न।

चूहेकी मेंगनियां सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य-लसोड़ा पानीमें औटावे जब पानी गहरा होजावे मल कर बाल गिरने की जगह पर मले।

अन्य-हरे परसियावशानको निचोड़कर मलना गुणकरताहै।

अन्य-पुराना बादामरोग़न लगाना गुणदायक है।

अन्य-क़िस्त सिरके और शहद में पीसकर मले।

अन्य-बिच्छू मीठे तेल में जलाकर लेप करे।

अन्य-समन्दरझाग जलाकर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य-चुक़न्दर के पत्तों का लेप करना गुणदायक है।

अन्य-मेंढक जलाकर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य-बकरी का सुम जलाकर सिरकेमें मिलाकर बाल गिरने की जगह पर मले।

लू लगने का यत्न।

इस रोग के नाश करने के लिये कच्चा आंब भूभलमें गाड़दे जब गलजावे निचोड़कर शक्कर में मिलाकर शरबत बनाकर

पिये लू के दुःख को कि बहुत बिदेशमें पहुंचता है गुण करताहै ।

ज्वर का यत्न ।

एक हमीयोम अर्थात् दिवसिक-मुख्य करके ज्वरके तीन प्रकारहैं वह जो अधिक चिन्ता, शोच, हर्ष, जागने, तकाने, मिरगी, जुकाम, नज़ले और पेचिश आदिसे होताहै बहुधा तीन चार दिन से अधिक नहीं रहताहै उसका यत्न उस कारणको दूर करना है ।

जैसे कि चिन्ता और बिकल्प के ज्वर में हर्ष और आनन्द देना और क्रोध ज्वरमें धीरज देना और हर्ष ज्वरमें अप्रतिष्ठा और ग्लानि करना भूखके ज्वरमें भोजन देना इसी तरह थोड़ी ठंढाई और मनकी पौष्टिक औषध इसको काफ़ी है ।

दूसरा वह ज्वर जो किसी दोषसे उत्पन्नहो उसमें जो मल रगोंके अन्दर दुर्गंधित हो वह तप प्रतिसमय बराबर रहती है और जो मल, रगोंके बाहर सड़ जावे वह तप हर वक्त़ नहीं रहती और रुधिर रगोंके अन्दर रहता है ।

जो खूनके जोश से ज्वर हो उसे सोनोख़स कहते हैं जो रुधिर की अधिकता के लक्षण बर्णन हो चुके हैं उन लक्षणों से रुधिर की अधिकता मालूम हो सकती है ।

उसका यत्न-फ़स्द के पीछे रुधिर को ठंढी दवाओं से साफ़ करना जैसे कि ईसबग़ोलका लुआब, काहूके बीजोंका शीरा, कासनी, शरबत उन्नाब आदि उन्नाब की शरबत का नुस्खा यह है-कि पाव भर उन्नाब पानी में भिगोकर औटाकर छान ले और आधसेर क़न्दमें क़वाम करके रक्खे पैत्तिकज्वर जो उसका मल रगोंके बाहर सड़गयाहो तीसरे दिन जूड़ीसे आतीहै और पित्तकी अधिकता मुँहका कड़ुवा होना और प्यासकी अधिकता और रंग की ज़रदीसे मालूम होजातीहै और जो उसका बिकार यदि वह ज्वर बराबर होताहै परंतु तीसरे दिन बेग करताहै और कदाचित् पैत्तिकज्वरका बिकार कलेजेके पास की रगोंके अन्दर सड़ जावे ज्वर में दाह और गरमी बहुत होती है उसको मुहरका बोलते हैं ।

उसका यत्न—ठंढी चीज़ें पिलाना और पित्तके पकानेके उपरान्त निकलता—कल्क पैत्तिकज्वर को जो दिनी हो जावे गुणदायकहै सदा पिलावे पैत्तिकज्वर बिल्कुल जाता रहे।

इमली दो तोले रात को पानी में भिगोदे सुवह को उसका साफ़ पानी लेकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पहिले एक तोला ईसबग़ोल फांककर उसपर पिये—सिकंजवीन बज़ूरी, पैत्तिकज्वर को गुणकारक और यह नुस्ख़ा साहब ज़ख़ीरा सय्यदइस्माईल साहब का है कासनीकी जड़ की छाल, कासनी की जड़, पालक के बीज, खीरे ककड़ी के बीज बराबर लेकर तीन भाग सिरके दो भाग शक्कर में क़वाम करे और तरबूज़ के बीजोंकी गिरीका शीरा या मीठे कद्दू के बीजोंकी गिरी के शीरे के साथ पिये और जो सिरका न मिलावे उसको शरबत बज़ूरी बारदक कहते हैं।

तरबूज़ का शरबत पैत्तिक ज्वरको गुणकारक—बड़े तरबूज़ के पानी के बराबर सफ़ेद शक्कर मिलाकर क़वाम करे ख़ूराक स्वभावानुकूल।

बंशलोचनकी टिकिया—पैत्तिकज्वर को गुणकारक मुसिल के पीछे देनी चाहिये—बंशलोचन, गुलाब के फूल पांच पांच भाग, काहू के बीज, कासनी के बीज, तरबूज़ के बीजोंकी गिरी, खीरे ककड़ी के बीज, हरएक तीनभाग, नीलोफ़रके फूल दो भाग कूटछानकर टिकिया बनावे ख़ूराक दो टंक।

पैत्तिकज्वरको गुणदायक—काहू के बीज, ख़ुरफ़े के बीज दो दो टंक पानी में शीरा निकालकर अलका साफ़ पानी दो तोले भर अधिक करके ईसबग़ोल एक तोला छिड़ककर पिये।

अन्य—पैत्तिकज्वर को गुणदायक—शहतरे के पत्तों का शीरा कासनी के बीज दो टंक पानी में पीसकर सादी सिकंजबीन दो तोले मिलाकर पिये नींबू का शरबत—पैत्तिकज्वरको गुणदायक है और जले हुये दोष और रुधिर की गरमी को दुरुस्त करता

है आधे रत्तिल शक्कर का क़वाम करके छः दाम नींबू का रस छानकर अधिक करके क़वाम पर आने के पीछे उतारकर रख छोड़े ।

काढ़ा–उस पैत्तिकज्वर को जो तीसरे दिन आता है बैद्यों की रीति पर गिलोय अर्थात् गुड़च, धनियां, रक्तचन्दन, कमल-गट्टे की गिरी, नींब के वृक्ष के अंदर की छाल हरएक पांच माशे कूट छानकर तीन पाव पानी में औटावे जब आधपाव रहे साफ़ करके पिये और चिकारी करने के लिये शरबत नीलोफ़र दो तोले अधिक करे तो कुछ हर्ज नहीं–शरबत नीलोफ़रका ठंढे शिरके दर्द और गरम तप को गुण देता है ।

अन्य–हरे नीलोफ़र के फूल आधे रत्तिल, गोखुरू चार तोले, चार रत्तिल पानी में औटावे और छानकर सेरभर क़न्द में क़वाम करे खूराक इक्कीस टंक पर्यन्त ।

कद्दू का रस–लौकी लेकर कपरौटी करके हल्के तन्दूर में एक ईंट पर रखदे जब पक जावे निकालकर उसकी मिट्टी ऊपर से दूर करके कद्दू में छेद करके उसका पानी लेकर क़न्द या तुरंज-बीन या शीरा बिश्त या शरबत या नीलोफ़र या सिकंजबीन या शरबत बनफ़्शे के साथ जो उचित हो पिये ।

काढ़ा–गरम और पुराने तप को गुणदायक–गिलोय, शह-तरा, धनियां, मुलहठी, अधकुचली काकड़ासिंगी कड़वी, ख़स, रक्तचंदन, नींब के पत्ते, ख़रबूज़े के बीज अधकुचले बराबर इसमें से दो दाम लेकर आधसेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश शेषरहे छानकर पिये ।

अन्य–पैत्तिकज्वर को गुणदायक–नीलोफ़र दो मिस्काल, ख़ाकशीर एक मिस्काल दोनों को डेढ़पाव पानी में औटावे जब आधपाव रहे महीन कपड़े में छाने जब नीलोफ़र रहजावे और ख़ाकशीर छनआवे थोड़ी मिश्री डालकर पिये ।

अन्य–ज्वरको गुणदायक–गुड़च, नींब की छाल, धनियां,

पद्माक, रक्तचन्दन, ख़स बराबर दो दाम के अनुमान एक सेर जलमें औटावे जब आधपाव रहे छानकर पिये।

अन्य–ज्वर को गुणदायक–छिलीहुई मुलहठी, काकड़ासिंगी, गिलोय, शहतरा, चिरायता, ख़स, रक्तचन्दन, नेत्रबाला, अरलू की छाल, धनियां, ज़वासा दो टंक बराबर लेकर प्रतिदिन तीन पाव पानी में भिगोकर सुबह को औटावे जब आधपाव शेष रहे साफ़ करके पिये।

करंजुवे की गोली–कफ़ और पित्त की जूड़ी बुख़ार को गुण करे–करंजुवे की गिरी, पीपल एक एक टंक, सफ़ेद ज़ीरा, बबूल के पत्ते आधा आधा टंक कूट छानकर पानी में फ़ालसे के बराबर गोलियां बनावे तीन दिन तक एक गोली सुबह और एक दोपहर और एक शाम को खावे।

गोली--पैत्तिकज्वर को गुणदायक--सफ़ेद कत्था चारभाग, कपूर एक भाग, कूट पीसकर जंगलीबेरकी बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली।

अन्य--जूड़ी बुख़ार को गुणदायक--हिंदुओं की रीति पर सफ़ेद कत्था एक माशा, संखिया एकरत्ती पीसकर मोठ की बराबर गोलियां बनावे एक गोली जूड़ी से पहिले खावे।

अन्य--जूड़ी बुख़ार के वास्ते चने के बराबर अफ़ीम एक रत्ती नींब के पत्ते ढाई खूब पीसकर गुड़में मिलाकर गोलियां बनावे और आने से तीन घड़ी पहिले एक गोली निगल जावे जबतक शुरू हो दूसरी गोली दे निश्चय है कि तीसरी गोली की आवश्यकता न हो।

अन्य--जूड़ी बुख़ार को गुणकारक–हुलहुल के पत्ते दाहिने हाथ में कलाई के जोड़पर बाहर की तरफ़ रखकर उस पर एक छोटी फिटकरी मज़बूत बांधे वहां एक फफोला पैदा होगा नौबत के दिन जूड़ी न आवेगी और ज्वर नष्ट हो जावेगा।

अन्य–जूड़ी बुख़ार दूरकरे–भुनी फिटकरी, मिश्री दोनों

पीसकर रोगी के स्वभावानुकूल आधे माशे से दोमाशे पर्यंत दे जो खांसी हो इस औषध का सेवन करे ।

अन्य–ज्वर को गुणदायक–तुलसी के पत्ते छः माशे, कालीमिरचें चार, पीपल एक पीसकर एक तोला भर मिश्री मिलाकर पिये ।

अन्य–जूड़ी बुख़ारको गुणदायक–अफ़ीम एक माशा, कालीमिरच दो माशे कीकर की लकड़ी का कोयला बराबर लेकर छः माशे पीसकर एक माशे कम वा ज़ियादा स्वभाव के अनुकूल तप के वक़्त से चार घड़ी पहिले दे और निहार न दे कि क़ै हो जावेगी किन्तु पहिले थोड़ासा भोजन करले और औषध खाने के पीछे जब दोपहर या अधिक बीते तब भोजन दे इसके अन्दर न दे निश्चय है कि एकही ख़ूराक काफ़ी हो जावेगी ।

अन्य–जूड़ी बुख़ार को गुणदायक–धतूरे के बीज एक कुल्हिया में भरकर उसका मुँह बन्दकर कपड़मिट्टी करके तंदूर में रक्खे जब बीज जल जावें उसकी राख चार माशे जवान को, चार रत्ती लड़के को खिलावे–हिन्दी औषध जो एक दिन में कफ़ और पित्तज्वर को दूर करे–हरताल, फिटकरी हरएक पांच टंक घीकुवार के रस में नींब के उस सोंटे से कि जिसमें पैसा जड़ा हो सोरह पहर रगड़े और टिकिया बनाकर सुखाकर मिट्टी के बर्तन में टिकिया के नीचे ऊपर पीपल या अरण्ड की लकड़ी की भस्म देकर रक्खे और बर्तन को कपड़मिट्टी करके बारह पहर जंगली कण्डेकी आगदे ख़ूराक एक चावलके बराबर भोजन दूध चावल ।

बफ़ारा–शीतज्वर को दूर करताहै–तिबकी पुस्तकोंमें लिखाहै कि ऋतु के रुधिर का लत्ता जूड़ी दूर करने को आज़माया हुआ है ।

खस का ख़मीर ।

पित्तज्वर और प्यास को गुणदायक और मन और कलेजे का पौष्टिक है–आधसेर ख़स के रस में चार दाम ख़स रात को

भिगोकर सुबह को औटावे जब आधा रहे पावभर शक्कर डाल कर क़वाम करे और एक माशा ख़स का अतर अधिक करके ख़मीर बनावे और थोड़ा गुलाब अधिक करे और शरबत की अधिकता के लिये कभी एक तोला मीठा कद्दू पीसकर डालते हैं और तपेदिक़ के वास्ते इसी शरबत में दो दिन चार रत्ती कपूर मिलाते हैं और अतीसार और गरम स्वभाव के समय दो टंक बंशलोचन मिलाते हैं और इस ख़मीर में बहुत गुण हैं।

लाभ—समय पर रोगी को भोजन दे किन्तु जब तपकी गरमी कम होने लगे भोजन दे गरम तप में उत्तमोत्तम भोजन—आस जौ या नरम खिचड़ी या दाल चावल और खुरफ़ा, पालक का साग और कद्दू और तरोई है यदि कफ़ज्वर का बिकार रगों के बाहर सड़गया हो हररोज़ ज्वर आवे और जो उसका बिकार रगों के अंदर सड़ाहो वह भी हररोज़ आता है—कफ़ के लक्षण—प्यास का होना निद्रा का बेग मूत्र में सफ़ेदी मुँह का फीका होना है।

यत्न—मल के पकाने के उपरान्त कफ़ को निकाले।

काढ़ा—कफ़ज्वर को गुणदायक—सौंफ़ एक टंक, सौंफ की जड़, मुलहठी छिली हुई, अधकुचली गावज़बां, करफ़्श की जड़ दो दो टंक, परसियावशान तीन टंक औटाकर गुलक़ंद दो तोले, सिकंजबीन बज़ूरी दो तोले हल करके पिये।

तिलिस्म—एक मक्खी, आधी कालीमिरच, बहुत थोड़ी हींग, पानी में पीसकर आंख में लगावे जूड़ी दूर होजावे।

अन्य—तिलिस्म ज्वर को नाशकारक—उल्लू का पर और गूगल काले कपड़े में लपेटकर घी में तर करके बत्ती बनाकर जलावे उसका काजल लेकर आंखों में लगावे चौथिये बुखार को आश्चर्यदायक प्रभाव रखता है।

अन्य—सफ़ेद धतूरा इतवार को उखाड़कर दहने हाथ में बांधे एक दिन में तप दूर होजावे।

गोली–कफ़ज्वर को गुणदायक, वैद्यों का नुस्ख़ा–बड़ी पीपल, करंजुवे की गिरी एक एक तोला, सफ़ेद, ज़ीरा, बबूल के पत्ते आधे आधे तोला, कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे एक गोली सुबह और एक दोपहर और शाम को तीन दिन खावे ज्वर नष्ट होजावेगा।

काढ़ा–मिले हुये बुख़ार को गुणकारक और हिन्दुओं की रीति पर–धमासा सात माशे बराबर शहद के साथ पानी में औटाकर पिये बजूरीकी शरवत सामान्य ज्वरों को गुणकारक–सौंफ़, कासनी की जड़ हर एक चार दाम, क़ंद पावभर यथाविधि दवायें भिगोकर औटाकर छानकर क़न्द मिलाकर क़वाम करे।

औषध–कफ़ज्वर को गुणकारक–मकड़ी का एक सफ़ेद जाला साफ़ करके गुड़में लपेट कर बारीसे पहिले निगलजावे शीत नहीं आतीहै और ज्वर दूर हो जाता है परन्तु तीन दिन सेवन करना चाहिये।

औषध–मदार की कली जो खिली न हो गुड़ में लपेट कर गोली बनाकर निगलजाने से तीन दिनमें जूड़ी दूर होती है।

धतूरेकी गोली--जूड़ी बुख़ार को गुणदायक--धतूरा बारा टंक, रेवंदचीनी आठटंक, सोंठ, बबूल का गोंद हरएक चार टंक कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे दो गोलियां जूड़ी आने के पहिले खावे।

औषध--कफ़ज्वर को गुणदायक--करंजुवे की कोंपलें तीन, कालीमिरचें दो पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य--करंजुवेकी गिरी पानीमें पीसकर नाकमें टपकावे जूड़ी बुख़ारसे छुट्टी मिलती है।

गोली--जूड़ी बुख़ार को गुणदायक--मदारकी जड़ दो भाग, कालीमिरच एक भाग दोनों को बकरीके दूधमें पीसकर चनेकी बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक बारीसे पहिले एक गोली खाये।

आनन्द भैरव की गोली।

हिन्दुओं की वैद्यकमें लिखा है कि यह गोली सम्पूर्ण कफ़के रोग, कफ़ज्वर, ज़ुकाम, अजीर्ण और पांवके ठंढे पसीनेको गुणदायक है—शोधा बच्छनाग, कालीमिरच, पीपल, सोहागा, शिंगरफ़ बराबर नींबूके रसमें पांच घड़ी खरलकरके उड़द्के बराबर गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली सुबह और शाम शक्करके साथ और जिस का स्वभाव बहुत ठण्ढाहो दो गोली दे और दूसरे नुस्ख़ेमें मैनफलके बीज, अक्करक़रा, सोंठि अधिक कियाहै सात दिन पर्यन्त पानके रसमें पीसकर बनाना और उसके रससे खाना लिखाहै।

गोली—जूड़ी बुख़ार को गुणकारक हिन्दुओं के ज्ञानसे है—पारा, आमलासार गन्धक, शोधा बच्छनाग हरएक एक दाम, सोंठ, कालीमिरच पांच पांच दांग, धतूरेके बीज बीस दांग, हरताल आठ दांग, पारा और गन्धक ख़ूब पीसकर औषधियां कूट छानकर चार पहर अदरक के रसमें खरलकरे और दो रत्तीकी गोलियां बनावे ख़ूराक एक गोली शक्कर या पानीके साथ खाय।

औषध—जूड़ी बुख़ार को गुणकारक—पारा, गन्धक, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, सुहागा, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर दो पहर नींबके रसमें खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे—ख़ूराक एक गोली।

औषध—कफ़ज्वरको गुणकारक—हुलहुलके पत्ते, कालीमिरच एक पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे और एक एक गोली तीन दिनतक खावे।

अन्य—कफ़ज्वर को गुण करती है—मदारके पीले पत्ते कोयलों की आगमें राख करके सुबहके वक़्त चार रत्ती शहदमें मिलाकर खावे।

अन्य—रामबाण भूखको अधिक और बद्धकोष्ठको दूर करती है और कफ़के तपोंको दूर करती है—पारा, गन्धक, शोधा बच्छनाग, लौंग हरएक अढ़ाई अढ़ाईदाम, जायफल सवादांग, शोधा

जमालगोटा डेढ़ दाम कूट छानकर तीन दिन नींबके रसमें खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे दो गोलीतक गरमपानीके साथ भङ्गका चूर्ण वैद्योंका नुस्ख़ा जो एक घड़ी तप आनेसे पहिले खावे ।

शीतज्वर को गुणकारक—पीपल, कालीमिरच, कलौंजी, चिरायता, गेरू एक एक माशे, भङ्ग के पत्ते दो माशे कूट छानकर चूर्ण बनावे ख़ूराक एक माशा बारी के पहिले खावे जो रोगी कम उमर का हो एक माशे से कम दे ।

चूर्ण—वैद्य की औषध—कफ़ और सौदा के जूड़ी बुख़ार को गुणदायक है—एक दाम संखिया बैंगन में रखकर कपड़मिट्टी करके थोड़े जङ्गली कण्डों से फूंक दे फिर इसीतरह दूसरे बैंगन में रखकर आग दे फिर पीसकर लोहे की कड़ाही में आधसेर पानी के साथ डालकर नरम आगपर पकावे जब सूखजावे उसको कड़ाही से निकालकर एक दाम गेरू के साथ खरल करे आवश्यकता पर एक चावल से एक रत्ती पर्यंत बलके अनुकूल रोगीको बताशेमें खिलावे भोजन चावल और छिलीदाल नमक कम खावे ।

लाभ—चौथिया तप सौदावी है जो दो दिन बीच देकर आती है उसका बिकार रगों के बाहर सड़जाता है और तप सौदावी कि उसका बिकार रगों के अंदर सड़जाता है और यह तप बरसों रहती है और कठिनता से दूर होती है इसका यत्न पकाने के पीछे मलका निकालना है अब यहां थोड़ी सुगम औषध चौथिये के ज्वर की बर्णन की जाती हैं ।

औषध—जो चौथिये को गुणकारक—हींग, नोन दो दो माशे एक सेर जल में औटावे जब तीन चार दाम के अनुमान रहे पीजावे चौथिया बुख़ार कई दिन में नष्ट होगा ।

अन्य—नौसादर तीन रत्ती, कालीमिरचें दो कूट छानकर ज्वर के दिन खिलावे ।

अन्य—कलौंजी चार दाम महीन करके शहद में मिलाकर

चार दिन बराबर खावे परंतु जिस दिन से कि तप की बारी हो उसी दिन से आरम्भ करे।

गोली—कालेधतूरे के पत्ते, पान के पत्ते, कालीमिरच ढाई, महीन करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे एक गोली सुबह और एक शाम को गरम पानी के साथ दे चौथिये को गुणकारक और आज़माया हुआ है।

चूर्ण—चौथिये और कफ़ज्वर को गुणदायक—समंदरफल की गिरी, कालीमिरच, तुलसी के पत्ते बराबर कूट छानकर चूर्ण बनाकर एक माशा या कम या अधिक रोगी के स्वभाव व आयु के प्रमाण एक घड़ी पहिले समय से पानी के साथ खिलावे।

अन्य—टेसू के फूल, धनियां एक एक दाम, चने की भूसी दो दाम कूट छानकर तीन भाग करे एक भाग जल के साथ सेवन करे।

अन्य—चौथिये बुख़ार को गुणकारक—तीन चार माशे चूना पानी में घोलकर एक नींबू उसमें निचोड़े जब चूना गाढ़ा होकर थिराय जाय उसका साफ़ पानी लेकर जब तप आनेके लक्षण जैसे कि आलस्य और बोझ प्रकट हो पिलावे जो एक बेर पिलाना उसको नाश न करे दूसरी बेर दे।

औषध—कफ़ज्वर को गुणदायक—तीन टंक अजवाइन कूट छानकर शहद में मिलाकर दे।

अन्य—चौथिये तप को दूरकरे—घीकुवार काटकर उसके ऊपर की छाल दूर करके आगपर रक्खे और थोड़ी अफ़ीम और हल्दी महीन पीसकर उसपर डाले फिर आग से उतारकर कपड़े में रखकर निचोड़े और बुनके दो प्यालों में भरकर पिये दो तीन दिन में चौथिया नष्ट होजावे।

गोली—चौथिये को गुणदायक—पलाशपापड़े का लालछिलका दूर करके उसकी सफ़ेदगिरी लेकर उसके बराबर करंजुवेकी गिरी मिलाकर ख़ूब महीन पीसकर कालीमिरच की बराबर

गोलियां बनावे एक गोली बासी पानी से निगला करे।

अन्य—चौथिये के लिये नींव के वृक्ष की भीतरी छाल पांच दाम आधसेर पानी में औटाके जब आधपाव शेष रहे तीन चार टुकड़े चकमाक पत्थर के लेकर आग में गरम करके उसमें बुझावे जब पांच छः दाम पानी बाक़ी रहे रोगी को पिलावे इसीप्रकार तीनदिन सेवन करे।

गोली—पुराने तप के वास्ते—इस्पन्द भुनाहुआ छः माशे, कलौंजी, पीपलामूल एक एक तोला भर कूट छानकर साढ़े तीन तोले भर गुड़ में मिलाकर आधे दाम के अनुमान गोलियां बनावे गरम पानी से निहार एक गोली खाया करे।

शरबत—सब प्रकार के ज्वर और खांसी को दूर करता है—गिलोय, शहतरा, नीलोफ़र, खीरे ककड़ी के बीज, ख़तमी के बीज, कासनी के बीज, चन्दनबूरा एक एक तोला भर, मुलहठी तीन दाम, लसोड़े तीस दाने, बिहीदाना एक टंक डेढ़पाव क़न्द में क़वाम करके शरबत बनावे।

काढ़ा—तप को गुणकरे—ख़शख़ाश के पोस्ते दश कालीमिरच के साथ कूटकर औटाकर पिये।

अन्य—मुख्य करके चौथिये को गुण करती है—एक जूं बाकले में छिद्र करके रखकर उसका मुख बन्द करके निगलजावे कलौंजी की जवारिश चौथिये के बुख़ार को गुणदायक और सौदावी तप को भी गुण करती है—तीसरा ज्वरका प्रकार तपेदिक़ है कि ग़ैर असली हरारत मुख्य अर्थात् अवयव हृदय में स्थिर होजाते हैं और यही ज्वर प्रति समय और बहुधा दिनी तप या और तप गरम रहते रहते तपेदिक़ होजाती है दिनी तप अपने आप बहुत कम दिक़ होती है और इस ज्वर की गरमीका बेग भोजन के उपरान्त अधिक होता है इसका यत्न ठंढाई इत्यादि हैं।

कपूर की गोली—तपेदिक़ को गुणदायक—कपूर, केसर एक

एक टंक, छिली मुलहठी, बिहीदाना, सफ़ेद ख़शख़ाश हरएक दो टंक, खीरे ककड़ी के बीज छिले हुये, काहू के बीज छिले हुये, चन्दन गुलाब में घिसा हुआ, छिले तरबूज़ के बीज तीन तीन टंक, सम्मग़अरबी आधा आधा टंक दवायें कूट पीसकर टिकिया बनावे खूराक एक मिस्काल।

आवज़न–जीर्णज्वर को गुणकारक–हराकद्दू, तरबूज़, छिले हुये जौ कुचलकर हरे खीरे ककड़ी के टुकड़े, नीलोफ़र, काहू के पत्ते, खुरफ़े के पत्ते इन ओषधियों में से जितनी मिलें पानी में औटावे जब आधी शेष रहे आवज़न करके शरीर से जल पोंछ-कर ठण्ढे तेल में जैसे कि कद्दू का तेल आदि मर्दन करे।

कपूर की गोली–दाहज्वर और तपेदिक़ को गुणदायक है–चन्दन गुलाब में रगड़कर एक टंक ज़हरमोहरा रगड़ा हुआ सफ़ेद कत्था, कतीरा, खुरफ़े के बीज, बनफ़्शा, ख़शख़ाश के बीज एक एक टंक, केसर आधा टंक, मीठे कद्दू के बीजों की गिरी, बिहीदाने की गिरी डेढ़ टंक कूट छानकर बिहीदाने के लुआब या ईसबग़ोल के लुआब में गोलियां बनावे।

अन्य–तपेदिक़ को गुणदायक–गुड़च जवकुट करके एक तोला भर, छिली मुलहठी अधकुचली, छः माशे ख़तमी के बीज, खुब्बाजी दो दो दाम, पावभर गरम पानी में भिगोदे सुबह उसका साफ़ पानी लेकर काहू के बीज और खुरफ़े के बीज उसी पानी में पीसकर थोड़ी शक्कर डालकर पिये इसी प्रकार कई दिन सेवन करे।

काढ़ा–तपेदिक़ को गुणदायक वैद्यक की औषध–नींब के इक्कीस पत्ते, साबुत कालीमिरचें इक्कीस दोनों को महीन कपड़े में पोटली बांधकर आधसेर पानी में औटावे जब चार दाम शेषरहे छानकर हररोज़ दोनों समय पियाकरे एक सप्ताह में अच्छी तरह आराम होगा।

बोहरान का वर्णन।

बोहरान रोगके साथ वैद्यके युद्ध को कहते हैं—यदि स्वभाव प्रबल होजावे वह बोहरान खरा है और एक लड़ाई में बिल्कुल प्रबल न हो किन्तु दूसरी लड़ाई की इच्छाहो उसको बोहरान जय्यद नाक़िस अर्थात् कुछ खोटा कहते हैं यह रोग के बढ़जाने का प्रमाण है और जो रोग प्रबल हो जावे उसको बोहरान रदी अर्थात् बुरा कहते हैं और जो बिल्कुल न आवे किन्तु दूसरी लड़ाई की एहतियाज हो रदीनाक़िस कहते हैं यदि प्रकृति बोहरान के समय विकार आजाय रईस और शरीफ़ से रज़ील जोड़ों की ओर दूरकरे उसको बोहरान इन्तक़ाली कहते हैं और बोहरानजय्यदके बारह दिनहैं चौथा १ सातवां २ ग्यारहवां ३ चौदहवां ४ बीसवां ५ इक्कीसवां ६ चौबीसवां ७ सत्ताईसवां ८ इकतीसवां ९ चौंतीसवां १० सैंतीसवां ११ चालीसवां १२ और बोहरानरदी अर्थात् बुरे बोहरान भयानकके आठ दिन हैं छठा १ आठवां २ दशवां ३ बारहवां ४ पन्द्रहवां ५ सोलहवां ६ अठारहवां ७ उन्तीसवां ८ और दिनमें बोहरान नहीं होता है तेरह दिन हैं—बाईसवां १ तेईसवां २ पच्चीसवां ३ छब्बीसवां ४ अट्ठाईसवां ५ उन्तीसवां ६ तीसवां ७ बत्तीसवां ८ तेंतीसवां ९ पैंतीसवां १० छत्तीसवां ११ अड़तीसवां १२ उन्तालीसवां १३ और पांच दिन सब रहतेहैं उनमें कभी बोहरान होताहै और कभी नहीं होता—तीसरा १ पांचवां २ नवां ३ तेरहवां ४ सत्रहवां ५ बुक़रातके बिचार से चालीस दिन के पीछे बोहरान नहीं होता है और बोहरान कई प्रकार का होता है कभी नकसीर फूटती है कभी दस्त आते हैं कभी क़ै होती है कभी पेशाब आता है कभी पसीना निकलता है।

लाभ—जिस दिन तप आवे जो दिन उतरते आवे उस दिन को रोग का पहला दिन गिनेंगे और जो दिन उतरने पीछे आवे उसके दूसरे दिन को पहिला दिन ठहरावेंगे और बोहरान और

बारीके दिन मुसिल न देना चाहिये बहुत बुरा है अब उल्थकके मुखाग्र करने के लिये जय्यदबोहरान के दिनों की संख्या।

बोहरान जय्यद के बारहोंदिन दोहों में।

दो० चौथा सतवां ग्यारवां, और चौदवां जानु।
बीस इकिस अरु चौबिसां, फिर सतबीस बखानु॥
पुनि इकतिस अरु चौंतिसा, सैंतिसवां मन देहु।
अरु अन्तिम चालीसवां, द्वादश यह गनि लेहु॥
तिसरे पँचवें नवम में, सत्रह तेरह जानु।
इन दिवसन के मध्य में, कभी नहीं वह भानु॥
छठें आठवें दशम में, और बारवें मानु।
पन्द्रह सोलह अठरवें, अरु उन्तिसवें ठानु॥
जो इनमें बोहरान हो, रदी है ताको नाम।
बुरो बहुत बोहरान यह, भलो करैंगो राम॥

विष का यत्न।

जिस मनुष्य ने बिष खायाहो उसका यत्न सर्वमतानुसार–गरम पानी से क़ै कराना चाहिये और कई बेर घृत और दूध पिलाना और मुर्ग़गूह पानीमें मिलाकर जिसवक़्त पिलावे तुरन्त बिष को क़ै कराताहै और जानना चाहिये कि जंगल और नदीमें काटनेवाले जानवर बहुत होते हैं उनके काटनेसे स्वभावमें रोग प्रकट होते हैं इसकी पूरी रीति यह है कि ज़हर को सुखावे और जबतक रोगसे छुट्टी न हो घाव को न भरनेदे और जदवार और वह ओषधियां जो बिषको दूर करें खाने और पीनेमें सेवन करे।

अन्य–गरम ज़हरके सब प्रकारों को गुणदायक है–चौलाई की जड़ जो हरी हो एक तोला भर जो सूखी हो छः माशे पानी में पीसकर गायके घी के साथ खावे।

अन्य–बिष को गुणदायक–गाय का घी दशटंक, लाहौरी नोन दो टंक मिलाकर खावे सांप के काटे हुये को भी गुणदायकहै।

अन्य—जो छोटी कटाई पीसकर खावे वैद्योंके बिचार में बिष का नाशकारक है।

अन्य—कुचला, कालीमिरच पीसकर थोड़ा खावे सर्पके बिष को गुणदायक है।

अन्य—बिषके सब प्रकारों को गुणदायक है—एक माशा भर दरियाई नारियल पीसकर पिलावे।

अन्य—बहुत ज़हरों को गुणदायकहै—बिनोले की गिरी कूट-कर गायके दूध में औटाकर पिलावे।

अन्य—कसेरू खाना बिष को गुण करताहै।

अन्य—बिषको गुणकारक—बकरी की मेंगनी जलाकर खावे और लेपकरे।

अन्य—अजवाइन खाना बहुत ज़हरों को दूर करताहै।

अन्य—संखिये को गुणदायकहै—कत्था दो तीन तोले पानीमें घोलकर पिये।

अन्य—संखिये को गुणदायक—एक माशा कपूर कई तोले गुलाबमें हलकरके पिलावे।

अन्य—बिषको गुणदायक—संखिया, बकरीका दूध औटाकर गायका घी दाग़ करके मिलाकर पिलावे।

अन्य—बिष क़ै करनेके वास्ते—कमलगट्टा एक माशा, तूतिया दो रत्ती पीसकर गरमपानी में पिये बिषका क़ै से निकालताहै।

अन्य—अफ़ीमके ज़हर को गुणदायक—अरण्डकी जड़ पीस बुन का एक प्याला भर पिये।

अन्य—अरहरकी पत्ती पीसकर पिये।

अन्य—अरण्ड की कोंपल पीसकर पिये।

अन्य—तेजबल पानीमें पीसकर बुन का एक प्याला भर पिये।

अन्य—अफ़ीमके बिषको गुणकारक—दो माशे हींग, दो तीन दफ़ा करके खावे।

अन्य—अख़रोट की गिरी अफ़ीमका ज़हर दूर करे।

अन्य–गाय का घी और ताज़ा दूध अफ़ीम की हानि से बचाता है।

अन्य–धतूरेके बिषके वास्ते–बैंगन टुकड़े टुकड़े करके पानी में खूब मलकर पिलावे और जो बैंगन न मिले तो उसके पत्ते या जड़ पानीमें पीसकर पिलावे।

अन्य–धतूरे के बिषके दूर करने को–दो दाम बिनौले की गिरी पानीमें पीसकर पिये।

अन्य–नोन पानीमें मिलाकर पिये।

अन्य–सिंदूरकी हानि को गुणदायक है–सात दिन तक अदरक नोनके साथ किन्तु रोटीके साथ खावे और हर वक्त मुँह में रक्खे जिससे कि उसका रस कण्ठमें पहुँचे।

अन्य–नोन, तितली की पत्तियां हरएक पांच मिस्काल चावल दश मिस्काल, अखरोट की गिरी तीस मिस्काल, सबको अंजीरके साथ कूटकर खिलावे।

अन्य–गुणदायक–पारा और शिंगरफ़के विकार को दूर करे–जवासा थोड़े पानी में पीसकर रस निकालकर पिये।

अन्य–रेंड़ीका तेल पांच माशे, आधपाव गाय के दूध में हल करके पिलावे।

अन्य–भिलावेंकी हानि को गुणदायक–जो भिलावां खाने से शरीर में खुजली और सूजन पैदा हो इमली की पत्तियों का रस निकालकर पिये या उसके बीज पीसकर खावे या चिरौंजी और तिल भैंस के दूध में पीसकर खावे।

अन्य–जो किसी ने भिलावां खाया हो उसके बिकार के दूर करने के लिये अखरोट खावे और भिलावें के धुंवें से जो अंग पर शोथ हो आंबाहल्दी, साठी के चावल, दूब, बासी पानी में पीसकर सूजनवाले अंग पर जोर से मले या कालेतिल सिरके और मक्खन में मिलाकर लगावे।

अन्य–बच्छनाग के बिषको गुणदायक–सोंठ बहुत गुणकारी है और यह शोधक है जिसतरह चाहे खावे ।

अन्य–मकड़ी के बिष को गुणदायक–चौलाईका साग पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य–उस मनुष्यकी औषध जिसे शेर का बाल खिलाया हो कसौंदी के पत्तों का रस तीन दिन पिये ।

अन्य–तीन चार झींगे निगल जावे और शेर के बाल के खाने के यह लक्षण हैं कि बैठने के समय पेट में पीड़ा हो और जो अरंड के पत्ते पर मूत्र करे पत्ता टुकड़े टुकड़े होजावे ।

अन्य–सब प्रकार के बिष को गुणदायक है–ख़रुलतिजारब में लिखा है कि हुलहुल के बीज पांच टंक पीसकर खावे ।

अन्य–सांप के बिष के वास्ते सांप कई प्रकार का होता है परन्तु काले सांपका बिष औरों से बड़ा बलवन्त होता है समय नहीं देता है कि जिस जगह सांप काटे वह अंग यदि काटने के योग्य हो जैसे उंगली परन्तु काट डाले और जो काटने के लायक़ न हो वह जगह आग से जलादे और सांप काटे हुये को सोने न दे और चक्की की आवाज़ सांप काटे हुये के कान में पहुँचने न दे ।

अन्य–सांप काटे हुये को गुणदायक और आज़माई है, जो काले सांप ने काटा हो सात जमालगोटे और जो और किसी तरह के सांप ने काटा हो दो तीन जमालगोटे छीलकर खिलावे और मूंगकी बराबर पीसकर आंखों में लगावे जमालगोटे के खाने के पीछे सींगी से जिस जगह सांपने डसा है खूब चूसे कि बिष शरीर में न पहुंचे और बहुत सा लहसुन प्याज़ और राई का खाना सर्प काटे कोगुणदायक है–मुजर्बात अकबरी में लिखा है कि सर्पका डसा हुआ मूर्च्छित होगया हो उसके उदर पर नाभिके ऊपर उस्तरे मारे कि ऊपर का चमड़ा छिलजावे और रुधिर न निकले फिर जमालगोटा पानी में पीसकर लगावे

के शुरूअ होगी और होश में आवेगा फिर और उपाय करे और एक पुस्तक में लिखा है कि सांप का डसा हुआ अगर मूर्छित होगया हो और हिलता जुलता न हो परन्तु अभीतक मरा नहीं किन्तु जीता है कुचेला पानी में पीसकर उसके कण्ठ में डाले और थोड़ा पीसकर गरदन और बदनपर मले होश में आजावेगा।

अन्य–सांप के डसे हुये को गुणदायक और आज़माया हुआ है–तीन मदार की कोंपलें गुड़ में लपेटकर खिलावे और उसके ऊपर घी पिलावे और चार मदारकी कलियां, सात कालीमिरचें, एक माशा इन्द्रायण पीसकर देना लिखा है।

अन्य–मदार का दूध जिस जगह सांप ने डसा हो टपकावे जबतक सूख न जावे मौक़ूफ़ न करे जब ज़हर का प्रभाव न रहेगा दूध सूखना बन्द होजावेगा।

अन्य–मदार की जड़ पीसकर सांप काटे हुये को पिलावे और बाज़े इसमें मदार की रुई भी मिलाते हैं।

गोली–कालीमिरच, जमालगोटे की गिरी सात सात माशे, तीन काग़ज़ीनोंबू के रस में पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे और पानी में पीसकर सांप काटे हुये की आंख में लगावे और दो तीन खिलावे।

अन्य–सांप के बिष को गुणदायक–कसौंदी के बीज महीन पीसकर आंख में लगावे।

अन्य–सांप के बिष को गुणदायक–एक खटमल निगलजावे।

अन्य–सांप के बिष को दूर करे–सुहागा तेलिया एक दाम भूनकर तेल में मिलाकर पिलावे।

अन्य–चूहे का पेट फाड़कर जहां सांपने काटाहो बांधे जहर को सुखाता है।

अन्य–सांप के बिष को गुणकारक–सिरस के दरख़्त की छाल और उसकी जड़की छाल और बीज और फूल, चारों एक

एक दाम एक चमचे भर गाय के मूत्र के साथ एक दिन में तीन बेर करके पिलावे सांप का बिष अपना फल न करे सिरस का दरख़्त कि उसकी छाल काली होगई है उसमें बहुत गुण हैं और बाज़ों ने लिखा है कि जब ज्येष्ठ का महीना हो सिरस की छाल तीन दिन हररोज़ दो टंक साठी के चावलों के धोवन में पीसकर पिये एक बर्ष पर्यन्त ज़हरदार जानवरों के विष से बचा रहे और उस मनुष्य को जो जानवर काटे वह जानवर तुरन्त मरजावे यह बात मुख्य है ।

अन्य–जामुन की अढ़ाई पत्ती पानी में पीसकर पिलावे ।

अन्य–ताज़ा केंचुवा दो माशे भर पानी में पीसकर पिलावे ।

अन्य–एक तख़्ता सफ़ेद काग़ज़ का थोड़े पानी में घोले और छानकर पिलावे ।

अन्य–जिस जगह सांप का डंक या और बिषैले जानवरों का जैसे कि बावले कुत्ते का लगाहो उस पर मूत्र करना गुण देता है ।

अन्य–कमल कूट छानकर पानी में मिलाकर पिलावे क़ै आयेगी सांप का बिष दूर होगा ।

अन्य–सांप के बिष को गुण करे–समन्दरफल महीन पीस-कर दोनों आंखों में लगावे ।

अन्य–गँगनधूल पीसकर नाक में टपकावे ।

अन्य–कसौंदी की जड़ एक टंक, मिरच आधी टंक खावे ।

अन्य–दो टंक फिटकरी पानी में पीसकर पिलावे सांप के बिष को दूरकरे ।

अन्य–महुआ और कुचला पीसकर लेपकरे ।

लाभ–पुस्तकोंमें लिखाहै कि बारासिंगेका सींग लटकाना सर्प इत्यादिक बिषैले चौपायों के काटने से रोकता है और बारासिंगे का सींग और बकरी का सुम और अक़रक़रे की धूनी से सर्प भागता है और राई सर्प को मार डालती है अगर राई को

नौसादर के साथ घर में डाले सांप भाग जावे और फिर न आवे।

अन्य–बिच्छू के विष को गुणदायक–तीन तोले लहसुन का रस और तीन तोले शहद उसी समय खिलावे और थोड़ा जमालगोटा पानी में पीसकर आंख में लगावे और जिस जगह काटा हो वहां भी मले या तितली के पत्तों का पानी थोड़ा मुंह में टपकावे कईबेर के सेवन से बिच्छू का विष और सर्प का भी दूर होजावेगा।

अन्य–बिच्छू के काटे हुये पर उसका मलना गुणदायक है।

अन्य–मदार का दूध बिच्छू के घावपर मले।

अन्य–मक्खी का बिच्छू के घावपर मलना गुणकारी है।

अन्य–लहसुन सूखा और अमचूर पीस कर घाव पर लेपकरे।

अन्य–समन्दरफल पीसकर लेप करे।

अन्य–मुश्की घोड़े का नाखून पानी में पीसकर लगावे।

अन्य–नौसादर, सुहागा, चूने की कली बराबर हथेली पर मलकर सूँघे और कसौंदी का फल भूनकर खावे और कसौंदीके बीज पीसकर लेपकरे।

अन्य–मोर का पर चिलम में रखकर तम्बाकू के तौर पर पिये।

अन्य–चूहे की मेंगनी लेपकरे।

अन्य–सज्जी महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करे।

अन्य–पलाशपापड़ा पानी में पीसकर घावपर लगावे।

अमल–खैरुलतिजारबमें बिच्छू के विषके दूर करने के वास्ते लिखा है कि बीस अंक उल्टे गिने अर्थात् बीस से प्रारम्भ और एक पर पूर्णकरे बिच्छू का विष दूर होजावेगा।

अन्य–अशनान और अजवाइन औटाकर घावपर तरेड़ा दे।

अन्य–बिच्छूके विष को गुणदायक–मूली नोन में मिलाकर घाव पर रक्खे जो मूली बिच्छू पर रक्खे मर जावे।

अन्य–हरताल, हींग, साठी के चावल पानी में पीसकर लेपकरे।

अन्य–बिच्छूके डंक की पीड़ा को गुणदायक है–भंग के बीज़ कूटकर मोम में मिलाकर खावे।

अन्य–घासकी पत्ती घी के साथ पीसकर घावपर मले।

अन्य–नींबू का रस डंक के घावपर खूब मले।

अन्य–नागरमोथा बिच्छू के ज़हर के दूरकरने के वास्ते पीना और लगाना गुणकारी है।

अन्य–मोजिज़ में लिखा है कि एक मनुष्यके शरीमें बिच्छू ने चालीस जगह काटा उसने शीघ्रही दो टंक इन्द्रायण का हराफल खालिया उसी समय आराम होगया।

अन्य–जो बिच्छू किसी जगह जलावे उस जगह से और बिच्छू भागजावें।

अन्य–हींग, हरताल, तुरंज को पीसकर गोलियां बनावे जिस जगह बिच्छू ने काटा हो लेपकरे।

अन्य–प्याज़ का ज़ीरा मले और थोड़ा गुड़ खावे।

अन्य–मोम जलाकर बिच्छू के घाव में उसकी धूनी दे अच्छा होजावे।

अन्य–बिषखपरे के पत्ते और डाली चरचरे के साथ मिला कर मले।

अन्य–कोंच के बीज छीलकर बिच्छू के डंक पर मले।

अन्य–गोबरौले कीड़े को जो गोबर में पैदा होता है बिच्छू के घाव पर मलना गुणदायक है।

### भिड़ के विष की गुणदायक दवायें।

ईसबग़ोल सिरके में डालकर लुआब निकाल कर पिये।

अन्य भिड़ के डंक को गुणकारक–तीन हथेली भर धनियां खावे।

अन्य–काई सिरके में मिलाकर लेप करे।
अन्य–खतमी और खुब्बाजी का लुआब मले।
अन्य–मक्खी डंक की जगह पर मले।
अन्य–शहद खावे और लेपकरे।
अन्य–मकोयकी पत्ती सिरके में पीसकर लेपकरे।
अन्य–घी इक्कीस बेर धोकर लगावे।
अन्य–अंग को दो तीन बेर गरम पानी से धोवे।
अन्य–हरे धनियेंका रस सिरके में मिलाकर लगावे।
अन्य–कपूर सिरके में मिलाकर लेपकरे।
अन्य–भिड़के छत्ते की मिट्टी लेपकरे।
अन्य–तिल सिरके में पीसकर लेपकरे।
अन्य–गन्धक पीसकर लेपकरे।
अन्य–जिसको भिड़ काटे वह अपनी जिह्वा पकड़ले डंकक दुःखसे बच जावे।
अन्य–नया गोबर लगावे।
अन्य–जिस जगह गन्धक या लहसुन जलावे उसकी गन्ध से भिड़ भागती है।
औषध–छिपकली के काटनेका तेल और खाल मले और पानी में भूसी औटाकर गरम तरेड़ा दे।

दीवाने कुत्ते का यत्न।

जिस मनुष्य को बावला कुत्ता काटे थोड़ीदेर के पीछे उस मनुष्यको एक दशा उन्माद की रीति पर होजाती है जब इस दशा में जियादती हो जीनेकी आशा नहीं इसके यत्नमें देर न करे और चालीस दिनतक घावको भरने न दे और सींगियोंसे खूब चूसे और घावके गिर्द पछने लगावे और लहसुन सिरके मे पीस कर लेपकरे और हवा की सरदी से पथ्य करे और जब कुत्ते का काटा हुआ पानी से डरे जीने की आशा नहीं।
औषध–एक तोला भर लसोड़े की पत्ती पन्द्रह कालीमिरच

के साथ पीस छानकर पिलावे कुत्तेके काटेहुये को आश्चर्यदायक और आज़माई हुई है।

अन्य–प्याज़ कूटकर शहदमें मिलाकर लेपकरे कि घाव न भरे।

अन्य–कुचला मनुष्यके मूत्रमें औटाकर पीसकर लेपकरे और शराबमें औटाकर छाल दूरकरके एक रत्ती हर रोज़ खाया करे या पानीमें औटाकर कूटकर थोड़ा गुड़ मिलाकर खावे।

अन्य–तीन दाम कड़वीकठ, अधकुचली एक प्यालेभर पानी में औटावे जब एकदाम शेषरहे साफ़ करके पिये।

अन्य–जो उसी कुत्तेकी जिह्वा काटकर जलाकर उसकी राख घावपर छिड़के घाव भरे और उसका ज़हर असर न करे।

औषध–जो कुत्ते के काटेहुये को दीवानगी की हालत में भी दे गुणकरे–यह दवा आज़माई हुई है जो बरसातमें पैदा होतीहै उसको तलैना भी कहते हैं उसे एक डिबियामें बन्द करके सुखाकर चनेकी बरावर गुड़में लपेटकर खावे।

अन्य–अंगूरकी लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–कुत्ते काटनेके दुःख दूर करनेके लिये मुख्य गुणकारक हैं–डाक्टर अंग्रेज़ी की ज़बानी लालबनात लेकर चने की बराबर सात टुकड़े करके गुड़में सात गोलियां बनावे और खावे।

अन्य–पछने लगाने और रुधिर निकालने के पीछे राई कूटकर लेपकरे।

अन्य–मदार का दूध घावपर लगावे।

अन्य–उसी कुत्ते के बाल जिसने काटाहो जलाकर उसकी राख घावपर छिड़के।

अन्य–कलौंजी की जवारिश खाना गुणदायक है।

अन्य–मूलीके पत्ते गरम करके घावपर रक्खे।

अन्य–चूहेकी मेंगनी पीसकर लगावे।

अन्य–सँभालू के पत्तोंका लेप गुणकारी है।

अन्य–बाजरे का फूल जो बाजरे की बालोंमें होता है एक

माशा भर गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर हररोज़ खावे।

अन्य–दो दाम कलौंजी गुनगुने पानीके साथ तीन दिन फांकना गुणदायक है।

गोली–चूहेके बिषको गुणदायक है–सिरसके बीज, नींबके पत्ते, करंजुवे के बीजोंकी गिरी बराबरके गायके मूत्रमें पीसकर गोलियां बनावे और समयपर रगड़कर लेप करे जो [illegible] चरबी घरमें जलावे सब चूहे भागजावें।

औषध–मनुष्य के काटे हूये बिषको गुणकारक है–गोभीके पत्ते शहदमें पीसकर मले।

औषध–बिल्लीके काटनेके ज़हरको फ़ायदा करे–कालेतिल पानीमें पीसकर मले और पुदीना भी खावे और मले।

औषध–कनखजूरे के जहर को गुण करे–मीठा तेल चिराग़ में जलाये फिर जितना तेल चिराग़ में रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो मले।

दवा–बन्दरके ज़हर को गुण करे–मुरदारसंग, नमक पानी में पीसकर मले और कलौंजी और शहद लगावे कि घाव खुला रहे और प्याज़ पीसकर मलना भी लाभ दे।

अन्य–मच्छरों के दूर करने के लिये लिखा है कि घोड़े की दुम के बाल कोठरी के दरवाज़े पर लटकाये मच्छर वहां कम आवें और भूसी, गूगुल, गन्धक और बारासिंगे के सींगकी धूनी से मच्छर भागते हैं।

तौलों के नाम और उनका हाल।

| तौल का नाम | तौलों का हाल |
|---|---|
| अबरीक़ | तिब की रूसे दो मन और बाज़ोंने पांच रतिल लिखाहै। |
| उरज़ा | चावल को कहते हैं और उससे चावल छोटा मुराद है कि दो राई के बराबर है। |
| असतार | साढ़े चार मिस्काल और हिन्दी के हिसाब से एक तोला पांच माशा सात रत्ती। |

औकिया उसे अदक़िया भी कहते हैं साढ़े सात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्ती है ।

बाकला आधा दिरम और बाक़लाई द्रक़ंदिरया ।

[illegible]ौर हावला } नौ क़ैरात और मिसर के हिसाब से बाक़ल अड़तालीस जौ के बराबर कि डेढ़ माशा होता है ।

[illegible] दो क़ैरात ।

बंदक़ा कोई एक दिरम और बाज़े एक मिस्काल कहते हैं ।

बहलोली एकदाम और कइयों ने चौदह माशे लिखा है ।

पैसा बारह माशे अर्थात् एक तोला ।

टंक चार माशे और बाज़ों ने चौबीस घुंघची भर बताया है ।

छटांक हिन्दी में सेर के सोलहवें हिस्से को कहते हैं एक छटांक आलमगीरी सेर का चार तोला है ।

दाम एकतोला आठमाशा और बाज़ोंने लिखाहै कि पक्कादाम एकतोला नौमाशा और कच्चादाम एकतोला दो माशा ।

दांक दवांग } तिब से एक दांग पौने चार रत्ती और शरा से चार रत्ती और पौन चावल ।

दिरम तीन माशे और बाज़े साढ़े तीन माशे और कोई दो माशे दो रत्ती बतलाते हैं ।

दिरहम अड़तालीस जौ भर ।

दीनार एक मिस्काल ।

रत्ती चार दरमियानी जौ ।

रतिल अड़तालीस तोले साढ़े चार माशे होता है ।

क़ैरात सवाचार जौ भर ।

माशा आठ रत्ती या बत्तीस जौ या चौंसठ चावल भर ।

मिस्काल एकसौ बीस जौ भर है कि तीन माशे छः रत्ती होताहै और बाज़ों ने तीन माशे पौने दो रत्ती लिखा है और शेखउल्लरईस के हिसाब से बत्तीस जौ भर होता है ।

इति इलाजुल्गुरबा भाषा सम्पूर्णम् ॥



| | | |
|---|---|---|
| | | व-तरंग ।ﺩ |
| ा ... ... ६) | | गद-तिमिर-भास्कर ... ... |
| बृहत्पाकावली ... ... ... ॥) | | चिकित्सोपदेशिर ... ... ६) |
| वन (संस्कृ टीका) ... ।–)॥ | | दिल्लगन-चिकित्सा ... ।–) |
| ा ... ... ४॥) | | निघण्टु रत्नाकर ... ... |
| निदान ... ... ... ॥) | | निघण्टु (मदनपाल) ॥ |
| ा. (छप रही है) | | राम-विनो ... ... |
| भा (तीसरा खंड) (छप रहा है) | | वैद्य-प्रिया ... ... |
| ज्य रत्नावली .. (छप रही है) | | अमरविनोद ﺩ) |

**शारीरिक विज्ञान-संबंधी पुस्तकें**

मानव-शरीर रहस्य (प्रथम भाग) ... ... २॥)

मानव शरीर-रहस्य (द्वितीय भाग) ... ... २॥)

सूचना—अन्यान्य पुस्तकों के लिये कार्ड डालकर बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाकर देखिए।

पुस्तकें और सूचीपत्र मिलने का पता:—

मैनेजर, ना ... (बुकडि

नगं

# इलाजुल्गुरबा भाषा

अर्थात्

# दीन-जन-चिकित्सा

---

अनुवादक—

स्वर्गीय काश्मीरी पंडित प्यारेलाल रुग्गू

---

लखनऊ

केसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

दसवीं बार

सन् १९३० ई०